राजभाषा आलोक

okf"kZd 2017

भाकृअनुप
ICAR

Hkkjrh; Ñf"k vuqla/kku ifj"kn
ubZ fnYyh

lQyrk dslksiku

ekuuh; egkefge jk"Vifr] Jh jkeukFk dkfon l jktHkk"kk foHkkx] xg e=ky;] Hkkjr ljdkj dh xg if=dk ijLdkj ;ktuk d vrxr 14 flrEcj] 2017 dk foKku Hkou] ub fnYyh e vk;kftr fd, x, jktHkk"kk ijLdkj forj.k lekjkg d nkjku jktHkk"kk dhfr ijLdkj ¼çFke LFkku½ çkIr djr g, Hkkjrh; xUuk vuLak/kku lLFkku d fun'kd] M,- ,-Mh- ikBdA bl volj ij ekuuh; dUæh; xg e=h Jh jktukFk flg ,o xg jkT; e=h Hkh mifLFkr gA

राजभाषा आलोक

वार्षिकांक 2017

भाकृअनुप
ICAR

कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली 110 012

मुद्रितः जुलाई 2018

डा. सतेन्द्र कुमार सिंह, परियोजना निदेशक, कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा मैसर्स चन्दु प्रेस, 469, औद्योगिक क्षेत्र, पटपडगंज, दिल्ली 110 092 से मुद्रित।

सत्यमेव जयते

त्रिलोचन महापात्र, पीएच.डी.
एफ एन ए, एफ एन ए एस सी, एफ एन ए ए एस
सचिव एवं महानिदेशक

TRILOCHAN MOHAPATRA, Ph.D.
FNA, FNASc, FNAAS
SECRETARY & DIRECTOR GENERAL

भारत सरकार
कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली 110 001

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH & EDUCATION
AND
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE
KRISHI BHAVAN, NEW DELHI 110 001
Tel.: 23382629; 23386711 Fax: 91-11-23384773
E-mail: dg.icar@nic.in

आमुख

राष्ट्र को खाद्य व पोषणिक सुरक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्रदान करने में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अपनी स्थापना के सफलतापुर्वक 89 वर्ष पूरा करने की यात्रा के दौरान देश को आयातक की भूमिका से खाद्यान्न की दृष्टि में एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने के साथ–साथ अनेक जिंसो के मामले में एक निर्यातक राष्ट्र बनाने में परिषद द्वारा सफलता के नए प्रतिमान स्थापित किए गए हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की ओर देशभर के हितधारकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए गणतंत्र दिवस 2018 की परेड़ में पूरी तरह से कृषि को समर्पित ''मिश्रित खेती–खुशियों की खेती'' स्लोगन से सजी एवं भारतीय कृषि के विविध रंगों को संजोने वाली एक मनमोहक झांकी को प्रदर्शित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। देश के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है जब पूरी तरह से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को समर्पित झांकी को गणतंत्र दिवस की परेड़ में शामिल किया गया है।

अभी भी कृषि हमारे देश की जीवन रेखा बनी हुई है और देश का समग्र विकास कृषि क्षेत्र का विकास किए बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। देश की खाद्य सुरक्षा को सतत आधार पर सुनिश्चित करने में वैज्ञानिकों द्वारा किए गए सफल अनुसंधान परिणामों, उन्न्त तकनीकों, कम समय में अधिक उपज देने वाली एवं जलवायु अनुकुल किस्मों तथा उन्हें किसानों तक पहुंचाने का उल्लेखनीय योगदान है। राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में कृषि की एक महत्वपूर्ण भूमिका है और लगभग 58 प्रतिशत कार्यबल अभी भी अपनी आजीविका के लिए खेती–बाड़ी पर ही आश्रित है। कृषि तथा उससे सम्बद्ध सेवाओं में लगा यह विशाल जनबल केवल उत्पादक ही नहीं, अपितु देश को सबसे बड़ा बाजार देने वाला उपभोक्ता वर्ग भी है। वर्तमान में भारत सरकार का मुख्य उद्देश्य खाद्यान्न उत्पादन की दर को बनाये रखना एवं किसानों की आय को वर्ष 2022 तक दोगुना करने पर केन्द्रित है। इसमें परिषद की अति महत्वपूर्ण भूमिका है। इस दिशा में परिषद द्वारा राज्यवार समन्वय समितियां बनाई गई हैं।

परिषद द्वारा सफल कृषि अनुसंधान परिणामों व उन्नत तकनीकों के परिणामस्वरुप गेहूं की अग्रणी किस्म एचडी 2967 की खेती देश के गेहूं बुवाई क्षेत्र में 30 प्रतिशत से भी अधिक कृषि रकबे में की जाती है जबकि बासमती चावल की किस्म पूसा बासमती 1121 का विदेशी बाजार में उल्लेखनीय स्थान है। इस किस्म द्वारा प्रतिवर्ष रूपये 15,000 करोड़ से अधिक की विदेशी मुद्रा अर्जित की जा रही है। वर्ष 2017–18 के लिए देश में कुल 275.68 मिलियन टन रिकार्ड खाद्यान्न उत्पादन हुआ है। बागवानी के क्षेत्र में पिछले साल के मुकाबले 4,8 प्रतिशत वृद्धि के साथ इस वर्ष 305 मिलियन टन का रिकार्ड उत्पादन हुआ है। दलहन उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता लाने के लिए देश में 150 सीड हब स्थापित किए गए जिसके परिणामस्वरूप दालों का 22.95 मिलियन टन रिकार्ड उत्पादन हुआ।

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा को पंख प्रदान करने की परिषद की प्रतिबद्धता को साकार करते हुए माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा दिनांक 26 मई, 2017 को गोगामुख, धीमाजी, असम में आईएआरआई–असम का शिलान्यास किया गया। इससे पहले आईएआरआई–झारखंड का शिलान्यास किया जा चुका है। कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के क्षेत्र में यह एक विशेष उपलब्धि है और आशा की जाती है कि इन प्रयासों से अगली हरित क्रांति का उद्घोष भारत के पूर्वी एवं पूर्वोत्तर राज्यों से होगा। माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा दिनांक 11 अक्तूबर, 2017 को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR-IARI), पूसा, नई दिल्ली में नानाजी देशमुख पादप फिनोमिक्स सुविधा का उद्घाटन किया गया। यह एक विश्व स्तरीय सुविधा है जिसमें उच्च तकनीक वाला जलवायु नियंत्रक ग्रीनहाउस शामिल है। किसानों तक विज्ञान की पहुंच स्थापित करने में कृषि विस्तार को महत्व देते हुए कुल 18 नए कृषि विज्ञान केन्द्र अनुमोदित किए गए जिससे अब कृषि विज्ञान केन्द्रों की संख्या पिछले वर्ष के 663 के मुकाबले बढ़कर 681 हो गई है। वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैकिंग में भारतीय विश्वविद्यालयों की स्थिति में सुधार लाने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग तैयार की गई। कृषि शिक्षा के क्षेत्र में इस वर्ष 10 कृषि विश्वविद्यालयों का प्रत्यायन किया गया जिससे अभी तक कुल 60 कृषि विश्वविद्यालयों का प्रत्यायन किया जा चुका है।

कृषि प्रगति में तेजी लाने के लिए यह और भी जरूरी है कि उन्नत तकनीकों, किस्मों व अनुसंधान परिणामों को शीघ्रता से किसानों तक पहुंचाया जाए जिसमें कि राजभाषा हिन्दी की विशेष भूमिका है। हमारे देश में कश्मीर से कन्याकुमारी, कच्छ से कोहिमा और लक्षद्वीप से कार निकोबार तक हिन्दी ही विचारों के आदान–प्रदान की सहज स्वीकार्य भाषा है। कृषि के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग नितांत आवश्यक है क्योंकि बहुसंख्यक किसान सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग करते हैं।

मुझे खुशी है भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, राजभाषा हिन्दी की अभिवृद्धि के लिए सतत प्रयासरत है और इस दिशा में परिषद द्वारा हिन्दी पत्रिका ''राजभाषा आलोक'' का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में प्रस्तुत सारगर्भित जानकारी सुधी पाठकों का ज्ञानवर्धन करेगी। मैं, पत्रिका के सम्पादन मंडल द्वारा किए गए योगदान की सराहना करता हुं और इसकी सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

त्रि॰ महापात्र

(त्रिलोचन महापात्र)

CHHABILENDRA ROUL
ADDITIONAL SECRETARY, DARE &
SECRETARY, ICAR
Tel.No.: +91 11 23384450
Email: secy.icar@nic.in

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग
कृषि भवन, नई दिल्ली-110001
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH AND EDUCATION
KRISHI BHAWAN, NEW DELHI-110001

प्राक्कथन

वर्तमान में हमारा देश विकासशील देशों की श्रेणी से निकलकर विकसित देशों की श्रेणी में अपना स्थान बनाने में पुरजोर प्रयास कर रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि बाकी विकसित देशों की तरह भारत का विकास भी विशेष रूप से कृषि, विज्ञान एवं नवीन प्रौद्योगिकी एवं तकनीकों पर आधारित है। हमारी राष्ट्र भाषा एवं राजभाषा हिन्दी हमारी अभिव्यक्ति का एक महत्वहपूर्ण एवं सशक्त माध्यम है जो इस राष्ट्र की संस्कृति एवं समाज की पहचान है, हिन्दी भाषा पूर्णतः वैज्ञानिक होने के कारण इसकी अपनी मानक शब्दावली, व्याकरण एवं शैली है। भाषा का देश की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति से सीधा जुड़ाव होने से आज के उदारीकरण अर्थव्यवस्था के युग में नई पीढ़ी को अपनी भाषा के साथ जोड़ने के प्रयोजन से तात्पर्य है कि राजभाषा हिन्दीं एवं भारतीय भाषाओं में पर्याप्त साहित्य हो जो वैज्ञानिक एवं आमजन को रोजमर्रा के जीवन से जोड़ता हो।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग कई गुणा बढ़ रहा है और विभिन्न डिजिटल माध्यमों में हिन्दी ने अपनी उपयोगिता, प्रासंगिकता और वर्चस्व को स्थापित किया है। सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा हर तरह के संसाधन और सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। विभिन्न सॉफ्टवेयरों के विकास ने हिन्दी में कार्य करना व्यावहारिक दृष्टि से बहुत आसान बना दिया है। राजभाषा को आगे बढ़ाने में हमें इन सुविधाओं का भरपूर लाभ उठाना चाहिए।

राजभाषा के प्रयोग को आगे बढ़ाने में प्रकाशनों की भी अहम भूमिका होती है इस क्रम में परिषद ने राजभाषा आलोक– 2017 का वार्षिकांक प्रकाशित किया है जो कि एक अनूठे कलेवर एवं रूप सज्जद के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें जहां एक ओर लोकप्रिय वैज्ञानिक तकनीकी आलेखों के माध्यम से किसानोपयोगी विशिष्ट जानकारियां दी जा रही है, वहीं दूसरी ओर राजभाषा के विभिन्नि पहलुओं पर गंभीर लेख भी शामिल किए गए हैं। इसके अतिरिक्त परिषद के विभिन्न संस्थानों में वर्ष के दौरान आयोजित राजभाषा से संबंधित विभिन्ने गतिविधियों, कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों का सचित्र विवरण दिया गया है।

मैं पत्रिका में योगदान देनेवाले सभी लेखकों तथा संस्थान के निदेशकों का आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने समय पर सामग्री उपलब्ध करवाई। सामग्री का संकलन हिन्दी अनुभाग द्वारा तथा संपादन श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया जिसमें उन्हें श्री एम.एल. गुप्ता, उप–निदेशक (रा.भा.) एवं श्री हरिओम, निजी सचिव द्वारा सक्रिय सहयोग दिया गया है। मैं, कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय के कार्यकारी परियोजना निदेशक, डॉ. एस.के. सिंह एवं उनकी प्रोडक्शन टीम को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिनके सक्रिय प्रयासों से पत्रिका के इस अंक का प्रकाशन संभव हुआ है। मुझे आशा है कि सुधी पाठकगण इसे और अधिक उपयोगी बनाने के विषय में अपनी राय व्यक्त करेंगे।

(छबिलेन्द्र राऊल)

सम्पादकीय

विश्व में हर देश की अपनी भाषा और अपनी एक विशिष्ट संस्कृति और सभ्यता होती है जिसकी छांव में उस देश के लोग पले–बढे होते हैं। भारत की संस्कृति विभिन्न सभ्यताओं और भाषायी विविधताओं का सम्मिश्रण है। यह चिरकाल से निरंतर उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए विकसित हुई है। भाषाई विविधता एवं बहुआयामी संस्कृेति होने के बावजूद भी हिन्दी को संघ सरकार की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। अनेकता में एकता को चरितार्थ करते हुए हिन्दी ने भारत की विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं को वाणी प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। वास्तव में जब हम हिन्दी के विकास की बात करते हैं तो इसे इसके व्यापक अर्थ में लिया जाना चाहिए, इसका आशय देश की सभी भाषाओं और अनगिनत बोलियों का विकास भी है।

राजभाषा हिन्दी सभी भारतीयों की आशाओं एवं आकांक्षाओं का सबसे सशक्त प्रतीक बन गई है। आज हिन्दी विश्व में व्यवसाय की एक सशक्त भाषा के रूप में उभर रही है। विश्व के तकरीबन 175 देशों में यह बोली–समझी जाती है और विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में इसे पढ़ाया जा रहा है। हमें हिन्दी के इस सबल पक्ष का लाभ उठाना चाहिए।

परिषद एवं इसके संस्थानों द्वारा दिन–प्रतिदिन नई–नई तकनीकें ईजाद की जा रही हैं। इन तकनीकों को हितधारकों तक पहुंचाना हमारा लक्ष्य है और यह तभी संभव है जब यह सब जानकारी उन्हें उनकी भाषा में दी जाए।

परिषद द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका, राजभाषा आलोक 2017 का नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है जिसमें नवीनतम जानकारी के साथ कृषि के विभिन्न विषयों के आलेखों का संकलन किया गया है। 'राजभाषा खण्ड' में राजभाषा संबंधी लेखों को प्रस्तुत किया जा रहा है तथा गत वर्ष से प्रारंभ की गई 'प्रभाग परिचय' की श्रृंखला में इस बार 'बागवानी प्रभाग' के अधिदेश, उपलब्धियों तथा विजन का संक्षिप्त' परिचय दिया गया है। 'विविधा खण्ड' में पाठकों को मार्मिक कहानी तथा भावप्रवण कविताएं पढ़ने को मिलेंगी। इसके अतिरिक्त परिषद एवं इसके संस्थांनों में वर्ष भर आयोजित किए गए हिन्दी से जुडे कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों आदि का विवरण तथा सभी संस्थानों से निकलने वाले विभिन्न हिन्दी के प्रकाशनों को भी इसमें शामिल गया है। आशा है आपको यह अंक पसन्द आएगा। सुधी पाठकों की प्रतिक्रयाओं व सुझावों का स्वागत है जो हमें निरन्तर बेहतर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

संपादक मंडल

ICAR भाकृअनुप

राजभाषा आलोक

वार्षिकांक: 2017
(अंक 21)

संरक्षक
डा. त्रिलोचन महापात्र
महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प.

अध्यक्ष
छबिलेन्द्र राऊल
सचिव, भा.कृ.अनु.प.

परामर्श
डा. एस के सिंह
कार्यकारी परियोजना निदेशक
(डीकेएमए)

संपादन
सीमा चोपड़ा
निदेशक (राजभाषा)

संकलन एवं सहयोग
मुरारी लाल गुप्ता
उप निदेशक (रा.भा.)
हरि ओम, निजी सचिव

प्रोडक्शन
डॉ वी.के. भारती
एवं
अशोक शास्त्री

विषय-सूची

तकनीकी खण्ड		पृष्ठ संख्या
1. परिषद का सतत प्रयास – कृषि प्रगति एवं राष्ट्र विकास	त्रिलोचन महापात्र, एस.के. मलिक एवं महेश गुप्ता	1
2. हिमांक संरक्षण (क्रायोप्रिजर्वेशन) तकनीकी से भारतीय प्रमुख कार्प प्रजनक मछलियों का नस्ल सुधार	धनंजय कुमार वर्मा एवं पद्यमान राउत राय	9
3. भेड़ एवं बकरी चेचक (पॉक्स)	जी. बी. मंजुनाथ रेड्डी, अवधेश प्रजापति, अपशाना आर, योगीश आराध्य आर, परिमल राय	15
4. जड़गांठ सूत्रकृमि मेलेड़ोगाइन ग्रेमिनिकोला (गोल्डन एंड बिर्चफिल्ड, 1965): धान और गेहूं की फसल मे जड़गांठ रोग कारक	राशिद परवेजएवं उमा राव	18
5. न्यूट्रास्यूटिकल्स और पशु उत्पादन	आशीष सामंता, स्वराज सेनानी, अतुल कोल्ते एवं मनपाल श्रीधर	22
6. क्षेत्रीय भाषा में कृषि तकनीक का हस्तांतरण कृषकों हेतु वरदान	जी निर्मला, के सम्मी रेड्डी एवं एस आर यादव	28
7. अतिरिक्त आय एवं पोषण सुरक्षा हेतु वर्ष भर मशरूम उत्पादन	चन्द्रभानु, आजाद सिंह पंवार एवं आर.बी. तिवारी	31
8. औषधीय गुणों से भरपूर करेला, भिंडी और मेथी	मनोज कुमार	34
9. लेह–बेरी (सीबकथोर्न) पौधा: लेह–लद्दाख के कोल्ड–डेजर्ट क्षेत्र में भूमि उपयोग नियोजन हेतु एक बहुउद्देशीय विकल्प	जया निरंजने सूर्या, विकास, आर. पी. यादव, अरविन्द कुमार और एस. के. सिंह	36
10. सफलता की कहानी	अंकेगोउडा, एस.जे. नरेन्द्र चौधरी, अक्षिता एच.जे., दिनेश आर. एवं निर्मल बाबू के.	39
11. प्रभाग परिचय	बागवानी विज्ञान प्रभाग	41
राजभाषा खण्ड एवं गतिविधियां		
12. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में नई प्रशासनिक पहलें	छबिलेन्द्र राऊल	46
13. राजभाषा प्रबंधन: नई दिशाएं	सीमा चोपड़ा	49
14. प्रशासन में राजभाषा कार्यान्वयन, निरीक्षण और चुनौतियां	संतराम यादव	53
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों से प्राप्त गतिविधियां		57
विविधा		141

तकनीकी खण्ड

परिषद का सतत प्रयास - कृषि प्रगति एवं राष्ट्र विकास

त्रिलोचन महापात्र*, एस.के. मलिक** एवं महेश गुप्ता***

कृषि, हमारे देश की जीवन रेखा हैं और देश का समग्र विकास कृषि क्षेत्र का विकास किए बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है। देश की खाद्य सुरक्षा को सतत आधार पर सुनिश्चित करने में जहां हमारे वैज्ञानिकों द्वारा किए गए सफल अनुसंधान परिणामों, उन्नत तकनीकों व कम समय में अधिक उपज देने वाली एवं जलवायु अनुकूल किस्मों का योगदान है वहीं अपनी कड़ी मेहनत से इसे खेतों में साकार रूप प्रदान करने का श्रेय किसानों को जाता है। इंडिया के एक प्रहरी हमारे किसान, हमारे अन्नदाता हैं जो देश का भरण–पोषण करने के लिए परिश्रम की पराकाष्ठा कर रहे हैं; दूसरे प्रहरी हमारे वैज्ञानिक बंधु हैं जो नई–नई तकनीक विकसित कर किसान का जीवन आसान कर रहे हैं। अतः भारतीय अर्थव्यवस्था का सही समाधान सीधे कृषि के विकास, कृषि उत्पादन की अभिवृद्धि एवं किसान की आमदनी पर अवलम्बित है। राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में कृषि की एक महत्वपूर्ण भूमिका है और लगभग 58 प्रतिशत कार्यबल अभी भी अपनी आजीविका के लिए खेती–बाड़ी पर ही आश्रित है तथा कृषि राष्ट्र के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) एवं निर्यात का एक प्रमुख घटक बनी हुई है। कृषि तथा उससे सम्बद्ध सेवाओं में लगा यह विशाल जनबल केवल उत्पादक ही नहीं, अपितु देश को सबसे बड़ा बाजार देने वाला उपभोक्ता वर्ग भी है। देश की लगभग तीन चौथाई जनसंख्या वाले इस विपुल वर्ग की क्रियाशक्ति बढ़ने से ही देश का उद्योग, व्यापार, रोजगार और कला कौशल समुन्नत होगा। आज अर्थशास्त्री भी यह महसूस करते हैं कि राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाये रखने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों की मांग को बनाये रखना बहुत जरूरी है और कृषि में उच्चतर उत्पादन से भुगतान योग्य क्षमता और समग्र अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। इसके साथ ही, राष्ट्र निर्माण में प्रमुख भागीदार कृषि हमें सर्वाधिक जरूरी खाद्य एवं पोषणिक सुरक्षा प्रदान करती है जो कि किसी भी प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र की मेरुदण्ड होती है। सफल कृषि अनुसंधान परिणामों व उन्नत तकनीकों के परिणामस्वरूप वर्तमान वर्ष में देश में खाद्यान्न का रिकॉर्ड उत्पादन हुआ है। वर्ष 2017–18 में देश में कुल 275.68 मिलियन टन खाद्यान्न उत्पादन हुआ है। बागवानी के क्षेत्र में पिछले साल के मुकाबले 4.8 प्रतिशत वृद्धि के साथ इस वर्ष 305 मिलियन टन का रिकॉर्ड उत्पादन हुआ है।

कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान करते हुए खाद्य व पोषणिक सुरक्षा के क्षेत्र में राष्ट्र को आत्मनिर्भरता प्रदान करने में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) की महत्वपूर्ण भूमिका है। अपनी स्थापना के सफलतापूर्वक 89 वर्ष पूरा करने की यात्रा के दौरान देश को आयातक की भूमिका से खाद्यान्न की दृष्टि में एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने के साथ–साथ अनेक जिंसों के मामले में एक निर्यातक राष्ट्र बनाने में परिषद द्वारा सफलता के नए प्रतिमान स्थापित किए गए हैं। वर्तमान में भारत सरकार का मुख्य उद्देश्य खाद्यान्न उत्पादन की दर को बनाये रखना एवं किसानों की आय को वर्ष 2022 तक दोगुना करने पर केन्द्रित है। इसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अति महत्वपूर्ण भूमिका है। अपनी इस भूमिका को ध्यान में रखते हुए परिषद द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। इस दिशा में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा राज्यवार समन्वय समिति बनाई गई हैं जिसमें राज्य कृषि विश्वविद्यालय के कुलपतियों को अध्यक्ष बनाया गया है। इन समितियों का

किसानों की आय दोगुना करने पर डॉ. स्वामीनाथन के साथ आयोजित सम्मेलन

*सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प, **प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प, ***सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा), भा.कृ.अनु.प

मुख्य उद्देश्य किसानों की आय को दोगुना करने के लिए व्यापक रणनीति दस्तावेज तैयार करना है। इस प्रक्रिया में समिति द्वारा कृषि से जुड़े विभिन्न मंत्रालयों, विभागों व अन्य हितधारकों को शामिल किया गया है। इसी कड़ी में संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनका उद्देश्य वर्ष 2022 तक किसानों की आयु दोगुना करने के लिए भारत सरकार की प्रतिबद्धता के बारे में व्यापक स्तर पर जागरूकता को बढ़ाना था। दिनांक 19 अगस्त से 11 सितम्बर, 2017 के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्रों ने 4.5 लाख किसानों की सहभागिता से राष्ट्रीय स्तर के जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए । इन कार्यक्रमों में कुल मिलाकर 74 केन्द्रीय मंत्रियों, लोक सभा तथा राज्य सभा के 286 संसद सदस्यों, विभिन्न राज्यों के 111 मंत्रियों, 350 विधायकों तथा जिला पंचायत के 391 अध्यक्षों ने हिस्सा लिया। इसके अलावा इन कार्यक्रमों में 178 जिला मजिस्ट्रेट और 2176 बैंक अधिकारियों ने भी हिस्सा लिया। आयोजित किए गए कुल 565 कार्यक्रमों में से 315 कार्यक्रमों को दूरदर्शन द्वारा सीधा प्रसारित किया गया तथा समारोह को 825 अन्य चैनलों द्वारा भी प्रसारित किया गया जिनमें निजी एवं स्थानीय चैनल भी शामिल थे।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की ओर देशभर के हितधारकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए गणतंत्र दिवस 2018 की परेड़ में पूरी तरह से कृषि को समर्पित ''मिश्रित खेती – खुशियों की खेती'' स्लोगन से सजी एवं भारतीय कृषि के विविध रंगों को संजोने वाली एक मनमोहक झांकी को प्रदर्शित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। देश के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है जब पूरी तरह से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को समर्पित झांकी को गणतंत्र दिवस की परेड़ में शामिल किया गया है। यह वर्तमान सरकार का कृषि एवं किसान के प्रति सम्मान और राष्ट्र के प्रति कृषि के महत्व को दर्शाता है।

गणतंत्र समारोह 2018 में भा.कृ.अनु.प. की झांकी

कृषि अनुसंधान

कृषि उत्पादन की बढ़ोतरी व टिकाऊपन में कृषि तकनीकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। देश की लगातार बढ़ रही जनसंख्या एवं विश्व में सर्वाधिक पशुधन संख्या का भरण

HD 2967 – पीले रतुआ से मुक्त इस किस्म की खेती गेहूं कृषि क्षेत्रफल के लगभग 30 प्रतिशत कृषि रकबे में की जाती है

पोषण करने और राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा में आत्मनिर्भरता हासिल करने में इनकी उल्लेखनीय भूमिका है। इस संबंध में जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों को ध्यान में रखकर जलवायु अनुकूल किस्मों की तकनीकों के विकास पर विशेष बल दिया गया। इस वर्ष पोषणिक सुरक्षा पर विशेष बल दिया गया और गेहूं, मक्का, बाजरा, सरसों व मसूर की जैब प्रबलित (Bio-Fortified) किस्में विकसित की गईं ताकि उपभोक्ताओं की पोषणिक क्षमता व स्वास्थ्य में सुधार हो। इस दिशा में, छोटे अनाजों की किस्मों और खेती पर विशेष ध्यान दिया गया है और छोटे अनाजों का ''Nutri-cerealS'' कहकर नामकरण किया गया है। कृषि एवं सहकारिता विभाग का इन अनाजों को पीडीएस प्रणाली में लाने का कार्यक्रम इनकी उत्पादकता व किसानों को काफी लाभ पहुंचाएगा। भाकृअनुप द्वारा विकसित अनेक फसल किस्में देश के कृषि उत्पादन में मुख्य योगदान दे रही हैं। भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR-IARI) द्वारा विकसित गेहूं की अग्रणी किस्म एचडी 2967 की खेती देश के गेहूं बुवाई क्षेत्र में 30 प्रतिशत से भी अधिक कृषि रकबे में की जाती है जबकि बासमती चावल की किस्म पूसा बासमती 1121 का विदेशी बाजार में उल्लेखनीय स्थान है। इस किस्म द्वारा प्रतिवर्ष रूपये 15,000 करोड़ से अधिक की विदेशी मुद्रा अर्जित की जा रही है।

भारत की कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्र (AER) एटलस को 1992 में तैयार किया गया था। इसे 450 से भी अधिक स्थानों, मृदा, जलवायु, बेहतर स्तर पर सूचना, भौगोलिक एवं जैव विविधता डाटा और पारिस्थितिकी एवं भूमि उपयोग

सूचना के लिए बढ़वार अवधि की लंबाई (LGP) की सूचना के आधार पर अद्यतन बनाया गया। नई एटलस टिकाऊ एवं बढ़ी हुई कृषि पारिस्थितिकीय संवेदनशीलता तथा पर्यावरणीय सुरक्षित कृषि उत्पादन प्रणालियों के लिए एकीकृत भूमि उपयोग योजनाएं बनाने हेतु उपयोगी है। प्रमुख बारानी फसलों में उपज अन्तराल को कम करने हेतु निर्णय समर्थित प्रणाली (Decision Support System) विकसित की गई। इस प्रणाली के अंतर्गत किसान फसल की खेती वाले किसी भी जिले तथा किसी भी फसल को चुन सकता है। इस प्रणाली द्वारा जिले की मृदा में जलवायु एवं उपलब्ध जल धारण करने की क्षमता (AWHC) की जानकारी दी जाती है और जिले की फसल और उपज के तहत इलाके में किसी एक विशिष्ट मौसम तथा सिंचित क्षेत्र की हिस्सेदारी के बारे में जानकारी सुलभ कराई जाती है। परिषद द्वारा कुल 21 अन्वेषण कार्यक्रम चलाए गए और 1532 प्राप्तियों (Accessions) का संग्रह किया गया जिसमें 1095 खेती योग्य एवं 417 वन्य प्राप्तियां शामिल थीं। पौष्टिकता से भरपूर किस्मों का पता लगाने के लिए गेहूं के दानों में आयरन और जिंक की मात्रा के लिए 500 स्थानीय किस्मों (Landraces) के एक सेट की स्क्रीनिंग की गई। फलदार फसलों में केले की 55, नींबू प्रजाति की 20, अंगूर की 13, अमरूद की 23, कटहल की 29, लीची की 12 और आम की 44 प्राप्तियों (Accessions) को जननद्रव्य स्टॉक में सम्मिलित किया गया। फिलिपींस से लाई गई केला किस्म बेल्जियम भारतीय परिस्थितियों में आशाजनक पाई गई।

सब्जी की 17 किस्मों/संकर किस्मों यथा मटर की काशी अगेती; भिंडी की काशी वरदान; मिर्च की काशी सुर्ख, काशी अनमोल, काशी गौरव; पपरिका में काशी सिंदूरी; कद्दू में काशी हरित; खरबूजे में काशी मधु; टमाटर में काशी विशेष, काशी अमृत, काशी अनुपम, काशी हेमंत तथा काशी शरद; बैंगन में काशी संदेश और काशी तरू तथा लौकी में काशी बहार व काशी गंगा को पंजीकृत किया गया। हिमालयन पारिस्थितिकी से कुल 20 दुर्लभ आर्किड्स प्रजातियों का संग्रह किया। पशुओं और पोल्ट्री की नौ नई समष्टियों (Populations) का नस्लों के रूप में पंजीकरण किया गया जिसमें गोपशु की एक, बकरी और भेड़ प्रत्येक की दो–दो, सूअर की तीन तथा पोल्ट्री की एक नस्ल शामिल है। इन नई नस्लों को मिलाकर अब देश में पंजीकृत देसी नस्लों की संख्या 160 हो गई है जिसमें गोपशु की 40; भैंस की 13; बकरी की 26; भेड़ की 42; अश्व व टट्टू की 6; ऊंट की 9; सूअर की 6; गधे की 1; तथा पोल्ट्री की 17 नस्लें शामिल हैं। झारखण्ड और समीपवर्ती उत्तर–पूर्वी राज्यों के लिए उपयुक्त दोहरे प्रयोजन की चूजा प्रजाति 'झारसिम' (165–170 अण्डा उत्पादन) विकसित की गई। पशुधन के लिए तीन नए टीके और 15 नैदानिकी किट विकसित की गईं। राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (ICAR-NBFGR), लखनऊ द्वारा आंध्र प्रदेश की कृष्णा नदी प्रणाली के नागार्जुन बांध से पेंगासियस सिलासी और मणिपुर में जिरी नदी से आस्ट्रियोबामा सेराटा नाम की दो नई मत्स्य प्रजातियां खोजी गईं। भाकृअनुप द्वारा अभी तक कुल 623 जिला कृषि आकस्मिकता योजनाएं तैयार की गईं और उन्हें परिषद तथा कृषि व सहकारिता विभाग की वेबसाइट पर अपलोड किया गया तथा साथ ही इन्हें राज्य कृषि विश्वविद्यालयों को भी सुलभ कराया गया।

विवेक हाइब्रिड मक्का 27

काबुली चना – मीरा (जीएनजी 2171)

फसल सुधार

अनुसंधान परिणामों को किसानों के खेतों तक पहुंचाने के प्रयोजन से परिषद द्वारा वर्ष 2017 के दौरान चावल की 65; गेहूं की 14; मक्का की 24; मंडुआ की 5; बाजरा की 3; ज्वार, जौ और कंगनी, कुटकी, कोदो गौण अनाज व प्रोसो मिलेट प्रत्येक की 1–1 किस्म सहित अनाजों की कुल 117 अधिक पैदावार देने वाली किस्मों/संकर किस्मों को देश के विभिन्न कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में खेती के लिए जारी किया गया। तिलहनी फसलों में तोरिया–सरसों की 8; सोयाबीन की 5; मूंगफली व अलसी प्रत्येक की 4–4; सूरजमुखी की 3; अरंडी व रामतिल प्रत्येक की 2–2 किस्मों सहित तिलहन की कुल 28 अधिक पैदावार देने वाली किस्मों को खेती के लिए जारी किया गया। दलहन उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता लाने के लिए देशभर में 150 सीड हब स्थापित किए गए

जिसके परिणामस्वरूप दालों का 22.95 मिलियन टन रिकॉर्ड उत्पादन हुआ। दलहन में, काबुली चने की 10; मसूर की 6; लोबिया की 4; मूंग की 3; अरहर, कुल्थी व मटर प्रत्येक की 2–2; उड़द, राजमा व फबाबीन प्रत्येक की 1–1 किस्म सहित दलहन की अधिक उपज देने वाली कुल 32 किस्मों को देश के विभिन्न पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में खेती के लिए जारी किया गया। व्यावसायिक फसलों में अधिक पैदावार देने वाली कुल 24 किस्मों को खेती के लिए जारी किया गया जिनमें कपास की 13; गन्ना की 8; तथा पटसन की 3 किस्में शामिल थीं। पशुधन का भरण पोषण करने के प्रयोजन से चारा फसलों में अधिक पैदावार देने वाली कुल 8 किस्मों/संकर किस्मों को खेती के लिए जारी किया गया जिनमें जई की 3; बाजरा नेपियर हाइब्रिड, चारा ज्वार, चौलाई, चारा लोबिया और मार्वल घास प्रत्येक की 1–1 किस्में शामिल थीं।

लीची किस्म गंडकी सम्पदा

बागवानी फसलों में, अमरूद की किस्म सीआईएसएच–जी–14 जो कि अमरूद इलाहाबाद सफेदा की एक अर्ध–सहोदर है, को आशाजनक पाया गया। इस किस्म में 12.50 ब्रिक्स कुल घुलनशील ठोस पदार्थ अंश (TSS) है। जारी की गईं लीची किस्मों में गंडकी सम्पदा में बड़े आकार के फल (36.85 ग्राम), उच्च गूदा प्राप्ति (80 प्रतिशत से अधिक) और 120 – 140 किग्रा./वृक्ष की उपज पाई जाती है।

अमरूद किस्म सीआईएसएच–जी–14

अनार में सोलापुर लाल एक आशाजनक संकर किस्म है जो कि अगेती परिपक्वता (160–165 दिन) वाली किस्म है और इसकी उपज क्षमता 23–27 टन/हेक्टेयर है। इसमें बेहतर टीएसएस (17.5 – 17.70 ब्रिक्स), विटामिन सी (19.4 – 19.8 मिग्रा./100 ग्राम) और एंथोसाइनिन तत्व (385–395 मिग्रा./100 ग्राम) होता है तथा साथ ही इसमें आयरन की मात्रा भी अधिक होती है। नारियल में कल्पा शताब्दी एक नई किस्म विकसित की गई जिसमें बड़े आकार के फल आते हैं। कल्पा शताब्दी किस्म को केरल, कर्नाटक, तमिल नाडु के

अनार किस्म सोलापुर लाल

नारियल उत्पादक क्षेत्रों में खेती करने के लिए संस्तुत किया गया है। लाल प्याज की दो किस्मों, खरीफ के लिए भीमा सुपर और रबी के लिए भीमा शक्ति की सिफारिश की गई है। इनकी उपज क्षमता क्रमशः 22–26 टन/हे. एवं 32–36 टन/हे. है। आलू में पिछेता झुलसा रोग की मध्यम सहिष्णु किस्म कुफरी मोहन की उपज क्षमता 40 टन प्रति हेक्टेयर पाई गई है।

मसाला किस्मों में रामुलेरिया अंगमारी रोग की मध्यम प्रतिरोधी और उच्च उपज (17.9 क्विंटल प्रति हेक्टेयर) क्षमता वाली

सौंफ की किस्म अजमेर फेनल–2 को खेती के लिए जारी किया गया। छोटी कृषिजोत वाले किसानों के लिए भाकृअनुप ने देश के 15 कृषि जलवायु क्षेत्रों को शामिल करते हुए कुल 45 एकीकृत कृषि प्रणाली (IFS) मॉडल तथा 42 जैविक प्रौद्योगिकियां विकसित की हैं।

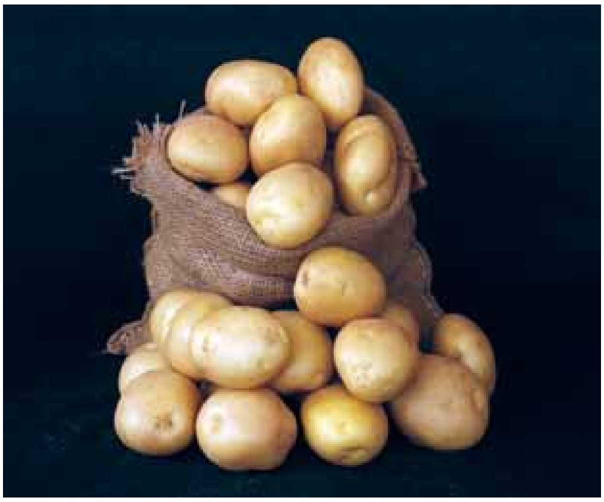

आलू किस्म कुफरी मोहन

गन्ना किस्म Co 92005

अजमेर फेनल – 2

मूंग – पूसा 1371

पशुधन सुधार

देसी नस्ल परियोजना के अंतर्गत गिर (24), साहीवाल (26) और कांकरेज (26) के सांडों को संतति परीक्षण के तीन विभिन्न सेटों में उपयोग किया गया । देशभर में पशु नस्ल में सुधार लाने के प्रयोजन से फ्रीजवाल, गिर, कांकरेज और साहीवाल सांड की हिमीकृत वीर्य खुराकें उत्पन्न करके उनका वितरण किया गया। वर्तमान में फ्रीजवाल (19,37,000), गिर (1,21,848), कांकरेज (1,11,690) तथा साहीवाल (83,802) की वीर्य खुराकें उपलब्ध हैं। भेड़ों में 450 प्रजननशील मादाओं सहित 873 मालपुरा भेड़ों का झुंड तैयार किया गया और प्रजननशील 2,628 मादा भेड़ों के लिए 51 प्रजननशील नर भेड़ उपलब्ध कराये गये। बकरी पालकों को श्रेष्ठ जमुनापरी, बारबरी और जखराना बकरियों की आपूर्ति की गई। सूअरों की तेजी से वृद्धि प्राप्त करने वाली किस्में नामतः रानी और आशा विकसित करके पालन के लिए जारी की गईं। कुक्कुट की विभिन्न प्रजातियों यथा मुर्गा, बत्तख, पेरू और गिनी फाउल के लिए एकल वीर्य तनुकारक विकसित किया गया जो प्रजनन क्षमता में बिना कोई कमी लाये 80 सेल्सियस पर 24–48 घंटे तक नर पक्षी के वीर्य का भंडारण करने में सक्षम है। इस तकनीक से श्रेष्ठ नर कुक्कुटों का वीर्य न केवल देशभर में वरन् विदेशों में भी वायुयान द्वारा आसानी से लाया ले जाया जा सकता है और यह श्रेष्ठ जननद्रव्य के गुणनीकरण को सफल बनाने में महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

यंत्रीकरण एवं ऊर्जा प्रबंधन

विभिन्न कृषि प्रणालियों की उत्पादकता तथा लाभप्रदता बढ़ाने, उत्पादन एवं फसलोपरांत उत्पादन के लिए जरूरत आधारित और स्थान विशिष्ट यंत्रीकरण हेतु मशीनरी एवं ऊर्जा प्रबंधन प्रौद्योगिकियां विकसित की गई हैं। इनमें कुशल कृषि कार्य संचालन, संसाधन संरक्षण, प्रसंस्करण के लिए उन्नत मशीनरी; नवीनीकृत ऊर्जा प्रौद्योगिकियां; कृषिरत महिलाओं के लिए महिला अनुकूल एवं श्रम को कम करने वाले औजार; किसानों की आय को बढ़ाने के लिए पशु उर्जा का दक्षतापूर्ण उपयोग शामिल है। मेड़ बनाने, उर्वरक डालने, पलवार बिछाने, ड्रिप बिछाने, प्रेस व्हील, छेदक रोपण इकाई वाली एक रोपण मशीन विकसित की गई । यह एक बार में जरूरत के अनुसार सभी कार्य कर सकती है। धान के खेत में पारम्परिक तरीके से मैनुअल रूप से खरपतवार निकालने में लगभग 300 मानव घंटे/हे. की जरूरत पड़ती है। इसमें श्रम के साथ साथ लागत भी अधिक आती है। इस समस्या के समाधान हेतु एक पांच पंक्ति वाला धान वीडर एटैचमेन्ट विकसित किया गया जो कि बहु उपयोगी है। मसालों को सुखाने के लिए अप्रत्यक्ष सौर बायोमास हाइब्रिड प्रणाली विकसित की गई जिसकी शुष्कन क्षमता 25 किग्रा. है।

रोपण मशीन

बुनियादी सुविधा विकास

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा को पंख प्रदान करने की परिषद की प्रतिबद्धता को साकार करते हुए माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिनांक 26 मई, 2017 को गोगामुख, धीमाजी, असम में आईएआरआई–असम का शिलान्यास किया गया। इससे पहले आईएआरआई–झारखंड का शिलान्यास किया जा चुका है। कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के क्षेत्र में यह एक विशेष उपलब्धि है और आशा की जाती है कि अगली हरित क्रान्ति का उद्घोष भारत के पूर्वी एवं पूर्वोत्तर राज्यों से होगा। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिनांक 11 अक्तूबर, 2017 को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR-IARI), पूसा, नई दिल्ली में नानाजी देशमुख पादप फिनोमिक्स सुविधा का उद्घाटन किया गया। यह एक विश्व स्तरीय सुविधा है जिसमें उच्च तकनीक वाला जलवायु नियंत्रक ग्रीनहाउस शामिल है। इस वर्ष भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-IASRI), नई दिल्ली में आईसीएआर डाटा सेंटर का उद्घाटन किया गया। आंध्र प्रदेश में कृषि विश्वविद्यालय तथा तेलंगाना में बागवानी विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए वित्तीय सहायता दी गई। अब तक प्रत्येक विश्वविद्यालय को रूपये 135.00 करोड़ की राशि जारी की गई है।

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा आईएआरआई–असम का शिलान्यास

माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार द्वारा आईसीएआर डाटा सेंटर का उद्घाटन

कृषि विस्तार

किसानों तक विज्ञान की पहुंच स्थापित करने में कृषि विस्तार को महत्व देते हुए कुल 18 नए कृषि विज्ञान केन्द्र अनुमोदित किए गए जिससे अब कृषि विज्ञान केन्द्रों की संख्या पिछले वर्ष के 663 के मुकाबले बढ़कर 681 हो गई है। देश में अग्रिम पंक्ति प्रसार प्रणाली के तौर पर कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। इस वर्ष कुल 49,678 प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए जिनके माध्यम से कुल 14.21 लाख किसानों, कृषिरत महिलाओं और प्रसार कार्मिकों को लाभ पहुंचाया गया। कुल 1.75 लाख ग्रामीण युवकों के लिए 6788 कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 1.14 लाख प्रसार कार्मिकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें 28614 (25 प्रतिशत) महिला प्रतिभागी थीं। परिषद द्वारा वर्ष के दौरान कुल 1,82,696 अग्रिम पंक्ति

प्रदर्शन आयोजित किए गए जिसमें 66,203 हेक्टेयर कृषि क्षेत्र को शामिल किया गया। मेरा गांव – मेरा गौरव कार्यक्रम के तहत चार वैज्ञानिकों की एक टीम द्वारा पांच गांवों को अंगीकृत किया जाता है और वहां किसानों को कृषि संबंधी परामर्श एवं जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। इस वर्ष परिषद के संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के अंतर्गत 4774 वैज्ञानिकों को शामिल करके कुल 1226 वैज्ञानिक टीमें बनाई गईं। इस कार्यक्रम के तहत अभी तक कुल 9,76,033 किसान और 5,346 गांव लाभान्वित हुए । इस नवीन पहल से 'किसान के द्वार – विज्ञान का प्रसार' की अवधारणा को निश्चित रूप से बल मिला है।

कृषि शिक्षा

राष्ट्रीय कृषि शिक्षा प्रत्यायन बोर्ड (NAEAB) द्वारा इस वर्ष 10 कृषि विश्वविद्यालयों का प्रत्यायन किया गया जिससे अभी तक कुल 60 कृषि विश्वविद्यालयों का प्रत्यायन किया जा चुका है। वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में भारतीय विश्वविद्यालयों की स्थिति में सुधार लाने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग तैयार की गई। कुल 57 कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग की गई है। नवीन पहलों के तहत, कृषि और सम्बद्ध विषयों को व्यावसायिक डिग्री घोषित किया गया। नए कॉलेज खोलने के लिए न्यूनतम मानदण्ड तैयार किए गए, यूजी व पीजी छात्रों के लिए छात्रवृति की राशि को बढ़ाकर क्रमशः 2000/– एवं 3000/– प्रतिमाह किया गया। ऑन–लाइन काउन्सलिंग प्रणाली विकसित की गई और परिषद के मानद विश्वविद्यालयों के लिए शैक्षणिक प्रबंधन प्रणाली को लागू किया गया। इस वर्ष पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण के लिए पुस्तकालय सुदृढ़ीकरण अनुदान की रूपये 12.05 करोड़ राशि का उपयोग किया गया। छात्र पोर्टल, अनुदान, प्रत्यायन तथा ऑन–लाइन परीक्षा प्रबंधन प्रणाली के एकीकरण द्वारा कृषि शिक्षा पोर्टल (EKTA) का विकास किया गया।

सूचना प्रौद्योगिकी – एक गेम चेंजर

किसी भी राष्ट्र के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस दिशा में भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। ''डिजिटल इंडिया'' जैसी पहल से भारतीय समाज में अति पिछड़े लोगों के जीवन में भी बदलाव लाया है। ''ग्रामीण भारत में उभर रहे उपभोक्ता'' पर बोस्टन कन्सलटेटिव ग्रुप द्वारा किए गए अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है कि वर्ष 2020 तक स्मार्ट मोबाइल फोन के उपयोग में ग्रामीण भारत की भागीदारी बढ़कर 48 प्रतिशत तक हो जाएगी। सरकारी योजनाओं का किसानों को तुरंत एवं तेजी से लाभ पहुंचाने हेतु विभिन्न मोबाइल ऐप तथा अन्य टूल्स का विकास करने में कृषि आधारित सूचना एवं प्रौद्योगिकियां ''डिजिटल कृषि'' की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। आज हमारे किसान विभिन्न मोबाइल ऐप तथा वेब पोर्टल के माध्यम से इस प्रौद्योगिकी का लाभ उठा रहे हैं। भारत में कृषि विस्तार नेटवर्क के प्रमुख वाहक कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा इस प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए ''जानकारी नेटवर्क'' को मजबूती प्रदान की गई। ''किसान कॉल सेंटर'' तथा पशुधन रोग पूर्वानुमान–मोबाइल ऐप (LDF मोबाइल ऐप) तथा वर्ष 2016 में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रारंभ की गई ''किसान सुविधा'' एक व्यापक एवं बहुभाषीय मोबाइल ऐप है जिसके द्वारा वर्तमान मौसम पर, अगले पांच दिनों के पूर्वानुमान तथा बाजार मूल्यों आदि पर जानकारी प्रदान की जाती है। 2016 में प्रारंभ किए गए पूसा कृषि प्रौद्योगिकी मोबाइल ऐप का उद्देश्य भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR-IARI) तथा भाकृअनुप के अन्य संस्थानों द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों एवं अन्य जानकारियों को किसानों तक पहुंचाना है। कृषि वोल्टेक प्रणाली (AVS) की स्थापना से किसानों की आय में निश्चित रूप से वृद्धि होगी।

इसी तरह अन्य महत्वपूर्ण ऐप जो किसानों को सेवाएं और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं, उनमें आरएमएल फार्मर–कृषि मित्र, एग्रीऐप, खेती–बाड़ी, वॉट्स ऐप, कृषि ज्ञान, फसल बीमा, फार्म–ओ–पीडिया, पशु पोषण, तथा पोल्ट्री एवं कृषि बाजार के लिए ऐप शामिल हैं। इसके अलावा किसानों को विशेष जानकारी प्रदान करने वाले अनेक मोबाइल ऐप भी उपलब्ध हैं जैसे कि "riceXpert", ई–कपास, नेटवर्क एवं प्रौद्योगिकी प्रलेखन, नाशीजीवों एवं रोगों के लिए PulsExpert, e-pest सर्विलांस एवं परामर्श, बागवानी फसलों के लिए प्रणाली, ऑन लाइन नाशीजीव मॉनीटरिंग एवं परामर्श सेवाएं, नाशीजीव पूर्वानुमान ऐप, KRISHI डिजिटल डाटा पोर्टल। किसानों के लिए विकसित इन सभी मोबाइल ऐप के माध्यम से उनकी प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने और अधिक उत्पादन के माध्यम से उनकी आय को बढ़ाने में मदद की जा रही है। इसके अलावा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और राज्य कृषि विभागों द्वारा किसान समुदाय की मदद करने के प्रयोजन से क्षेत्रीय भाषाओं में भी अनेक अन्य सूचना प्रौद्योगिकी टूल्स विकसित किए गए हैं। कृषि क्षेत्र में ऐसे और अधिक उद्यमों की जरूरत है ताकि सार्वजनिक–निजी भागीदारी के माध्यम से कृषि को कहीं अधिक पेशेवर और व्यवसाय उन्मुख बनाया जा सके।

कृषि ड्रोन, पौधों में सटीक जीन सम्पादन, एपी–आनुवंशिकी, वायरलेस सेंसर नेटवर्क, स्मार्ट विन्ड व सोलर पॉवर, रोबोटिक्स, तथा मेगा स्तरीय गैर–लवणीकरण (desalination) का उपयोग जैसे इनोवेशन से निश्चित तौर पर विश्व में कृषि के भविष्य में आमूल–चूल बदलाव आएगा। इससे निश्चित तौर पर भारत में ''सदाबहार हरित क्रान्ति'' हासिल करने में मदद

मिलेगी जिसकी परिकल्पना भारत की हरित क्रान्ति के जनक डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन द्वारा की गई थी। इससे निःसंदेह वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने में मदद मिलेगी जिसका लक्ष्य हमारे माननीय प्रधान मंत्री द्वारा रखा गया है।

खाद्य एवं पौषणिक सुरक्षा–चुनौतियों को पूरा करना

जहां तक कृषि क्षेत्र का संबंध है, भारत आज एक ऐसे दोराहे पर खड़ा है, जहां एक ओर हमें इस देश की 1.25 बिलियन जनसंख्या की खाद्य एवं पोषणिक सुरक्षा के बारे में सोचने की जरूरत है वहीं दूसरी ओर हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर लगातार बढ़ रहे दबाव, व्यापक स्तरीय शहरीकरण, भूमि का विखण्डन, बदलती खाद्य आदतें, कृषि के मुकाबले में अन्य क्षेत्रों में हमारे ग्रामीण युवाओं के आकर्षण जैसे मुद्दे भी हमें चिन्तित करते हैं। हालांकि, वर्तमान परिस्थितियों में हमें इनका सकारात्मक समाधान खोजने की जरूरत है और भारत सरकार तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा इस दिशा में अनेक नवोन्मेषी प्रौद्योगिकियां और नीतिगत पहल का प्रस्ताव किया जा रहा है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भारत खाद्य उत्पादन के मामले में आत्म निर्भर बना रहे। आधुनिक प्रौद्योगिकीय टूल्स के साथ कृषि, डिजिटल एवं इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकियों के समावेश से आने वाले वर्षों में भारतीय कृषि में क्रान्ति आएगी। हालांकि, हमें उत्पादन और उत्पादकता में टिकाऊ वृद्धि के लिए कृषि में निवेश को बढ़ाने की अविलम्ब आवश्यकता है।

आकलन के अनुसार, वर्ष 2050 तक भारत की जनसंख्या लगभग 1.7 बिलियन के स्तर तक पहुंच जाएगी और इतनी विशाल जनसंख्या के लिए खाद्य एवं पोषणिक सुरक्षा सुनिश्चित करना वास्तव में एक बड़ी चुनौती होगा। इस दिशा में, भारतीय कृषि में प्रौद्योगिकी एवं इनोवेशन का उपयोग करना ही एकमात्र उपाय होगा। आने वाले दो दशकों के दौरान प्रौद्योगिकी सृजन, हस्तांतरण तथा अनुकूलन पर हर संभव प्रयास किए जाने चाहिए। विभिन्न कृषि संघटकों को एकीकृत करने, कटाई उपरान्त नुकसान में कमी लाने, मूल्य श्रृंखला को मजबूती प्रदान करने और किसानों की आय को बढ़ाने में उन्हें बाजार उपलब्ध कराने हेतु भविष्य के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का विजन बेहतर प्रौद्योगिकीय सहयोग के साथ 'स्मार्ट फार्म' को प्रोत्साहित करना है। राष्ट्र निर्माण में कृषि के महत्व को इस कथन द्वारा बेहतर तरीके से समझा जा सकता है : ''यदि कृषि बची रहती है, तब भारत भी बचा रहेगा''। इसलिए, हमें हमारी अर्थव्यवस्था की मेरूदण्ड कृषि को सभी तरीकों से नियमित रूप से नवोन्मेष प्रदान करने, इसमें निवेश को बढ़ाने और सहयोग करने की जरूरत है।

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

– मैथिलीशरण गुप्त

हिमांक संरक्षण (क्रायोप्रिजर्वेशन) तकनीकी से भारतीय प्रमुख कार्प प्रजनक मछलियों का नस्ल सुधार

धनंजय कुमार वर्मा* एवं पद्यमान राउत राय*

परिचय

हाल के वर्षों में भारतीय मत्स्यपालन गतिशील रूप से एक विकासशील क्षेत्र बन गया है जिससे कई नए अवसर पैदा हो रहे हैं। पिछले ढाई दशकों में सात गुना वृद्धि अर्थात 1980 में 0.37 मिलियन टन के मुकाबले वर्तमान में बढ़कर 2.84 मिलियन टन हो गया है जिससे मत्स्य पालन एक भरोसेमंद क्षेत्र के रुप में उभर कर सामने आया है। देश के कुल उत्पादन का 95% तक हिस्सा बरकरार रख कार्प ने देश के मीठे पानी के मत्स्यपालन उत्पादन पर प्रभुत्व बरकरार रखा है। भारत मूल रूप से एक कार्प देश है एवं मत्स्य उत्पादन में दोनों देशी और विदेशी कार्प मछलियों की बड़ी हिस्सेदारी हैं। तीन भारतीय प्रमुख कार्प अर्थात कतला (*कतला कतला*), रोहू (*लेबिओ रोहिता*), मृगल (*सिरहन मृगला*) 1.8 मिलियन टन के रूप में योगदान करते हैं एवं तीन विदेशी कार्प अर्थात् सिल्वर कार्प (*हाहाइपफोथेलमिक्स मोलिट्रिक्स*), ग्रास कार्प (*टिनोफोरींगोडोन आईडीईला*) और कॉमन कार्प (*साइप्रइनस कार्पियो*) दूसरी सबसे महत्वपूर्ण मछलियां हैं। इस क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण इनपुट मत्स्य बीज है जो पूरे देश में विभिन्न हैचरी से उपलब्ध कराया जा रहा है।

मत्स्य बीज की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए यह जरुरी है कि अच्छी तरह से प्रजनक पालन पद्धति को अपनाया जाए और नियमित अंतराल पर प्रजनक मछलियों के स्टॉक की अदला बदली और पुनःपूर्ति करना महत्वपूर्ण है। यह मुख्य रूप से हैचरी में मछलियों में होने वाले अंतः प्रजनन (inbreeding) की समस्या से बचने के लिए किया जाता है। हाल ही में हैचरी प्रजनित बीजों की खराब वृद्धि मत्स्य पालन समुदायों में एक वास्तविक चिंता रही है। यह बताया गया है कि अंतःप्रजनन के कारण होने वाली हानि प्रति वर्ष 2% पाई गई है। अंतःप्रजनन का कारण कई पीढियों से हैचरी में एक ही स्टॉक बनाए रखने एवं निकट संबंधित मछलियों में प्रजनन के कारण होता है। आनुवंशिक रूप से अंतःप्रजनन होमोजीगोसिटी की ओर ले जाता है। लगभग सभी व्यक्तियों में एक हानिकारक असामान्य (रिसेसिव) जीन होते है, जो विषम (हेटेरोजाइगस) अवस्था में छिपे रहते हैं। संबंधित व्यक्तियों में सामान्य जीनों को साझा करने की संभावना बनी रहती हैं और माता–पिता के बीच निकटता में वृद्धि होने से हानिकारक असामान्य जीनों की जोड़ी की संभावना बढ़ जाती है। जिसके कारण विकास, रोग प्रतिरोध और उत्तरजीविता में कमी के साथ जनसंख्या में अंतःप्रजनन (इनब्रीडिंग) की स्थिति पैदा हो जाती है। स्टॉक की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए, प्राथमिक रणनीति प्रजनक स्टॉक मछलियों का आदान प्रदान करना है। लेकिन परिवहन की बोझिल प्रक्रिया और परिवहन के दौरान प्रजनक मछलियों की होने वाली मृत्यु मछलियों के नस्ल उन्नयन में एक मुख्य बाधा रही है। इस पर काबू पाने के लिए एक प्रभावी रणनीति असंबंधित स्वस्थ मछलियों के स्टॉक का वीर्य (मिल्ट) का संरक्षण करना और भारत के विभिन्न हैचरी में उपयोग कर मछलियों के नस्ल में सुधार करना है। इस प्रकार हैचरी प्रबंधकों को गुणवत्ता के बारे में आश्वासन दिया जा सकता है और 10 मिलीलीटर कार्प के हिमांक संरक्षित मिल्ट से 1–2 लाख बीज का उत्पादन कर आसानी के परिवहन किया जा सकता है। इसके अलावा, छोटे प्रक्षेत्रों में प्रजनन के दौरान नर प्रजनक मछलियों की अनुपलब्धता हमेशा पायी जाती है। हैचरी मालिक/प्रबंधक प्रक्षेत्र में अधिक मादा मछली पालन कर सकते है और इस तरह सीमित प्रक्षेत्र से संरक्षित मिल्ट का उपयोग कर मत्स्य बीज का अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। इसी प्रकार की रणनीति ने देश में पशुओं के क्षेत्र में चमत्कार और क्रांति ला दी है। इसके अलावा, संरक्षित मिल्ट के उपयोग से बीज उत्पादक स्तरों पर आनुवंशिक उन्नयन के क्षेत्र पर गुणक प्रभाव होगा क्योंकि यह प्रभाव मछली पालन के लिए लाभकारी होता है और अंततः देश के मत्स्य बीज उत्पादकों के आय को दोगुना करने में भी मददगार साबित होगा।

*केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, कौशल्यागंगा, भुवनेश्वर, ओडिशा, भारत

जनन कोष सरंक्षण (Gamete Preservation)

जनन कोष के सरंक्षण की भूमिका का महत्व मत्स्य बीज उत्पादन एवं प्रजनक मछलियों के जीन सम्बंधी प्रबंधन में बढ़ता जा रहा हैं। मछलियों के वीर्य के संरक्षण की तकनीकी मुख्यत: स्थापित की गई हैं। जनन कोष में शुक्राणु को कई सप्ताह तक संरक्षित कर ज्यादा अंडों का निषेचन करने में मदद मिल सकती है। जनन कोष को हिमोक संरक्षण करके जीन संसाधन को लम्बे समय तक संचय कर सकते हैं। अभी तक मीठा जल एवं खारा जल की 350 से अधिक प्रजातियों के जनन कोष के संरक्षण में काफी हद तक सफलता प्राप्त कर ली गई है। लेकिन आज तक टिकाऊ अंडों एवं भ्रूण का हिमीकरण की तकनीक का सफल प्रदर्शन नहीं किया जा सका है।

सभी संरक्षण तकनीकी का मुख्य उद्देश्य भण्डारण के तापक्रम को कम करके जनन कोष के संरक्षण की अवधि को बढ़ाना एवं इसके चयापचयी भार को कम करना है। इस विधि का व्यापक उपयोग जीव विज्ञान, जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी और संरक्षण में किया जा सकता हैं। जर्म प्लाज्मा के हिमांक संरक्षण में शुक्राणु, अंडा एवं भ्रूण का भण्डारण शामिल है और सीधे पशु प्रजनन कार्यक्रम में योगदान देता है। जर्म प्लाज्म हिमांक संरक्षण विलुप्त और लुप्तप्राय: मत्स्य प्रजातियों के जीनोम का संचयन के लिए एक्स सीटू संरक्षण में भी सहायता करता है। हिमांक संरक्षण का उपयोग कर जर्मप्लाज्म बैंक की स्थापना भविष्य में संरक्षण एवं मौजूदा आबादी में योगदान दे सकता है। सही संचयन तकनीकी एवं संचयन स्थिति में जनन कोष का संरक्षण हजारों वर्षों तक किया जा सकता है। चयनित जनन कोष को कुछ अवधि तक जीवित रखने के लिए संचयन की आवश्यकता पड़ती है। संचयन लघु अवधि (गैर–क्रायोजेनिक) या दीर्घकालिक संचयन (हिमांक सरंक्षण) हो सकता हैं।

मिल्ट नमूनों को दोनों तरह के संरक्षण के लिए थोड़ी हाइपरटोनिक इलेक्ट्रोलाइट मीडियम में तनुकृत किया जाता है जिसे एक्सटेंडर कहा जाता है। कुछ व्यावहारिक एक्सटेंडर तालिका 1 में दिखाया गया है।

लघु अवधि (गैर–क्रायोजेनिक) संरक्षण

शून्य तापक्रम या शीतल अवस्था में जनन कोष का संरक्षण 3–4 दिनों तक बिना हिमांक संरक्षण के किया जा सकता है जिसे अल्प अवधि संचयन तकनीक कहते हैं। कृत्रिम गर्भाधान और नियंत्रित प्रजनन कार्यक्रमों के दौरान मछली के नर जनन कोषों का सर्वोत्तम उपयोग का एक सिद्ध तरीकों में 1–2 दिनों के लिए वीर्य का अल्प अवधि संचयन कर उपयोग करना है। मिल्ट (वीर्य) नमूनों को एक्सटेंडर के साथ तनुकृत कर बर्फ के साथ थर्मोकोल चेम्बर या रेफ्रीजिरेटर में भण्डारण किया जाता है। यह विभिन्न नर और मादा गुणों के विभिन्न सिब प्रजनन को डिजाइन करने के लिए उपयोगी है। मछलियों के मिल्ट को तनुकृत करने के विभिन्न एक्सटेंडर उपलब्ध (तालिका 1) हैं। एक्सटेंडर–सी का उपयोग अल्प अवधि संचयन तकनीक के लिए अधिक आसान और प्रभावी पाया गया है। अच्छे परिणाम के लिए संरक्षित मिल्ट नमूनों को अंडे के साथ वीर्यरोपण के पूर्व कमरे के तापक्रम में लाया जाता है। जहां तरल नाइट्रोजन की उपलब्धता एक समस्या है वहां अल्प अवधि संरक्षण विधि बहुत ही आसान है। सीफा में इस विधि का उपयोग कर 4 डिग्री से. तापक्रम में कतला का नर जनन कोष का दूरदराज स्थान जैसे की अंडमान निकोबार द्वीप समूह से ओडिशा तक सफलतापूर्वक परिवहन किया गया। एक कतला मादा से एकत्रित अंडे के साथ निषेचन करने पर 70 प्रतिशत निषेचन और 40 प्रतिशत हैचलिंग प्राप्त किया जा सका है। सीआईएफए में किए गए अध्ययन से पता चला है कि कृत्रिम निषेचन से पहले भारतीय प्रमुख कार्प वीर्य को 4 डिग्री सेल्सियस तापमान पर अठारह घंटे के लिए सफलतापूर्वक संरक्षित किया जा सकता है।

तालिका 1: एक्सटेंडर का संघटक

एक्सटेंडर	संघटक
ए	सोडियम क्लोराइड –400 मिली ग्राम; कैल्शियम क्लोराइड–23 मि.ग्रा.; पोटैशियम क्लोराइड –38 मि.ग्रा.; सोडियम हाइड्रोजन कार्बोनेट–100 मि.ग्रा.; सोडियम डाइ हाइड्रोजन फॉस्फेट 41 मि.ग्रा.; मैग्नीशियम सलफेट–23 मि.ग्रा.; को 100 मिली डिस्टिल्ड वाटर में घोलें
बी	सोडियम क्लोराइड–600 मिली ग्राम; कैल्शियम क्लोराइड–23 मि.ग्रा.; पोटैशियम क्लोराइड–38 मिग्रा; सोडियम हाइड्रोजन कार्बोनेट–100 मिग्रा; सोडियम डाइ हाइड्रोजन फॉस्फेट 41 मिग्रा; मैग्नीशियम सलफेट –23 मिग्रा; को 100 मिली डिस्टिल्ड वाटर में घोलें
सी	सोडियम क्लोराइड–750 मिली ग्राम; कैल्शियम क्लोराइड –20 मि.ग्रा.; पोटैशियम क्लोराइड –30 मि.ग्रा.; सोडियम हाइड्रोजन कार्बोनेट–20 मि.ग्रा. को 100 मिली डिस्टिल्ड वाटर में घोलें.

दीर्घकालिक (हिमांक या क्रायोजेनिक) संरक्षण

जीवन क्षमता को लम्बे समय तक बनाए रखने के लिए जनन कोष का संरक्षण हिमांक संरक्षण (क्रायोप्रिजर्वेशन) के माध्यम से किया जा सकता है। शुक्राणु को वर्षों तक तरल नाइट्रोजन में संग्रहित किया जा सकता है, जहां इस तापमान में एक जीवित कोशिका के सभी जैव रासायनिक क्रियाकलाप लगभग रुक जाते हैं। सही क्रायोप्रिजर्वेशन की संचयन तकनीकी एवं संचयन स्थिति में जनन कोष का संरक्षण हजारों वर्षो तक किया जा सकता है। वीर्य (मिल्ट) को एक्सटेंडर के साथ तनुकृत किया जाता है और क्रायोप्रोटेक्टेंट के साथ मिलाया जाता है। क्रायोप्रोटेक्टेंट एक रसायन है जो फ्रीजिंग के दौरान द्रुतशीतन नुकसान से कोशिकाओं को सुरक्षित रखता है।

जनन कोश संचयन की तकनीक मछली के प्रजनकों को निम्नलिखित तरीकों से मददगार साबित हो सकती हैं।

- नर एवं मादा का असामान्य समयों में परिपक्वता का होना हमेशा ही जनन कोष के गुणात्मक एवं संख्यात्मक क्षमता में ह्रास का कारण होता हैं। प्रजाति एवं जैव भौगोलिक क्षेत्र के कारण नर एवं मादा एक ही प्रजनन ऋतु में विभिन्न समय परिपक्व होते है। नर एवं मादा के गैर–संयोग परिपक्वता की समस्या को दूर किया जा सकता हैं, यदि शुक्राणु एवं अंडाणु का भण्डारण किया जा सकें।
- पालन योग्य प्रजातियों एवं प्रजनक मछलियों की संख्या एवं आकार का बीज उत्पादन के लिए जनन कोष में मुख्यतः शुक्राणु के संचयन की आवश्यकता बहु निषेचन को बढ़ावा देने के लिए पड़ती है। कभी कभी हैचरी संचालक को मादा प्रजनक हेतु नर मछलियों की छटनी के लिए अधिक समय लगता हैं, ऐसी स्थिति में वीर्य को अलग से एकत्रित कर बाद के प्रयोग हेतु संचयन किया जा सकता है। इस प्रकार बीज उत्पादन को कुछ हद तक बढाया जा सकता है।
- जनन कोष का संचयन मछलियों के चयनात्मक प्रजनन कार्यक्रम में अहम् भूमिका अदा कर सकते हैं। इससे स्वदेशी स्टॉक में सुधार एवं अपनी स्वदेशी प्रजातियों के प्रजनन और बेहतर स्टॉक के विशेष स्ट्रेन के उत्पादन में सहायक होगा।
- जनन कोष की हिमांक संरक्षण तकनीक स्वदेशी जर्मप्लाज्म के संरक्षण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी क्योंकि कई देशी भारतीय मछलियां विदेशी मछलियों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकती है। इस तकनीक से लुप्तप्रायः प्रजातियों के जनन कोष का क्रायोबैंक तैयार करने से प्रजातियों को पर्यावरणीय गड़बड़ी की वजह से आनुवंशिक परिवर्तनशीलता में कमी के खिलाफ बचाव के रूप में यह कार्य किया जा सकता हैं।
- यह एकल लिंग पालन के उत्पादन में मदद कर सकता है।
- यदि जनन कोष को सफलतापूर्वक संरक्षित किया जाता है तो हम अपनी आवश्यकता के अनुसार पूरे वर्ष मछली का विकास कर सकते हैं और जनसंख्या की आनुवंशिक मौलिकता को संरक्षित करने के लिए जीन बैंक को स्थापित कर सकते हैं एवं जीवित रहने की सामान्य स्थिति में सुधार होने के बाद पुनः शामिल करने के लिए उन्हें उपलब्ध कराने में सहायक हो सकता हैं ।

कार्प शुक्राणु के हिमांक संरक्षण (क्रायोप्रिजेर्वेशन) प्रोटोकॉल

कार्प शुक्राणु के हिमांक संरक्षण के सामान्य प्रोटोकॉल को चित्र में दर्शाया गया है और नीचे वर्णित किया गया है।

मिल्ट का संग्रहण एवं गुणवत्ता मूल्यांकन

पहला कदम शुक्राणुओं को एकत्रित करना है। आम तौर पर शुक्राणु स्वस्थ नर मछलियों से स्ट्रिपिंग विधि द्वारा एकत्र किए जाते हैं। भारतीय प्रमुख कार्प के स्वस्थ नर मछलियों को कार्प पिट्यूटरी घोल@2–3 ml/कि.ग्रा. या सिंथेटिक हार्मोन@0.1–0.2 मिली ग्रामः/किलो ग्राम शरीर के वजन के अनुसार प्रेरित किया जाना चाहिए और 3–4 घंटे के उत्प्रेरण के बाद वीर्य का संग्रह किया जाता है। वीर्य को कीटाणुरहित की गई सेंटरीफ्यूजड ट्यूबों में एकत्रित किया जाना चाहिए और रेफ्रिजरेटर में रखा जाना चाहिए। नमूना मूत्र और मल से मुक्त होना चाहिए। सामान्यतः वीर्य नमूनों का प्रसंस्करण इसके संग्रह के समय से एक घंटे के भीतर किया जाना चाहिए। यह आवश्यक है कि संरक्षण के पूर्व संग्रहित मिल्ट का गुणवत्ता मूल्यांकन किया जाए। यदि संग्रहित किए गए मिल्ट की गुणवत्ता ठीक है, तो ही आगे की प्रक्रिया करे, अन्यथा नए नर प्रजनक मछलियों से ताजा

हिमांक संरक्षण (क्रायोप्रिजेर्वेशन) प्रोटोकॉल

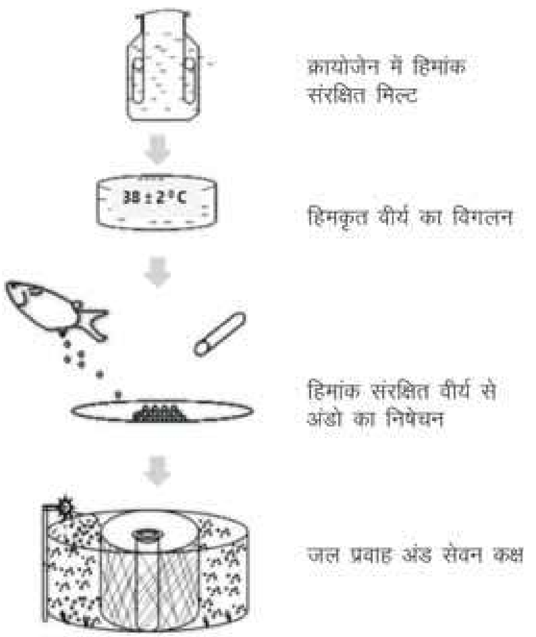

हिमांक संरक्षित मिल्ट का प्रक्षेत्र पर उपयोग

वीर्य का संग्रहण करें। मिल्ट का गुणवत्ता मूल्यांकन के लिए वीर्य का रंग, मात्रा, घनत्व, पीएच, शुक्राणुओं की गतिशीलता, शुक्राणुओं की संख्या, स्पेर्मटोक्रीट मान इत्यादि को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

गैर–प्रेरित कार्प मछलियां 0.5 से 1.0 मिली लीटर वीर्य प्रति किलोग्राम शारीरिक वजन के अनुसार देती है जबकि प्रेरित नर मछली 6–10 मिली लीटर वीर्य देती है । यह एक महत्वपूर्ण पहलू है जिसे हिमांक संरक्षण से पहले ध्यान देना चाहिए क्योंकि कम मात्रा में मिल्ट की प्राप्ति नर मछलियों की परिपक्वता की स्थिति का संकेत देता है। शुक्राणु गतिशीलता को वीर्य ya milt का सबसे सरल और सबसे विश्वसनीय संकेतक बताया गया है। एक कार्प वीर्य का नमूना जिसमें स्पर्मटोक्रिट वैल्यू (पैक्ड शुक्राणु कोशिकाओं का प्रतिशत) 70 से कम नहीं, शुक्राणुओं की संख्या 1.5 – 2.3 x 109 संख्या प्रति मिली, शुक्राणुओं की गतिशीलता 90 प्रतिशत से अधिक हो तो गुणवत्ता नमूना माना जाता है।

एक्सटेंडर और क्रायोप्रोटेक्टेंट के साथ संतुलन

एक्सटेंडर आम तौर पर उम्मीदवार प्रजातियों के सेमिनल प्लाज्मा के भौतिक–रचनात्मक संरचना के साथ संगत होने के लिए डिजाइन किए जाते हैं जो शुक्राणु को गैर गतिशील लेकिन व्यवहार्य अवस्था में बनाए रखने के लिए बनाए जाते हैं। क्रायोप्रोटेक्टेंट एक रसायन है जो कोशिका को शीतलक ठंड और विगलन प्रक्रिया के दौरान होनेवाले नुकसान को कम करता है। क्रायोटोप्रोक्टेंट को दो व्यापक श्रेणियों में बांटा गया है। क्रायोटेक्टेक्टेंट जो कि कोशिकाओं को पार करने में सक्षम हैं, उसे पारगम्य क्रायोप्रोटेक्टेंट के रूप में जाना जाता है। जैसे डाइमिथाइल सल्फॉक्साइड (डीएमएसओ), मेथनॉल और ग्लिसरॉल। क्रायोप्रोटेक्टेंट जो कि कोशिकाओं को पार करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं उन्हें गैर–पारगम्य क्रायोप्रोटेक्टेंट के रूप में जाना जाता है जैसे शर्करा अर्थात ग्लूकोज या सुक्रोज, पॉलिमर जैसे डेक्सट्रान, दूध और अंडे प्रोटीन आदि। तालिका1 में वर्णित एक्सटेंडर सी के रासायनिक घटकों को सटीक रूप से तौलकर और दोहरा आसुत जल (डिस्टिल्ड वाटर) में मिलाकर एक्सटेंडर तैयार किया जाता है । इस प्रोटोकॉल में क्रायोप्रोटेक्टेंट का प्रयोग डीएम्एसओ है जो लगातार अच्छा परिणाम देता है। क्रायोप्रोटेक्टेंट को सीधे वीर्य नमूने में मिश्रित नहीं करना चाहिए। इसे पहले वांछित अनुपात में एक्स्टेंडर के साथ (डीएमएसओ 15 एमएल एक्स्टेंडर सी 65 एमएल) मिलाया जाता है और इसके एक्सोथर्मल प्रतिक्रिया के कारण रेफ्रीजरेटर में रखा जाता है। इस घोल को डायलुएंट कहा जाता है। डायलुएंट के साथ वीर्य को मिलाते समय समतापीय (आइसोथेर्मल) स्थिति बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है। डायलुएंट के साथ वीर्य के

मिश्रण को मिलाने और फ्रीजिंग प्रक्रिया शुरू करने के बीच के समय अंतराल को संतुलन समय (एकुइलिब्रेशन टाइम) कहा जाता है। भारतीय प्रमुख कार्प के वीर्य के लिए यह आम तौर पर 30–45 मिनट है। संतुलन के दौरान क्रायोटेक्टेक्टेंट आम तौर पर कोशिकाओं में प्रवेश करते हैं और उन्हें फ्रीजिंग के दौरान क्रायइनजेरी से बचाता है। यह एक्वालिबिरियम समय प्रजाति –प्रजाति में भिन्न पाया जाता है क्योंकि क्रायोटेक्टेक्टेंट विषाक्तता का समय संतुलन की अवधि और तापमान पर भी निर्भर करता है।

फ्रीजिंग प्रोटोकॉल

कार्प शुक्राणुओं के लिए एक त्वरित फ्रीजिंग प्रोटोकॉल का उपयोग किया जाता है क्योंकि यह थर्मल शॉक और अन्तःकोशिका (इंट्रासेल्युलर) में बर्फ बनने की क्रिया को कम करता है। प्रोग्रामिंग योग्य शीतलन कक्ष (प्रोग्रामेबल कुलिंग चेम्बर) द्वारा सीलबंद विसोटयुब को –15 डिग्री सेल्सियस/मिनट के कूलिंग तापमान पर ठंडा किया जाना आवश्यक होता है। –60 डिग्री सेल्सियस तापमान पर पहुँचने के बाद विसोट्यूब में जमे हुए वीर्य के नमूनों को भंडारण हेतु बिना देरी किए क्रायोकेन में रखे तरल नाइट्रोजन में भण्डारण किया जाता है। क्रायोकेन में तरल नाइट्रोजन के वाष्पीकरण द्वारा नुकसान को नियमित रूप से भरकर पूरा किया जाता है।

विगलन/वार्मिंग एवं निषेचन

विगलन क्रायो प्रोटोकॉल एक महत्वपूर्ण कदम है, जहां अगर इष्टतम स्थितियों का पालन नहीं करने से विगलन के दौरान संरक्षित कोशिकाओं में बर्फ गठन रिक्रिस्टालाइजेसन की वजह से होता है। कार्प शुक्राणु के मामले में तेजी से विगलन बेहतर होता है, क्योंकि धीमी गति से विगलन होने से छोटी अंतःकोशिका क्रिस्टल का पुनर्योजक हो सकता है जो कोशिकाओं को नुकसान पहुंचा सकता है। वर्तमान प्रोटोकॉल में गर्म पानी (37 डिग्री सेल्सियस) में क्रायोमिल्ट

नमूनों का विगलन किया जाता हैं। विसोट्यूब एवं फ्रेंच स्ट्रा क्रमशः 65–70 सेकंड और 8–10 सेकेंड का समय नर्म तरल पदार्थ बनने में लगता है। फ्रोजन मिल्ट के तरल होने के बाद, अनिषेचित अंडों के साथ इसे मिलाने से पहले लगभग 5 सेकंड के लिए निषेचन पात्र में विसोट्यूब से वीर्य को निकाल कर रखना महत्वपूर्ण होता है। यह प्रक्रिया दोनों जनन कोष को कमरे के तापमान पर एक आइसोथर्मल स्थिति में लाने के लिए किया जाता है। क्रायो वीर्य के साथ निषेचित अंडे को मीठे पानी में 5–10 बार धोकर साफ किया जाता है और अत्यधिक क्रोयोप्रोटेक्टेंट को बाहर निकालने के लिए जल प्रवाह अंड सेवन कक्ष में रखा जाता है।

हिमांक संरक्षित वीर्य या मिल्ट की मछलियों के नस्ल उन्नयन में उपयोगिता

आनुवंशिक विविधता को संरक्षित करने के लिए शुक्राणु क्रायोबैकिंग कैप्टीवीटी में मछलियों के प्रजनन के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है। शुक्राणु का क्रायोबैकिंग लागत, श्रम एवं सुरक्षा के संदर्भ में कैप्टीविटी में मत्स्य प्रजनन के काफी फायदे हैं। चूंकि समय के साथ बीमारी या आनुवंशिक बहाव से होने वाले नुकसान को जोखिम के बिना विभिन्न पीढ़ियों के हजारों नमूनों को कम से कम स्थान में इस तकनीक से भंडारण किया जा सकता है। इसके अलावा, फ्रोजेन नमूनों का परिवहन और प्रबंधन अपेक्षाकृत सरल है एवं इसका पुनः मूल रुप में वापसी का योजना करने में अधिक लचीलेपन की अनुमति देता है। मत्स्य पालन और संरक्षण

हेतु वर्तमान में शुक्राणुओं के हिमांक संरक्षण (क्रायोप्रिजरवेसन) के लिए सामान्य प्रौद्योगिकियां रूस (एनाइयेव, 1998) और यूरोप के साथ ही उत्तरी और दक्षिण अमेरिका (हार्वे, 1998) के कई शुक्राणु बैंकों में उपयोग किया जा रहा है। हाल ही में, केंद्रीय मीठा जल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर द्वारा 2009 –10 के दौरान भारत में चार मत्स्य वीर्य क्रायो बैंक स्थापित किए गए। इन मत्स्य वीर्य क्रायो बैंक (2 आंध्र प्रदेश में और 2 उड़ीसा में) का उपयोग भारतीय प्रमुख कार्प (कतला, लेबिओ रोहिता, सिरहनस मृगला) के नस्ल उन्नयन और अच्छी गुणवत्ता वाले प्रजनक मछली के विकास के उद्देश्य से किया जा रहा है। 2009 –10 के दौरान दस हैचरी में स्टॉक उन्नयन के लिए इन बैंकों के क्रायोमिल्ट का उपयोग किया गया था। स्थानीय हैचरियों के मादा मछलियों जिसमें कार्प मछली में अंतः प्रजनन का दबाब एवं धीमी गति से वृद्धि दर्ज की गई थी। उससे प्राप्त अंडों का निषेचन स्वस्थ नर मछलियों के हिमीकृत शुकाणु का उपयोग करके 40 प्रतिशत से अधिक हैचलिंग की प्राप्ति की गई। इस तकनीक को लागू करने से कई हैचरी में प्रजनक मछली की स्थिति में वृद्धि संभव हो पाई। हैचरी तक कार्प की क्रायोमिल्ट को ले जाने में आसानी हुई और प्रजनक मछलियों का उत्पादन सफलतापूर्वक किया गया और इसके अलावा भविष्य के प्रजनक स्टॉक के विकास हेतु प्रक्षेत्र के जर्म प्लाज्म को बदल दिया है। वर्तमान में इन राज्यों में मछली वीर्य क्रायो बैंक के जरिए कार्प मछलियों के हिमांक सरंक्षित वीर्य (क्रायोमिल्ट) का उपयोग कर एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसी तरह, कार्प स्टॉन उन्नयन के उद्देश्य से भाकृअनुप–सीफा की तकनीकी सहायता से भारत एंव विदेशों में मत्स्य वीर्य क्रायोबैंक की स्थापना की गई है।

निष्कर्ष

यह अच्छी तरह से प्रदर्शित किया गया है कि संग्रहित मिल्ट द्वारा उत्पादित कार्प बीज, ताजा मिल्ट द्वारा उत्पादित बीज से किसी भी तुलना में निम्न नहीं है। संरक्षित मिल्ट द्वारा विकसित स्टॉक के विकास, प्रजनन की प्रतिक्रिया और अंडजनन क्षमता, ताजा मिल्ट के साथ तुलनीय हैं। इस प्रकार हिमांक संरक्षित वीर्य या मिल्ट द्वारा मछलियों की नस्ल का आनुवंशिक उन्नयन, जल कृषि में नील क्रांति को प्राप्त करने में एक अहम भूमिका अदा करेगा।

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

– (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

असत्य भाषण पाप है और निन्दा महापाप।

– रविन्द्र नाथ ठाकुर

आलसी व्यक्ति काम से नहीं काम को सोचकर ही थक जाता है।

– लाल बहादुर शास्त्री

भेड़ एवं बकरी चेचक (पॉक्स)

जी. बी. मंजुनाथ रेड्डी*, अवधेश प्रजापति, अपशाना आर, योगीश आराध्य आर, परिमल राय

भेड़ एवं बकरी चेचक, भेड़ और बकरियों का विषाणु जनित अत्यधिक संसर्गजनक संक्रामक रोग है। पूर्व में भेड़ चेचक और बकरी चेचक को भिन्न–भिन्न रोग माना जाता था किन्तु अब इसे एक ही रोग माना जाता है। यह रोग विश्व में छोटे जुगाली पशुओं भेड़ और बकरियों की सबसे गंभीर संक्रामक बीमारियों में से एक है। यद्यपि यह रोग सभी नस्ल के भेड़ और बकरियों को प्रभावित करता है पर मेरिनो और अन्य विदेशी नस्ल की भेड़ और बकरियां, देशी नस्ल की तुलना में ज्यादा ही संवेदनशील होती हैं। रोग वयस्क पशुओं की तुलना में मेमनों में अधिक गंभीर रुप में देखा गया है।

कारक

यह रोग भेड़ और बकरी चेचक विषाणु के संक्रमण के कारण होता है। रोग के विषाणु को केप्रीपॉक्स जीनस में वर्गीकृत किया गया है। भेड़ चेचक विषाणु और बकरी चेचक विषाणु में सामान्य प्रयोगशाला तकनीक से विभेद कर पाना मुश्किल है, इन्हें केवल जीन अनुक्रमण विधि द्वारा विभेदित किया जा सकता है। विषाणु के स्ट्रेन भेड़ और बकरी दोनों को ही संक्रमित कर सकते हैं। इन विषाणुओं में जीनोम डीएनए प्रकार का होता है तथा संरचना में विषाणु में काम्प्लेक्स सेमेट्री पाई जाती है। यह विषाणु काफी प्रतिरोधी होता है तथा संक्रमित ऊन और त्वचा के घाव–पपड़ी में तथा बिना विसंक्रमित संक्रमित बाड़े की मिट्टी में कई महीनों तक जीवित रह सकता है। विषाणु को सूर्य के प्रकाश के प्रति संवेदनशील पाया गया है तथा अधिक तापमान जैसे 560 से. पर 2 घंटे तथा 650 से. पर 3 घंटे में यह निष्क्रिय हो जाता है। इसके अलावा विषाणु सामान्य विसंक्रामक जैसे फिनोल, ईथर, क्लोरोफार्म, आयोडीन और सोडियम हाइपोक्लोराइड की मानक सांद्रता पर निष्क्रिय हो जाते हैं।

जानपदिक विज्ञान

यह रोग भारत में स्थानिक है, विशेषकर दक्षिण भारत के राज्यों कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र तथा राजस्थान में इसका प्रकोप अधिक देखने को मिलता है। विश्व में मध्य और उत्तरी अफ्रीका, मध्य पूर्व देशों, चीन और वियतनाम में भी यह रोग स्थानिक है। हालांकि रोग प्रकोप वर्ष के किसी भी महीने में हो सकता है लेकिन ज्यादातर रोग–प्रकोप मुख्यतः अप्रेल से जून में देखने को मिलता है।

रोग संचरण

रोग का संचरण स्वस्थ पशुओं में मुख्यतः संक्रमित पशुओं के सीधे संपर्क में आने से होता है। संक्रमित पशुओं के लार, नाक और संयोजी स्राव, दूध, मूत्र और मल तथा त्वचा के घावों (चेचक दाना) और उनकी पपड़ी में यह विषाणु पाया जाता है। घावों (चेचक दाना), पपड़ी या विषाणु संदूषित वस्तुओं और पर्यावरण के प्रत्यक्ष संपर्क में आने से या वायुसोल के माध्यम से विषाणु प्रेषित होता है। ज्यादातर मामलों में यह देखा गया है कि स्थानिक देशों में रात में पशुओं को कम जगह वाले बाड़े में रखा जाता है जो रोग के प्रकोप और प्रसार को जोखिम प्रदान करता है। विषाणु कटी या फटी हुई त्वचा के माध्यम से भी शरीर के अन्दर प्रवेश कर सकते हैं। इसके अलावा मक्खी द्वारा भी यांत्रिक संचरण देखने को मिलता हैं। एक बार पूर्ण रूप से स्वस्थ होने के बाद पशु–स्राव से रोग का संचरण नहीं होता है।

संक्रमण

- संक्रमित पशुओं के ऊन, त्वचा और बालों से
- संक्रमित पशुओं के नाक स्राव, लार या उनके एयरोसौल्ज से
- संक्रमित कपडों और उपकरणों से
- मक्खियाँ यांत्रिक वैक्टर के रूप में प्रसार कर सकती हैं।

रोग से आर्थिक नुकसान

भेड़ और बकरी चेचक उन सभी क्षेत्रों में छोटे जुगाली पशुओं की महत्वपूर्ण संक्रामक बीमारी है जहां उनकी जनसंख्या अधिक है। भारत में छोटे और भूमिहीन किसानों के पशुधन अर्थशास्त्र में भेड़ और बकरियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। रोग के कारण हुई पशु मृत्यु, ऊन की मात्रा और गुणवत्ता में गिरावट, चमड़ी गुणवत्ता का खराब होना तथा वजन न बढ़ने से मांस में कमी के कारण पशुपालकों को काफी आर्थिक

*राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान, यलहंका, बेंगलुरु

नुकसान उठाना पड़ता है। इसके अलावा रोग नियंत्रण के लिए पशु चिकित्सक, दवा तथा विसंक्रमण पर किए गए अतिरिक्त खर्च के कारण भी आर्थिक बोझ पड़ता है।

लक्षण

संक्रमित भेड़ और बकरियों में रोग के लक्षण विभिन्न कारकों पर निर्भर करते हैं, जैसे विषाणु के विभेद–प्रकार और उसकी मारक क्षमता, पशु की नस्ल, आयु और प्रतिरोधी क्षमता। समान्यतः विषाणु संक्रमण के बाद रोग का उद्भव 4–12 दिन में होता है। सामान्यतः रोग के निम्न लक्षण दिखाई देते हैं:

संक्रमित भेड़ की त्वचा पर बने पॉक्स घाव (चेचक दाना)

- अचानक तेज बुखार
- नाक और आंखों से स्राव
- क्षुधा का कम होना
- चलने में अनिच्छा
- चेचक दाने (पॉक्स घाव) त्वचा पर 1–2 दिनों में दिखाई देते हैं जो मुख्यतः बिना ऊन वाले भागों जैसे चेहरा, पलकें, कान, मूलाधार और पूंछ पर अधिक होते हैं। सर्वप्रथम इनकी शुरुआत लाल प्रदाह के रूप में होती है जो ठोस दानों के रूप में परिवर्तित हो सकती है। घाव के ठीक होने की दशा में वहां पर पपड़ियां बन जाती हैं।

चित्र 1: संक्रमित भेड़ की त्वचा पर बने पॉक्स घाव (चेचक दाना)

- चेचक दानों को नाक, मुंह और योनि पर देखा जा सकता है। मुंह के घावों के कारण पशु चारा ग्रहण नही कर पाता।
- श्लेष्मा झिल्ली के अधिकांश फफोले, अल्सर में परिवर्तित हो जाते हैं।
- श्वसन में तीव्र तकलीफ तथा कुछ पशुओं में न्यूमोनिया के भी लक्षण दिखाई देते हैं।
- त्वचा के घाव बहुत ही धीरे–धीरे भरते हैं तथा मक्खियों के कारण द्वितीयक संक्रमण भी हो सकता है।
- थन तथा निप्पलों पर बने घाव के कारण थनैला भी हो सकता है।

मृत पशु के शव परीक्षण में प्राप्तियां

- त्वचा विक्षतिः रक्तस्राव, एडिमा, वास्कुलिटिस (केशिकाशोथ) और नेक्रोसिस (गलन) ।
- लिम्फ नोड्स (लसिका ग्रंथि) विक्षतिः सामान्य आकार से बड़ा होना और लिम्फोइडशोथ।
- श्लेष्मा विक्षतिः मूत्राशय के श्लेष्मा झिल्ली पर, मुंह, नाक, ग्रसनी, एपिगोल्टिस, श्वास नलिका, रूमेन म्यूकोस, थूथन, योनि और निप्पल पर पॉक्स के घाव का पाया जाना ।
- फेफड़ों में विक्षतिः फेफड़ों के ऊतक में नोडुल्स और व्यापक पॉक्स घावों का होना ।

मनुष्यों में होने की संभावना

इस रोग की मनुष्यों में होने की संभावना नगण्य है। एक या दो मामलों को छोड़कर अब तक कोई मामला प्रकाश में नहीं आया है।

विभेदी निदान

हालाँकि गंभीर रूप से ग्रसित पशु में भेड़ और बकरी चेचक के नैदानिक लक्षण विशिष्ट और स्पष्ट होते हैं फिर भी कम गंभीर रूप के लक्षण अन्य बीमारियों के साथ भ्रमित हो सकते हैं। अतः निदान के समय इन बीमारियों के होने की आंशका का ध्यान रखना चाहिए।

- संक्रामक एक्थिमा (ओ आर एफ)
- ब्लूटंग
- पेस्टे डेस पेटीट्स रुमिनेंट्स (बकरी प्लेग)
- डर्मेटोफिलोसिस
- परजीवी न्यूमोनिया
- कीट के काटने से बने घाव/दाने

प्रयोगशाला निदान

रोग का निदान रोग के लक्षण और पोस्टमार्टम घावों के आधार पर किया जा सकता है फिर भी रोग की सटीक जाँच भेड़ चेचक और बकरी चेचक तथा अन्य रोगों के बीच विभेद करने के लिए प्रयोगशाला की पुष्टि भी आवश्यक है।

आवश्यक नमूने

विषाणु अलगाव तथा विषाणु प्रतिजन और जीनोम का पता लगाने के लिए चेचक दाने की सूखी पपड़ियां और ऊतकों की आवश्यकता होती है जबकि विषाणु विशिष्ट प्रतिरक्षा की जाँच के लिए रक्त से सीरम नमूनों को एकत्र किया जाता है। नमूनों को अधिमानतः 4 डिग्री सेल्सियस बर्फ पर, या –20 डिग्री सेल्सियस पर रखा जाना चाहिए। यदि प्रशीतन के बिना लंबी दूरी पर नमूनों का परिवहन आवश्यक है, तो माध्यम में 10% ग्लिसरॉल का प्रयोग करना चाहिए।

निम्नलिखित प्रयोगशालीय परीक्षण का उपयोग किया जा सकता है:

विषाणु पृथक्करण या अलगाव: संक्रमण की सटीक जाँच और विषाणु की पहचान के लिए यह एक मानक टेस्ट है। यह प्रकिया केवल शोध संस्थानों में ही अपनाई जाती है जहां इनकी सुविधा उपलब्ध होती है। विषाणु संवर्धन के लिए प्राथमिक लैम्ब वृषण या वृक्क कोशिका या कोशिका लाइनें जैसे कोशिका का उपयोग किया जाता है। इन कोशिकाओं में विषाणु की संवृद्धि से उत्पन्न साइटोंपैथिक प्रभाव के कारण इनकी पहचान की जाती है जो सामान्यतः 4–6 दिनों के भीतर आ जाती है।

एलाईजा: संक्रमित पशु से प्राप्त सीरम नमूनों में चेचक विषाणु के विरुद्ध प्रतिरक्षा की जाँच की जाती है। यह विषाणु के p32 प्रतिजन या विषाणु के पूर्ण प्रतिजन पर आधारित हो सकती है।

पीसीआर: इस परख द्वारा नमूनों में विषाणु विशिष्ट जीन को प्रवर्धन करके उनकी पहचान की जाती है। इस प्रकिया द्वारा कम समय में सटीक निदान की जा सकती है।

विषाणु उदासीनता: यह एक जटिल परख है जो विषाणु के सीरम में मौजूद प्रतिरक्षी द्वारा उदासीनता पर आधारित है।

टीकाकरण

रोग नियंत्रण के लिए रोग स्थानिक क्षेत्रों में व्यवस्थित टीकाकरण कार्यक्रम किया जाता है। भारत में भेड़ और बकरी चेचक के टीकों के लिए रोमेनियन स्ट्रेन और रानीपेट स्ट्रेन का इस्तेमाल किया जाता है। इसके अलावा श्रीनगर स्ट्रेन से भी टीके को विकसित किया गया है। ये टीके जीवित क्षीणकृत रूप में उपलब्ध हैं। तीन माह के ऊपर के सभी पशुओं में टीका लगवाना चाहिए तथा टीकों का इस्तेमाल पशु चिकित्सक की सलाह के उपरांत ही करना चाहिए।

बचाव एवं रोकथाम

- रोग के प्रकोप की स्थिति में रोग ग्रस्त भेड़ या बकरी को अन्य पशुओं से अलग कर देना चाहिए तथा ऐसे पशुओं को कम से कम 40 दिनों तक संगरोध पर रखना चहिए।
- ग्रसित पशुओं को बाहर चरने के लिए नहीं भेजना चाहिए।
- ग्रसित पशुओं का अन्य स्थानों पर परिवहन नहीं करना चाहिए।
- नये खरीदे हुए पशुओं को कम से कम 2–3 सप्ताह तक संगरोध पर रखने के उपरांत ही रेवड़ में शामिल करना चहिए।
- संक्रमित जगहों, उपकरण और कपडों को अच्छी तरह विसंक्रामित करना चाहिए।
- मृत पशुओं को जला देना चाहिए या मिट्टी में अंदर तक गाड देना चाहिए।
- रेवड़ में आए नये पशुओं के स्वास्थ्य और स्रोत की जानकारी रखनी चाहिए।
- किसी भी बीमारी या लक्षण के लिए पशुओं की समय– समय पर जांच करानी चाहिए।
- बीमार पशुओं को अलग रखना चहिए और पशु चिकित्सक से तुरंत संपर्क करना चाहिए।
- पृथक किए हुए पशु के लिए अलग से साजो–सामान और कर्मचारियों का उपयोग करना चाहिए।
- स्वयं को और अपने कर्मचरियों को इस रोग के बारे में शिक्षित करना चाहिए।
- जंगली जानवरों को अपने पशुओं या पशु बाड़े के संपर्क में नहीं आने देना चाहिए।

जड़ गांठ सूत्रकृमि मेलेड़ोगाइन ग्रेमिनिकोला (गोल्डन एंड बिर्चफिल्ड, 1965): धान और गेहूं की फसल मे जड़ गांठ रोग कारक

राशिद परवेज* और उमा राव**

परिचय

भारत में निरतर बढती हुई जनसंख्या के कारण बढ़ती हुई मांग के अनुरूप पूर्ति ना कर पाना भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए एक चिन्ता का विषय है। हल्दी की फसल के उत्पादन में गिरावट के प्रमुख कारणों में से एक कारण यह भी है कि कृषकों को हानि पहुंचाने वाले सूत्रकृमि की समस्याओं का उचित समाधान करने की जानकारी नहीं है। अतः प्रस्तुत लेख में धान और गेहूं के उत्पादन में बाधा पहुंचाने वाले जड़–गांठ रोग के कारक, मेलेड़ोगाइन ग्रेमिनिकोला एवं उनका प्रबंधन हेतु उचित नियन्त्रण विधियों का उल्लेख किया गया है।

धान और गेहूं में जड़–गांठ सूत्रकृमि, मेलेड़ोगाइन ग्रेमिनिकोला की व्यापक समस्या है। यह समस्या, पूर्व, उत्तर–पूर्व और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में, उत्तर प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और बिहार के कुछ हिस्सों में इतनी गंभीर है जिससे फसल की पैदावार पर असर पड़ता है।

चित्र 1: जड़ गांठ सूत्रकृमि

यह सूत्रकृमि गतिहीन अंतःपरजीवी है। विश्व में इस सूत्रकृमि की 90 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से केवल 13 प्रजातियां ही भारत में प्रचलित हैं। मेलेड़ोगाइन ग्रेमिनिकोला भारत सहित दुनिया भर में धान की फसल को अत्यधिक हानि पुहंचाने वाला प्रमुख हानिकारक सूत्रकृमि है। यह सूत्रकृमि धान पौधशाला में धान की रोपण सामग्री को गंभीर नुकसान पहुंचाता है। ये सूत्रकृमि धान की फसलों के साथ साथ गेहूं की फसल को भी हानि पहुंचाने मे सक्षम होते हैं, इनके लिए 20 से 35 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान अनुकूल होता है। इसलिए, इनकी जनसंख्या चावल–गेहूं फसल प्रणाली में तेजी से बढ़ती है।

लक्षण

पौधशाला और खेत में धान की फसल का पीला पड़ना, पौधों की असमान वृद्धि एव पत्तियों का आकार कम होना। सूत्रकृमि ग्रसित फसल जल्दी सूख जाती है। एम. ग्रेमिनिकोला अक्सर जड़ ऊतकों के कार्यों में बाधा पहुंचाता है। उनके द्वारा संक्रमित पौधों की जड़ें मिट्टी से उचित पोषण एवं पानी नहीं ले पाती हैं। जिसके कारण पौधे के ऊपरी भागों में लक्षण उत्पन्न होते हैं जैसे, पोषण की कमी, शुष्कता, लवण की अधिकता व अन्य तनाव की परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। पौधों की वृद्धि रूक जाती है, पत्तियां पीली पड़ जाती है तथा शाखाएं कम निकलती है। एम. ग्रेमिनिकोला संक्रमित जड़ों में गाठें बन जाती हैं। प्रायः इन गांठों को अलग नहीं किया जा सकता। मिट्टी में रहकर यह नई जड़ों को भेद कर उनके अन्दर घुस जाते हैं तथा पानी और खाना ले जाने

चित्र 2: जड़ गांठ सूत्रकृमि संक्रमित खेत

*प्रधान वैज्ञानिक, सूत्रकृमि संभाग; **प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, सूत्रकृमि संभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान सस्थांन, नई दिल्ली–110 012

वाली कोशिकाओं पर आक्रमण करते हैं। तत्पश्चात् यह सूत्रकृमि गोलाकार होकर जड़ों में गांठें पैदा करते हैं। इन गांठों के कारण पौधे मृदा में पोषक तत्व तथा पानी की उपलब्धता होते हुए भी पर्याप्त मात्रा में उसे ग्रहण नहीं कर पाते (चित्र 2)।

वितरण

एम. ग्रेमिनिकोला ग्रसित धान में जड़–गांठ रोग भारत के अधिकांश राज्यों जैसे, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, बिहार, छत्तीसगढ़ पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा उत्तर–पूर्वी राज्यों सहित दुनिया के सभी धान की खेती करने वाले क्षेत्रों में प्रचलित है। जहां चावल एक वर्ष में एक से अधिक फसल के रूप में उगाया जाता है वहां इस सूत्रकृमि की समस्या विशेष रूप से गंभीर हैं। जम्मू, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली और उत्तर प्रदेश सहित उत्तर भारत में धान पौधशाला में संक्रमित पौधों को खेतों में रोपण के बाद अंकित किया गया।

फैलाव

गेहूं और धान को हानि पहुंचाने वाले एम. ग्रेमिनिकोला निम्न तरीकों से एक स्थान से दूसरे अन्य स्थानों पर जाकर फसल को संक्रमित करते हैं।

- संक्रमित पौधों की जड़ों द्वारा जड़–गांठ सूत्रकृमि एम. ग्रेमिनिकोला का फैलाव होता है।
- सिंचाई और बारिश के पानी द्वारा संक्रमित खेत से दूसरे खेतों में इस सूत्रकृमि का फैलाव होता है।
- मृदा, मवेशियों, मानवों, कृषि मशीनरी, हवा और पानी आदि के द्वारा जड़–गांठ सूत्रकृमि एम. ग्रेमिनिकोला का फैलाव होता है।
- यह सूत्रकृमि संक्रमित बीज द्वारा नहीं फैलता है।

जीवनशैली एवं जीवन चक्र

एम. ग्रेमिनिकोला के नर ऐम्फिमिक्सिस और अर्धसूत्री विभाजनिक अनिषेक जनन द्वारा प्रजनन करने में सक्षम हैं। लगभग 200 से 500 आंशिक रूप से भ्रूणित अंडे जिलेटिनस डिंब मैट्रिक्स में जमा रहते हैं। भ्रूण जनन के 4–6 दिनों के बाद एक पहला जूवनाइल (जे1) तथा 2–3 दिनों में दूसरे जूवनाइल (जे 2) में परिवर्तित होता है। संक्रामक जूवनाइल (जे2) अनुकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों, 20–30 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान तथा उपयुक्त नमी में अंडे से बाहर निकलते हैं। अंडे से बाहर निकलने की दर धीमी होती है यानी कई हफ्तों तक चलती है।

अन्हैच्ट जूवनाइल (जे2) अंडे के अंदर कई हफ्तों तक शुष्क अवस्था तथा भोजन के अभाव मे रह सकता है। जूवनाइल (जे2) पौधे की जडों में प्रवेश करके स्न्शिउम और गांठें बनाता है। जे2 में फुलाव संक्रमित एवं निर्मोचन के 3–4 दिनों बाद आता है और यह जे3 तत्पश्चात् जे4, वयस्क मादा तथा नर में परिवर्तित हो जाता है। जे3 और जे4 में स्टाइलिट न होने के कारण यह अवस्था संक्रमणकारी नहीं होती। एम. ग्रेमिनिकोला धान और गेहूं की फसल में अपना अंडे से अंडे का जीवन चक्र 27–30 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान पर लगभग 25–28 दिनों में पूरा कर लेते हैं। सर्दियों के दौरान कम तापमान पर गेहूं की फसल में इनका लंबा जीवन चक्र 65 दिनों तक रहता है। वयस्क नर 13–16 दिनों तक देखा जा सकता है और इसके बाद यह 3–4 दिन के बाद नए अंडे देती है (चित्र 3)।

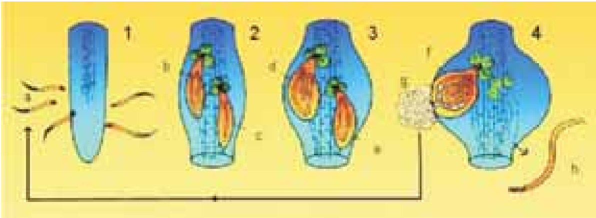

चित्र 3: जड़ गांठ सूत्रकृमि का जीवन चक्र

दिल्ली की परिस्थितियों के अंतर्गत एक विशिष्ट धान–गेहूं फसल पद्धति में, इस सूत्रकृमि की धान नर्सरी में एक पीढ़ी, छोटी अवधि के मोटे धान में दो पीढ़ी, बासमती धान में तीन पीढ़ियां और नवंबर में बोये गए गेहूं में दो पीढ़ी और दिसंबर में बोये गए गेहूं में एक पीढ़ी जीवन चक्र पूरा करती है। इस प्रकार, एक वर्ष में इस सूत्रकृमि की 4–6 पीढ़ियाँ जीवन चक्र पूरा कर सकती है।

जनसंख्या

जे2 की मिट्टी में जनसंख्या वृद्धि दर तापमान, नमी, वायु संचारण और पोषक पौधे पर आधारित होती है। मिट्टी में जनसंख्या मई–अगस्त और दिसंबर–फरवरी माह के दौरान बहुत कम, सितंबर के अंत तक मध्य अक्टूबर (चावल की

चित्र 4: जड़ गांठ सूत्रकृमि संक्रमित जड़

फसल के दो हफ्ते पहले) और मध्य मार्च–अप्रैल (गेहूं की फसल की कटाई से 2–3 सप्ताह पहले) के बीच अधिक होती है। बुवाई का समय, फसल की अवधि, मिट्टी की नमी और तापमान का असर जनसंख्या वृद्धि पर पड़ता है।

पोषण फसलें

- जड़–गांठ सूत्रकृमि एम. ग्रेमिनिकोला गेहूं, जौ, जई, चावल, घासपात और कई अन्य ग्रेनमसियस फसल से अपना भोजन प्राप्त करती है और इन फसलों पर सूत्रकृमियों का अच्छा बहुगुणन होता है।
- सामान्य ग्रेनमसियस घासपात फसलें जैसे, सायपरस रौंडुस और फ्लिस माइनर गेहूं के साथ तथा एचिनोचलो सपीसीस चावल के साथ सूत्रकृमियों के लिए वरदान फसलें हैं।
- गैर–ग्रामीनसस फसलें जैसे, सूरजमुखी, लोबिया, बरसीम, आलू और घासपात चेनोपोडियम सपीसीस एम. ग्रेमिनिकोला की जनसंख्या बढ़ोत्तरी के लिए उपयुक्त है।
- सरसों, तोरिया, कुसुम, तिल, मसूर, अरहर तथा चना आदि फसलें जड़–गांठ सूत्रकृमि एम. ग्रेमिनिकोला के लिए अच्छी पोषण फसलें नहीं है।

फसल हानि

फसल की हानि सूत्रकृमि जनसंख्या घनत्व और अन्य फसल विकास की स्थिति पर निर्भर करती है। किसी भी देश या पूरे राज्य में हानि की गणना करने के लिए विश्वसनीय आंकडे उपलब्ध नहीं है। हालांकि, एक परीक्षण के अनुसार गेहूं की फसल में सूत्रकृमिनाशक उपचार के बाद 17% हानि, सीधे सीड धान में 71% और उपचारित पौधशाला–बेड से लिए गए प्रत्यारोपित धान में 29%, अनुपचारित पौधशाला–बेड से लिए गए प्रत्यारोपित धान में 38% हानि अंकित की गयी है।

समाधान

सूत्रकृमियों की समस्या का निम्नलिखित नियंत्रण विधियों द्वारा समाधान किया जा सकता है। इन नियंत्रण विधियों को रोगों की प्रारम्भिक अवस्था में अपनाने से पौधों को सूत्रकृमियों द्वारा अत्यधिक हानि से बचाया जा सकता है।

फसल चक्र

- धान और गेहूं की दोनों फसलों की एक साल में खेती न करना। जड़–गांठ सूत्रकृमि एम. ग्रेमिनिकोला की जनसंख्या घनत्व को कम करने में प्रभावी होता है।
- गेहूं के स्थान पर चना या सरसों की खेती करना। जड़–गांठ सूत्रकृमि जनसंख्या घनत्व कम करने में सहायक होता है।
- आमतौर पर किसान खरीफ में अन्य फसलों के स्थान पर धान की फसल को बदलने के लिए तैयार नहीं होते हैं।
- खरीफ में तिल की खेती करके जड़–गांठ सूत्रकृमि जनसंख्या को कम कर सकते हैं।

ग्रीष्मकालीन जुताई

ग्रीष्म काल में गेहूं की फसल की कटाई के बाद खेत की 15 दिनों के अंतराल पर दो बार गहराई से जुताई करने से सूत्रकृमि जनसंख्या में 70% से अधिक की कमी तथा आगामी धान की फसल को हानि पहुंचाने वाले सूत्रकृमियों के प्रबंधन में भी प्रभावी होती है।

फसल अवशेष

फसल अवशेषों के उपयोग से मृदा की कार्बनिक स्थिति में सुधार आता है। इनके उपयोग से सूत्रकृमियों की जनसंख्या में कमी तथा सूक्ष्मजीवों की जनसंख्या में वृद्धि होती है। मृदा में गेहूं और धान की पुआल मिलाने से सूत्रकृमियों की जनसंख्या में कमी तथा गेहूं और धान की फसल की पैदावार में बढ़ोत्तरी होती है। गेहूं और चावल के बीच मूँग की फसल की बुआई करने तथा फली की तुडाई के बाद गहराई से जुताई करने से चावल की फसल में सूत्रकृमि जनसंख्या में काफी कमी आती है। *सेसबानिया अकुलेटा* या *सेसबानीया रोस्टराता* की बुआई करने तथा तुडाई के बाद गहराई से जुताई करने से गेहूं की फसल में जड़–गांठ सूत्रकृमि जनसंख्या में कमी आती है।

जल प्रबंधन

धान की फसल में निरंतर बाढ़, अनिरंतर बाढ़ और बाढ़ का न आना जड़–गांठ सूत्रकृमि जनसंख्या पर प्रभाव डालता है। निरंतर बाढ़ में जड़–गांठ सूत्रकृमि जनसंख्या में कमी जबकि अनिरंतर बाढ़ और बिना बाढ़ में जड़–गांठ सूत्रकृमि जनसंख्या में वृद्धि होती है। रोपण 45 दिनों के बाढ़ के कारण सूत्रकृमि जनसंख्या में कमी अंकित की गई है।

मृदा सौरीकरण

मृदा सौरीकरण के तहत गर्मी में पतली पॉलिथीन शीट (25–60μm) की 3–4 सप्ताह तक ढकने से 15 सेमी ऊपरी परत में सूत्रकृमि जनसंख्या को कम करने में अत्यधिक प्रभावी पाया गया। जब मृदा का तापमान 40–50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचता है तब खेतों में 10 सेमी तत्पश्चात् 15 सेमी ऊपरी परत में सूत्रकृमि जनसंख्या कम हो जाती है परंतु सूत्रकृमि गहराई में मौजूद रहते हैं। मृदा सौरीकरण बहुत महंगा होता है। अतः नर्सरी–बेड के लिए यह नियंत्रण विधि उपयोगी है।

सूत्रकृमिनाशक

- सूत्रकृमिनाशक जैसे, कार्बोफ्यूरान'@1 किलो ए. आई./है. या फोरेट'@1 किलो ए.आई./है. से खेतों को रोपण के 2 बार उपचारित करने से सूत्रकृमि के प्रति प्रभावी पाया गया (प्रतिबंधित क्षेत्रों के अतिरिक्त)।
- रोपण के क्रमशः 2 दिन तथा 40 दिनों के बाद कार्बोफ्यूरान'@0.5 किलो ए. आई./है. या फोरेट'/ 0.5 किलो ए.आई./है. से उपचारित करने से सूत्रकृमि जनसंख्या में कमी अंकित की गई है (*प्रतिबंधित क्षेत्रों के अतिरिक्त)।
- नीम उत्पादों जैसे, अचूक/5% w/w, निंबेसीडाइन, नीममार्क, नीम सीड करनाल आदि के साथ धान के बीज को उपचरित करने से सूत्रकृमि जनसंख्या में कमी आती है और फसल के लिए सूत्रकृमि मुक्त रोपण सामग्री मिलती है।

एकीकृत सूत्रकृमि प्रबंधन

इन नियंत्रण विधियों का उपयोग करके काफी स्तर तक सूत्रकृमि जनसंख्या पर नियंत्रण कर सकते हैं, परंतु इनमें से कोई भी नियंत्रण विधि जो सूत्रकृमि प्रबंधन में शतप्रतिशत प्रभावी, सुरक्षित और किफायती हो। फसल चक्र, मृदा सौरीकरण तथा कम मात्रा में सूत्रकृमिनाशक के संयुक्त संयोजन को तैयार करके उपयोग करने से न केवल सूत्रकृमियों को नियंत्रण कर सकते हैं बल्कि मिट्टी से उत्पन्न अन्य रोगजनकों और घासपात के प्रति भी प्रभावी होते हैं।

पौधशाला प्रबंधन

- पौधशाला के लिए ऐसे स्थान का चयन करते हैं, जहां पिछले दो वर्षों में धान नहीं उगाया गया हो।
- मई माह में तीन सप्ताह तक रंगहीन, पतली पॉलिथीन शीट (25 से 60μm) से चिह्नित क्षेत्र के नर्सरी बेड की झपनी करके मृदाकरण।
- कार्बोफ्यूरान' या फोरेट'/0.2 ग्राम ए आई बुवाई के समय मिट्टी की ऊपरी 5 सेंमी परत के साथ मिश्रित करते हैं (*प्रतिबंधित क्षेत्रों के अतिरिक्त)।

खेत प्रबंधन

- मई–जून में खेत की 15 दिनों के अंतराल पर दो बार गहराई से जुताई करना।
- उपचारित पौधशाला की सूत्रकृमि मुक्त स्वस्थ रोपण सामग्री का उपयोग करना ।
- गेहूं की देर से बोयी जाने वाली प्रजातियों को नवंबर से लेकर मध्य दिसम्बर तक देर से बुवाई करना सूत्रकृमियों के प्रबंधन में प्रभावी होता है।
- अगर सूत्रकृमियों का आपतन अधिक है तब रबी के मौसम में गेहूं के स्थान पर सरसों की खेती उपयुक्त होती है।

उपरोक्त नियंत्रण विधियों को किसानों के खेतों में सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया गया है। धान–गेहूं फसल प्रणाली में औसतन लागतः लाभ अनुपात, 1:3.8 है और धान की लगभग 17% अधिक पैदावार अंकित की गई है।

निष्कर्ष

यदि हम समय पर उनका उचित नियन्त्रण विधियां अपनाकर प्रबंधन कर दें तो उपरोक्त उल्लेखित सूत्रकृमियों द्वारा धान और गेहूं की दोनों फसलों को पहुंचने वाली हानि से बचा जा सकता हैं। जिससे न सिर्फ फसल को सुरक्षित किया जा सकता है, बल्कि उपज भी बढ़ाई जा सकती है। जब उपज बढ़ेगी तब निश्चित ही लाभ का अनुपात भी बढ़ेगा, जिससे कृषक खुशहाल होने के साथ–साथ हमें धान और गेहूं के लिए अन्य देशों पर भी निर्भर नहीं होना पड़ेगा।

प्रसन्ता एक अनमोल खजाना है, छोटी–छोटी बातों पर उसे न लुटने दें।

— स्वामी विवेकानन्द

न्यूट्रास्यूटिकल्स और पशु उत्पादन

आशीष सामंता, स्वराज सेनानी, अतुल कोल्ते एवं मनपाल श्रीधर

प पशुधन उत्पादों की बढ़ती मांग ने देहाती शैली से पशुपालन प्रथाओं से हट कर पशुओं के वैज्ञानिक प्रबंधन के लिए परिवर्तन को प्रेरित किया है। पशुधन उत्पादन का प्राथमिक उद्देश्य है पर्यावरण के मुद्दों और जानवरों के कल्याण को ध्यान में रखते हुए मानव आबादी के लिए सुरक्षित भोजन पैदा करना। पशुधन क्षेत्र में विपुल विकास सक्षम होने के लिए कई कारक जैसे नस्ल सुधार, आधुनिक आवास और प्रबंधन, संतुलित भोजन, पशु चिकित्सा देखभाल आदि पर विशेष ध्यान दिया गया, लेकिन प्रमुख क्रेडिट लाखों पशुपालकों को जाता है जिन्होंने अनेकों बाधाओं के बावजूद प्रतिबद्धता, धीरज का प्रदर्शन करके यह संभव बनाया।

पिछले कुछ दशकों के दौरान, पशुधन की उत्पादकता/उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए रसायन, हार्मोन, एंटीबायोटिक दवाओं आदि का इस्तेमाल किया गया। इक्कीसवीं सदी में, लोग पशु उत्पादन में एंटीबायोटिक दवाओं और हार्मोन के प्रयोग से संबंधित सुरक्षा मुद्दों के बारे में अधिक जानते हैं । इसने पशु खाद्यों में एंटीबायोटिक दवाओं के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाने के लिए प्रेरित किया। यूरोपीय संघ ने जनवरी 2006 के बाद से एंटीबायोटिक का प्रयोग प्रतिबंधित किया और कुछ अन्य देश पशु खाद्यान्नों में रसायनों और दवाओं के प्रयोग को सीमित करने की प्रक्रिया में हैं। पारंपरिक फीड योजकों पर प्रतिबंध से पशुधन उद्योग और उपयुक्त विकल्प की तलाश के लिए बहुत दबाव डाल दिया है। इस कारण, न्यूट्रास्यूटिकल्स का उपयोग उत्पादकता और पशुधन उत्पादों की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए व्यवहार्य विकल्प के रूप में उभरा है।

परिभाषा

महान प्राचीन ग्रीस चिकित्सक हिप्पोक्रेटीस ने 370–460 ई.पू. कहा था ''खाना आपकी दवा और दवा आपका खाना हो जाए'' जाहिर है, उन्होंने रोगों के इलाज के बजाय रोकथाम पर बल दिया। जागरूकता और स्वास्थ्य चेतना ने पशु उत्पादों के एंटीबायोटिक, हार्मोन और रासायनिक अवशेष मुक्त उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया है। इसने एक नई अवधारणा, पोषण और दवा के एक संकर या संकुचन यानी न्यूट्रास्यूटिकल्स के उद्भव को जन्म दिया है। इसे ''चिकित्सा में नवाचार के लिए फाउंडेशन'' एक अमेरिकी संगठन के संस्थापक और अध्यक्ष डीफेलीस एल स्टीफन द्वारा 1989 में बनाया गया था। तदनुसार न्यूट्रास्यूटिकल्स को एक भोजन या भोजन के हिस्से के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो ''एक बीमारी की रोकथाम या उपचार सहित चिकित्सा या स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है ''इसलिए, न्यूट्रास्यूटिकल्स में पृथक किए गए पोषक तत्व, पूरक आहार, विशेष आहार, आनुवंशिक रूप से तैयार खाद्य पदार्थ, हर्बल उत्पाद में शामिल हो सकते हैं। यह अवधारणा पिछली सदी के मध्य नब्बे के दशक से अमेरिका में शुरू हुई है, लेकिन एशियाई देशों को भारत और चीन में पारंपरिक रूप से बीमारियों की रोकथाम और उपचार के लिए पौधे या उनके निष्कर्षों के प्रयोग करने के लिए अच्छी तरह से जाना जाता है। न्यूट्रास्यूटिकल्स और दवाइयों में अंतर है। जहां दवाइयां रोगों के इलाज के लिए प्रयोग की जाती हैं वहीं न्यूट्रास्यूटिकल्स रोगों से बचाव के लिए प्रयोग किए जाते हैं। इसलिए अधिकांश न्यूट्रास्यूटिकल्स के साथ हृदय रोग, मधुमेह, कैंसर, क्रोनिक सूजन रोगों, और अपक्षयी रोग जैसी बीमारियों के खिलाफ संरक्षण के साथ शारीरिक लाभ के अलावा जीवन की गुणवत्ता में चयनात्मक प्रभाव शामिल है। मानव जाति हालांकि प्राचीन समय से बीमारियों की रोकथाम और इलाज के लिए प्राकृतिक सामग्री के अर्क का प्रयोग कर रहे हैं, लेकिन ब्रांड ''न्यूट्रास्यूटिकल्स'' 1995 में अवतरित हुआ और विविध क्षेत्र में इसके प्रयोग से दुनिया का ध्यान आकर्षित किया। आज 400 से अधिक न्यूट्रास्यूटिकल्स और कार्यात्मक खाद्य पदार्थ सिद्ध स्वास्थ्य लाभ के साथ दुनिया भर में उपलब्ध हैं और आने वाले दिनों में उनकी संख्या में वृद्धि की उम्मीद कर रहे हैं।

न्यूट्रास्यूटिकल्स के वर्गीकरण

न्यूट्रास्यूटिकल्स को उनके उपयोग के आधार पर अलग–अलग तरीकों से वर्गीकृत किया जा सकता है। मुख्य समूह (1)

*राष्ट्रीय पशु पोषण एवं शरीर क्रिया विज्ञान संस्थान, बंगलुरू

आहार के रेशे (फाइबर), (2) प्रोबायोटिक्स, (3) प्रीबायोटिक्स, (4) पॉलीअनसेचुरेटेड फैटी एसिड (5) एंटीऑक्सिडेंट, (6) पालीफीनाल्स और (7) मसाले। न्यूट्रास्यूटिकल्स के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के प्रभाव मुख्य रूप से जैव रासायनिक और सेलुलर आदान–प्रदान के माध्यम/मध्यस्थता से होते हैं जो बीमारियों के लिए संवेदनशीलता को रोकता है और पशुधन उत्पादों की गुणवत्ता या मात्रा को बढ़ावा देता है। न्यूट्रास्यूटिकल्स गुण रखने वाले प्रमुख रसायन समूहों में हैं फिनोल्स, फलवोनोइडस, एल्कलॉइड, केरोटीनोइड्स, और प्रोबायोटिक्स, फाईटो स्टीरोल्स, टैनिन, वसा एसिड, टेर्पिनोइड्स, सैपोनिन, आहार फाइबर आदि होते हैं।

प्रीबॉयोटिक्स

बदलती जीवन शैली के साथ, पशुधन क्षेत्र से मांग नियमित पशुधन उत्पादों की जगह मूल्य संवर्धित (अनिवार्य रूप से एंटीबॉयोटिक दवाओं मुक्त, कम कोलेस्ट्रॉल लेकिन अधिक् एंटीऑक्सीडेंट या कैंसर अवरोधी) उत्पादों की ओर तेजी से बदल गई है जो स्वास्थ्य का ख्याल रखने के साथ–साथ तनाव के खिलाफ और जीवन शैली से संबंधित समस्याओं से सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं । प्रीबॉयोटिक्स विशिष्ट लाभकारी आंत मईक्रोफ्लोरा के विकास और गुणन को बढ़ावा देने वाले जैव अणुओं के एक वर्ग है। एंटीबॉयोटिक दवाओं और हार्मोन फीड योजकों के उपयोग पर प्रतिबंध और उपभोक्ता जागरूकता प्रीबॉयोटिक्स पर गहन अनुसंधान के लिए मुख्य चालक बल है। शब्द प्रीबॉयोटिक्स ''जैव समर्थक'' गिब्सन और रोबफ्रीइड द्वारा 1995 में गढ़ा गया है। उन्होंने प्रो को प्री से बदल दिया जिस का अर्थ है को ''पूर्व'', या ''के लिए ''। इसलिए, प्रीबॉयोटिक्स को गैर–सुपाच्य खाद्य सामग्री 'के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जो लाभदायक रूप से मेजबान को प्रभावित करता है और चुन कर विकास को या कोलन में जीवाणुओं की एक सीमित संख्या या गतिविधि को प्रेरित करता है। इसलिए, प्रीबॉयोटिक्स पेट में अपचित रहने के लिए तथा आंत के लाभकारी माक्रोफ्लोरा के चयनात्मक उत्तेजना के लिए लक्षित हैं – ये जैविक पदार्थ हैं और शरीर में कोई हानिकारक अवशेषों को नहीं छोड़ते हैं।

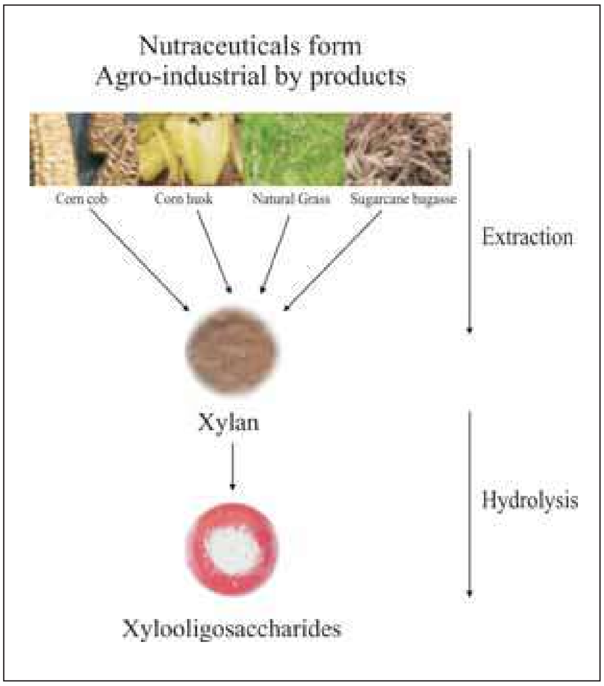

चित्र 1: कृषि अवशेषों से प्रीबॉयोटिक्स उत्पादन

पाचन प्रणाली के आधार पर पशुओं को दो श्रेणियों अर्थात् जुगाली करने वाले (जिन की विशेषता – अग्रांत्र और पश्चांत्र – दो माइक्रोबियल निवास की उपस्थिति) और गैर जुगाली करने वाला (विशेषता–सीकम केवल एक माइक्रोबियल वास की उपस्थिति) में बांटा जाता है। इसलिए पशुओं के लिए प्रीबॉयोटिक्स में निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिए:

- पशु के स्वयं के एंजाइमों द्वारा अपाच्य ।
- लाभकारी आंत माइक्रोफ्लोरा द्वारा चयनित उपयोग ।
- पौधों के स्रोत या माइक्रोबियल एंजाइमों द्वारा उत्पादन किया।
- जिसका जीआईटी (GIT) की उपकला सतह से अवशोषण न होता हो ।
- जीआईटी (GIT) से गुजरते हुए संरचनात्मक और कार्यात्मक अखंडता रखता हो।
- यहां तक कि कम से कम कंसंट्रेशन में अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर सकता हो।
- हानिकारक पेट माइक्रोफ्लोरा के लिए रसायन/बांड दुर्गम हों।
- पशुधन या उनके उत्पादों में कोई अवशेषों की समस्याएं न हो।
- गैर कैंसर कारक।
- अन्य फीड सामग्री या सूक्ष्म पोषक तत्वों के मिश्रण के साथ मिश्रण करने के लिए आसान हो ।

आमतौर पर इस्तेमाल किये जाने वाले प्रीबॉयोटिक्स

प्रीबॉयोटिक्स यानी छोटे आलीगोसकेराईड्स एक बहुत कम एकाग्रता में पौधों और सब्जियों में प्राकृतिक रूप से मौजूद होते हैं। मांग को पूरा करने के लिए, इनका पौधों में उपलब्ध अग्रदूत अणुओं से उत्पादन किया जा सकता है। व्यावसायिक रूप से उपलब्ध प्रीबॉयोटिक्स इन्युलिन फ्रुक्टो आलीगोसकेराईड्स, गेलेक्तो आलीगोसकेराईड्स, मन्नान आलीगोसकेराईड्स आदि हैं। जैसे–जैसे इनकी मांग बढ़ रही है दुनिया भर के शोधकर्ता नए–नए प्रीबॉयोटिक्स को खोज कर 'न्यूट्रास्यूटिकल्स टोकरी'

को समृद्ध कर रहे हैं। उम्मीद है भविष्य में नए न्यूट्रास्यूटिकल्स, न्यूट्रास्यूटिकल्स बाजारों में महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सक्षम हो जायेंगे। इसमें जाईलो आलीगोसकेराईड्स, पपेक्टिक आलीगोसकेराईड्स, सोया–आलीगोसकेराईड्स आदि शामिल हैं।

मुर्गियों पर प्रीबॉयोटिक्स का प्रभाव

पिछले डेढ़ दशक के दौरान प्रीबॉयोटिक्स शोधकर्ताओं के बीच लक्षित जैवअणुओं को लागत प्रभावी ढंग से निर्माण करने के लिए रुचि बढ़ी है। जाईलो आलीगोसकेराईड्स प्राकृतिक घास, मकई काब्स, मकई भूसी, गन्ना खोई से बनाए जा सकते हैं। इसके अलावा, मकई भूसी से उत्पन्न जाईलो आलीगोसकेराईड्स के ब्रायलर पक्षियों में उपयोग में रक्त कोलेस्ट्रॉल, ग्लूकोज और एलडीएल स्तर कम करने में तथा सीकल लाभकारी माइक्रोफ्लोरा को प्रेरित करने में भी प्रभावी था। मुर्गियों के आहार में ओलीगोफ्रुक्टोस के शामिल किए जाने से काफी हद तक GIT में साल्मोनेला की स्थापना में कमीं आई। प्रीबॉयोटिक्स विशिष्ट माइकोफ्लोरा समूहों अर्थात् बिफिडोबैक्टीरिया, लैक्टोबेसिलुस द्वारा विभिन्न लघु श्रृंखला फैटी एसिड जैसे एसिटिक एसिड, ब्युतैरिक एसिड, प्रोपिओनिक एसिड और लैक्टिक एसिड के उत्पादन के लिए उपयोग किया जाता है। यह लुमिनल pH की कमी का कारण बनता है जिससे खनिज घुलनशीलता और अवशोषण में वृद्धि होती है।

अंडा देने वाली मुर्गी और ब्रॉयलर पक्षियों के आहार में इन्युलिन की प्रीबॉयोटिक्स के रूप में पूरकता विकास ने भार वृद्धि प्रदर्शन में सुधार किया।

शूकरों पर प्रीबॉयोटिक्स का प्रभाव

जुगाली करने वाली और नहीं करने वाली प्रजातियों की तरह, सूअर भी GIT में माइक्रोफ्लोरा बैक्टीरिया, खमीर, आरकिया आदि की एक बड़ी आबादी घर कराती है। सूअर के जठरांत्र पथ में लाभकारी बनाम हानिकारक बैक्टीरिया के बीच जटिल संतुलन उत्पादकता के रूप में अच्छी तरह से उनके स्वास्थ्य की स्थिति निर्धारित करता है। इसके अलावा, अपने पूरे जीवन के दौरान सूअर अनेकों प्रकार के तनाव अनुभव करते हैं जिसमें वीनिंग प्रमुख हैं। इस चरण के दौरान अक्सर पेट के माइक्रोबियल संतुलन में उल्लंघन होता है। नवजात पिग्लेट्स को आलिगोफ्रुक्तोज खिलाने के 6 दिन बाद बिफिडोबैक्टीरिया की उच्च संख्या (1.68•109 बनाम 4.85 •109 CFU/g मल सामग्री) प्रदर्शित किया। आलिगोफ्रुक्तोज और प्रोबॉयोटिक के साथ संयोजन से कुल एनारोब, बिफिडोबेक्टीरिया, लेक्टोब्बेसिलाई की आबादी में एंटीरोकोक्साई और क्लोस्ट्रीडियम की संख्या में सहवर्ती कमी के साथ महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। सुअर अपशिष्ट अत्यधिक बदबू के साथ जुड़ा हुआ है जो कई माइक्रोबियल चयापचयों अर्थात् फिनोल, इन्दोल, सलफाइड्स आदि के कारण होता है प्रीबॉयोटिक्स के प्रशासन के द्वारा इसे नियंत्रित किया जा सकता है। सूअर के आहार में चिकोरी इन्युलिन की पूरकता के परिणामस्वरूप सीकम और पेट दोनों में अमोनिया एकाग्रता में एक महत्वपूर्ण कमी देखी गई। प्रीबॉयोटिक्स की खपत ने लघ्वान्त्र में शुष्क पदार्थ और कार्बनिक पदार्थ पाचकता दोनों को बढ़ाया है।

कुत्तों पर प्रीबॉयोटिक्स का प्रभाव

आलीगोफ्रुक्टोज/1% आहार का सेवन लगभग 50 दिनों की अवधि के लिए बैक्टीरियल अतिवृद्धि से पीड़ित जर्मन शेफर्ड कुत्तों की म्यूकोसा और ग्रहणी तरल पदार्थ में कुल एरोब ,ऐच्छिक एनारोब, कुल पेट एरोब की आबादी महत्वपूर्ण रूप से कम हो गई। बीगल के पेट और आंतों में एंटीरो बेक्टीकरिया और युबेक्टीरिया उपभेदों द्वारा आलीगोफ्रुक्टोज का अधिमान्यतया किण्वित और उपयोग किया जाता है जो रोगजनक बैक्टीरिया के अस्तित्व और लगाव को रोकने का कार्य करते हैं। कुत्ते के मल में माइक्रोफ्लोरा की उपस्थिति में आलीगोफ्रुक्टोज की इन विट्रो किण्वन से एसीटेट, ब्युतैरेट और प्रोपियोनेट सहित छोटी चेन फैटी एसिड का तेजी से उत्पादन होता है। लघु श्रृंखला फैटी एसिड कोलन की उपकला पर पौष्टिकता संबंधी अधिक प्रभाव की अपेक्षा की जाती है। आलीगोफ्रुक्टोज खपत से कुत्तों में पोषक तत्वों के अवशोषण के लिए अधिक से अधिक सतह क्षेत्रों के साथ लम्बी और भारी छोटी आंत देखी गई ।

रोमंथियों पर प्रीबॉयोटिक्स का प्रभाव

रोमंथी प्रजातियों (गाय, भैंस, भेड़, बकरी, मिथुन, याक आदि) में दो माइक्रोबियल निवास अग्रांत्र (रूमन, जालिका और ओमेसम शामिल) और पश्चांत्र (सीकुम) फीड की प्रोसेसिंग के लिए मौजूद होते हैं। दोनों ही आवासों में लाखों माइक्रोफ्लोरा अर्थात् बैक्टीरिया, कवक, खमीर, फेज कणों, आर्किया आदि के विभिन्न समूहों में उपस्थित होते हैं जबकि प्रोटोजोआ अपवादस्वरुप सिर्फ रूमन में पाए जाते हैं। रोमंथियों को जीवन चक्र के विभिन्न चरणों गर्भावस्था, दूध छुड़ाने और परिवहन, आदि के तनाव का सामना करना पड़ता है जिसका प्रतिकूल प्रभाव पशुओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। परिणामस्वरूप, भूख कम होना, विकास कम होना और दस्त और आंतों की आकृति खराब हो जाती है। ऐसी स्थितियों के तहत, प्रीबॉयोटिक्स उपचार के माध्यम से पशुधन आंत संबंधित विकारों पर काबू पाने के लिए एक संभावित विकल्प हो सकता है।

सभी रूमन हेमिसेल्युलोज को तोड़ सकने वाले बैक्टीरिया विकास के लिए जाईलोआलीगोसकेराइड्स का सब्सट्रेट के रूप में उपयोग में सक्षम हैं जैसे कि रुमिनोकोकास अलबस,

ब्युतीरोविब्रियो फिब्रिसोल्वेंस, युबेक्तीरियम रुमिनेंशियम। इन विट्रो किण्वन प्रणाली के तहत, प्रीबॉयोटिक्स कुल अस्थिर फैटी एसिड एकाग्रता और शुष्क पदार्थ और कार्बनिक पदार्थ दोनों की पाचकता बढ़ाने के लिए जिम्मेदार पाए गए। जब होल्स्टीन गायों को आर्चर्ड घास सिलेज या अल्फला सिलेज के साथ प्रीबायोटिक्स पर बनाए रखा गया तब रूमन pH अपरिवर्तित रहे (6.7)। होल्स्टीन गायों और स्टीयर्स में रूमन अमोनिया नाइट्रोजन एकाग्रता प्रीबॉयोटिक्स पूरक की वजह से थोड़ा कम था जिसका कारण रूमन में माइक्रोबियल प्रोटीन संश्लेषण के लिए अमोनिया का उपयोग हो सकता है। पूर्व जुगाली करने वाले बछड़ों के दूध स्थानापन्न में इन्युलिन के समावेशन के रहते काफी अधिक वजन लाभ, बेहतर मल स्थिरता प्राप्त होता है।

प्रोबॉयोटिक्स

एफएओ/डब्ल्यूएचओ के अनुसार, प्रोबॉयोटिक्स को ऐसे जीवित सूक्ष्मजीवों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो पर्याप्त मात्रा में देने पर मेजबान पर स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते हैं। प्रोबॉयोटिक्स के लाभदायक प्रभाव आंतों के विभिन्न कार्यों के विनियमन जैसे माइक्रोबियल स्थिरता, जठरांत्र बाधा कार्य, बेक्टीरिओसिन के स्राव, इम्युन् प्रभाव, प्रोकैंसर एंजाइमों में कमी, रोगजनक जीवाणुओं के लगने में हस्तक्षेप आदि। प्रोबॉयोटिक्स की विशेषता और सुरक्षा मानदंड निम्नानुसार हैं:

- गैर विषैले और गैर रोगजनक।
- सटीक वर्गीकरण पहचान।
- लक्षित प्रजातियों के सामान्य निवासी ।
- गैस्ट्रिक pH और पित्त के लिए प्रतिरोध।
- जठरांत्र पथ में लगाव।
- पेट उपकला या बलगम को आसंजन।
- निवासी माइक्रोफ्लोरा के साथ संयोग।
- रोगाणुरोधी पदार्थ का उत्पादन।
- पेट की रोगजनक माइक्रोफ्लोरा का प्रतिरोध।
- इम्यून विनियमन की क्षमता।
- स्वास्थ्य गुणों को बढ़ावा देना।
- भंडारण और वितरण की तरह प्रसंस्करण के दौरान विशेषताओं की स्थिरता।
- स्वीकार्य भेषज गुण।

पशुओं में इस्तेमाल होने वाले आम प्रोबॉयोटिक्स

बैक्टीरियल प्रोबॉयोटिक्स (1) लैक्टोबैसिलस, (2) एंटीरोकोकुस (3) बेसिलस, (4) लेक्टोबकोकुस, (5) बिफिडोबेक्टीरिया, (6) ल्युकोनोस्टोक (7) पेडिओकोकुस (8) प्रोपिओनिबेक्टीरिउम (9) स्ट्रेप्टोकोकस आदि हैं। इन प्रोबॉयोटिक्स जेनेरा में से लैक्टोबैसिलस का सबसे अधिक परीक्षण किया गया और सफल प्रोबॉयोटिक वर्ग है जिसका मानव और पशुओं दोनों में अधिक से अधिक आवेदन किया गया है। यूकेरियोटिक श्रेणी के प्रोबायोटिक्स में (1) सेक्रोमाईसीज, (2) क्लिवेरोमाईसीज और (3) एस्पर्जिल्लुस हैं। यद्यपि यीस्ट भी रोमंथी और गैर–रोमंथी दोनों की जठरांत्र पथ में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है लेकिन चुनिंदा प्रजातियां ही पूरकता पर प्रोबॉयोटिक संभावना रखतीं हैं। यीस्ट (खमीर) की कई प्रजातियों के बीच, सेक्रोमाईसीज बोलार्डी सामान्यतः जुगाली करने और गैर–जुगाली करने वाली दोनों प्रजातियों प्रोबॉयोटिक के रूप में प्रयोग किया जाता है।

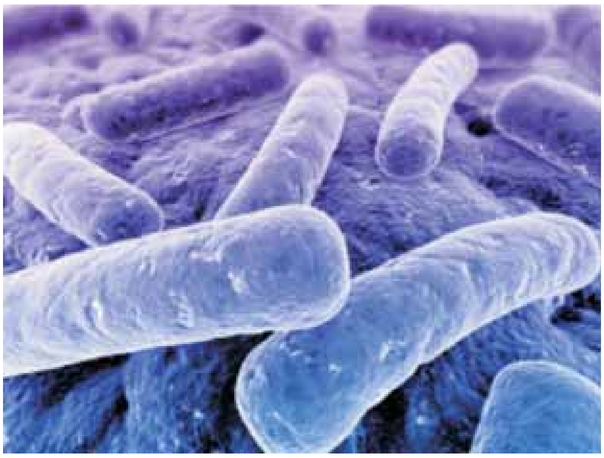

चित्र 2: एक सामान्य प्रोबॉयोटिक्स का इलेक्ट्रान माइक्रोग्राफ

गैर रोमंथियों में प्रोबॉयोटिक्स का प्रभाव

नए चूजे का GIT जठरांत्र पथ माइक्रोफ्लोरा से मुक्त होता है, लेकिन वे फीड, पानी और वातावरण के माध्यम से उन्हें प्राप्त करना शुरू कर देते हैं। ब्रॉयलर मुर्गी के लघ्वान्त्र पर माइक्रोफ्लोरा का घनत्व 10^8 कोशिका/g पाचक तत्व और सीकम में 1010 कोशिका/g पाचक तत्व जीवन के दूसरे दिन पर होता है जो लघ्वान्त्र में बढ़कर 1010 कोशिका/g पाचक तत्व और सीकुम में 1011 कोशिका/g पाचक तत्व तक पहुंचता है, पर उसके बाद अपेक्षाकृत स्थिर हो जाता है। लैक्टोबैसिलस देने से ब्रॉयलर पक्षियों में नियंत्रण समूह की तुलना में चुनौती दिए गए समूह में *साल्मोनेला इन्तेराइटिस* की आबादी में कमी हो जाती है। लैक्टोबैसिलस के अनुप्रयोग से परिगलित आंत्रशोथ के साथ चुनौती दिए गए पक्षियों में मृत्यु दर को 60 से 30% तक कम किया जा सका है। ब्रायलर पक्षियों में मिश्रित प्रोबॉयोटिक्स (लैक्टोबैसिलस एसिदोफिलुस, एल केसिअई, बिफिदोबेक्टीरियम थर्मोफिलुस, एंटीरोकोकस फेसियम) आहार में 108 CFU/g के साथ पूर्ण से पेट में क्लोस्ट्रीडियम जेजुनी में कमी को दर्शाता है ।

रोमंथियों में प्रोबॉयोटिक्स

नवजात, युवा रोमंथियों में दस्त ,रुग्णता और मृत्यु दर के लिए प्रमुख कारण में से एक है। लैक्टोबैसिलस एसिदोफिलुस या सेक्रोमाईसीज सेरिविसी के साथ बछड़ा आहार की पूरकता से दस्त की घटना में कमी होती है। इसी तरह, ई कोलाई निसील 1917 के प्रशासन ने नवजात बछड़ों के तनाव और दस्त के प्रोफिलैक्सिस और उपचार पर लाभकारी प्रभाव दिखाया। मवेशियों में दो साल की अवधि में आयोजित क्षेत्र परीक्षण में लैक्टोबैसिलस एसिदोफिलुस NP5 की दैनिक मौखिक खुराक के प्रशासन पर ई कोलाई 0157%। H7 मल में निकासी में (35%) की कमी परिलक्षित हुई। प्रोबायोटिक पूरकता रोगजनक को कम करने के अलावा, लाइव वजन लाभ और युवा बछड़ों में रूमन विकास में सुधार आया। प्रारंभिक विकास के चरण के दौरान सकारात्मक प्रभाव के अलावा, प्रोबॉयोटिक्स दुग्ध उत्पादन के दौरान शुष्क पदार्थ का सेवन और दूध उपज में सुधार कर जाते हैं। प्रोबायोटिक खिलाने के अन्य सकारात्मक प्रभाव में कुल उगाये जाने वाले रूमन बैक्टीरिया में वृद्धि , सेल्युलैटिक बैक्टीरिया की वृद्धि से युग्मित उच्च फाइबर पचता भी शामिल है।

एंटीऑक्सीडेंट क्रिया

चयापचय प्रतिक्रियाओं और रोगों के परिणाम के रूप में, पशु के शरीर के भीतर प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन और नाइट्रोजन प्रजातियों के रूप में मुक्त रेडिकल्स का उत्पादन होता रहता है। प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन प्रजातियों के प्रभाव को निष्क्रिय करने के लिए प्राकृतिक तंत्र में होते है, एंटीऑक्सीडेंट यौगिकों (विटामिन सी, विटामिन ई, कैरोटीन, यूरिक एसिड आदि) और एंजाइम (केटालेज, सुपर आक्साइड दिस्मयुतेज, ग्लूताथिओन परोक्सीडेज/रिडक्टेस)। फ्री रेडीकल्स कण का उत्पादन अधिक होता है (जैसे कि आक्सीकारक तनाव, रोग, यूवी जोखिम, चरम वातावरण, आधुनिक कारखाने शैली के प्रबंधन आदि के तहत (अधिक है) शरीर की अपनी एंटीऑक्सीडेंट क्षमता का प्रतिकार सीमा से तो पशु को स्वस्थ रखने के लिए और साथ ही उत्पादन की मात्रा और गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए एंटीऑक्सीडेंट के अतिरिक्त खुराक की आवश्यकता हो सकती है। आजकल, पौधों से प्राप्त प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट ऑक्सीडेटिव हर्जाना नियंत्रित करने में एक रुचि बढ़ रही है। पशुधन उत्पादों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और बीमारी को रोकने की क्षमताओं के लिए बढ़ती मांग के चलते विभिन्न पशु उत्पादों (अंडा, मांस और उसके उत्पादों सहित) में प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट समावेश पर गहन शोध करने के लिए प्रेरित किया है। एंटीऑक्सीडेंट युक्त पशु उत्पादों की खपत के लाभ मानव में उम्र से संबंधित समस्याओं में देरी की जा सकती है। साथ ही ऑक्सीडेटिव नुकसान जो जीवन के दौरान अपरिहार्य है, को कम किया जा सकता है। सिंथेटिक एंटीऑक्सीडेंट बनाम प्राकृतिक के बीच प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट अधिक सुरक्षित है और सिंथेटिक एंटीऑक्सीडेंट के विपरीत यह कैंसर पैदा कराने वाले गुण प्रदर्शन नहीं करता। प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट को निम्नलिखित श्रेणियों में बांटा जा सकता है: (1) विटामिन (एस्कार्बिक एसिड, अल्फा टोकोफीराल , बीटा कैरोटीन) (2) फीनोलिक्स (P—कुमेरिक एसिड, केफेईक एसिड, गेलिक एसिड, रोज्मेरिनिक एसिड) (3) के फिनोलिक डाईर्पीस (कर्नोसिव एसिड, एपिरोस्मानोल), (4) फ्लवोनोइड्स (केटचिन, केम्पफीरोल) और (5) सुगन्धित तेल (मेंथाल, कार्वक्राल, थईमोल, एयुजीनोल)।

सूअर में विटामिन ई आहार के साथ पूरकता पर कोशिका झिल्ली में अल्फा टोकोफेराल की उच्च एकाग्रता हुई जो लिपिड परऑक्सीकरण कम कर देता है। मांसपेशियों में लिपिड ऑक्सीकरण आक्सीमायोग्लोबिन के मेटमायोग्लोबिन में ऑक्सीकरण को उत्प्रेरित करने के लिए सूचित किया जाता है, जो कि मांस के रंग बिगड़ने का कारण बनता है। अल्फा टोकोफेराल आक्सीमायोग्लोबिन के देरी से ऑक्सीकरण में भूमिका निभा सकता है और इस तरह मांस के रंग बिगड़ने को रोक सकता है। यह मांसपेशियों की सेल झिल्ली की अखंडता को, भंडारण के दौरान झिल्ली के फॉस्फोलिपिड के ऑक्सीकरण को रोकने के द्वारा, बनाए रखने में भी मदद करता है।

न्यूट्रास्यूटिकल्स और प्रजनन

कम उपजाऊ पुरुष में न्यूट्रास्यूटिकल्स की शुक्राणु उत्पादन और गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए सिफारिश की जाती है। फोलिक एसिड और जिंक सल्फेट कम उपजाऊ – पुरुष को दिलाने पर शुक्राणु एकाग्रता में एक महत्वपूर्ण सुधार देखा गया है। आर्जिनीन, विटामिन बी 12, मिथाइल कोबालमीन और जिन्सिग की तरह कई अन्य न्यूट्रास्यूटिकल्स पुरुष बांझपन के इलाज के लिए इस्तेमाल किए गए हैं। β कैरोटीन एक महत्वपूर्ण न्यूट्रास्यूटिकल्स माना जाता है जो संभवतः एक एंटीऑक्सीडेंट के रूप में कार्य करता है। बैलों में यह साबित हुआ है कि β कैरोटीन विटामिन ए की कमी शुक्राणु प्रगतिशील गति कम कर देता है और अधिवृषण में शुक्राणुजनन और शुक्राणु परिपक्वता कम कर देता है। इसके अलावा बैल में, β कैरोटीन की मध्यस्थता से उत्पन्न विटामिन ए की कमी से शुक्राणुजनन में कमी, वृषण क्षय, शुक्राणु की गुणवत्ता में कमी, शुक्राणु रूपात्मक असामान्यताओं में वृद्धि और बीजदार नलिकाओं का अधःपतन का कारण बनती है। इसलिए, β कैरोटीन की सामरिक पूरकता से पुरुष की प्रजनन प्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं।

कार्निटीन ऊर्जा उत्पादन प्रक्रियाओं में एक महत्वपूर्ण यौगिक है क्योंकि यह माइटोकॉन्ड्रिया में फैटी एसिड आक्सीडेशन को विनियमित करता है। यह माइटोकॉन्ड्रिया के एसिटाइल–CO–A का स्तर कम करता है जो ऑक्सीडेटिव पाथ वे के कई मुख्य एंजाइमों में से एक है। अधिवृषण के माध्यम से शुक्राणु के पारित होने के दौरान इसमें कार्निटीन की मात्रा बढ़ जाती है। घोड़े में एल कार्निटीन की आहार पूरकता का शुक्राणु के माइटोकॉन्ड्रियल गतिविधि और शीत संरक्षण के उपरान्त गतिशीलता पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह एंटीऑक्सीडेंट क्रिया सहित विभिन्न स्वास्थ्य लाभकारी गुण रखता है। चावल तेल गामा ओरैजेनाल का एक अच्छा स्रोत है। PUFA और Y ओरैजेनाल युक्त वाणिज्यिक चावल तेल की घोड़े के आहार में पूरकता से वीर्य की कुल एंटीऑक्सीडेंट क्षमता, उच्च झिल्ली कार्यक्षमता और शुक्राणु की गतिशीलता में वृद्धि पाई गई।

गायों में, प्रसव के बाद, गर्भाशय में गर्भाशय प्रतिगमन के साथ जुड़े कई गतिशील परिवर्तन होते हैं। प्रोसटाग्लेंडीन गर्भाशय प्रतिगमन में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। प्रसव अवधि के दौरान लिनोलीइक और लिनोलेनिक एसिड खिलाने से PG2 श्रृंखला के प्रोसटाग्लेंडीन के जैव संश्लेषण को उत्तेजित कर सकते हैं जिससे गायों की प्रसवोत्तर गर्भाशय स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं। यह सुझाव दिया है कि जन्मपूर्व गायों में मेगालेक–आर खिलाने से लिनोलीइक एसिड में समृद्ध लिपिड पूल बनाए रखने में मदद करता है जो आगे अरेकिडोनिक एसिड की सांद्रता बढ़ाता है जो PGF2α और अन्य PG2 श्रृंखला के प्रोसटाग्लेंडीन के संश्लेषण के लिए अग्रदूत होते हैं जो प्रसवोत्तर अनुकूल गर्भाशय स्वास्थ्य और इम्युनो दक्षता को बढ़ाते हैं। गायों में, प्रजनन से पहले 25 दिनों से लेकर 70 प्रसवोत्तर दिनों तक लिनोलीइक एसिड के कैल्सियम लवण और मोनो ईनोइक ट्रांस C:18 फैटी एसिड की आहार पूरकता से पहले गर्भाधान की दर में सुधार होता है। लिनोलीइक एसिड से समृद्ध कैल्शियम लवण की आहार पूरकता गायों में प्रजनन क्षमता में सुधार करने में लाभदायक पाया गया है।

भारतीय न्यूट्रास्यूटिकल्स बाजार

बदलती जीवन शैली और उपभोक्ता जागरूकता के साथ युग्मित महंगी स्वास्थ्य सेवा लागत की वजह से, भारतीय न्यूट्रास्यूटिकल्स उद्योग अपनी बहुपयोगी भूमिका की वजह से तेजी से बढ़ रहा है। 2010 में अनुमान के अनुसार, वैश्विक न्यूट्रास्यूटिकल्स बाजार $ 140,100,000,000 का है जिसमें बहुमत अमेरिका, यूरोप और जापान द्वारा साझा किया जाता है । दिनांक 12 जून 2010, नवभारत टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय न्यूट्रास्यूटिकल्स बाजार लगभग $ 1480000000 होने का अनुमान है और 2015 में $ 2731000000 तक पहुंच सकता है। पशुओं के नजरिए से ज्यादातर आयुर्वेदिक निर्माता पहले से ही कई पौधों से उत्पन्न यौगिकों का विपणन कर रहे हैं उनमें से अधिकाँश न्यूट्रास्यूटिकल्स हो सकते हैं। न्यूट्रास्यूटिकल्स उत्पादों की एक विस्तृत रेंज को कवर करते है जिसमें अभिनव भोजन से शुरुआत करके प्रीबॉयोटिक्स और प्रोबॉयिटिक्स भी शामिल है। हाल ही में डी "न्यूट्रा शिखर सम्मेलन" में निष्कर्ष निकाला गया कि उनके संभावित लाभ का उल्लेख प्रत्येक उत्पाद के लेबल पर किया जाय। इसी समय में न्यूट्रास्यूटिकल्स के चिकित्सीय उद्देश्य के लिए आवेदन के बारे में चिंता की गई और वैज्ञानिक सबूतों के उत्पादन के साथ–साथ जोखिम विश्लेषण के लिए भी सुझाव दिया गया। यहां याद करने योग्य है कि भारतीय पारंपरिक हर्बल चिकित्सा हजारों साल पहले विभिन्न रोगों के रोकथाम और साथ ही इलाज के लिए विकसित की गई, जिसे पिछली सदी के दौरान मार्डन दवाओं से आंशिक रूप से स्थानापन्न कर दिया गया जिनके कई साइड इफेक्ट, अवशेष की समस्या और एंटीबॉयोटिक प्रतिरोध जीनों का स्थानांतरण आदि समस्याएं हैं। आजकल पशुओं और मानव समाज दोनों के लिए लाभ सुनिश्चित करने के क्रम में भारतीय हर्बल खजाने की ओर या न्यूट्रास्यूटिकल्स उत्पादन पर फिर से विचार करने की जरुरत है।

आज का पुरूषार्थ ही कल का भाग्य है।

— डा. भीमराव अम्बेदकर

क्षेत्रीय भाषा में कृषि तकनीक का हस्तांतरण कृषकों हेतु वरदान

जी निर्मला*, के सम्मी रेड्डी** एवं एस आर यादव***

कृषि की नवीनतम तकनीक की जानकारी क्षेत्रीय या स्थानीय भाषा में कृषकों को देने हेतु विभिन्न सरकारें निरंतर प्रयासरत हैं। किसान खुशहाल तो देश खुशहाल। अब किसानों को उन्नतिशील खेती और फसलों का रिकार्ड उत्पादन करने हेतु कृषि विज्ञान केंद्रों व अन्य माध्यमों से नई तकनीक की जानकारी प्रदान की जा रही है। यदि नई तकनीक का प्रचार–प्रसार वैज्ञानिक, कृषक तथा कृषि अधिकारी मिल बैठकर उनकी स्थानीय भाषा में करें तो वह उसे हाथों हाथ लपक लेते हैं। कई प्रदेशों में एग्रो क्लाईमेटिक जोन स्थापित कर विराट किसान मेलों का आयोजन किया जा रहा है। इन मेलों में किसानों की समस्याओं का स्थानीय भाषा में निदान करते हुए उन्हें कृषि निवेश में सहायक कृषि तकनीक उपलब्ध कराई जा रही है। विभिन्न राज्यों में कृषि उपज में वृद्धि को तीव्र गति देने हेतु कृषि उत्पादन की नवीन तकनीक को समय–समय पर कृषकों तक पहुंचाने तथा सामयिक कृषि संसाधन व्यवस्था हेतु मंडल, जनपद, विकास खंड एवं न्याय पंचायत स्तर पर खरीफ एवं रबी मौसमों के प्रारंभ में ही किसान गोष्ठियों का आयोजन विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाना जरूरी है। कृषकों के लिए कृषि की समसामयिक समस्याओं के निदान एवं तकनीकी ज्ञान में वृद्धि हेतु मासिक बुलेटिन भी जारी किए जाने चाहिए। कृषि एवं पशुपालन विषयक पत्रिकाओं को स्थानीय भाषा में जारी कर कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र की समसामयिक समस्याओं के निदान एवं अद्यतन पद्धति एवं तकनीकों का प्रचार–प्रसार करें। जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए बायो फर्टीलाइजर, बायो पेस्टीसाइड्स एवं बायो एजेंट्स के वितरण पर फोकस किया जाए। ट्रैक्टरों एवं कृषि यंत्रों के उचित रखरखाव हेतु वीटीपी केंद्रों पर किसानों को नवीनतम कृषि तकनीक की जानकारी प्रदान की जाए। कृषि यंत्रों के रखरखाव तथा संचालन पर प्रायोगिक प्रशिक्षण आवश्यक है। कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विषय विशेषज्ञ प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार हेतु बैंकों से लोन लेने में सहायक प्रमाणपत्र प्रदान करें। किसानों को स्थानीय भाषा में प्रदान की जा रही कृषि की नवीनतम तकनीकें 'रामबाण दवा' का काम कर रही हैं।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश के बहुसंख्यक कृषकों को उनकी क्षेत्रीय या स्थानीय भाषा में नई तकनीकों की जानकारी प्रदान करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है जिसे कंप्यूटर ने इंटरनेट के माध्यम से कुछ सरलता प्रदान की है। आज कंप्यूटर विश्व की अनेक भाषाओं में बिना किसी भाषाई सॉफ्टवेयर के सुविधापूर्वक यह कार्य करने में सक्षम हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि देश का कृषक समुदाय संपूर्ण भूभाग की स्थानीय जलवायु परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपनी फसलों की अधिकाधिक पैदावार लेने में स्वयं को सक्षम करने हेतु निरंतर प्रयासरत है ताकि वे अपनी फसल की दोगुनी पैदावार लेने मे सफल हो सकें। विभिन्न परिस्थितियों में ली जाने वाली फसलों का चयन वहां की भूमि और जलवायु पर निर्भर करता है। वर्तमान में दिन प्रतिदिन बढ़ते शहरी आबादी क्षेत्र के कारण कृषि योग्य भूमि का सिकुड़ता क्षेत्र तथा ग्रामीण आबादी का आजीविका हेतु शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन करना भी आज की परिस्थितियों में विकराल रूप धारण करता जा रहा है। कृषकों पर भी इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

*प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, टीओटी; **निदेशक एवं सहायक निदेशक (रा.भा.); ***भाकृअनुप – केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, संतोषनगर, हैदराबाद – 500059 (तेलंगाना)

भारतीयों ने विश्व के मानस पटल पर सदैव अपनी अमिट छाप छोड़ी है। हमारे ऋषि मुनियों की 'वसुधैव कुटुम्बकम' की योजना को सभी ने सराहा है। युग बदला और नित नवीन प्रौद्योगिकियां उभरकर आईं। भारत की प्राचीन संकल्पना को वैज्ञानिक आधार मिला। वर्तमान में उपलब्ध प्रौद्योगिकी ने अपने पराए का भेद मिटाते हुए यह सिद्ध कर दिया है कि आज के युग में सभी कुछ संभव है। बाजार में खाद्यान्न की बढ़ती मांग और दिनोंदिन संकुचित होते जा रहे कृषि क्षेत्र के कारण घटती उपज ने हमारे नीति निर्धारकों को वर्तमान और निकट भविष्य में आने वाली समस्याओं से निपटने हेतु सोचने पर मजबूर कर दिया। पिछले कुछ वर्षों में देश के विभिन्न भागों में जलवायु परिवर्तन और बढ़ते सूखे की स्थिति का सामना करने के लिए विभिन्न सरकारों को बहुत कुछ सोचने को विवश कर दिया। भारत सरकार ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के माध्यम से राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि के लिए नवोन्मेष परियोजना (निक्रा) प्रारंभ की जिससे देश में वर्तमान उपलब्ध कृषि क्षेत्र से अधिक फसल उपज लेने पर अनुसंधान कार्य आरंभ किया जा सके। इस परियोजना के सकारात्मक और प्रभावकारी परिणाम दिखाई पड़े हैं।

भारतीय किसान अभी तक प्राचीन तरीके से अपने कृषि यंत्रों का प्रयोग कर रहे थे। अब समय आ गया है कि उसे भी बहती धारा में ही बहना होगा। कृषि की नई तकनीकों की जानकारी क्षेत्रीय या स्थानीय भाषा में देने हेतु सरकारें निरंतर प्रयासरत हैं क्योंकि यह उनके लिए 'सोने पे सुहागा साबित' हो सकती है। खेतों में हरियाली ही किसानों की खुशहाली का प्रतीक है। आजकल उन्नतिशील खेती, फसलों का रिकार्ड उत्पादन करने के लिए किसानों को आधुनिक नई तकनीक से खेती करने की जानकारी का एक विशेष अभियान चलाया जाने लगा है। देश में किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), अटारी सेंटर्स व अन्य माध्यमों से कृषि की नई तकनीक उपलब्ध हो रही है परंतु कई स्थानों पर अभी भी इसका माध्यम अंग्रेजी भाषा ही है। यदि नई तकनीक का प्रचार व प्रसार वैज्ञानिक, कृषक तथा कृषि अधिकारी मिल बैठकर उनकी स्थानीय भाषा में करें तो वह उसे हाथों हाथ लपक लेते हैं। कई प्रदेशों में एग्रो क्लाईमेटिक जोन स्थापित कर भव्य किसान मेलों का आयोजन किया जा रहा है। इन मेलों में किसानों की समस्याओं का स्थानीय भाषा में निदान करते हुए उन्हें कृषि निवेश में सहायक कृषि तकनीक उपलब्ध कराई जा रही है। इसका परिणाम यह निकला कि विभिन्न राज्यों में कृषि उपज में निरंतर वृद्धि हो रही है परंतु इसे और तीव्र गति देने हेतु कृषि उत्पादन की नवीन तकनीक को समय पर कृषकों तक पहुंचाने तथा सामयिक कृषि संसाधन व्यवस्था हेतु मंडल, जनपद, विकास खंड एवं न्याय पंचायत स्तर पर खरीफ एवं रबी मौसमों के शुरु में ही किसान गोष्ठियों का आयोजन करके संबंधित विषय विशेषज्ञ कृषकों को हितोपयोगी जानकारी प्रदान करें तो वह बहुलाभकारी सिद्ध हो सकता है। अनेक राज्यों में कृषि विभाग द्वारा कृषकों के लिए कृषि की समसामयिक समस्याओं के निदान एवं तकनीकी ज्ञान में वृद्धि हेतु मासिक बुलेटिन भी ग्राम पंचायतों, विभागीय कर्मचारियों, प्रगतिशील कृषकों एवं जन प्रतिनिधियों के माध्यम से जारी किए जा रहे हैं। कुछ विभाग कृषि एवं पशुपालन विषयक पत्रिकाओं को स्थानीय भाषा में जारी कर कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र की समसामयिक समस्याओं के निदान एवं अद्यतन पद्धति एवं तकनीकों का प्रचार व प्रसार कर रहे हैं। आजकल कुछ राज्य सरकारों द्वारा जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए बायो फर्टीलाइजर, बायो पेस्टीसाइड्स एवं बायो एजेंट्स के वितरण पर 75 प्रतिशत अनुदान एवं मृदा में सूक्ष्म तत्वों की कमी को दूर करने एवं भूमि सुधार के उद्देश्य से जिंक सल्फेट 50 प्रतिशत एवं जिप्सम के वितरण पर भी 75 प्रतिशत अनुदान विभिन्न योजनाओं के माध्यम से कृषकों को उपलब्ध कराया जा रहा है। ट्रैक्टरों एवं कृषि यंत्रों के उचित रखरखाव हेतु वीटीपी (वोकेशनल ट्रेनिंग प्रोवाइडर) के नाम से मशहूर केंद्रों पर किसानों को नवीनतम कृषि तकनीक की जानकारी प्रदान की जा रही है। कुछ स्थानों पर कृषि यंत्रों के रखरखाव तथा संचालन के संबंध में प्रायोगिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है ताकि प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति सरलता से स्वरोजगार प्रारंभ कर सके। कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विषय विशेषज्ञ प्रशिक्षण उपरांत देश विदेश में मान्य भारत सरकार का प्रमाण पत्र भी देते हैं। इस प्रमाण पत्र के आधार पर स्वरोजगार हेतु बैंकों द्वारा सरलता से ऋण भी उपलब्ध कराया जाता है। किसानों को स्थानीय भाषा में प्रदान की जा रही कृषि की नवीनतम तकनीकें 'रामबाण दवा' का काम कर रही हैं।

कृषकों को शिक्षा प्रदान करते समय तकनीकी शब्दों की एकरूपता पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। राष्ट्रीय उन्नयन (नवोन्मेषी) कृषि परियोजना [National Innovative Agricultural Project (NIAP)] निर्जल क्षेत्र Arid Zone (वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग CSTT) परंतु आईसीएआर में शुष्क क्षेत्र या मरू भूमि प्रयोग में आ रहा है। ड्राइलेंड Dryland के लिए बारानी/शुष्क भूमि/सूखी खेती आदि का धडल्ले से प्रयोग किया जा रहा है। एक ही शब्द को विभिन्न संस्थानों द्वारा अलग–अलग शब्दार्थों में प्रयोग में लाया जा रहा है। मत्स्य, मात्स्यिकी, मात्स्यिकीय, मछली आदि इसका साक्षात उदाहरण हैं। परिषद में Innovative हेतु नवोन्मेषी तो डीआरडीओ की प्रयोगशालाओं में इसे उन्नयन के रूप में प्रयोग किया जाता है। Risk Management जोखिम प्रबंधन, Stress Management दबाव प्रबंधन और Strategy Management रणनीति प्रबंधन आदि कुछ मिलते जुलते अर्थ वाले शब्द देखे जाते हैं।

हमारा देश सांस्कृतिक विविधता के साथ ही भौगोलिक विविधता लिए हुए है। इस भौगोलिक विविधता को ध्यान में रखते हुए ही हमारे वैज्ञानिक उस भूमि व वहां पर उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप खेती करने का सुझाव देते हैं। अन्य क्षेत्रों में हम स्थानीय भाषा के महत्व को भले ही न समझे किंतु कृषि के क्षेत्र में हम इसके प्रति उदासीन नहीं रह सकते। कृषि का मातृभूमि व स्थानीय भाषा से निकटतम संबंध है। देशज मिट्टी, पानी, जलवायु व स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों के आधार पर ही हमारा कृषि कार्य संपन्न होता है। देश में हुए अनुसंधान परिणामों से विकसित तकनीकों का उपयोग किसानों के लिए हितकर है जिसे स्थानीय भाषा में उपलब्ध कराया जाना चाहिए। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का 'मेरा गांव मेरा गौरव' नामक अभियान इसमें विशेष भूमिका अदा कर रहा है।

अंत में हम कह सकते हैं कि भारत जैसे विशाल देश में जहां रोजगार के रूप में कृषि को अपनाया जा रहा है वहां पर कृषि तकनीक के प्रचार प्रसार में क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करना अवश्यंभावी है। स्थानीय भाषा में ज्ञान प्रदान करते हुए वैज्ञानिकों की प्रतिष्ठा ही बढ़ेगी। क्योंकि किसान भी तभी उन्नत तकनीक को आसानी से अपनाने में उन्हें सहयोग देंगे और देश की प्रगति में कंधे से कंधा मिलाकर अपना सर्वोत्कृष्ट प्रदान करने का प्रयास करेंगे।

'युवक और युवतियां अंग्रेजी और दुनियां की दूसरी भाषाएं खूब पढ़ें और जरूर पढ़ें। लेकिन उनसे मैं आशा करूंगा कि वे अपने ज्ञान का प्रसाद भारत को और सारे संसार को उसी तरह प्रदान करें जैसे बोस, राय और स्वयं कवि रवीन्द्रनाथ ने प्रदान किया है, मगर मैं हरगिज यह नहीं चाहूंगा कि कोई भी हिन्दुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए तथा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊंचे–से–ऊंचे चिन्तन नहीं कर सकता।"

– महात्मा गांधी

देश के सबसे बड़े भू–भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्र'भाषा पद की अधिकारिणी है।"

– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

– डॉ.राजेन्द्र प्रसाद

हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और दृढ़ करती है। मैं हिन्दी का और हिंदी मेरी है। हिन्दी के लिए मेरे प्राण भी प्रस्तुत है। राष्ट्रभाषा हिन्दी से ही भारतीय संस्कृति की रक्षा हो सकती है।'

– राजर्षि टण्डन

अतिरिक्त आय एवं पोषण सुरक्षा हेतु वर्ष भर मशरूम उत्पादन

डा. चन्द्रभानु, डा. आजाद सिंह पँवार एवं श्री आर. बी. तिवारी

एक पौष्टिक स्वस्थ आहार के रूप में मशरूम का प्रयोग विश्व भर में प्रचलित है। इसमें उच्च कोटि की प्रोटीन, प्रचुर मात्रा में खनिज लवण, खाद्य रेशा एवं विटामिन पाये जाते हैं। आवश्यक अमीनो की संतुलित मात्रा, नगण्य कोलेस्ट्राल व क्षारीय प्रकृति के कारण मशरूम को एक उत्तम खाद्य पदार्थ की श्रेणी में रखा जाता है। भारत जैसे विकासशील देश की पोषण सुरक्षा हेतु दैनिक आहार में मशरूम को सम्मिलित करना अति आवश्यक है। कुछ प्रमुख मशरूम प्रजातियों को पोषणमान तालिका–1 में दिया गया है।

जिस प्रकार विभिन्न कृषि फसलों को मौसम की अनुकूलता के अनुसार भिन्न–भिन्न ऋतुओं में उगाया जाता है। उसी प्रकार विभिन्न प्रकार की मशरूम की प्रजातियों के क्रम में हेर–फेर करके किसान भाई पूरे वर्ष मशरूम उत्पादन कर सकते हैं। उत्तरी भारत में मौसमी (सीजनल) मशरूम उत्पादक पहले केवल श्वेत बटन मशरूम की एक फसल लेने के बाद अपने उत्पादन कार्य को बंद कर देते थे तथा गर्मियों में तापमान में वृद्धि के कारण वर्ष भर मशरूम उत्पादन कार्य जारी नहीं रख पाते हैं। कुछ मशरूम उत्पादक ढींगरी मशरूम की एक–दो फसलें लेने का प्रयास करते हैं। यदि मशरूम उत्पादक दूधिया मशरूम को वर्तमान फसल चक्र में शामिल कर लें तो अपने मशरूम उत्पादन काल को बढ़ा सकते हैं तथा वर्ष भर मशरूम उत्पादन करके स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

जलवायु के अनुसार उपलब्ध मशरूम प्रजातियाँ

फसलों को क्रम में उगाने की परम्परा को मशरूम की खेती में भी लागू किया जा सकता है। लेकिन एक गैर परम्परागत फसल होने की वजह से मशरूम को क्रम में उगाना अभी तक प्रचलन में नहीं आ पाया है। किसान केवल इसे एक ही ऋतु में उगाते आ रहे हैं तथा अन्य ऋतुओं में मशरूम उत्पादन व्यवसाय बंद कर देते हैं। जबकि हमारे देश की जलवायु भिन्न–भिन्न प्रकार की मशरूम की खेती के लिए उपयुक्त है। यदि हम देश की जलवायु पर नजर डालें तो पायेंगे कि यहाँ गर्म, आर्द्र, शीतोष्ण आदि विभिन्न प्रकार की जलवायु विभिन्न प्रांतों में उपलब्ध हैं। अतः हमारे देश में भिन्न–भिन्न प्रकार की मशरूम प्रजातियों को क्रम में उगाना सम्भव है। विभिन्न प्रकार की मशरूम प्रजातियों हेतु अनुकूल तापमान सारणी–2 में दर्शाया गया है।

तालिका–1ः कुछ प्रमुख मशरूम प्रजातियों के पोषकीय मान (प्रति 100 ग्राम शुष्क भार के आधार पर प्रतिशत में)

पौष्टिक तत्व	मशरूम प्रजातियाँ					
	बटन मशरूम	ढींगरी मशरूम	पुवाल मशरूम	दूधिया मशरूम	कठकर्ण मशरूम	शिटाके मशरूम
प्रोटीन	28.1	30.4	29.5	17.7	8.7	32.9
वसा	6.6	2.2	5.7	4.1	1.6	3.7
कार्बोहाइड्रेट	59.4	57.6	60.0	64.3	73.7	47.6
खाद्य रेशा	8.3	8.7	10.4	3.4	11.5	28.9
खनिज लवण	9.4	9.8	9.8	7.4	4.5	9.6
पानी (ताजे भार के आधार पर)	90.4	90.8	88.0	86.0	91.9	89.1
ऊर्जा (किलो कैलोरी)	353	345	374	363	317	356

*भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ–250110

सारणी 2: कुछ प्रमुख मशरूम प्रजातियों के लिये अनुकूल तापमान

वैज्ञानिक नाम	प्रचलित नाम	अनुकूल तापमान (डिग्री.से.)	
		बीज फैलाव हेतु	फलन हेतु
अगेरिकस बाइस्पोरस	श्वेत बटन मशरूम	22–25	14–18
अगेरिकस बाइटॉरकिस	ग्रीष्मकालीन श्वेत बटन मशरूम	25–28	25–28
लेण्टीन्यूला इडोड्स	शिटाके मशरूम	22–27	15–20
प्लूरोटस सजोर–काजू	ढींगरी मशरूम	25–30	22–26
प्लूरोटस फ्लोरिडा	ढींगरी मशरूम	25–30	18–22
प्लूरोटस इरिंगाई	काबुल ढींगरी मशरूम	18–22	14–18
वॉल्वेरियेल्ला वॉल्वेसिया	पराली मशरूम	32–34	28–35
कैलोसाईबी इंडिका	दूधिया मशरूम	25–30	25–38
ऑरिकुलेरिया प्रजाति	कठकर्ण मशरूम	20–30	12–30

वार्षिक मशरूम चक्र

उपर्युक्त सारणी में दिए गए विभिन्न प्रकार की मशरूम प्रजातियों की वानस्पतिक वृद्धि (बीज फैलाव) व फलनकाय (फलन) अवस्था के लिए अनुकूल तापमानों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि मशरूम को कृषि फसलों की भांति हेर–फेर कर चक्रों में उगाया जा सकता है। जैसे मैदानी भागों व कम ऊँचाई पर स्थित पहाड़ी भागों में शरद ऋतु में श्वेत बटन मशरूम, कम ठंड में ग्रीष्मकालीन श्वेत बटन व ढींगरी मशरूम तथा ग्रीष्म व वर्षा ऋतु में पराली व दूधिया मशरूम।

उत्तर भारत के मैदानी भागों में श्वेत बटन मशरूम को शरद ऋतु में अक्टूबर से फरवरी तक, ग्रीष्मकालीन श्वेत बटन मशरूम को सितंबर से नवम्बर व फरवरी से अप्रैल तक, कठकर्ण मशरूम को फरवरी से अप्रैल तक, ढींगरी मशरूम को सितंबर से मई तक, पराली मशरूम को मई से सितंबर तक तथा दूधिया मशरूम को फरवरी से अप्रैल–मई व जुलाई से सितंबर तक उगाया जा सकता हैं। मध्यम ऊँचाई पर स्थित पहाड़ी स्थानों में श्वेत बटन मशरूम को सितंबर से मार्च तक, ग्रीष्मकालीन श्वेत बटन मशरूम को जुलाई से अगस्त तक व मार्च से मई तक, शिटाके मशरूम को अक्टूबर से फरवरी तक, ढिंगरी मशरूम को पूरे वर्ष भर, काले कनचपड़े मशरूम को मार्च से मई तक तथा दूधिया मशरूम को अप्रैल से जून तक उगाया जा सकता है।

चित्र 1: पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिये मौसम आधारित वार्षिक मशरूम उत्पादन चक्र

अधिक उँचाई पर स्थित पहाड़ी क्षेत्रो में श्वेत बटन मशरूम को मार्च से नवम्बर तक, ढिंगरी मशरूम को मई से अगस्त तक तथा शिटाके मशरूम को दिसम्बर से अप्रैल तक उगाया जा सकता है। इस प्रकार हमारे देश में अलग–अलग तरह की जलवायु वाले स्थानों में ऋतु के अनुसार भिन्न–भिन्न

सारणी 3: पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए प्रमुख मशरूम प्रजातियों का मौसम पर आधारित वार्षिक फसल चक्र

मशरूम के वैज्ञानिक नाम	प्रचलित नाम	खेती हेतु अनुकूल महीने	फसलों की संख्या
अगेरिकस बाइस्पोरस	श्वेत बटन मशरूम	अक्टूबर–फरवरी	दो
प्लूरोटस सजोर–काजू	ढींगरी मशरूम	अक्टूबर–नवंबर फरवरी–मार्च	एक
प्लूरोटस फ्लोरिडा	ढींगरी मशरूम	अक्टूबर–मार्च	तीन
प्लूरोटस इरिंगाई	काबुल ढींगरी मशरूम	नवंबर–फरवरी	दो
कैलोसाईबी इंडिका	दूधिया मशरूम	मार्च–सितंबर	दो

सारणी 4: कुछ प्रमुख मशरूम प्रजातियों का मूल्य विश्लेषण

मशरूम की प्रजातियाँ	लागत (रु./कि.ग्रा.)	बाजार मूल्य (रु./कि.ग्रा.)	शुद्ध लाभ (रु./कि.ग्रा.)
बटन मशरूम *(अगेरिकस बाइस्पोरस)*	30–35	80–100	50–65
ढींगरी मशरूम *(प्लूरोटस स्पीसीज)*	20–25	60–100	40–75
धान पुआल मशरूम *(वाल्वेरियल्ला स्पीसीज)*	20–25	50–100	30–75
कठकर्ण मशरूम *(आरीकुलेरिया पालीट्रिका)*	25–30	50–60	25–30
दूधिया मशरूम *(कैलोसइबी इंडिका)*	20–25	80–100	60–75

सारणी 5: कुछ प्रमुख मशरूम प्रजातियों का आर्थिक विश्लेषण (20x12 फीट के फसल कक्ष के आवर्ती व्यय का लेखा–जोखा)

विवरण	बटन मशरूम (2 फसल)	ढींगरी मशरूम (2 फसल)	दूधिया मशरूम (2 फसल)
कम्पोस्ट/माध्यम की मात्रा (कुंतल)	50	5.6	11
औसत मशरूम उत्पादन (कि.ग्रा.)	600	336	550
मशरूम से आय (रु.)	48000	20160	44000
औसत खाद/चारा उत्पादन (कि.ग्रा.). चुके हुए भूसे से'	4200	400	800
खाद/चारा से आय (रु.)	16800	800	1600
कुल आय (रु.)	64800	20960	45600
कुल लागत (रु.)	22800	10300	11000
शुद्ध लाभ (रु.)	42000	10660	34600
वार्षिक शुद्ध लाभ (रु.)	**87260**		

'खाद उत्पादन (बटन मशरूम), चारा उत्पादन (ढींगरी व दूधिया मशरूम)

प्रकार के मशरूम फसल चक्र अपनाकर साल भर मशरूम की खेती करना संभव है। समुद्रतटीय राज्यों में वर्ष भर ढींगरी मशरूम, पराली मशरूम व दूधिया मशरूम को प्राकृतिक वातावरण में उगाया जा सकता है। पूर्वोत्तर राज्यों में श्वेत बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, शिटाके मशरूम व कठकर्ण मशरूम को उगाया जा सकता है। मध्य व पश्चिमी भारत में ढींगरी मशरूम को ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्य सभी ऋतुओं में तथा दूधिया मशरूम की खेती वर्ष के अधिकतर महीनों में की जा सकती है।

चित्र 2: कृषि प्रणाली संस्थान में बटन मशरूम का उत्पादन

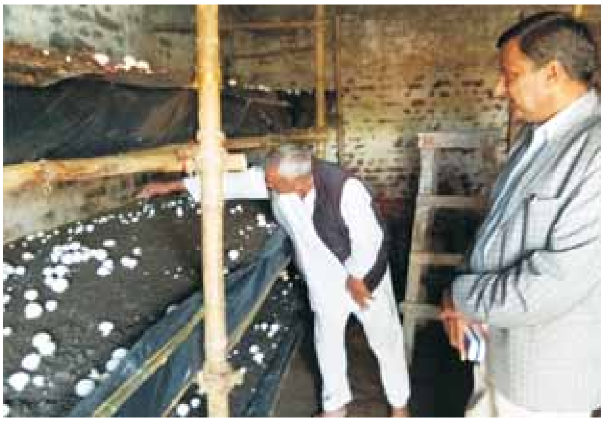

चित्र 2: कृषि प्रणाली संस्थान में बटन मशरूम का उत्पादन

मशरूम उत्पादन की इन मौसमी वार्षिक योजनाओं पर अमल करके किसान वर्ष भर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार किसान भाई वर्ष भर मशरूम उत्पादन करके देश के कुल मशरूम उत्पादन में भी अधिक बढ़ोत्तरी कर सकते हैं और अपने घर–आंगन में ही मशरूम का उत्पादन करके पोषण सुरक्षा, स्वरोजगार एवं अच्छी आय प्राप्त कर सकते हैं।

औषधीय गुणों से भरपूर करेला, भिंडी और मेथी

मनोज कुमार*

वैसे तो सभी लोग सब्जियों का उपयोग अपनी सामर्थ्य के अनुसार करते ही हैं, परंतु इनका उपयोग यदि चिकित्सीय दृष्टि से किया जाए तो अनेक छोटे–बड़े रोगों से छुटकारा मिल सकता है। विश्व की अधिकांश चिकित्सा पद्धतियों– आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी, तिब्बती आदि में अनेक प्रकार की वनस्पतियों जैसे फलों–सब्जियों एवं उनके अवयवों आदि का उपयोग ही अधिक होता है।

करेला

करेला औषधीय गुणों से युक्त सब्जी है जो संपूर्ण भारत में उगाई जाती है। करेला 10 से 20 सेमी. तक लंबा, सिरे पर शुंडाकार और खुरदरी रचना से ढका होता है। इसके बीज कच्ची अवस्था में सफेद और पक जाने पर लाल होते हैं। इसकी दो किस्में होती हैं।

औषधीय गुण–करेले में उत्कृष्ट औषधीय गुण होते हैं। यह प्रतिकारक, ज्वरहारी टॉनिक, क्षुधावर्धक, पाचक और पित्तनाशक होता है। इसमें सभी विटामिन और खनिज पदार्थ प्रचुर मात्रा में होते हैं, जैसे–विटामिन 'ए', 'बी–1', 'बी–2', 'सी' और लौह। इसका सेवन कई रोगों, जैसे उच्च रक्तचाप, आंख का रोग, तंत्रिका शोथ और कार्बोहाइड्रेट की दोषपूर्ण मेटाबॉलिज्म को कम करता है। यह संक्रमण के विरूद्ध शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

करेले को मधुमेह की औषधि के रूप में विशेष रूप से प्रयोग में लाया जाता है, जो कि रक्त और मूत्र शर्करा के स्तर को कम करने में बहुत लाभकारी है। मधुमेह के रोगी के आहार में इसे अवश्य शामिल किया जाना चाहिए। अच्छे परिणाम के लिए मधुमेह के रोगी को प्रत्येक सुबह खाली पेट चार या पांच करेलों का रस लेना चाहिए। करेले के बीज को पीसकर भोजन में भी लिया जा सकता है। करेला रक्त संबंधी अनियमितताओं, जैसे– रक्त का फोड़ा, खुरंड, छाले, दाद और अन्य फंगस जैसी बीमारियों में अति लाभदायक बताया गया है। इन अवस्थाओं में करेले के एक कप रस में नींबू का एक चम्मंच रस मिलाकर प्रतिदिन चार से छह माह पीने से काफी लाभ मिलता है।

प्राचीनकाल से ही श्वसन संबंधी अनियमितताओं के लिए देशी औषधियों में करेले की जड़ का उपयोग किया जाता है। यह दमा, ब्रोंकाइटिस, सर्दी और राइनिटिस में उत्तम दवा का कार्य करता है। करेले की ताजे पत्तियों का रस बवासीर में उपयोगी होता है। अल्कोहलिज्मा के उपचार के लिए करेले के पत्तों का रस उपयोगी है। यह अल्कोहल के नशे का अंत करता है और नशे के कारण यकृत को होने वाले नुकसान में भी उपयोगी है। गरमी में करेले के ताजा पत्तों का रस डायरिया में भी प्रभावी होता है। करेले से विभिन्न तरह की सब्जियां बनाई जाती हैं। पके फल के बीजों का प्रयोग भारत में मसाले के रूप में किया जाता है। एशिया और अफ्रीका में देशी दवाओं में करेले का प्रयोग किया जाता है।

भिंडी

भिंडी बहुत ही लोकप्रिय सब्जी है जो संपूर्ण भारत में उगाई जाती है। इसकी ऊंचाई 60 से 90 से.मी. होती है। इसका तना हरे रंग का तथा रोएंदार होता है। भिंडी की उत्पत्ति उष्ण कटिबंधीय अफ्रीका में हुई। भिंडी में मृदुता, लसीलापन और श्लेष्मता अधिक मात्रा में रहती है, जो कि महत्वपूर्ण इप्वाइंट, शामक और मूत्रवर्धक है। भिंडी का रस गले, पेट, मलाशय और मूत्रमार्ग में होने वाली जलन के लिए उपयोगी बताया गया है।

*सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, भा.कृ.अ.प.

ताजा बीजरहित दो कोमल भिंडियां प्रतिदिन चबाकर खाने से कई प्रकार के रोग दूर होते हैं। गले की खराश और लगातार सूखी खांसी में भिंडी बहुत उपयोगी है। भिंडी काटकर 250 मि.ली. पानी में उबालकर काढ़ा बनाना चाहिए। इस काढ़े से निकली भाप को श्वास द्वारा भीतर लेने से गले की खराश और सूखी खांसी में लाभ मिलता है। भिंडी एक उपयोगी टॉनिक है। सोने से पूर्व नित्य भिंडी के गूदा का लेप लगाकर आधे घंटे बाद धोने से त्वचा मुलायम व साफ होती है। इससे मुंहासे ठीक होते हैं।

कोमल भिंडी को उबालकर, भाप देकर, काटकर और तलकर प्रयोग में लाया जाता है। इसमें बहुत लेस होता है। सूप तथा ग्रेवी में भी इसका प्रयोग होता है। इन्हें सुखाकर व पीसकर सुगंध के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इनकी छोटी पत्तियां भी खाई जाती हैं। पके बीजों में लगभग 20 प्रतिशत खाद्य तेल रहता है।

मेथी

मेथी महत्वपूर्ण हरी सब्जियों में से एक है। इसका नियमित सेवन शरीर को स्वस्थ रखता है। औषधि और भोजन दोनों तरह से इसका उपयोग किया जाता रहा है। हमारे देश में मेथी का साग लोकप्रिय है। इसमें कैलोरी ऊर्जा पर्याप्त

मिलती है। मेथी की सूखी पत्तियों में दालों के बराबर प्रोटीन होता है। मेथी की पत्तियां सुगंधित, ठंडी और नरम होती हैं। अपचन, सूजन, यकृत, मुंह के अल्सर इत्यादि बीमारियों में ये बड़ी फायदेमंद होती हैं। यदि पत्तियों के साथ उबले पानी से कुल्ला किया जाए तो अल्सर में तुरंत फायदा पहुंचता है। रक्त के निर्माण में मेथी का साग बहुत फायदेमंद है। इससे खून की कमी और युवावस्था के शुरू में होने वाली परेशानियों से छुटकरा पाया जा सकता है। मेथी के बीज का रासायनिक विश्लेषण करने से यह ज्ञात हुआ है कि इसका क्षारीय गुण भूख को बढ़ाता है। बच्चों में व्याप्त सुखंडी रोग में इससे अच्छा लाभ मिलता है। संक्रामक बीमारियों में भी इससे आराम मिलता है। मधुमेह के रोगियों को भी इसके सेवन से लाभ मिलता है। मेथी के बीजों से बालों की रूसी का भी उपचार किया जा सकता है। इसके लिए दो चम्मच मेथी को रात भर पानी में भिगो दीजिए। प्रातः काल उन मुलायम बीजों को मसलकर गाढ़ी पेस्ट बना लीजिए। अब इसको अपने पूरे सिर पर लगाकर लगभग आधे घंटे के लिए छोड़ दीजिए। उसके पश्चात् सिर को शिकाकाई अथवा साबुन से अच्छी तरह साफ कर लीजिए। कुछ ही दिनों में रूसी का नामोनिशान नहीं मिलेगा।

संक्रामक रोगों की विषम परिस्थितियों, जैसे श्वासनली में सूजन, सर्दी–जुकाम, नासूर–नजला और निमोनिया में मेथी की चाय अत्यंत लाभदायक होती है, क्योंकि इससे पसीना आता है और उसी के साथ ही सारा विकार भी शरीर से बाहर निकल जाता है। मेथी के बीज से बने काढ़े से कुल्ला करना गले के लिए उत्तम है। विश्व प्रसिद्ध पोषक आहार विशेषज्ञ लिर्लोड कॉर्डेल के अनुसार, मेथी में शरीर को साफ करने की ऐसी शक्ति है जो अचंभित कर देती है। शरीर के अंदर की सारी विषमताओं को इसका तेल दूर कर देता है। कोशिकाएं भी इसको अपने पुनर्निर्माण के लिए आसानी से ग्रहण कर लेती हैं। इनमें से कुछ पसीने की ग्रंथियों में जाकर सारी बेकार चीजों को बाहर कर देती हैं। मिस्र और इथोपिया में मेथी के बीज ब्रेड ओर बेकरी के उत्पादन में प्रयोग किए जाते हैं। मिस्र तथा स्विट्जरलैंड में भोजन को स्वादिष्ट बनाने में तथा अमेरिका में अनेक रूपों में मेथी का प्रयोग किया जाता है। जावा में तो बालों के टॉनिक और सौन्दर्य सामग्री में भी इसका प्रयोग होता है।

इस तरह हम देखते हैं कि ये न केवल हमारे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक विटामिन, खनिज और अन्य तत्वों की पूर्ति करती है बल्कि रोगों को दूर करने में औषधि के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

लेह-बेरी (सीबकथोर्न) पौधा: लेह-लद्दाख के कोल्ड-डेजेर्ट क्षेत्र में भूमि उपयोग नियोजन हेतु एक बहुउद्देशीय विकल्प

जया निरंजने सूर्या, विकास, आर. पी. यादव, अरविन्द कुमार और एस. के. सिंह**

हिमालय की गोद मे बसे 'लेह–लद्दाख' क्षेत्र को "कोल्ड–डेजर्ट हिमालय" यानी "शीत–शुष्क रेगिस्तान क्षेत्र" के नाम से जाना जाता है। यह क्षेत्र अपने उदात्य खूबसूरत पर्वतीय श्रृंखलाओं के कारण प्रसिद्ध है। यह ठंडा–शुष्क बर्फीला क्षेत्र, मुख्यतः भारत के जम्मू और कश्मीर और हिमाचल प्रदेश राज्यों के उत्तर–पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में स्थित है। इस क्षेत्र मे समशीतोष्ण और शुष्क जलवायु का मिश्रण होता है। भारत के कुल कोल्ड–डेजर्ट क्षेत्र (45,110 किमी) का 87.4 प्रतिशत हिस्सा लेह–लद्दाख क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है और शेष 12.6 प्रतिशत का शेष क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के लाहौल–स्पीति के अंतर्गत आता है। इस शीत–शुष्क क्षेत्र को सात घाटियों में विभाजित किया गया है, जिसमें लद्दाख क्षेत्र में इंडस, नुब्रा, चांगथांग, जंसकार, सुरू, एवं लाहौल और स्पीति घाटी है। इस क्षेत्र की विशेषता यह है कि यह साल में करीब छह महीने बर्फ आच्छादित रहता है और सर्दियों में यहा का न्यूनतम तापमान –400°C तक पहुंच जाता है। इस क्षेत्र मे बहुत ही कम वर्षा (80–300मिमी) होती है और वह भी मुख्यतः बर्फ के रूप में होती है। यहां का शुष्क वातावरण, उच्च अल्ट्रा–वाईलट विकिरण (Ultra&Violet Raysrays), उच्च–वायुवेग, पेड़–पौधों का बहुत कम घनत्व, रेतीले–मोटे मिट्टी की बनावट वाले बहुरंगीन चट्टानी पहाड़ों के कारण यहां की भौगोलिक स्थिति अत्यधिक नाजुक और किसी भी पौधे व प्रजातियों के अस्तित्व और उसके पनपने के लिए बहुत ही कठिन है। इसी कारण यहां की ज्यादातर भूमि कृषि व जंगल रहित, पेड़–पौधों के बिना, बंजर है।

ऐसी विषम भौगोलिक परिस्थितियों व ठंडे–शुष्क, रेतीले–मोटे बनावट वाले मिट्टी की मामूली उपजाऊ वाली भूमि में बढ़ने की अनूठी विशेषता रखनेवाला पौधा "सीबाकथोर्न पौधा" (SEABUCKTHORN(Hippophae rhamnoides L-family of Elaegnaceae) इस प्रदेश में नैसर्गिक रूप में पाया जाता है। "लेह–बेरी" व त्सेस्टालुल्लू (Tsestalullu) के नाम से मशहूर यह झाड़ीनुमा पौधा सूखा प्रतिरोधी है व चरम तापमान –430°C से 400°C का सामना कर सकता है। इन दोनों विशेषताओं के कारण ही इस झुंडनुमा पौधे को शीत–रेगिस्तान में स्थापित होने के लिए एक "आदर्श पौधे" की श्रेणी मे स्थान दिया जा सकता है। ठंड और सूखा प्रतिरोध के अलावा यह झाड़ीनुमा पौधा उन पौधा प्रजातियों में से हैं जो कि बंजर भूमि में आसानी से विकसित हो सकता है।

प्राचीन काल से ही लेह बेरी यानी सीबकथोर्न पौधे को हिमालय क्षेत्र में "विशेष उपयोगी वृक्ष" के रूप में जाना जाता है। सीबकथोर्न पौधे के फल को "वंडर बेरी", "लेह बेरी" और " लद्दाख सोना" भी कहा जाता है। सीबकथोर्न पौधों में पीले, नारंगी व लाल रंग के जामुननुमा बेरी जैसे फल आते हैं, जो अगस्त–सितंबर में पकते हैं। सीबकथोर्न बेरीज में सीमित तापमान के बावजूद सर्दियों के महीनों में झाड़ी पर बरकरार रहने की एक विशिष्ट विशेषता है। यह फल सबसे अधिक पौष्टिक फलों में से एक है। इनमें विटामिन भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं (तालिका–1)। इसमें प्रो–विटामिन C, विटामिन E, विटामिन A, विटामिन–बी1, बी2 और फ्लेवोनोइड और ओमेगा तेलों की मात्रा अन्य फलों और सब्जियों जैसे नारंगी, गाजर और टमाटर की तुलना में काफी अधिक है। इनमें विटामिन–सी की मात्रा 300–2000 मिलीग्राम/100 ग्राम बेरीज है, जो कि कई अन्य समृद्ध फलों जैसे आंवला, नारंगी, कीवी फलों से अधिक है। इसलिए इसे 'सुपरफ्रूट' के रूप में बताया गया है। इस प्रकार लेह बेरी में विटामिनों का भंडार है जहां अन्य विटामिन युक्त फलों की उपलब्धता सीमित है। इस पौधे के बेरीज में विटामिन–E (162–255 मिलीग्राम/100 ग्राम बेरीज), विटामिन

* भा.कृ.अनु.प.– राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली–110012
** भा.कृ.अनु.प.– राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर–440033

–K (100–200 मिलीग्राम/100 ग्राम), विटामिन–A (11 मिलीग्राम/100 ग्राम) पाया जाता है। इसके अलावा इसमें विभिन्न प्रकार के अमीनो एसिड और विटामिन अधिक मात्रा में फ्लुवोनोइड्स, प्लांट स्टेरोल्स, कार्टोनोइड्स, लिपिड्स, तेल और शुगर है। इन बेरीज में मुख्य मिनरल जैसे Fe, Mn], Cu, Zn, Ca और Mg होते हैं। सीबकथोर्न के तेलों को ''ग्रीन और ओर्गनिक फूड'' की मान्यता मिली है। इसके अलावा लद्दाखी की स्थानीय टीबेटियन चिकित्सा पद्धति "आमचीस'' में इसके औषधीय गुणों के कारण अनेक रोगों के उपचार में लाया जाता है। कोसमैटिक प्रोडेक्टस में भी इसका भरपूर प्रचलन है। सीबकथोर्न–पौधे के पोषक, औषधीय गुणों एवं खाद्य तत्वों के महत्व के साथ–साथ इस पौधे के वृक्षारोपण व भूमि उपयोग में अनेक फायदे है जो इस भूमि को हरा–भरा करने की क्षमता रखता है।

तालिका 1: लद्दाख क्षेत्र के सीबकथोर्न फलों में प्राप्त रासायनिक विशेषताएं

रासायनिक गुण	
कुल घुलनशील ठोस पदार्थ	14.3 (oB)
अम्लता (मैलिक एसिड के रूप में)	2.54
रस का पीएच	2.15
कुल चीनी (%)	1.03
नमी (%)	74.58
राख (%)	1.8
कच्चा प्रोटीन	2.64
कच्चा फाइबर	3.45
कुल कार्बोहाइड्रेट	20.56
कैरोटीन	12839.67
विटामिन सी (मि.ग्रा./100ग्रा.)	424.80
विटामिन बी (मि.ग्रा./100ग्रा.)	2.664
विटामिन बी (मि.ग्रा./100ग्रा.)	6.227
पेक्टिन (लासा)	0.48
वसा (%)	1.54
एनर्जी (क्कल/100गा.)	106.66
खनिज (मि.ग्रा./कि.ग्रा.)	
सोडियम	41.28
पोटाशियम	1499.96
कैल्शियम	383.0
लोहा	11.68
मैग्नीशियम	47.7
जिंक	0.94
फोस्फोरेस (%)	0.02

Source: Dwivedi, S.K. et.al (2006) : The Seabuckthorn, DRDO

भूमि संरक्षण मे सीबकथोर्न पौधे का महत्व

भूमि की उर्वरता में बढ़ावा: सीबकथोर्न पौधों की एक व्यापक जड़ प्रणाली है। इसकी जड़ों में जीनस–फ्रेंकिया जीवाणु के सहजीवी शामिल है। यह सहजीवी वायुमंडलीय नाइट्रोजन को प्राप्त कर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है। इससे भूमि की उर्वरता और नमी बेहतर होती है। यह अनुमान लगाया गया है कि सीबकथोर्न पौधा हर साल प्रति हेक्टेयर 180 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन–फिक्स करता है। यह वायुमंडलीय नाइट्रोजन ठीक करने के साथ–साथ मिट्टी को बांधकर रखता है (soil binding abilities) जो मिट्टी के क्षरण को नियंत्रित और बंजर होने से रोकने में सहायक है। यह जमीन के कटाव एवं ढलान से मिट्टी को कटने से बचाता है। यह जाड़ीनुमा पौधा मिट्टी के क्षरण को नियंत्रित कर सतह के बहाव व भूमि भूस्खलन को रोकने में सहायक है। यह मृदा अपरदन और भूमि भूस्खलन (landslides) को नियंत्रित करने में विशेष सहायक है। यह पौधा ''बंजर भूमि–रिक्लमेषन'' के लिए विशेष क्षमता रखता है। बंजर और चरम तापमानों में पनपने की खूबी वाले इस सीबकथॉर्न पौधे का हर हिस्सा उपयोगी है – फल, पत्ती, टहनी, जड़ और कांटा – परंपरागत रूप से चिकित्सा, पोषण संबंधी खुराक, लकड़ी और भवन की बाढ़ बांधने, ईंधन व चारे आदि के लिए उपयोग मे लाए जाते हैं। कई प्रजाति के पक्षी कुछ समय के लिए भोजन हेतु इस जामुननुमा बेरी जैसे फल का भोजन करते हैं। दूसरी ओर इसकी पत्तियां भेड़, बकरी, ठंडे रेगिस्तानी वाले जानवरों जैसे डबल–ऊंची पीठवाले ऊंट, गधे आदि मवेशियों के लिए प्रोटीन युक्त चारा के रूप में उपयोग में आती है। सीबकथोर्न झाड़ी वन्य जीवों के लिए आवास प्रदान करती है और जंगली वृक्षों से वनस्पतियों और जीवों के लिए एक सुरक्षात्मक आश्रय प्रदान करता है। इस क्षेत्र के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में सहायक व ठंडे शुष्क क्षेत्र के लिए यह एक बहुपयोगी पौधा है।

सीबकथोर्न की उपयुक्तता

सीबकथोर्न पौधा विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में पनपता है, परंतु अच्छी सूखी मिट्टी इसके लिए आदर्श मानी गई है। उत्तम निकास, गहन, अच्छी तरह से सूखी, पर्याप्त जैविक पदार्थ के साथ रेतीले लोम/दोमट, पीएच 5.0 से 7.0 तक इसके लिए बेहतर है। यह पौधा सूखे की स्थिति बर्दाश्त कर सकता है, लेकिन यह विशेष रूप से फूल और फलों के विकास के चरण में नमी संवेदनशील है। मिट्टी की नमी के लिए यहां ''मलचिंग' का उपयोग कर सकते है।

लद्दाख के ''कोल्ड–डेजर्ट'' पहाड़ी क्षेत्रों के स्थानीय लोगों के जीवन में लेह बेरी लगाने से कृषकों एवं स्थानीय लोगों को आर्थिक मदद मिल सकती है। टिकाऊ आजीविका के लिए

लेह–लद्दाख क्षेत्र में सीबकथोर्न की खेती

लेह बेरी (सीबकथोर्न बेरी) के फल व पौधा

कुछ विकल्प जैसे एग्रो–प्रोडक्टस जिसमें पेय, जेम, जेली, सीबकथोर्न ऑयल, हर्बल चाय, सॉफ्ट जेल कैप्सूल, यूवी सुरक्षा तेल, बेकरी उत्पाद, पशु चारा आदि जैसे कई अन्य उत्पादों के विकास और व्यावसायीकरण कर, बाजार में बेचने से–कृषकों के जीवन में आर्थिक सम्पन्नता व अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। सीधे आजीविका से जुड़ी सीबकथोर्न की खेती से लेह के लोगों के आत्मनिर्भर होने और विकास का आधार बनता है। क्षेत्रीय लोगों और महिलाओं को स्वयं–सहायता समूहों में सम्मिलित कर, लेह–बेरी पौधों की खेती–प्रशिक्षण, उत्पाद डिज़ाइन और पैकेजिंग में प्रशिक्षण देकर स्थानीय युवाओं और किसानों की मदद की जा सकती है। सरकारी व गैर–सरकारी संगठन, अनुसंधान एवं विकास संगठन और सरकार की पहल से इस क्षेत्र में स्थानीय लोगों के लिए टिकाऊ आजीविका पैदा करने, भूमि संरक्षण, पर्यावरण संतुलन, और उच्च ऊंचाई वाले पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण को सुनिश्चित किया जा सकता है। जलवायु परिवर्तन की स्थिति में भूमि नियोजन के द्वारा यह, ''वंडर बेरी'' भारत के ठंडे रेगिस्तान प्रदेश के लिए एक स्थायी भविष्य सुनिश्चित करने में एक अभिन्न और विशेष भूमिका निभा सकता है।

सफलता की कहानी

अंकेगोउडा, एस. जे., नरेंद्र चौधरी, अक्षिता, एच. जे., दिनेश, आर.* और निर्मल बाबू, के.*

कम वर्षा वाले क्षेत्र में काली मिर्च की खेती में सफलता के लिए आई पी सी ने श्री बी. एच. श्रीकंठा की सराहना की।

विभिन्न देशों में काली मिर्च उत्पादकों में से, भारत के सर्वोत्तम किसान के लिए अंतर्राष्ट्रीय पेपर समुदाय (आईपीसी) ने वर्ष 2016 के लिए पुरस्कार घोषित किया और इसके लिए भारत के श्री बी. एच. श्रीकंठा, विजयश्री बागान, चिकमंगलूरू, कर्नाटक को सम्मानित किया गया।

श्री श्रीकंठा का काली मिर्च का बागान तेरीकेरे तालुक के येम्मेदोद्डी गांव में स्थित है, जिसे चिकमंगलूरू जिले के शुष्क बेल्ट के रूप में माना जाता है। जहां अधिकतम तापमान 41 डिग्री सेल्सियस तक जाता है और वार्षिक वर्षा केवल 635 मिमी होती है। यहां अकेले काली मिर्च की खेती को छोड़ दें तो किसी अन्य फसल की खेती करना बहुत मुश्किल है। काली मिर्च के लिए पर्याप्त वर्षा और उच्च नमी की आवश्यकता होती है, लेकिन कम वर्षा वाले क्षेत्र में इसकी सफल खेती, एक सुखद आश्चर्य है। 15 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले इस बागान में पन्नीयुर –1 की लगभग 6444 काली मिर्च की बेले (7 वर्षीय) हैं।

चित्र 1. श्री बी. एच. श्रीकंठा उनकी पत्नी के साथ

भा.कृ.अनु.प – भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन, अप्पंगला के वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई वैज्ञानिक विधि का इस्तेमाल करके ही श्रीकंठा यह सफलता प्राप्त कर सके हैं। वास्तव में, श्री श्रीकंठा और उनके बच्चे डॉ. विवेक, डॉ. विनय और डॉ. वैदई ने काली मिर्च कृषि विज्ञान, पोषण और जल संरक्षण पर अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन, अप्पंगला का नियमित रूप से दौरा करते हैं और फोन कॉल करते हैं।

चूंकि कम वर्षा के चलते पानी एक सीमित कारक है, इसलिए उथले खाइयों को खोदकर, कंपोस्ट और सूखे पत्ते द्वारा पलवार करके और बोरवेल और एक तालाब से पानी का उपयोग करके ड्रिप सिंचाई के द्वारा मिट्टी की नमी का संरक्षण करना है।

डॉ. विवेक का मानना है कि अच्छी उपज के लिए पौधों को बेहतर पोषक तत्व उचित समय पर देना आवश्यक है। समेकित पोषक तत्व प्रबंधन इस बागान की एक प्रमुख बानगी है जिसमें रासायनिक और जैविक पदार्थों का एक

चित्र 2. बागान में फार्म तालाब

* भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन, अप्पंगला; *भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोझिकोड, केरल

सही कॉकटेल इस्तेमाल किया जाता है। वे वर्ष में तीन बार 300 ग्राम/बेल 19 : 19 : 19 और कार्बनिक खाद जैसे खेतों की खाद को ट्रायकोडर्मा (15 कि.ग्रा./बेल/वर्ष), नीम केक (2 कि.ग्रा./बेल और कंपोस्ट (10 कि.ग्रा./बेल) के साथ मिलाकर हर साल प्रयोग करते हैं। बेलों को इसके अलावा खेत में तैयार किए जाने वाली सुपारी की भूसी और कोकोआ छाल कंपोस्ट के साथ पूरक किया जाता है। वे कहते हैं, सूक्ष्म पोषक तत्वों का पर्ण छिड़काव महत्वपूर्ण है।

रोग प्रबंधन महत्वपूर्ण है और पोटेशियम फॉस्फेट का उपयोग करके फयटोप्थोरा का प्रबंधन किया जाता है। हालांकि, बोर्डो मिश्रण का 0.66 प्रतिशत रोगाणुरोधक छिड़काव और निर्धारित अन्य कवकनाशकों और कीटनाशकों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जाता है जिसकी सलाह उन्हें डॉ. एम. एन. वेणुगोपाल, वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), भा.कृ.अनु.प–भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन, अप्पंगला द्वारा दी गई।

चित्र 3. डॉ. विवेक उनके बागान में

वर्ष 2016–17 के लिए काली मिर्च की कुल पैदावार 59.284 टन आश्चर्यजनक थी। जिसकी औसत उपज 9.2 किलोग्राम शुष्क प्रति बेल और प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन 12.207 टन था।

डॉ. विवेक ने वैज्ञानिक जल प्रबंधन, समय पर उर्वरण और खाद को अपनी सफलता का राज बताया। पोषक तत्वों की कमी और बीमारी की घटनाओं के लिए प्रत्येक बेल का लगातार निरीक्षण, बेहतर परिधि प्राप्त करने के लिए एक से अधिक मार्गदर्शक तनों को प्रोत्साहित करना, निपिंग और बांधना ताकि प्लागियोट्रोपिक शाखाओं को बढ़ावा मिल सके, ने काली मिर्च की वृद्धि और उपज बढ़ाने के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डा. विवेक वर्तमान में ब्लैक गोल्ड लीग, मुडीगेरे के निदेशक हैं और भा.कृ.अनु.प–भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन, अप्पंगला और ब्लैक गोल्ड लीग, मुडीगेरे द्वारा काली मिर्च पर आयोजित सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नियमित रूप से उपस्थित रहते हैं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।

डॉ. विवेक
विजयश्री बागान, येम्मेदोद्डी,
लककेनाहल्ली, कदूर (टी)
चिकमंगलूरू (डी), कर्नाटक
मोबाइलः 9480028668/9900495590

डॉ. एस. जे. अंकेगोउडा
अध्यक्ष
भा.कृ.अनु.प – भारतीय मसाला फसल
अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन, अप्पंगला
मोबाइलः 9663069241

जो व्यक्ति हमेशा दूसरों में दोष ढूढ़ंता है, उसे खोजता है, उनके मन का मैल मिटाना कठिन है ।

– महात्मा बुद्ध

प्रभाग परिचयः बागवानी विज्ञान प्रभाग

बागवानी पौधों (फल, सब्जियां, फूल और अन्य कोई किस्म) को उगाने एक विज्ञान और कला है। इसमें पादप संरक्षण, भू–दृश्य, मृदा प्रबंधन और उद्यान डिजाइन, निर्माण और रखरखाव भी शामिल है। इसमें बड़े पैमाने पर किया जाने वाला फसल उत्पादन या पशुपालन शामिल नहीं है। देश के कई राज्यों में आर्थिक विकास के लिए बागवानी एक मुख्य प्रेरक है जिसका देश के सकल घरेलू उत्पादन में 30.4 प्रतिशत का योगदान है। आज बागवानी का रिकार्ड 307 मिलियन टन उत्पादन होने का अनुमान है। यह वर्ष 2016–17 में हुए 300.6 मिलियन टन उत्पादन से लगभग 2.2 प्रतिशत अधिक है। विभिन्न बागवानी फसलों का बुवाई क्षेत्र प्रति वर्ष 2.2 प्रतिशत के हिसाब से बढ़ता हुआ वर्ष 2017–18 में 25.4 मिलियन हैक्टेयर तक हो गया है।

विजन

भा.कृ.अनु.प. में फलों, सब्जियों, सजावटी, औषधीय व सुगंधीय पौधों और मशरूम के विभिन्न पहलुओं पर मूल, कार्यनीतिपरक और अनुप्रयुक्त अनुसंधान का कार्य बागवानी प्रभाग द्वारा किया जाता है। पोषण, पारिस्थितिकी और आजीविका सुरक्षा में सुधार के लिए राष्ट्रीय परिवेश में बागवानी के सर्वांगीण एवं त्वरित विकास का दायित्व बागवानी संभाग को सौंपा गया है।

मिशन

बागवानी में प्रौद्योगिकी आधारित विकास।

लक्ष्य

बागवानी में राष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान और विकास कार्यक्रम का नियोजन, सहयोग और निगरानी के साथ इस क्षेत्र में ज्ञान रिपोजिटरी की तरह कार्य करना।

संगठनात्मक ढांचा

बागवानी संभाग का मुख्यालय कृषि अनुसंधान भवन–II, पूसा कैम्पस, नई दिल्ली में स्थित है। इस संभाग में दो कमोडिटी/सबजेक्ट विशिष्ट तकनीकी विभाग (बागवानी I और II के अलावा) और प्रशासन विंग, संस्थान प्रशासन–V विभाग है। उपमहानिदेशक (बागवानी) के नेतृत्व में कार्यरत इस संभाग में दो सहायक महानिदेशक, दो प्रधान वैज्ञानिक और एक उपसचिव (बागवानी) भी शामिल हैं। भा.कृ.अनु.प. का बागवानी संभाग 10 केन्द्रीय संस्थानों, 6 निदेशालयों, 7 राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्रों, 13 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं और 6 नेटवर्क परियोजनाओं/प्रसार कार्यक्रमों के जरिये भारत में बागवानी अनुसंधान पर कार्य कर रहा है।

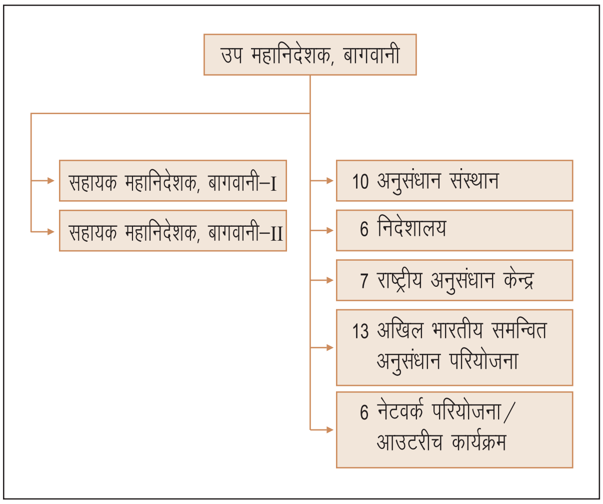

प्राथमिकता वाले क्षेत्र

- बागवानी (फलों में नट, फल, आलू सहित सब्जियों, कंदीय फसलें, मशरूम, कट फ्लावर समेत शोभाकारी पौधे, मसाले, रोपण फसलें और औषधीय एवं सुगंधीय पौधे) का देश के कई राज्यों के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है और कृषि जीडीपी में इसका

योगदान 30.4 प्रतिशत है। भा.कृ.अनु.प. का बागवानी संभाग इस प्रौद्योगिकी आधारित विकास में प्रमुख भूमिका निभाता है। आनुवंशिक संसाधन बढ़ाना और उनका उपयोग, उत्पादन दक्षता बढ़ाना और उत्पादन हानि को पर्यावरण हितैषी तरीकों से कम करना आदि इस क्षेत्र के अनुसंधान की प्राथमिकता है।

- आनुवंशिक संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन, बढ़ोतरी, जैव संसाधनों का मूल्यांकन और श्रेष्ठ गुणों वाली, उच्च उत्पादक, कीट और रोग सहिष्णु एवं अजैविक दबावों को सहने में सक्षम उन्नत किस्मों का विकास।
- उत्पादकता बढ़ाने हेतु अच्छी किस्मों के लिए सुधरी प्रौद्योगिकियों का विकास जो जैविक और अजैविक दबावों की सहिष्णु होने के साथ ही स्वाद, ताजगी, स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होने जैसी बाजार की आवश्यकताओं को पूरा कर सके।
- विभिन्न बागवानी फसलों के लिए स्थान विशिष्ट प्रौद्योगिकियों के विकास द्वारा उत्पादन, गुणवत्ता की विविधता को कम करना, फसल हानि को कम करने के साथ बाजार गुणों में सुधार करना।
- पोषक तत्वों और जल के सही उपयोग की पद्धति विकसित करना और नई नैदानिक तकनीकों की मदद से कीट और रोगों के प्रभाव को कम करना।
- स्थानीय पारिस्थितिकी और उत्पादन पद्धति के बीच संबंध को समझकर जैवविविधता के संरक्षण और संसाधनों के टिकाऊ उपयोग की पद्धतियों का विकास करना।
- ऐसी उत्पादन पद्धति का विकास करना जिसमें कम अपशिष्ट निकले और अपशिष्ट के अधिकतम पुनर्उपयोग को बढ़ावा दे।
- अधिक लाभ के लिए फलों, सब्जियों, फूलों की ताजगी को लम्बे समय तक बनाये रखना, उत्पाद विविधता और मूल्य संवर्धन।
- समुदाय विशेष की आवश्यकता को समझकर संसाधनों के प्रभावी उपयोग और प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए क्षमता निर्माण करना।

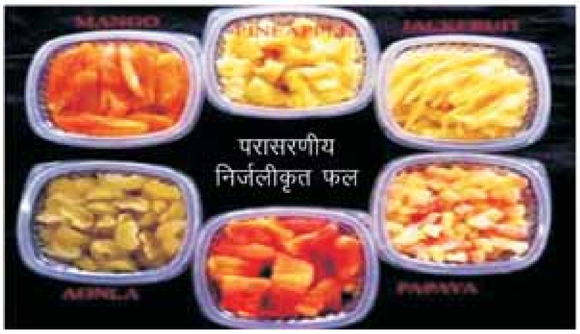

उपलब्धियां

भारतीय बागवानी की झलक

- फलों और सब्जियों का विश्व में दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश।
- आम, केला, नारियल, काजू, पपीता, अनार आदि का शीर्ष उत्पादक देश।
- मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक देश।
- अंगूर, केला, कसावा, मटर, पपीता आदि की उत्पादकता में प्रथम स्थान
- ताजा फलों और सब्जियों के निर्यात में मूल्य के आधार पर 14 प्रतिशत और प्रसंस्करित फलों और सब्जियों में 16.27 प्रतिशत वृद्धि दर।
- बागवानी पर समुचित ध्यान केंद्रित करने से उत्पादन और निर्यात बढ़ा। बागवानी उत्पादों में 7 गुणा वृद्धि से पोषण सुरक्षा और रोजगार अवसरों में वृद्धि हुई।
- कुल 72,974 आनुवंशिक संसाधन जिसमें फलों की 9240, सब्जी और कंदीय फसलों की 25,400, रोपण फसलों और मसालों की 25,800, औषधीय और सगंधीय पौधों की 6,250, सजावटी पौधों की 5300 और मशरूम की 984 प्रविष्टियां शामिल हैं।
- आम, केला, नीबू वर्गीय फलों आदि जैसी कई बागवानी फसलों के उपलब्ध जर्मप्लाज्म का आणविक लक्षण वर्णन किया गया।
- 1,596 उच्च उत्पादक किस्मों और बागवानी फसलों (फल–134, सब्जियां–485, सजावटी पौधे–115, रोपण फसलें और मसाले–467, औषधीय और सगंधीय पौधे–50 और मशरूम–5) के संकर विकसित किये गये। इसके परिणास्वरूप केला, अंगूर, आलू, प्याज, कसावा, इलायची, अदरक, हल्दी आदि बागवानी फसलों के उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।
- सेब, आम, अंगूर, केला, संतरा, अमरूद, लीची, पपीता, अनन्नास, चीकू, प्याज, आलू, टमाटर, मटर, फूलगोभी आदि की निर्यात के लिए गुणवत्तापूर्ण किस्मों का विकास किया गया।
- विभिन्न फलों, सब्जियों, औषधीय एवं सगंधीय पौधों में प्रसंस्करण के उद्देश्य और विभिन्न जैविक और अजैविक दबावों की प्रतिरोधी किस्मों का विकास किया गया।
- जैवप्रौद्योगिकी के प्रयोग से बैंगन और टमाटर की पराजीनी किस्मों का विकास किया गया।
- नीबू वर्गीय फलों, केला, अमरूद, आलू, कसावा और शकरकंद रोगमुक्त, अच्छी गुणता की रोपण सामग्री के उत्पादन के लिए उन्नत तकनीकों का विकास किया गया। विभिन्न फलों, मसालों और वानस्पतिक प्रवर्धित पौधों के लिए सूक्ष्म प्रवर्धन तकनीकों का मानकीकरण किया गया।
- केला, नीबू वर्गीय फलों, अंगूर और काली मिर्च में विषाणु, जीवाणु, कवक और सूत्रकृमि की जांच के लिए सेरोलॉजिकल और पीसीआर आधारित नैदानिक तकनीकें विकसित की गयीं।
- अंगूर में सूखा और लवणता सहिष्णुता के लिए मूल सामग्री (डागरिज और IIOR) की पहचान की गयी। नीबू वर्गीय फलों, सेब, अमरूद और आम की मूल सामग्री की पहचान की गयी।
- स्थान के लम्बवत और आधारवत प्रयोग के लिए, अमरूद में बाग लगाना और केला तथा अन्नानस में सघन रोपण प्रौद्योगिकी का विकास किया गया।
- सौर ऊर्जा के उपयोग के लिए विभिन्न शीतोष्ण और समशीतोष्ण फलों के लिए छत्रक प्रबंधन पद्धतियों का मानकीकरण किया गया।
- आम, अमरूद, बेर और आंवला के पुराने बागों के जीर्णोद्धार की प्रौद्योगिकी विकसित की गयी।
- कई बागवानी फसलों के लिए सूक्ष्म सिंचाई पद्धति और उर्वरकीकरण प्रौद्योगिकी द्वारा जल और पोषण दक्षता बढ़ायी गयी।
- टिकाऊ लाभ के लिए नारियल, सुपारी, बेर और आंवला के लिए अन्तः सस्यन और बहुस्तरीय फसल प्रणाली का विकास किया गया।
- सफेद मूसली, नीबू घास, पामरोजा, सेना आदि औषधीय पौधों के लिए अच्छी कृषि क्रियाओं का विकास किया गया।
- कट फ्लावर और औषधीय पौधों के उत्पादन में कम समय में ही भारत ने महत्वपूर्ण तरक्की की है।
- पिछले दशक में मशरूम उत्पादन में तेजी आयी है जिससे मशरूम उत्पादक किसानों और उद्यमियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में बेहद सुधार हुआ है। उच्च उत्पादक ऑयस्टर और ब्लू ऑयस्टर मशरूम की प्रजातियों और उत्पादन प्रौद्योगिकी का मानकीकरण किया गया है।
- विभिन्न सब्जियों और सजावटी पौधों के गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए सुरक्षित उत्पादन का मानकीकरण किया गया है। उच्च उत्पादकता, गुणवत्तापूर्ण उत्पाद और कम कीमत के कारण यह प्रौद्योगिकी लोकप्रिय हो रही है।
- विषाक्त कीटनाशियों पर निर्भरता कम करने के लिए, इकोफ्रेंडली बायो एजेन्ट जैसे ट्राइकोग्रामा, एनपीवी, पायथियम, पेसिलोमाइसिस आदि का विकास किया गया। मृदाजनित रोगाणु जैसे फ्यूजेरियम, रिजोक्टोरिया, पायथ्यिम, फाइटोफ्थोरा और पादप परजीवी सूत्रों के

प्रबंधन के लिए ट्राइकोडर्मा, पी थियोरेसेन्रा, एस्परजीलियस आदि के प्रभावी प्रभेद अलग किये गये।

- फ्रूट हारवेस्टर, ग्रेडिंग और कटिंग मशीन, ड्रायर, आदि विकसित करके फसल हानि को कम करके फल तुडाई और फसल दक्षता बढ़ाने के लिए फार्म मशीनरी का उपयोग किया गया।
- फलों और सब्जियों के फार्म भंडारण के लिए कम लागत के पर्यावरण हितैषी कूल चौम्बर का विकास किया गया है।
- आलू, अंगूर, मसाले में जर्मप्लाज्म संसाधनों, कीटों और रोगों पर डेटाबेस, सूचना और विशेषज्ञ पद्धति का विकास किया गया है।
- नारियल, आम, अमरूद, आंवला, लीची, विभिन्न सब्जियों जैसे आलू, कंदीय फसलें, मशरूम आदि के कई मूल्य वर्धित उत्पाद विकसित किये गये हैं।
- कसावा से अल्कोहल बनाने, कसावा स्टार्च आधारित प्लास्टिक, कसावा आटा और हस्तचलित कसावा चिप्स मशीन का पेटेंट लिया गया है।
- प्रौद्योगिकी के प्रसार के लिए फसल विशिष्ट प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम संबंधित संस्थानों/निदेशालयों/राष्ट्रीय अनुसंधान केन्द्रों द्वारा चलाये जा रहे हैं।

भविष्य की रूपरेखा

कृषि में वांछित विकास के लिए बागवानी क्षेत्र को प्रमुख भूमिका निभाने के लिए निम्न अनुसंधान प्राथमिकता के क्षेत्रों पर केंद्रित करना होगाः

- विभिन्न पर्यावरण परिस्थितियों में उगाये जाने वाले फलों और सब्जियों के जीन और एलील आधारित परीक्षण
- पोषण डायनेमिक्स एंड इंटरएक्शन
- जैवऊर्जा और ठोस अपशिष्ट उपयोग
- नारियल, आम, केला और पलवल का जीनोमिक्स
- बागवानी फसलों में उत्पादकता और गुणता सुधार के लिए कीट परागणकर्ता
- अपारम्परिक क्षेत्रों के लिए बागवानी किस्मों का विकास
- फल और सब्जी उत्पादन में एरोपोनिक्स और हाइड्रोपोनिक्स तकनीकों का मानकीकरण
- फलों और सब्जियों में पोषण गुणता का अध्ययन
- बागवानी फसलों में कटाई उपरांत तकनीकी और मूल्य वर्धन
- फलों और सब्जियों के लंबे भंडारण और परिवहन के लिए संशोधित पैकेजिंग

डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के अनमोल विचार

- इससे पहले कि सपने सच हो, आपको सपने देखने होंगे।
- सपना वो नहीं हैं जो आप नींद में देखें, सपने वो हैं जो आपको नींद ही नहीं आने दें।
- आत्म विश्वास और कड़ी मेहनत, असफलता नामक बीमारी को मारने के लिए सबसे बढ़िया दवाई है। ये आपको एक सफल व्यक्ति बनाती है।
- एक अच्छी पुस्तक हजार दोस्तों के बराबर होती है, जबकि एक अच्छा दोस्त् एक लाइब्रेरी (पुस्तकालय) के बराबर होता है।
- इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।
- अपनी पहली सफलता के बाद विश्राम मत करो क्योंकि अगर आप दूसरी बार में असफल हो गए तो बहुत से होंठ यह कहने के इंतजार में होंगे की आपकी पहली सफलता केवल एक तुक्का थी।
- जीवन में कठिनाइयां हमें बर्बाद करने नहीं आती है, बल्कि यह हमारी छुपी हुई सामर्थ्य और शक्तियों को बाहर निकलने में हमारी मदद करती हैं, कठिनाइयों को यह जान लेने दो कि आप उससे भी ज्यादा कठिन हो।

प्रशासनिक व राजभाषा खण्ड

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में नई प्रशासनिक पहलें

छबिलेन्द्र राऊल*

"श्रृंखला की मजबूती सबसे कमजोर कड़ी पर निर्भर करती है।"

किसी भी सक्रिय तथा ऊर्जावान संगठन में, निरंतर बदलने वाली आन्तरिक एवं बाहरी वातावरण की चुनौतियों का सामना करने के लिए उसे अपनी प्रणालियों और कार्य–विधियों का निरन्तर उन्नयन, अद्यतन और पुनरीक्षण करते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त, प्रौद्योगिकीय प्रगति होने के कारण, 'परिवर्तन' अपरिहार्य हैं और नवीनतम प्रौद्योगिकियों को अपनाने पर ध्यान देना अत्यावश्यक है ताकि अप्रासंगिक, पुराने तौर–तरीकों से छुटकारा पाया जा सके। एक संगठन में ऐसी प्रक्रियाओं के कार्यान्वयन में आईसीटी भी प्रमुख भूमिका निभाता है। वर्तमान विश्व परिदृश्य में अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए भाकृअप में इस दिशा में संगत प्रयास होते रहे हैं, इस संदर्भ में, प्रणाली संबंधी ऐसी विभिन्न कमियों को दूर करने के लिए जो श्रृंखला में कमजोर कडियां साबित हो सकती हैं प्रशासनिक प्रक्रियाओं में सुधार करने के लिए पिछले वर्ष कई पहलें की गई हैं। इस प्रकार की पहलों से न केवल संगठन की कार्य–प्रणाली में सुधार होगा बल्कि देश में शीर्षस्थ कृषि अनुसंधान संगठन के रूप में परिषद की स्थिति और भी अधिक मजबूत होगी।

कुछ महत्वपूर्ण पहलें निम्नलिखित हैं:

वैज्ञानिक

- **स्कोर कार्ड प्रणाली का युक्तियुक्तकरण**

स्कोर कार्ड को नए सिरे से बनाने और एएसआरबी द्वारा भाकृअप में वरिष्ठ वैज्ञानिक पदों के चयन से संबंधित मामलों पर विचार करने के लिए शासी निकाय की सिफारिश पर और सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से एक समिति गठित की गई थी। इस समिति ने सीधी भर्ती की स्कोर कार्ड प्रणाली में अधिक पारदर्शिता लाने और सभी अभ्यर्थियों के लिए इसे न्यायसंगत बनाने के लिए संशोधित स्कोर कार्ड प्रणाली बनाई गई थी और इसे अधिसूचित कर दिया गया।

- **सभी वैज्ञानिक पदों के लिए संशोधित एपीएआर**

कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग के वर्तमान दिशा–निर्देश के अनुसार विभिन्न वैज्ञानिक पदों के लिए एपीएआर प्रपत्र में संशोधन करना आरम्भ किया गया था और सभी विषय वस्तु प्रभागों और एएसआरबी की सलाह से नार्म द्वारा प्रपत्र तैयार किए गए थे। सभी विषय वस्तु प्रभागों की सलाह से एक समिति द्वारा संशोधित एपीएआर प्रपत्रों की फिर से जांच की गई थी और उसके बाद उन्हें कार्यान्वयन के लिए अपनाया गया था। एपीएआर प्रपत्र भाकृअप की वेबसाइट पर डाले गए हैं।

- **एआरएस अध्ययन छुट्टी विनियमावली में संशोधन**

वर्तमान यूजीसी विनियमावली के अनुरूप एआरएस अध्ययन छुट्टी की अवधि में उपयुक्त परिवर्तनों को शामिल किया गया है।

- **भाकृअनुप वैज्ञानिकों के वेतनमान– सांतवे वेतन आयोग की सिफारिशों के अनुसार संशोधन**

VIIवें सीपीसी की सिफारिशों के आधार पर केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों के वेतनमानों के संशोधन का अनुसरण करते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय की अधिसूचना द्वारा अधिसूचित विश्वविद्यालयों के अध्यापकों के वेतन में संशोधन की योजना के आलोक में भाकृअनुप के वैज्ञानिकों के लिए एक नीति तैयार की गयी है।

- **भाकृअनुप प्रणाली में वरिष्ठ वैज्ञानिकों और प्रधान वैज्ञानिकों की मॉडल अर्हताओं में संशोधन**

भाकृअनुप में वरिष्ठ वैज्ञानिकों और प्रधान वैज्ञानिकों की मॉडल अर्हताओं में संशोधन करने के बाद उचित दिशा–निर्देश जारी किए गए।

- क्षेत्रीय स्टेशनों/क्षेत्रीय केंद्रों के प्रमुख की नामपद्धति में एकरूपता लाना

सभी वैज्ञानिक पद–जो विभिन्न नामों अर्थात् किसी संस्थान के क्षेत्रीय स्टेशनों के संयुक्त निदेशक, वैज्ञानिक/प्रभारी–अधिकारी के रूप में प्रचलित हैं, परंतु जो क्षेत्रीय स्टेशनों/क्षेत्रीय

*विशेष सचिव, डेयर व सचिव, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली

केंद्र के प्रमुख के समान हैं और जिनके पदधारी, प्रभागाध्यक्ष के पद के लिए निर्धारित मॉडल अर्हता के आधार पर एएसआरबी द्वारा चयनित किए जा रहे हैं, उन्हें क्षेत्रीय स्टेनशन/केंद्र के अध्यक्ष के रूप में, जैसा भी मामला हो, पुनः पदनामित किया गया है।

- **एआरएस विषय–क्षेत्रों को पुनः परिभाषित करना**

शासी निकाय की सिफारिशों के अनुमोदन और अध्यक्ष, भाकृअनुप की स्वीकृति से "कृषि सांख्यिकी एवं सूचना–विज्ञान" विषय को तीन विषयों: i) कृषि सांख्यिकी, ii) कंप्यूटर ऐप्लीकेशन और iii) सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) एवं जैव–सूचना विज्ञान में, क्रमशः 40:30:30 की रिक्तियों के अनुपात के साथ विभाजित कर दिया गया है और दो भर्ती चक्रों के पूरा होने के बाद इसकी समीक्षा करने के लिए भी प्रावधान कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त, दो विषयों अर्थात् "कृषि अवसंरचना एवं पर्यावरणीय प्रबंधन" और "कृषि प्रक्रिया अभियांत्रिकी" का विलय कर दिया गया था और इसे "कृषि अवसंरचना एवं प्रक्रिया अभियांत्रिकी" का नाम दे दिया गया है।

दिनांक 01.04.2017 से 31.03.2018 की अवधि के दौरान गठित विभिन्न समितियां

- कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल (एएसआरबी) के काम काज की समीक्षा करने एवं एएसआरबी के पुनर्गठन का सुझाव देने के लिए एक समिति का गठन किया गया है।
- एआरएस परीक्षा में दिव्यांग व्यक्तियों (पीडब्ल्यूडी) को आरक्षण उपलब्ध कराने के लिए एक समिति गठित की गई है।
- भाकृअप संस्थानों द्वारा संचालित केवीके के वरिष्ठ वैज्ञानिक व अध्यक्ष के लिए एक नीति का निर्माण करने के लिए एक समिति गठित की गई है।
- भाकृअप वैज्ञानिकों से संबंधित नीतिगत मामलों पर भाकृअप अध्यक्ष एवं माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री को सहयोग देने के लिए कृषि अनुसंधान सेवा नियमों के कृषि अनुसंधान सेवा नियम 8 के अनुसार एक समिति का गठन किया गया है।

तकनीकी सेवा

निम्नीलिखित प्रमुख विशेषताओं के साथ तकनीकी सेवाओं का पुनर्गठन किया गया है:

- तकनीकी कर्मचारियों की भर्ती–टी–2 एवं टी–3 स्तर पर की जाएगी।
- तकनीकी सेवा को छह व्यापक कार्यात्मक समूहों में विभक्त किया गया है।
- डिप्लोमा धारकों की भर्ती टी–2 स्तर पर तथा स्नातकों की भर्ती टी–3 स्तर पर की जाएगी।

प्रशासन

- एक अखिल भारतीय प्रतियोगिता के माध्यम से भाकृअप में सहायकों की सीधी भर्ती के लिए एएसआरबी द्वारा घोषित परिणाम के आधार पर अभ्यर्थी की पसंद तथा रिक्तियों की उपलब्धता के आधार पर उनकी तैनाती निष्पक्ष एवं पारदर्शी रूप से विभिन्न संस्थानों/मुख्यालय में करने के लिए काउंसलिंग का आयोजन किया गया। कुल 208 सहायकों की तैनाती परिषद के विभिन्न संस्थानों/मुख्यालय में की गई जिसके पश्चात उनके कार्यभार ग्रहण करने संबंधी औपचारिकताएं पूरी की गईं। नए सहायकों के लिए आईएसटीएम, नई दिल्ली में एक बुनियादी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।
- तकनीकी एवं प्रशासनिक कर्मचारियों के एक संस्थान से दूसरे संस्थान में जाने के संबंध में, एकरूप अंतर–एवं अंतरा–संस्थान संबंधी दिशा–निर्देश तैयार किए गए।
- भर्ती वर्ष के लिए भावी रिक्तियों का मूल्यांकन कर डीपीसी का आयोजन किया गया ताकि कर्मचारियों एवं अधिकारियों को समय से पदोन्नति प्राप्त हो सके।
- भाकृअप सिस्टम में कुशल सहायी कर्मचारी (एसएसएस) की संख्या को तर्कसंगत बनाने के लिए प्रयास।

ई–शासन

- परिषद में ई–शासन संबंधी पहलों के त्वरित कार्यान्वयन हेतु एक अलग ई–शासन प्रभाग बनाया गया है तथा उसे उपयुक्त स्टाफ एवं अवसंरचनात्मक ढांचा उपलब्ध कराया गया है।
- **ई–खरीद:** भाकृअप मुख्यालय एवं उसके संस्थानों में सीपीपी (केन्द्रीय सार्वजनिक पोर्टल) का सफलतापूर्वक कार्यान्वयन किया गया है। इस प्रकार से, भाकृअप द्वारा जीईएम (गवर्मेंट ई–मार्केटप्लेस) को अपनाकर अत्यंत पारदर्शी ढंग से खरीद की जा रही है। कैश संबंधी सभी लेन–देन डिजिटल रूप में भी किया जा रहा है।
- **ई–ऑफिस:** डेयर एवं भाकृअप मुख्यालय में एनआईसी के डिजिटल ऑफिस सोल्यूशन का भी कार्यान्वयन किया गया है और इस प्रकार से हम कागजविहीन कार्यालय की ओर अग्रसर हैं। सभी उपयोगकर्ताओं को डीएससी उपलब्ध कराने के साथ ही साथ, आधार आधारित ई–साइन की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।
- **भाकृअप–पोर्टल (संस्थान सूचना प्रबंधन प्रणाली–आईआईएमएस):** आईआईएमएस का विकास संस्थागत संसाधन उपयोग तथा अनुसंधान परिणाम में सुधार लाने के लिए भाकृअप संस्थानों के कार्यकलापों की निगरानी हेतु किया गया है और वर्तमान में इस प्रणाली का परीक्षण किया जा रहा है।

- **ई–कृषि मंचः** एक भाकृअप–सार्वजनिक (इंटरफेस),ई–कृषि मंच का विकास हितधारकों के लिए सीधी पहुंच के द्वारा एक अधिक प्रभावी, त्वरित एवं सरल तरीके से एक सार्वजनिक जनसंपर्क के रूप में किया गया है। उपयोगकर्ता अपने प्रश्नों को वेब इंटरफेस या एसएमएस के जरिये सीधे भाकृअप या अनुसंधान संस्थानों के विषय वस्तु प्रभागों को भेज सकते हैं और तुरंत प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकते हैं।
- **एजुकेशन पोर्टलः** शिक्षा के लिए आईएएसआरआई द्वारा विकसित सभी वर्तमान पोर्टल का एकल पोर्टल में विलय कर दिया गया। इस पोर्टल में फंड डिमांड एवं रिलीज मैनेजमेंट सिस्टम, स्टुडेंट पोर्टल, एकेडमिक मैनेजमेंट सिस्टम आदि शामिल हैं।
- **कृषि पोर्टलः** कृषि में नवोन्मेषणों के लिए ज्ञान आधारित संसाधन सूचना प्रणाली हब छह आधानी (रिपोजिटरी) से निर्मित हैं जिनके नाम हैं: प्रौद्योगिकी रिपोजिटरी, प्रकाशन रिपोजिटरी, प्रायोगिक डाटा रिपोजिटरी, प्रेक्षण (ऑब्जरवेशनल) डाटा रिपोजिटरी, सर्वे डाटा रिपोजिटरी एवं आईएएसआरआई में विकसित जियो पोर्टल की प्रणाली के सुदृढ़ीकरण के लिए निगरानी एवं समीक्षा की गई।
- **कृषि विज्ञान केन्द्र नॉलेज नेटवर्क पोर्टल (http://kvk-icar-gov-in/)ः** यह कृषक समुदाय को केवीके की मूलभूत जानकारियां एवं सुविधाओं, जिला कृषि आकस्मिकता योजना, केवीके द्वारा आयोजित किए जाने वाले आगामी, वर्तमान में जारी एवं पूर्व में आयोजित समारोहों, फसल, बागवानी एवं अन्य, उपक्रमों से संबंधित सस्य क्रियाओं के पैकेज की सूचनाएं उपलब्ध कराता है। यह पोर्टल केवीके को सभी प्रकार की जानकारियों को अद्यतन एवं अपलोड करने में सहायता करता है जिससे कि कृषक समुदाय को संबंधित सूचना एवं ज्ञान सही समय पर पहुंच सके। किसानों के लिए एक केवीके मोबाइल ऐप का विकास एंड्रायड उपयोगकर्ताओं के लिए भी किया गया है और यह गूगल प्ले स्टोर में उपलब्ध है। किसानों को सूचनाएं प्राप्त करने के लिए पंजीकरण कराने एवं ऐप में संबंधित केवीके को सेलेक्ट करने की आवश्यकता है। किसान केवीके के विशेषज्ञों से समाधान के लिए कोई भी कृषि संबंधित प्रश्न पूछ सकते हैं।
- **भाकृअप कार्मिक सूचना प्रबंधन प्रणाली (http://pims-icar-gov-in/)ः** भाकृअप कार्मिक प्रबंधन सूचना प्रणाली का विकास किया गया है और पूरे भाकृअप में इसे क्रियान्वित किया गया है। इसका उपयोग वैज्ञानिक, वरिष्ठ वैज्ञानिक, प्रधान वैज्ञानिक एवं आरएमपी पदों जैसे विभिन्न संवर्गो से संबंधित वैज्ञानिक कार्मिकों को शामिल करने, आशोधित करने, सेवानिवृत करने एवं स्थानांतरित करने के लिए किया गया है। यह भाकृअप में नियुक्त वैज्ञानिक कार्मिकों की वास्तविक समय सूचना उपलब्ध कराता है।
- **ई–खरीदः** पारदर्शिता, दक्षता एवं जवाबदेही बनाये रखने के लिए भाकृअप एवं इसके संस्थानों में सभी खरीद या तो जीईएम (GEM) पोर्टल के द्वारा या सीपीपीपी पोर्टल (http://eprocure-icar-gov-in/cppp/) के जरिये की जाती है। ई–प्राप्ति प्रणाली टेंडर धारकों को निःशुल्क टेंडर शिड्यूल डाउनलोड करने में सक्षम बनाती है और उसके बाद इस पोर्टल के जरिये बोली (बिड) को ऑनलाइन जमा करती है।

एक अलग सोशल मीडिया इकाई स्थापित की गई है, जिसमें व्यावसायिक सामग्री को हेंडल करने वाले तथा सामग्री–लेखक सम्मिलित हैं ताकि हितधारकों तथा सामान्य जनता, विशेष रूप से युवाओं के साथ प्रभावी रूप से जुड़ा जा सके। इससे इस संगठन की बेहतर दृश्यता (विजिबिलिटी) बनाई जा सकेगी।

आज प्रौद्योगिकी प्रगति का समय है और समय के साथ चलने के लिए आवश्यक है कि हम नवीनतम प्रौद्योगिकियों को अपनाएं और इसके लिए जरूरी परिवर्तन भी किए जाएं। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में की जा रही इस प्रगति की सहायता से हम किसी भी संगठन में आने वाले गतिरोधों को भी दूर कर सकते हैं। किसी भी संगठन की प्रक्रियाओं के सुगम प्रचालन के लिए आईसीटी एक मुख्य प्रेरक है।

परिवर्तनी या सुधारों को सामान्यतः कार्यप्रणाली के विभिन्न स्तरों पर अलग–अलग परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है। ये परिवर्तन पहले से चली आ रही स्थिति को चुनौती देते हैं और उन्हें भंग करते हैं, इसलिए कोई भी परिवर्तन लाने के लिए शीर्ष प्रबंधन के सहयोग और समर्थन की आवश्यकता होती है जो कि हमें सहज उपलब्ध् रहा है लेकिन इन परिवर्तनों को बिना किसी बाधा के सहज रूप से किसी संगठन में लाने के लिए हर स्तर के अधिकारियों और कर्मचारियों के अथक प्रयासों का विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है। परिवर्तन, एक गतिशील संगठन का अभिन्न अंग हैं और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद भविष्य में इसी प्रकार निरंतर सफलतापूर्वक प्रगति की दिशा में अग्रसर रहेगा।

राजभाषा प्रबंधन: नई दिशाएं

सीमा चोपड़ा*

करीब सत्तर वर्ष पहले भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकृति मिली थी। लेकिन सरकार और स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधानों को पहल देने और तदनुसार केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों, शोध संस्थानों आदि से संबद्ध व्यापक कार्यकलापों के माध्यम से हिंदी को प्रतिष्ठित करने की दिशा में लगातार प्रयास किए जाने के बावजूद भी इस दिशा में समुचित सफलता नहीं मिल पाई है। प्रौद्योगिकी तथा प्रबंधन के इस युग में सभी सुविधाओं के होते हुए भी सरकारी संगठनों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की दिशा में वांछित प्रगति क्यों नहीं संभव हो पा रही है? प्रस्तुत लेख में राजभाषा कार्यान्वयन में आ रही कुछ मुख्य समस्याओं पर विचार किया गया है तथा इन्हें दूर करने के लिए राजभाषा प्रबंधन की दृष्टि से कुछ समाधान प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया गया है।

संवैधानिक प्रावधानों के कार्यान्वयन की समस्याएं

70 साल पहले अंग्रेज हमें आजाद छोड़कर चले गए लेकिन अंग्रेजी भाषा अब भी हमारी गुलाम मानसिकता का निशान बनकर यहां विराजमान है। सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री गुंडार मिंडल ने 'एशियन ड्रामा' में लिखा है कि जब तक भारतीय संसद में अंग्रेजी का व्यवहार होता रहेगा तब तक वह देश अपने को आजाद नहीं कह सकता।' तभी हमें सोचना पड़ेगा कि हम आजाद कब होंगे? संविधान में हिंदी को राजभाषा बनाने का प्रावधान है तो उसके कार्यान्वयन में अभी कौन सी समस्या रह गई है, कारण ढूंढते समय हम अंत में संविधान में ही आ पहुंचते हैं। संविधान के भाग 17, अनुच्छेद 343 के खण्ड (2) और खण्ड (3) में ऐसा लिखा है कि संविधान के प्रारंभ में 15 वर्ष की अवधि तक शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा और उक्त 15 वर्ष की अवधि के पश्चात् भी विधि द्वारा अंग्रेजी के प्रयोग का उपबंध कर सकेगी। इस प्रकार संविधान में 'हिंदी व अंग्रेजी' को समान महत्ता प्रदान की गई है। हिंदी के प्रति संविधान की इस दोहरी नीति का यह परिणाम है कि अंग्रेजी का खुलकर प्रयोग शासनिक कार्य प्रणाली में अब भी होता है और हिंदी मात्र हिंदी दिवस और या समारोहों के बीच सम्मान पात्र रह गई है। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की समस्याओं में सबसे प्रमुख समस्या भी यही है कि संविधान में हिंदी को राजभाषा बनाना केवल सिद्धांत रूप में स्वीकार किया गया है किंतु इसको अमल में लाने के संदर्भ में कोई ठोस संकेत नहीं है। इस अनिश्चित स्थिति ने अंग्रेजी के लिए सभी रास्ते खोल दिए हैं।

कार्यालयों में कुछ अधिकारियों का मत यह है कि हिंदी अब भी विकसित भाषा नहीं है, इसमें पर्याप्त शब्दावली नहीं है और इसमें विभिन्न विषयों के विचार यथार्थ रूप में तथा प्रभावी ढंग से व्यक्त नहीं किए जा सकते। इसलिए मुख्य कामकाज हिंदी में असंभव है।

आज भी अधिकांश अधिकारी वर्ग अंग्रेजी के प्रयोग को ही अपनी योग्यता का प्रदर्शन मानते हैं। वे लोग सोचते हैं कि हिंदी अपनाने से विभाग की कार्य कुशलता का स्तर गिर सकता है और कार्य करने का समय भी अधिक हो सकता है। तकनीकी तथा वैज्ञानिक प्रकृति का काम तनिक भी हिंदी से नहीं चल सकता। कानूनी मामलों में हिंदी के प्रयोग को असंभव माना गया है।

इस प्रकार की कई गलत धारणाएं हैं जिन्होंने विभिन्न स्तर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन को अपनी गिरफ्त में रखा हुआ है। इसलिए जब–जब सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की बात आती है तो उसे गंभीरता से नहीं लिया जाता और यह समझा जाता है कि वर्तमान स्थिति में परिवर्तन आने की विशेष संभावना नहीं है। जो भी है, फलस्वरूप यह हुआ कि संविधान के नियमों, अधिनियमों, आदेशों में सबके होते हुए भी भारत की राजभाषा अंग्रेजी ही रह गई और हिंदी तो कागजों में राजभाषा बनकर औपचारिकता की पूर्ति कर रही है। इस स्थिति में परिवर्तन हो इसके लिए राजभाषा कार्यान्वयन को प्रथमत: प्रबंधन के साथ जोड़ना और उसके बाद उसे अनुबद्ध प्रौद्योगिकियों के साथ जोड़ना है। राजभाषा कार्यान्वयन का जो पारंपरिक स्वरूप है, उसमें समग्र परिवर्तन अनिवार्य है।

*निदेशक (राजभाषा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि भवन, नई दिल्ली

राजभाषा कार्यान्वयन बनाम राजभाषा प्रबंधन

अब राजभाषा कार्यान्वयन को राजभाषा प्रबंधन का रूप देना अनिवार्य हो गया है। अतः राजभाषा को प्रबंधकीय दृष्टि से देखना आवश्यक है। वह एक संगठन की संप्रेषण की भाषा है। संगठनात्मक सम्प्रेषण की भाषा के रूप में उसे स्थापित करना है। इसमें एक व्यक्ति की भूमिका पर्याप्त नहीं है बल्कि पूरी संस्था की भूमिका अनिवार्य हो जाती है।

राजभाषा प्रबंधन में जो भी कार्य समाहित है प्रबंधकीय दृष्टि से देखते समय उनका अंतिम लक्ष्य यही होना है कि केन्द्र सरकार के मंत्रालयों, संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों आदि में लगभग सारा काम मूल रूप से हिंदी भाषा में हो। यह एक संवैधानिक लक्ष्य है। इसकी दशा और दिशा अपेक्षित अवस्था तक पहुंची नहीं है। इसलिए राजभाषा प्रबंधन पर गंभीरतापूर्वक विचार करने का समय आ गया है।

राजभाषा प्रबंधन में राजभाषा संबंधी कार्यकलापों की योजना, कार्यान्वयन समन्वयन से लेकर अनुपालन तक की गतिविधि के सम्यक प्रवर्तन अभीष्ट हैं। श्री गोवर्धन ठाकुर ने अपनी पुस्तक 'राजभाषा प्रबंध' (1993) में राजभाषा प्रबंधन की ऐसी व्याख्या दी है – "राजभाषा हिंदी के अभीष्ट प्रयोग के निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु राजभाषा से सम्बद्ध समस्त कार्य व्यापारों का निरूपण, प्रवर्तन एवं पुनर्विलोकन की सुव्यवस्थित प्रक्रिया को राजभाषा प्रबंध की संज्ञा दी जा सकती है।"

इसके अंतर्गत राजभाषा कार्यकलापों के कुशल संपादन के उद्देश्य से राजभाषा कर्मियों के चयन से लेकर विभागीय प्रशासन, राजभाषा प्रशिक्षण, राजभाषा प्रकाशन, हिंदी अनुवाद, कार्यालयीन मूल लेखन, राजभाषा बैठकों की व्यवस्था, राजभाषा रिपोर्ट, राजभाषा निरीक्षण, राजभाषा संबंधी मंत्रालय, राजभाषा विभाग एवं अन्य संगठनों की बैठकों के आयोजन में सहयोग/प्रतिनिधित्व आदि समस्त राजभाषा कार्यों के प्रवर्तन, समन्वयन, समीक्षा एवं पुनर्निरूपण के कार्य आ जाते हैं।

राजभाषा प्रबंधन को चार विभागों में बांटा जा सकता है:–

– राजभाषा कार्मिक प्रबंधन (Official Language Personnel Management)
– राजभाषा प्रशासनिक प्रबंधन (Official Language Administrative Management)
– राजभाषा वित्त प्रबंधन (Official Language Financial Management)
– राजभाषा प्रोत्साहन प्रबंधन (Official Language Incentive Management)

राजभाषा कार्मिक प्रबंधनः राजभाषा प्रबंधन की सफलता असफलता में राजभाषा कार्मिक प्रबंधन की अहम भूमिका है। वस्तुतः संगठन में राजभाषा प्रावधानों को पहल देने के लिए निर्धारित कार्यक्रम के कार्यान्वयन और इस संबंध में अभीष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु समुचित नीति निर्धारण, मानवीय क्रियाओं के निर्देशन तथा तद्जन्य कार्मिक पहलुओं का नियमन–नियंत्रण ही राजभाषा कार्मिक प्रबंधन है। इसमें संगठन के राजभाषा विभाग के लिए योग्य और कुशल कार्मिकों का चयन सुनिश्चित करने के साथ–साथ उनकी योग्यता, कुशलता और निष्ठा के अनुसार प्रोन्नति–पदावनति से लेकर पुरस्कार और पदच्युति तक के समस्त कार्य–व्यापार सम्मिलित हैं। राजभाषा कार्मिक प्रबंधन प्रक्रिया, वह प्रबंधन प्रक्रिया है जो संगठन के राजभाषा विभाग के लिए कुशल कार्मिकों को चयन करके उनके सहयोग से राजभाषा प्रावधानों के समुचित अनुपालन को प्रोत्साहित करे और इस संदर्भ में संगठन को निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने में सक्षम बना सके।

राजभाषा प्रशासनिक प्रबंधनः राजभाषा प्रशासनिक प्रबंधन से तात्पर्य राजभाषा प्रबंधपरक अनुशासन, प्रशासन, सुविधा और नियमन से संबंधित कार्यों की योजना, कार्यान्वयन और मूल्यांकन से है। इसमें मोटे तौर पर देखें तो ऐसे कुछ दायित्व समाहित हैं जैसे विभागीय प्रशासन, अनुशासन, कार्य–वितरण और अंतःसंरचना एवं सुविधा प्रबंधन। विभागीय प्रशासन के प्रबंधन में राजभाषा प्रबंधक को अपने विभाग के कर्मचारियों के काम संबंधी सभी कार्यों का हिसाब रखना होता है। इसके अतिरिक्त, राजभाषा संबंधी सभी आदेशों की कार्यवाही भी विभाग के प्रशासनिक कार्यों के ही अंग हैं। राजभाषा प्रबंधक को अपने विभाग के अनुशासन को बनाए रखने की जिम्मेदारी भी निभानी है। प्रबंधन की गतिशीलता के लिए कार्यों का उचित बंटवारा तथा उनके संपादन को सुचारू रूप से चलते देखना राजभाषा प्रबंधन का दायित्व है। राजभाषा अनुशासन के कार्य–संपादन के लिए अनेक अंतःसंरचना और सुविधाओं की जरूरत होती है, जिसकी व्यवस्था भी राजभाषा अधिकारी को खुद ही करनी होती है।

राजभाषा वित्त प्रबंधनः वस्तुतः वित्तीय पूर्वानुमान के आधार पर ही किसी कार्यक्रम की संपूर्ण योजना की रूपरेखा तैयार की जाती है और इसकी सुलभ प्राप्ति और सार्थक विनियोजन से ही अनुकूल परिणाम की आशा की जा सकती है। राजभाषा कार्यान्वयन को लक्ष्य करके इससे संबंधित कार्यक्रमों को रूपायित करने में राजभाषा वित्त प्रबंधन की अहम भूमिका है। "राजभाषा वित्त प्रबंधन से तात्पर्य उन समस्त क्रियाओं से है जो संगठन के राजभाषा प्रावधानों से संबंधित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विविध एवं व्यापक राजभाषा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए वित्तीय पूर्वानुमान, वित्तोपार्जन, आबंटन, विनियोजन, नियंत्रण आदि से संबद्ध हैं।

राजभाषा प्रोत्साहन प्रबंधन: प्रोत्साहन से तात्पर्य है किसी व्यक्ति – समूह को किसी उद्देश्य की प्राप्ति के प्रति विशेष रूप से उत्साहित और उत्प्रेरित करना। अतः राजभाषा प्रोत्साहन प्रबंधन से तात्पर्य है राजभाषा हिंदी के प्रयोग से संबंधित निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कर्मचारियों को विशेष रूप से उत्साहित और उत्प्रेरित करना। यह प्रोत्साहन दो प्रकार के होते हैं:

1. भाषात्मक एवं प्रेरणात्मक प्रोत्साहन
2. वित्तीय प्रोत्साहन

एक में कर्मचारियों को मानसिक तौर पर हिंदी की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा देता है तो दूसरे में वित्तीय पुरस्कारों की सहायता से राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति कर्मचारियों का झुकाव बढ़ा कर इसके प्रावधानों के अनुपालन की दिशा में आगे ले जाता है।

राजभाषा प्रबंधन के क्षेत्र: राजभाषा प्रबंधन का क्षेत्र कार्यालय के समस्त विभागों के कार्य व्यापारों का क्षेत्र है जहां राजभाषा हिंदी का प्रयोग अपेक्षित है। लेकिन वहां राजभाषा का प्रयोग मात्र गैर–तकनीकी पत्राचार, टिप्पण और प्रतिवेदन तक सीमित नहीं होना है बल्कि व्यावसायिक, तकनीकी क्षेत्र तथा वैज्ञानिक अनुसंधान एवं अनुप्रयोग के क्षेत्र में भी भाषिक माध्यम के रूप में हिंदी का बेहद प्रयोग होना चाहिए। राजभाषा प्रबंधन के अंतर्गत हम निम्नांकित क्षेत्रों के भाषिक प्रबंधन पर विचार कर सकते हैं।

कार्मिक एवं प्रशासनिक (प्रशिक्षण, अनुवाद आदि)

प्रत्येक विभाग में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को पहल देने के लिए समुचित आदेश, परिपत्र आदि जारी करने, प्रगति रिपोर्ट लेने, उनकी समीक्षा करने तथा अपेक्षित परामर्श और उनका अनुपालन पुनरीक्षण आदि कार्यों का संपादन राजभाषा प्रबंधक का दायित्व हो जाता है। प्रयोग को पहल देने के लिए केन्द्र सरकार के कार्यालयों में कार्यरत हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान न रखने वाले कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने का प्रबंधन करना तथा प्रशिक्षित कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन कर उन्हें हिंदी में अपना कार्यालयीन कार्य सहज ढंग से निपटाने का प्रशिक्षण देना भी राजभाषा प्रबंधक का दायित्व है। इसके अतिरिक्त जब तक समस्त सरकारी प्रयोजनों के लिए हिंदी के मूलरूप में प्रयोग नहीं हो जाता, द्विभाषिकता की स्थिति बनी रहेगी, और इस स्थिति में राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के तहत आने वाले 13 प्रकार के कागजातों के अतिरिक्त, लेखन– सामग्रियों, प्रदर्शन सामग्रियों, अनुदेशों, प्रक्रिया साहित्यों, फार्मों, साइन–बोर्डों, नामपट्टों आदि छोटे–बड़े अनेक मदों के लिए अंग्रेजी से हिंदी रूपांतर तैयार करने की व्यवस्थां करना भी आज राजभाषा प्रबंधन का अनिवार्य अंग है।

तकनीकी (अनुसंधान)

तकनीकी क्षेत्रों से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण और मानकीकरण के कार्य लगभग पूरे हो चुके हैं लेकिन इन क्षेत्रों में कार्यरत कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी की तद् विषयक शब्दावली के साथ उन्हें अपने विभाग से सम्बद्ध कार्यों को हिंदी के माध्यम से निपटाने के लिए गहन प्रशिक्षण का अभाव है। प्रशिक्षण देने वाले विशेषज्ञों का पता लगाकर संगठन के प्रशिक्षण संस्थान के द्वारा कार्मिकों को प्रशिक्षण देने का प्रबंधन करना वहां के राजभाषा प्रबंधक का दायित्व है। तकनीकी क्षेत्रों में दिन प्रतिदिन जो विकास हो रहा है, उसके साथ पारिभाषिक शब्दावली का भी नवीनीकरण करना होगा।

कार्यालयों में किसी भाषा का कार्यान्वयन सरल कार्य नहीं है। इस कार्यान्वयन के लिए प्रत्येक कार्यालय में एक राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन होता है। इस समिति में विभागाध्यक्ष और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को भी भाग लेना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि इनके अभाव में कोई भी कार्य सुचारू रूप से चल नहीं सकता।

राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के मुद्दों पर विचार करने वाले कार्यालयों के उच्चतम अधिकारी है न कि राजभाषा अधिकारी। राजभाषा प्रबंधन में इस तरह की भाषा नीति की स्वीकृति अनिवार्य है। भाषा नीति यदि ढीली पड़ जाए तो राजभाषा प्रबंधन का अपने लक्ष्य तक पहुंचना कठिन है।

तिमाही प्रगति रिपोर्ट

हिंदी संबंधी तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में नियमित रूप से रखना अपेक्षित है। इस रिपोर्ट द्वारा एकत्रित आंकड़ों पर आधारित जानकारी मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के समक्ष भी प्रस्तुत की जाती है। उससे उक्त समिति के सदस्यों को मंत्रालय के अधीन विभिन्न विभागों एवं कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति का पता चलता है तथा उसके अनुसार वे समिति की बैठकों में अपने सुझाव दे सकते हैं।

कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति की निगरानी के लिए निरीक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए। अगर ऐसा कोई नया नियम लागू नहीं है और उसके अनुपालन पर कोई ध्यान नहीं दे सकता है तो नियम सिर्फ कागज़ों में ही अटका रहेगा। निरीक्षण तो उच्च स्तर के अधिकारी द्वारा किया जाता है। तभी उसका प्रभाव पड़ सकता है। प्रबंधन में नियमित निरीक्षण की अत्यंत आवश्यकता है। किसी भी प्रकार की समिति का कोई भी निर्णय नियमित निरीक्षण और परीक्षण के बल पर ही फलप्रद हो सकता है। राजभाषा प्रबंधन में इसका महत्व दोगुना है। अतः राजभाषा प्रबंधन में नियमित निरीक्षण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

राजभाषा अधिकारी

राजभाषा प्रबंधन में इसके संयोजक की समन्वयक भूमिका महत्वपूर्ण है। राजभाषा अधिकारी राजभाषा प्रबंधन का समन्वयक है।

राजभाषा अधिकारी को सरकार की राजभाषा नीति, संवैधानिक प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम की विभिन्न धाराओं, उपधाराओं, राजभाषा नियमों और राजभाषा संबंधी आदेशों का गहन अध्ययन करके उनका पूर्ण ज्ञान हासिल करना चाहिए ताकि उक्त प्रावधानों के विषय में कार्यालय के उच्चाधिकारियों को वह समय–समय पर अवगत करा सकता है। उसे कार्यालय की गतिविधियों के बारे में भी जागरूक रहना चाहिए। अगर कभी राजभाषा संबंधी प्रावधानों का उल्लंघन होता दिखे, तो तुरन्त संबद्ध अधिकारियों को सूचित करके उसे न केवल उस समय दूर करना चाहिए बल्कि यह भी उसे सुनिश्चित करना है कि आगे इस प्रकार के उल्लंघन की पुनरावृत्ति नहीं होगी और पुनरावृत्ति होती है तो उसे उच्चतर अधिकारियों तथा प्रशासनिक प्रमुख को सूचित करना है।

राजभाषा अधिकारी का कार्यक्षेत्र भाषा का है। इसलिए उसे हिंदी और अंग्रेजी के साथ यथावश्यक प्रादेशिक भाषा का भी अच्छा ज्ञान होना जरूरी है। एक प्रबंधक होने के नाते उसे अपनी बात और अपने तर्क से दूसरे अधिकारियों व कर्मचारियों को सही ढंग से अवगत कराने की क्षमता भी रखनी चाहिए। राजभाषा के मामले में नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता रखना तथा लीक से हटकर राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में कुछ नया करने का प्रयास आदि राजभाषा अधिकारी की शक्ति ही समझी जाती है। हिंदी में काम करने वालों की स्वयं प्रशंसा करने के साथ–साथ कार्यालय के उच्चाधिकारियों द्वारा भी उनकी प्रशंसा करवाना, कार्यालय के उपयोग के लिए कुछ सहायक साहित्य तैयार करना, हिंदी में कंप्यूटर के उपयोग को बढ़ावा देने आदि भी राजभाषा अधिकारी को अपने कार्यालय में बहुमान्य बनाने वाले कार्य है। वह न केवल अपनी शक्तियों और कमजोरियों को पहचानें बल्कि यह भी नितांत आवश्यक है कि वह अपनी शक्तियों को और भी सुदृढ़ करें तथा कमजोरियों को दूर करके उन्हें भी अपनी शक्तियों में परिवर्तित करें।

समस्याओं का प्रबंधकीय समाधान

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को सफल बनाने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि राजभाषा के रूप में केवल हिंदी को महत्व प्रदान किया जाए लेकिन साथ ही यह भी सुनिश्चित करना है कि सरकारी कामकाज में इस्तेमाल की जाने वाली हिंदी सरल और सुबोध हो, जटिल और बोझिल नहीं क्योंकि अधिकांश अहिंदी भाषा–भाषी सरकारी कर्मचारी हिंदी में बोलने, लिखने या काम करने में इसलिए झिझकते हैं कि कहीं उनसे गलती न हो जाए। इसलिए सामान्य बोलचाल, बातचीत और कामकाज में प्रचलित शब्दों को भी राजभाषा के शब्दकोश में समाविष्ट करना चाहिए। सरकार द्वारा यह बात भी कई बार स्पष्ट की गई है और इस विषय में लिखित आदेश भी जारी हुए हैं कि अन्य भाषाओं के जो प्रचलित शब्द हिंदी में रच बस गए हैं, उन्हें उसी रूप में अपना लेने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। इस प्रकार सरकार ने यह बात भी स्पष्ट व्यक्त की है कि कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए सिर्फ हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान रखना ही काफी है।

राजभाषा प्रबंधन और प्रौद्योगिकी

कार्यालयों में राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन को सफल बनाने के लिए हमें यह तय करना चाहिए कि जो भी सुविधाएं प्रौद्योगिकी के जरिए आज अंग्रेजी में उपलब्ध है, वे आज हिंदी में भी उपलब्ध हैं। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि प्रौद्योगिकी ने राजभाषा की प्रगति के क्षेत्र में तेज गति प्रदान करने के साथ–साथ हमें याद दिलाया है कि भाषा के कार्यान्वयन में समयानुकूल जरूरतों के अनुसार प्रगति भी आवश्यक है।

- मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सहन नहीं कर सकता।
- भाषा के क्षेत्र में घृणा का नहीं, प्रेम और सौहार्द्र का स्थान होना चाहिए।
- देवनागरी भारत के लिए वरदान है।

– आचार्य विनोवा भावे

प्रशासन में राजभाषा कार्यान्वयन, निरीक्षण और चुनौतियां

डा. संतराम यादव*

भारत की अर्वाचीन सभ्यता और मिली जुली संस्कृति से साक्षात रुबरू होने के लिए विश्व के विभिन्न भागों में विचरण करने हेतु मानव जन सदैव लालायित रहता है। इस पावन भूमि को ऋषि मुनियों ने अपने त्याग, प्रेमभाव, ज्ञान और लहू से समय–समय पर सींचा है। यहां के साधु संतों और तीर्थ यात्रियों में हिंदी भाषा ही सदैव संपर्क सूत्र रही है। पंजाब के गुरू नानकदेव जी, काशी के कबीर, बंगाल के केशव सेन और महाराष्ट्र के नामदेव जी आदि महान संतों ने अपने विचारों को देश के एक कोने से दूसरे कोने तक जनता जनार्दन तक आदान प्रदान करने का माध्यम जिस भाषा को बनाया, वह भाषा केवल हिंदी ही थी।

भारतीय संविधान में राजभाषा के रूप में हिंदी को एक स्वीकृत भाषा के रूप में उद्धृत किया गया है। प्रायः यह देखा गया है कि हिंदी को प्रतिष्ठित करने की दिशा में निरंतर प्रयास करने के बाद भी समुचित सफलता पाना एक मृगमरीचिका के समान है। भारत जैसे बहुभाषी देश में राजभाषा की समस्या का जटिल होना स्वाभाविक भी है। व्यापक कार्यकलापों के माध्यम से आज सभी सुविधाओं के होते हुए भी सरकारी संगठनों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की दिशा में वांछित प्रगति संभव नहीं हो पा रही है। सरकारी समितियों के आश्वासनों के बावजूद राजभाषा का क्षेत्र जड़ता की स्थिति में है। राष्ट्रभाषा, मातृभाषा, संपर्क भाषा, जनभाषा, क्षेत्रीय भाषा और राजभाषा का मसला हमारी संस्कृति से संबंधित है। किसी भी देश की एक राष्ट्रभाषा होती है जो संपूर्ण देश में बोली और आसानी से समझी जाती है। मातृभाषा का अर्थ माता से प्राप्त भाषा को कहा जाता है। संपर्क भाषा उसे कहते हैं जिसके माध्यम से हम एक–दूसरे से शब्दों का उच्चारण कर संपर्क स्थापित करते हैं। जनभाषा अर्थात् जनता की भाषा कहलाती है। क्षेत्रीय भाषा से तात्पर्य एक क्षेत्र विशेष में संचार हेतु प्रयोग की जाने वाली भाषा से माना जाता है। राजभाषा का सीधा–साधा अर्थ राजकाज या कार्यालय में प्रयोग की जाने वाली भाषा से जुड़ा है। भाषा और बोली में भी अंतर है। हम जैसी भाषा का प्रयोग व्यवहार में करते हैं, उसे यथावत लिखित रूप में प्रयोग में नहीं लाते हैं। कार्यालय की भाषा एक फ्रेम में निर्धारित की गई है। सरकारी कार्यालयों में सामान्य पत्राचार हेतु केवल उत्तम पुरूष का ही प्रयोग किया जा सकता है। अर्धसरकारी पत्रों में अवश्य ही प्रथम पुरुष का प्रयोग किया जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि राज्य को चलाने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे राजभाषा कहते हैं। किसी भी शासन की एक या उससे अधिक राजभाषाएं हो सकती हैं। मसलन तेलंगाना और आंध्र प्रदेश राज्यों में क्रमशः तेलुगू और उर्दू भाषाओं को राजभाषा के रूप में प्रयोग करने की स्वीकृति प्रदान की गई है।

किसी भी राज्य या देश की शासन व्यवस्था को चलाने के लिए राजभाषा को स्वीकृति प्रदान करनोपरांत कुछ नीतियां बनाई जाती हैं। उन नीतियों के अनुपालन हेतु कुछ नियम बनाए जाते हैं। हमारे संविधान निर्माताओं ने भी देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी को भारत सरकार के देश और विदेश में स्थित कार्यालयों के दैनिक पत्राचार हेतु राजभाषा का दर्जा प्रदान किया है। इसके लिए गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग के रूप में एक स्वतंत्र विभाग की स्थापना की गई है। यह विभाग प्रति वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है। इस वार्षिक कार्यक्रम में केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं जिन्हें प्राप्त करने का अनुरोध किया जाता है। केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के अनुपालन हेतु एक राजभाषा कक्ष की स्थापना की गई है। हिंदी पदाधिकारी को कार्यालय में वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निरंतर संबंधित अनुभागों से आग्रह करना पड़ता है।

राजभाषा के संबंध में संवैधानिक प्रावधान हैं। राष्ट्रपति महोदय ने 1960 में आदेश जारी किया। 1963 में राजभाषा अधिनियम बनाया गया। 1968 में राजभाषा संकल्प जारी किया गया। वर्ष 1976 में भारत सरकार ने राजभाषा नियम बनाए। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी चौदह दस्तावेज अनिवार्य रूप से राजभाषा

*सहायक निदेशक (राजभाषा), केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, संतोषनगर, हैदराबाद – 500 059

हिंदी और अंग्रेजी में एक साथ जारी करने चाहिए। निरीक्षण समितियां सर्वप्रथम इस कॉलम की ही जांच करती है। यही मुद्दे संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में भी रखे जाते हैं। वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति न हो पाने का मूल कारण यह है कि एक अतिरिक्त भाषा में कार्य करना संबंधित अनुभागों में कार्यरत कार्मिकों व अधिकारियों हेतु एक बोझ बन पड़ा है। किसी भी कार्यालय का संपूर्ण कार्य यदि राजभाषा में होने लग जाए तो फिर कहने की गुंजाइश ही नहीं रहेगी। विभिन्न रिपोर्टों से प्राप्त आंकड़े दर्शाते हैं कि संबंधित कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन कार्य में निरंतर वृद्धि हो रही है परंतु यथार्थ स्थिति यह कहती है कि कार्यालय के व्यवहार में इसमें निरंतर गिरावट आ रही है ।

संस्थानों में दैनिक पत्राचार के कार्य में कठिनाई के साथ ही साथ वैज्ञानिक या तकनीकी लेखों को हिंदी में प्रस्तुत करना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य बना हुआ है। हालांकि गूगल ट्रांसलेशन और अन्य सॉफ्टवेयरों के साथ अनुवाद की सुविधा कुछ हद तक कारगर सिद्ध हो रही है। फिर भी एक लेख तैयार करते समय हिंदी अनुवादक का ही सहारा लिया जाता है। वैकल्पिक शब्दों के चयन में सदैव शंका बनी रहती है। अनुवाद के लिए आजकल गूगल का सहारा लिया जाता है तो पता चलता है कि कुछ ही पल में हिंदी से अंग्रेजी या अंग्रेजी से हिंदी हमारे सामने परोस दी गई है। परंतु, जब हम इसे पढ़ना आरंभ करते हैं, तो पता चलता है कि 'कहीं की ईंट और कहीं का रोड़ा' सामने रख दिया गया है। उसे सही वाक्य संरचना प्रदान करते समय आपका उससे भी अधिक समय उस भाषा को संवारने में व्यर्थ चला जाता है। भारत सरकार ने वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना इस उद्देश्य से की थी कि कठिन से कठिन शब्दों को भी सरल भाषा में प्रस्तुत किया जाएगा परंतु व्यवहार में पता चला कि आयोग ने ऐसे जटिल शब्द गढ़ दिए जो कि अंग्रेजी शब्दों से भी कठिन प्रतीत होते हैं। इसलिए अब यह कहा जा रहा है कि प्रचलित तकनीकी व अन्य शब्दों का यथावत प्रयोग किया जाए।

राजभाषा नियमानुसार सभी मुख्य बोर्ड, साइनबोर्ड व अन्य बोर्ड, नामपट्ट, रबर स्टैंप, लेखन सामग्री, वार्षिक रिपोर्ट आदि द्विभाषी या त्रिभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाने चाहिए। यदि हैदराबाद स्थित कार्यालयों का एक दौरा किया जाए तो पता चलता है कि अधिकांश कार्यालयों में ये द्विभाषी और त्रिभाषी रूप में प्रदर्शित तो किए गए हैं परंतु भाषा क्रम को उचित रूप में नहीं अपनाया गया है और फोंट साइज की समस्या व भाषाई त्रुटियाँ सदैव दिखलाई पड़ती हैं। अधिकतर यह देखा गया है कि बोर्ड प्रदर्शित होने के बाद ही संबंधित हिंदी पदाधिकारी को उसकी त्रुटियों का अन्य कार्मिकों से पता चलता है। राकास की बैठकों में संस्थानों में वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जांच बिंदु स्थापित करने का निर्णय लिया जाता है, परंतु वे सब फाइलों तक सीमित होकर रह जाते हैं।

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 'ग' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों की ओर से तीनों क्षेत्रों के साथ हिंदी में पचपन प्रतिशत पत्राचार करना चाहिए। तिमाही रिपोर्टों में अंकित आंकड़ो से ज्ञात होता है कि सभी ने इस लक्ष्य को पा लिया है परंतु जब संबंधित कार्यालयों में जाकर फाइलें खंगाली जाती हैं तो रिपोर्ट में दर्शाए गए आंकड़े हवा हवाई होते नजर आते हैं। नियमानुसार हर तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की जानी चाहिए ताकि कार्मिकों के हिंदी ज्ञान स्तर में वृद्धि की जा सके। परंतु कुछ कार्यालयों में बजट और स्टॉफ नामांकन की कमी सामने आती हैं। प्रशासन में यह भी देखा गया है कि दिन प्रतिदिन नियमित स्टाफ के अभाव में राजभाषा कार्यान्वयन कार्य पिछड़ता जा रहा है। संविदा के आधार पर नियुक्त कार्मिक जिम्मेदारियों से दूर भागते हैं। राजभाषा कार्यान्वयन में सहयोग करना उनके लिए एक दुरूह कार्य है। अधिकांश कार्यालयों में यह स्थिति पाई गई है कि स्थापना अनुभाग में दैनिक हिंदी पत्राचार कार्य के लिए तैनात करने हेतु कार्मिकों का सदैव अभाव बना रहता है।

आमतौर पर यह देखा गया है कि राजभाषा नीति के प्रति उच्च अधिकारियों का दृष्टिकोण ज्यादातर जवाबों में सकारात्मक है। लेकिन प्रशासनिक क्षेत्र के कर्मचारियों का राजभाषा नीति और उसके कार्यान्वयन के प्रति रुख आशाजनक नहीं है। फिर भी प्रोत्साहन हेतु थोड़ा बहुत हिंदी में वे काम कर लेते हैं। कार्यालय के अन्य सहयोगियों को भी प्रेरित करना पडता है। कार्यालय के प्रशासन विभाग में राजभाषा कार्यान्वयन एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। परंतु यह भी सत्य है कि जो ठीक नहीं है उसको हटाना ही ठीक है। उसमें समयानुसार परिवर्तन लाना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग और कार्यान्वयन हेतु पहल उच्चाधिकारियों द्वारा की जानी चाहिए। राजभाषा के रूप में प्रयुक्त हिंदी सरल होनी चाहिए। क्लिष्ट हिंदी के स्थान पर आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग आवश्यक है। राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी नियमों को सख्त बनाना चाहिए। वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्यों की भी प्रविष्टि करनी चाहिए। राजभाषा कार्यान्वयन कार्य की सेवा को कार्मिक की क्षमता के साथ जोड़ना चाहिए। हिंदी में काम करने पर ही वेतनवृद्धि, पदोन्नति आदि दी जानी चाहिए। इनके अलावा हिंदी के प्रतिविरोधी मानसिकता को बदलना, इच्छा शक्ति को जगाना कार्यान्वयन का अनुपालन न करने पर दंड का प्रावधान होना चाहिए। राजभाषा कार्यान्वयन में सुधार लाने के लिए सबसे पहले

राजभाषा अधिकारी तथा राजभाषा से संबंधित अन्य कर्मचारियों की कार्यकुशलता उच्च स्तर की होनी चाहिए। अपने काम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण तथा आत्मविश्वास का होना जरूरी है। यह भी पाया गया है कि राजभाषा कार्यान्वयन में हिंदी प्रदेशों की तुलना में हिंदीतर प्रदेश आगे हैं। राजभाषा हिंदी के प्रयोग के मामले में समस्या मातृभाषा की न होकर शिक्षण माध्यम की है जो हिंदी व हिंदीतर प्रदेश के कर्मचारियों के लिए किसी हद तक एक समान है। निरीक्षण समितियों को प्रस्तुत आंकड़े तथ्यपरक होने चाहिए।

किसी भी कार्यालय में प्रशासन राजभाषा कार्यान्वयन का वह क्षेत्र है जिसका संबंध कार्य–विधियों को निर्धारित करने और उन्हें प्रयोग करने से है जिसके द्वारा क्रियाओं की प्रगति को योजनाओं के अनुसार नियमित एवं नियंत्रित किया जा सके। अतः प्रशासन में राजभाषा प्रयोग से मेरा तात्पर्य राजभाषा के रूप में प्रबंध परक अनुशासन, प्रशासन, सुविधा और नियमन से संबंधित कार्यों की योजना, कार्यान्वयन और मूल्यांकन से है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि राजभाषा संबंधी सभी आदेशों का अनुपालन करवाना भी विभाग के प्रशासनिक कार्यों का ही एक अंग है। राजभाषा कार्यान्वयन हेतु समुचित आदेश, परिपत्र आदि जारी करने, प्रगति रिपोर्ट लेने, उनकी समीक्षा करने तथा अपेक्षित परामर्श और उनका अनुपालन, पुनरीक्षण आदि कार्यों का संपादन करना राजभाषा पदाधिकारी का दायित्व हो जाता है। संस्थानों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान न रखने वाले कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिलाना तथा प्रशिक्षित कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन कर उन्हें हिंदी में अपना कार्यालयीन कार्य सहज ढंग से निपटाने का प्रशिक्षण देना भी दैनिक क्रियाकलापों में सम्मिलित है। राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के तहत आने वाले चौदह प्रकार के दस्तावेजों के अतिरिक्त, लेखन–सामग्रियों, प्रदर्शन सामग्रियों, अनुदेशों, प्रक्रिया साहित्यों, फार्मों, साइन बोर्डों, नामपट्टों और अन्य अनेक मदों के लिए अंग्रेजी से हिंदी रूपांतर तैयार करने की व्यवस्था करना भी आज प्रशासन का अनिवार्य अंग है।

अंत में हम कह सकते हैं कि भारत सरकार ने राजभाषा संबंधी नीति नियम बनाए हैं जिन्हें प्रशासन में व्यावहारिक रूप में लागू करना एक गंभीर चुनौतिपूर्ण कार्य ही बना रहा है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग हर वर्ष वार्षिक कार्यक्रम में कुछ लक्ष्य निर्धारित कर देता है। अनुसंधान संगठनों के प्रशासन में इसे लागू करना बहुत ही गंभीर समस्या है। वैज्ञानिकों का मूल कार्य अनुसंधान करना है तो तकनीकी वर्ग का काम आवश्यक सहायता प्रदान करना है। प्रशासनिक वर्ग का मुख्य कार्य पत्राचार से जुड़ा है इसलिए वहीं पर वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का अधिक प्रयास करना होगा। कहते हैं कि चुनौतियों से परिपूर्ण रास्ते को पार करने में जो आनंदानुभूति होती है वह आसानी से पूरा हो जाने वाले कार्य में नहीं मिलती। अतः प्रशासन में राजभाषा कार्यान्वयन में आ रही चुनौतियों का सामना करते हुए ही भारत सरकार की राजभाषा नीति और नियमों का कार्यान्वयन और वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का हर संभव प्रयास करना है। जब चांद पर पहुंचना संभव है तो फिर कोई भी कार्य असंभव नहीं है। महान कवयित्री महादेवी वर्मा जी की उक्ति "आशा से आकाश थमा है" से प्रेरित होकर हमें निरंतर प्रयास करते रहना ही होगा।

भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिन्दी महानदी। हिन्दी देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाने वाली भाषा है। हमें इस भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करना चाहिए। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि हिन्दी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।

— रवीन्द्र नाथ ठाकुर

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर यह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।

— राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

राजभाषा गतिविधियां

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों से प्राप्त गतिविधियां

परिषद मुख्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए गए कार्य

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

हिन्दी पखवाड़ा

परिषद मुख्यालय तथा इसके संस्थानों आदि में पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिन्दी सप्ताह, पखवाड़ा/चेतना माह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय कृषि मंत्री जी का प्रेरणाप्रद संदेश जारी किया गया तथा महानिदेशक महोदय ने भी एक अपील जारी करके सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिन्दी में करने का अनुरोध किया।

परिषद मुख्यालय में 14 सितम्बर से 29 सितम्बर, 2017 तक 'हिन्दी पखवाड़ा' के दौरान हिन्दी को बढ़ावा देने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। इसके तहत प्रश्न मंच, हिन्दी निबंध, हिन्दी टिप्पण, काव्य पाठ, आशुभाषण, वाद–विवाद, हिन्दी टंकण, शब्द परिचय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। शब्द परिचय प्रतियोगिता के तहत विजेताओं को उसी समय पुरस्कृत किया गया।

वार्षिक हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर दीप प्रज्जवलित करते हुए मुख्य अतिथि माननीय सांसद (लोक सभा) व संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के माननीय सदस्य श्री लक्ष्मी नारायण यादव, महानिदेशक महोदय, सचिव महोदय एवं वित्तीय सलाहकार महोदय

पुरस्कार वितरण समारोह

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का वार्षिक राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 02.11.2017 को एनएएससी परिसर के ए.पी.जे. शिंदे सिम्पोजियम हॉल में प्रातः 10:00 बजे से आयोजित किया गया। माननीय सांसद (लोक सभा) व संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के माननीय सदस्य श्री लक्ष्मी नारायण यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सचिव (डेयर) व महानिदेशक भाकृअनुप डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने समारोह की अध्यक्षता की। अपर सचिव (डेयर) एवं सचिव, भाकृअनुप तथा अपर सचिव (डेयर) तथा वित्तीय सलाहकार, भाकृअनुप ने भी इस अवसर की शोभा बढ़ाई।

परिषद मुख्यालय में दिनांक 14 सितम्बर, 2017 से 29 सितम्बर, 2017 तक मनाए गए हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई कुल 8 प्रतियोगिताओं के 81 विजेता प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि तथा अध्यक्ष महोदय की ओर से पुरस्कार प्रदान किए गए। इसी दौरान वर्ष भर अपना सरकारी काम–काज मूल रूप से हिन्दी में करने वाले 10 कर्मचारियों को भी नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस अवसर पर समारोह में उपस्थित अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री लक्ष्मीनारायण यादव जी

माननीय मुख्य अतिथि पुरस्कार वितरित करते हुए

ने कहा कि यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि परिषद द्वारा तैयार की जा रही विभिन्न तकनीकों के कारण देश में कृषि के क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं उन्होंने यह भी कहा कि इन तकनीकों को सहज सरल हिन्दी भाषा में किसानों तक पहुंचाने के लिए परिषद में उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि कार्यालयों में हिन्दी कार्य को सुनिश्चित करने के लिए सर्वप्रथम कर्मचारियों को प्रेरित करना चाहिए जिससे वे अपनी रूचि से राजभाषा में कार्य कर सकें। इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता कर रहे सचिव (डेयर) व महानिदेशक भाकृअप डॉ. त्रिलोचन महापात्र जी ने भी बताया कि परिषद और इसके विभिन्न संस्थानों में कार्यरत वैज्ञानिक न केवल सरल हिन्दी में बल्कि क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से अनेक प्रकाशनों तथा प्रसार साहित्य के द्वारा किसानों तक अपनी तकनीक पहुंचा रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि इसी वर्ष 14 सितम्बर, 2017 को हिन्दी् दिवस के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति द्वारा हिन्दी सीखने के लिए लांच किए गए निःशुल्क मोबाइल एप का सभी अधिकारियों को इस्तेमाल करना चाहिए। उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित सभी से अपील की कि यह आवश्यक है कि सभी अधिकारी/कर्मचारी मूल रूप से हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाएं, फाइलों पर अधिक संख्या में टिप्पणियां लिखें जिससे कि हम राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा कर सकें।

समापन समारोह के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में नट सम्राट थिएटर ग्रुप द्वारा एक हास्य नाटक "जिंदगी अनलिमिटेड' का मंचन भी किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान चार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें पहली कार्यशाला 2 जून, 2017 को उच्च श्रेणी लिपिकों के लिए "प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का सरल उपयोग" विषय पर की गई। दूसरी कार्यशाला 01 सितम्बर, 2017 को उप–सचिव एवं अवर सचिव स्तर के अधिकारियों के लिए 'राजभाषा कार्यान्वयन का व्यावहारिक पहलू' विषय पर की गई। तीसरी कार्यशाला 08 दिसम्बर, 2017 को सहायक स्तर के कर्मचारियों के लिए 'हिन्दी में व्यावहारिक टिप्पण एवं प्रारूप लेखन' विषय पर की गई तथा चौथी कार्यशाला 27 फरवरी, 2018 को तकनीकी अधिकारियों के लिए 'वैज्ञानिक लेखन में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका' विषय पर की गई थी। इन सभी कार्यशालाओं में संबंधित वर्ग के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया था। सभी प्रतिभागियों ने इन कार्यशालाओं को काफी उपयोगी बताया तथा सुझाव दिया था कि इस तरह की कार्यशालाओं का आयोजन नियमित अंतराल पर किया जाना चाहिए।

परिषद में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

प्रमुख उपलब्धियां

- परिषद में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना अधिकतम कार्य हिन्दी में करने के लिए सचिव महोदय की ओर से प्रोत्साहित किया जाता है और उन्हें अपना सारा प्रशासनिक काम काज हिन्दी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान राजभाषा नियामावली, 1976 ने नियम 10 (4) के अंतर्गत परिषद के संस्थानों केन्द्रों को भारत सरकार के राजपत्र में अधिसूचित किया गया है जिसे मिलाकर अधिसूचित कार्यालयों की संख्या अब 132 हो चुकी है। इसके अलावा 16 अनुभागों को भी नियम 8 (4) के अंतर्गत शतप्रतिशत कार्य हिन्दी में करने के लिए विनिर्दिष्ट किया गया है।
- अपर सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा सचिव, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में गठित 'डेयर' तथा परिषद की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चार तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया।
- परिषद के अधिकांश संस्थानों/केन्द्रों आदि में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन हो गया है तथा उनकी बैठकें आयोजित की जा रही हैं। परिषद मुख्यालय में सभी संस्थांनों से प्राप्त होने वाली राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की नियमित समीक्षा की गई और पाई गई कमियों को सुधारने के उपाए सुझाए गए।
- तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय को भेजी जाती है। विभिन्न संस्थानों से प्राप्त तिमाही रिपोर्टों की समीक्षा की जाती है और कारगर अमल के लिए सुझाव दिए जाते हैं। भाकृअप की ओर से नियमित रूप से नराकास की बैठकों में प्रतिभागिता की जाती है।
- हिन्दी भाषा, हिन्दी टाइपिंग और हिन्दी आशुलिपि में प्रशिक्षण दिलाने के लिए कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए नियमित रूप से नामित किया जा रहा है। हिन्दी

अनुभाग द्वारा मुख्यालय में हिन्दी टाइपिंग के लिए यूनिकोड पर प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

- हिन्दी में अधिकाधिक काम करने के लिए परिषद में चल रही राजभाषा की नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत मुख्यालय में वर्ष 2016–2017 के दौरान अपना अधिकतम कार्य हिन्दी में करने के लिए 10 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया।
- राजभाषा विभाग के आदेश अनुसार परिषद के संस्थानों आदि में हिन्दी की प्रगति का जायजा लेने के लिए वर्ष 2017 के दौरान 29 कार्यालयों का निरीक्षण किया गया और पाई गई कमियों को दूर करने हेतु सुझाव दिए गए। जिनमें संसदीय, राजभाषा समिति द्वारा किए गए निरीक्षण भी शामिल हैं।
- राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार योजना के अंतर्गत वर्ष 2015–16 के दौरान संस्थानों को दिए गए पुरस्कार निम्नलिखित हैं:–

	बड़े संस्थानों का पुरस्कार	**पुरस्कार**
I.	भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली	प्रथम
	केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर	द्वितीय
	''क'' और ''ख'' क्षेत्र के संस्थानों/केन्द्रों का पुरस्कार	
II.	राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो (एनबीपीजीआर), नई दिल्ली	प्रथम
	राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर	द्वितीय
	''ग'' क्षेत्र में स्थित अन्य संस्थानों/केन्द्रों का पुरस्कार	
III.	राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी (नार्म) हैदराबाद	प्रथम
	भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	द्वितीय

माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री एवं कृषि राज्य मंत्री से राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (एनबीपीजीआर), नई दिल्ली के निदेशक राजर्षि टंडन पुरस्कार प्राप्त करते हुए

माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री एवं कृषि राज्य मंत्री से राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (एनबीपीजीआर), नई दिल्ली के निदेशक राजर्षि टंडन पुरस्कार प्राप्त करते हुए

- गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पुरस्कार योजना के तहत वर्ष 2015–16 के दौरान संस्थानों द्वारा प्रकाशित हिन्दी की निम्नलिखित गृह पत्रिकाओं को पुरस्कृत किया गया। जिसका विवरण इस प्रकार है:–

क्र.सं.	चयनित पत्रिका का नाम	संस्थान का नाम	पुरस्कार
	(क एवं ख क्षेत्र के संस्थानों के लिए)		
1.	इक्षु	भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ	प्रथम
2.	हिमज्योति	शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय, भीमताल	द्वितीय
3.	मरूकृषि चयनिका एवं अंबर	केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर एवं केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मुम्बंई (संयुक्त पुरस्कार)	तृतीय
	('ग' क्षेत्र के संस्थानों के लिए)		
1.	कदन्न सौरभ	भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	प्रथम
2.	धान	राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक	द्वितीय
3.	जल तरंग	केन्द्रीय खारा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान, चेन्नई	तृतीय

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राजभाषा आलोक 2016 का विमोचन करते हुए

- परिषद मुख्यालय द्वारा राजभाषा आलोक 2016 का प्रकाशन किया गया जिसका विमोचन माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री द्वारा परिषद के स्थापना दिवस के अवसर पर 16 जुलाई, 2017 को किया गया।

परिषद के विभिन्न संस्थानों द्वारा जनोपयोगी व किसानों के लिए आयोजित अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम हिन्दीं व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में चलाए जा रहे हैं। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा परिषद के कृषि विस्तार संबंधी सभी क्रियाकलापों में हिन्दी व स्थानीय भाषाओं के प्रयोग में अच्छी प्रगति हुई है।

संसद में प्रस्तुत की जाने वाली समस्त सामग्री के अतिरिक्त वार्षिक योजना रिपोर्ट, अनुदान मांगों की संवीक्षा, शासी निकाय, स्थायी वित्त समिति, कृषि मंत्रालय की संसदीय समिति, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद सोसायटी की वार्षिक आम सभा सहित अनेक बैठकों की समस्त सामग्री हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार की गई। माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री व परिषद के अन्य उच्च अधिकारियों ने अपने अनेक व्याख्यान हिन्दी में दिए। परिषद में उनके भाषणों का मसौदा मूल रूप से हिन्दी में तैयार किया गया है।

भा.कृ.अ.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

हिंदी चेतना मास

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति नवीन चेतना और जागृति उत्पन्न करने तथा अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संस्थान मुख्यालय में प्रतिवर्ष की भांति रिपोर्टाधीन वर्ष में सितम्बर मास को हिंदी चेतना मास के रूप में मनाया गया। हिंदी चेतना मास के दौरान अनेक विविधरंगी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जैसे काव्य–पाठ, श्रुतलेख, वाद–विवाद, टिप्पण व मसौदा लेखन, निबंध लेखन, आशु भाषण, कम्प्यूटर पर शब्द प्रसंस्करण, प्रश्न–मंच एवं कुशल सहायी वर्ग के लिए सामान्य–ज्ञान। श्रुतलेख प्रतियोगिता के अन्तर्गत प्रतियोगियों की शुद्व एवं मानक वर्तनी की परीक्षा ली गई वहीं एक अन्य लोकप्रिय प्रतियोगिता प्रश्न–मंच में विविधरंगी प्रश्न पूछे गए जिनमें भारतीय संस्कृति, सामान्य ज्ञान, अद्यतन संचेतना, खेलकूद, विज्ञापन एवं मनोरंजन से संबंधित प्रश्न शामिल थे। कुशल सहायी कर्मचारियों के लिए विशेष रूप से एक सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विविधरंगी बहु–विकल्पी प्रश्न पूछे गए। उक्त सभी प्रतियोगिताओं में संस्थान मुख्यालय स्थित निदेशक कार्यालय एवं विभिन्न संभागों/इकाईयों के सभी वर्गों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

हिंदी वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 21 जनवरी 2018 को आयोजित हिंदी वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं और वर्षभर चलने वाली विभिन्न पुरस्कार योजनाओं के कुल 82 विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस वर्ष पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्रीहरि बाबू श्रीवास्तव, निदेशक लेसटेक डी.आर.डी.ओ. रक्षा मंत्रालय थे। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के कार्यकारी निदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने की तथा संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) डॉ. के.वि. प्रभु ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संस्थान के उपनिदेशक (राजभाषा) श्री केशव देव ने वर्ष 2016–17 की संस्थान की राजभाषा प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की जबकि संस्थान की सहायक निदेशक (राजभाषा) सुश्री सुनीता ने सफलतापूर्वक मंच–संचालन किया। समारोह के मुख्य अतिथि ने संस्थान द्वारा राजभाषा के संदर्भ में की जा रही प्रगति की सराहना की। समारोह का समापन इस संकल्प के साथ किया गया कि संस्थान के दैनिक सरकारी कार्य में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग बढ़ाए जाने के सार्थक प्रयास किए जाएंगे।

हिंदी कार्यशाला

संस्थान के विभिन्न वर्गों के अधिकारियों व कर्मचारियों को अपने कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के प्रति प्रेरित करने के लिए वर्ष 2016–17 के दौरान संस्थान मुख्यालय में कुल चार कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

- संस्थान के प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए दिनांक 14 तथा 15 फरवरी 2017 को संस्थान के सेस्करा सभा भवन में ''राजभाषा नीति तथा सरकारी कामकाज में हिंदी का व्यावहारिक प्रयोगः कठिनाइयां एवं समाधान'' और ''स्वतंत्र भारत में हिन्दी में कामकाज की अनिवार्यता'' विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के 46 वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

- संस्थान में नराकास, उत्तरी दिल्ली के सहयोग से दिनांक 12 अप्रैल, 2017 को सरकारी कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रभावी प्रयोग विषय पर एक पूर्ण कार्य दिवसीय राजभाषा सम्मेलन सह कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें नराकास, उत्तरी दिल्ली के विभिन्न कार्यालयों के 225 प्रतिभागी शामिल हुए।
- दिनांक 31 जुलाई से 04 अगस्त 2017 तक 05 पूर्ण कार्य दिवसीय टंकण प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 12 कार्मिकों को मंगल फॉण्ट में हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण दिया गया।
- दिनांक 28 दिसंबर 2017 को संस्थान के नवनियुक्त सहायकों के लिए "राजभाषा के नीति नियमों की जानकारी" विषय पर कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें संस्थान के 17 नवनियुक्त सहायकों ने भाग लिया।

पुरस्कार व सम्मान

वर्ष 2016–17 में कर्मचारियों को हिंदी में अपना अधिकाधिक सरकारी कामकाज करने के लिए प्रेरित करने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं/प्रोत्साहन योजनाएं चलाईं गईं। रिपोर्टाधीन अवधि में निम्न प्रतियोगिताओं/पुरस्कार योजनाओं का आयोजन किया गया :

हिंदी में सर्वाधिक सरकारी कामकाज के लिए नकद पुरस्कार योजना (2016–17)

यह पुरस्कार योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार चलाई गई जिसमें वर्षभर हिंदी में सर्वाधिक सरकारी कामकाज करने वाले संस्थान के 04 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

अधिकारियों द्वारा हिंदी में डिक्टेशन देने के लिए पुरस्कार प्रोत्साहन योजना (2016–17)

यह पुरस्कार योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार चलाई गई जिसमें अधिकारियों द्वारा अधिक से अधिक हिंदी में डिक्टेशन देने हेतु अधिकारी द्वारा किए गए कुल कार्य की मात्रा एवं गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए यह पुरस्कार दिया जाता है। रिपोर्टाधीन अवधि में डॉ. राजकुमार, अध्यक्ष, क्षेत्रीय केन्द्र, कटराईं को यह पुरस्कार दिया गया।

हिंदी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्मिकों के लिए आयोजित की गई जिसका विषय नीति परक कृषि अनुसंधान रखा गया। जिसमें प्रत्येक प्रतियोगी को दस मिनट का समय दिया गया। इस प्रतियोगिता में वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्मिकों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिता में विजयी प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम क्रमशः रु. 10,000, रु. 7000, रु. 5,000 एवं रु. 3,000 के दो कुल पांच पुरस्कार प्रदान किये गए।

राजभाषा पत्र व्यवहार प्रतियोगिता (2016–17)

यह प्रतियोगिता संभाग व अनुभाग स्तर पर आयोजित की गई जिसमें वर्षभर हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले एक संभाग/क्षेत्रीय केन्द्र को तथा एक अनुभाग को चल–शील्ड से सम्मानित किया गया। रिपोर्टाधीन अवधि में वर्षभर हिंदी में सर्वाधिक कार्य के लिए इकाई/अनुभाग स्तर पर कैटेट इकाई को तथा संभाग स्तर पर जैव रसायन विज्ञान संभाग तथा भा.कृ.अ.सं. क्षेत्रीय केन्द्र इंदौर को चल–शील्ड देकर सम्मानित किया गया।

विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में हिंदी में कृषि विज्ञान लेखन के लिए पुरस्कार

इस पुरस्कार योजना के तहत कैलेन्डर वर्ष 2016–17 में प्रकाशित विभिन्न वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों के लेखों के लिए प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमशः 7,000/–रु. 5,000/–रु. एवं 3,000/–रु. प्रदान किए गए।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संस्थान में राजभाषा अधिनियम 1963 एवं 1976 के अनुसार राजभाषा नीति व नियमों का अनुपालन एवं कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित है। जिसमें संस्थान के सभी संयुक्त निदेशक, संभागाध्यक्ष, लेखा नियंत्रक इसके पदेन सदस्य हैं जबकि उपनिदेशक (राजभाषा) सदस्य–सचिव हैं। रिपोर्टाधीन अवधि में इस समिति की बैठक नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में आयोजित की गई और संस्थान में राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए आवश्यक सुझाव व निर्देश दिए गए। प्रशासन में राजभाषा कार्यान्वयन का प्रभावी अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए इसी प्रकार संयुक्त निदेशक (प्रशासन) की अध्यक्षता में तथा सभी संभागों व केन्द्रों में उनके अध्यक्ष की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन उप–समितियां गठित हैं जिनकी बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गईं।

राजभाषा नोडल अधिकारी

प्रत्येक संभाग/केन्द्र/इकाई एवं हिंदी अनुभाग के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से संपर्क सूत्र के रूप में राजभाषा नोडल अधिकारी नामित किए गए हैं

जिससे संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के कार्य में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। राजभाषा नोडल अधिकारियों की भूमिका को महत्व प्रदान करने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उत्कृष्ट राजभाषा नोडल अधिकारी पुरस्कार योजना प्रारंभ की गई है। इसी क्रम में वर्ष 2016–17 का राजभाषा नोडल अधिकारी का पुरस्कार श्री किशन सिंह, मु.त.अ. एवं राजभाषा नोडल अधिकारी कृषि आकलन व प्रौद्योगिकी स्थानांतरण केन्द्र (कैटेट) तथा श्रीमती शशिबाला, प्रधान वैज्ञानिक एवं राजभाषा नोडल अधिकारी कृषि रसायन संभाग को संयुक्त रूप से दिया गया।

राजभाषा के प्रगामी प्रयोग का निरीक्षण

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सिफारिश एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए डॉ. इन्द्रमणि मिश्र, अध्यक्ष, कृषि अभियांत्रिकी संभाग की अध्यक्षता में गठित संस्थान राजभाषा निरीक्षण समिति द्वारा नई दिल्ली स्थित सभी संभागों एवं इकाइयों में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग का निरीक्षण किया गया। इसके अलावा समिति द्वारा संस्थान के विभिन्न संभागों में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग का औचक निरीक्षण भी किया गया तथा संबंधित संभागों/अनुभागों/केन्द्रों में राजभाषा कार्यान्वयन में वांछित प्रगति के लिए आवश्यक सुझाव देते हुए अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति व संबंधित संभागों/केन्द्रों को निरीक्षण रिपोर्टें भेजी गईं।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर

हिन्दी पखवाडा

विगत वर्षों की भाँति हिन्दी दिवस 14 सितम्बर के उपलक्ष्य में संस्थान में दिनांक 14 सितम्बर से 28 सितम्बर 2017 की अवधि में हिन्दी पखवाडा–2017 का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाडा के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं जैसे– वाद–विवाद, निबन्ध, टिप्पण आलेखन, हिन्दी सुलेख, शुद्ध हिन्दी भाषा, हिन्दी टंकण, महिला निबन्ध, प्रश्नमंच एवं शब्दावली परिचय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें काफी संख्या में कर्मचारियों एवं संस्थान में अध्ययनरत छात्रों ने सहभागिता की। दिनांक 27.09.17 को कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। 28.09.17 को हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कर्मचारियों एवं छात्रों को निदेशक द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया।

हिन्दी कार्यशाला

संस्थान के वैज्ञानिक, अधिकारी तथा कर्मचारी अपना दैनिक सरकारी कामकाज बिना किसी झिझक के अधिक से अधिक हिन्दी में संपादित कर सकें इसके लिए राजभााषा विभाग के निर्देशों के अनुसार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इस अवधि में आयोजित कार्यशालाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है :–

क्र.स.	कार्यशालाओं के आयोजन की तिथि	प्रतिभागियों की संख्या
1.	11.04.2017	115
2.	11.08.2017	27
3.	अहिन्दी भाषी छात्रों के लिए तीन दिवसीय हिन्दी कार्यशाला 28–30.08.17	65
4.	15.12.2017	67

प्रमुख उपलब्धियां

- समय–समय पर जारी प्रेस विज्ञप्तियों एवं विज्ञापनों का अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद किया गया। विभिन्न प्रकार के गोपनीय कागजातों का भी प्राथमिकता के आधार पर अनुवाद कर संबंधित अनुभागों को उपलब्ध करवाया गया। संस्थान के वर्ष 2016–17 के वार्षिक प्रतिवेदन को द्विभाषी रूप में तैयार कराने में राजभाषा अनुभाग ने अनुवाद एवं हिन्दी टंकण के कार्य सम्पादन में सहयोग दिया।
- अनुभाग द्वारा भारत सरकार तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से समय–समय पर प्राप्त निर्देशों के अनुसार प्रत्येक तिमाही की समाप्ति पर राजभाषा सम्बन्धी त्रैमासिक बैठकों का आयोजन किया गया। इन सभी बैठकों की अध्यक्षता निदेशक एवं अध्यक्ष, संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा की गई तथा संस्थान के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने समिति के

सदस्य के रुप में सहभागिता की। इन बैठकों में संस्थान के कामकाज में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु विभिन्न मदों पर चर्चा की गई तथा लिए गये निर्णयों का अनुपालन सुनिश्चित किया गया ।

- संस्थान के विभिन्न विभागों/अनुभागों द्वारा हिन्दी में किये जा रहे कार्यों की प्रगति रिपोर्ट निर्धारित प्रोफार्मा में हर त्रैमास पर माँगी गई। सभी विभागों/अनुभागों से प्राप्त रिपोर्ट को संकलित कर समेकित रिपोर्ट तैयार की गई तत्पश्चात समेकित रिपोर्ट को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं भारत सरकार के राजभाषा विभाग को आनॅलाइन प्रेषित किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को भी रिपोर्ट की प्रति अग्रिम कार्रवाई हेतु प्रेषित की गई।
- राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय से प्राप्त वार्षिक कार्यक्रम द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए निर्देशों के अनुसार कार्रवाई की गई तथा सभी विभागों/अनुभागों को इन निर्देशों से अवगत कराया गया और सं.रा.भा.का.स. की बैठक में भी वर्ष 2017–18 के वार्षिक कार्यक्रम पर विचार–विमर्श किया गया।
- राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए निर्देशों के अनुसार संस्थान के वैज्ञानिक विभागों, प्रशासनिक एवं वित्त अनुभागों का राजभाषा विषयक निरीक्षण कर रिपोर्ट तैयार की गई और निरीक्षण रिपोर्ट संबंधित विभागों/अनुभागों को अनुपालनार्थ प्रेषित की गई।
- राजभाषा विभाग द्वारा जारी निर्देशों एवं राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप विभिन्न हिन्दी प्रोत्साहन योजनाएं जैसे सरकारी कामकाज मूलरूप से हिन्दी में करने की योजना, वैज्ञानिकों/अधिकारियों के लिए हिन्दी डिक्टेशन योजना, अंग्रेजी टाइपिस्टों के लिए हिन्दी में टाइपिंग का प्रोत्साहन भत्ता देने की योजना चलाई गई। इन सभी योजनाओं में सहभागिता करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्धारित पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। इसी के साथ विभागों/अनुभागों के लिए अधिकाधिक हिन्दी में कार्य करने के लिए विभागों/अनुभागों को चार हिन्दी शील्ड/वैजयन्ती प्रदान की गई।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई

हिन्दी पखवाड़ा

- प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 14 से 28 सितम्बर 2017 तक संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा – 2017 मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं के साथ ही संस्थान परिवार के बच्चों हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे निबंध लेखन/भाषण/गीत – काव्य/चित्रकला आयोजित की गई ।
- दिनांक 6 अक्टूबर 2017 को संस्थान के निदेशक/कुलपति डा. गोपाल कृष्णा की अध्यक्षता में हिन्दी पखवाड़ा – 2017 का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार व लेखक, श्री विश्वनाथ सचदेव, संपादक नवनीत एवं अतिथि विशेष के रुप में श्री कलीम उल्लाह खान उपस्थित थे। इस अवसर पर संस्थान के हिन्दी पखवाड़ा – 2017 में संपन्न विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को एवं वर्ष 2016–17 में हिन्दी में सर्वाधिक काम करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया ।

नराकास कार्यशाला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई (कार्यालय) के सदस्य कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई में दिनांक 27 जनवरी 2017 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 25 कार्यालयों के कुल 44 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का आयोजन उद्घाटन सत्र के साथ ही चार तकनीकी सत्र भी आयोजित किए गए।

उद्घाटन सत्र में सर्वप्रथम मुख्य अतिथि डा. एस. डी. त्रिपाठी, भूतपूर्व निदेशक, के.मा.शि.सं. व संस्थान के निदेशक एवं नराकास के अध्यक्ष महोदय डा. गोपाल कृष्णा का पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत किया गया। इसके पश्चात डा. राजेश्वर उनियाल, उप निदेशक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव ने कार्यशाला की विस्तृत रूप से जानकारी दी। मुख्य अतिथि डा. एस. डी. त्रिपाठी ने अपने आशीर्वचन में इस संस्थान में हिन्दी में किए जा रहे कार्यों की सराहना की और समस्त सदस्य कार्यालयों को भी इसी प्रकार हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया। संस्थान के निदेशक एवं नराकास के अध्यक्ष डा. गोपाल कृष्णा ने हिन्दी के महत्व को दर्शाते हुए इसे और आगे बढ़ाने हेतु प्रयास करने के संबंध में मार्गदर्शन दिया ।

इसके पश्चात कार्यक्रमानुसार कार्यशाला के तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। पहले सत्र में श्री राजेन्द्र रावत, मीडिया विशेषज्ञ ने संघ की राजभाषा नीति, नियम व अधिनियम विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में श्रीमती सविता राव, प्रभारी राजभाषा अधिकारी, सी डैक ने हिन्दी में सूचना प्रौद्योगिकी पर एक व्याख्यान दिया। तीसरे सत्र में राजभाषा कार्यान्वयन एवं संसदीय प्रश्नावली पर श्री धीरेन्द्र कुमार झा, परामर्शदाता, विकास आयुक्त का कार्यालय ने व्याख्यान दिया । चौथे सत्र में सभी प्रतिभागियों से सामूहिक चर्चा की गई तथा प्रतिभागियों की शंकाओं पर चर्चा कर समाधान किया गया ।

अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए व धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यशाला का समापन कर दिया गया।

हिन्दी प्रकाशन

- जलचरी 22 अंक
- मांगुर मात्स्यिकी (कैटफिश) वर्तमान स्थिति एवं भावी संकल्पनाएं
- तालाबों में मछली पालन – डा. वी. के. तिवारी
- रंगबिरंगी मछली पालन – डा. पारोमिता बनर्जी सावंत
- अलंकारी मछलियों का रोग निदान तथा स्वास्थ्य प्रबंध – डा. गायत्री त्रिपाठी (हिंदी)
- शोभिवंत माश्यांचे रोग निदान व स्वास्थ्य व्यवस्थापन – डा. गायत्री त्रिपाठी (मराठी)
- वार्षिक प्रतिवेदन (हिन्दी)
- हिन्दी की उपलब्धियां
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई (का.) की उपलब्धियां

प्रमुख उपलब्धियां

- संस्थान के एम. एफ एस. सी. के छात्र–छात्राओं के शोध निबंधों का सारांश हिन्दी में अनुवाद कर प्रस्तुत किया गया।
- संस्थान द्वारा संचालित कौशल विकास प्रशिक्षण कैलेण्डर का हिन्दी अनुवाद कर प्रस्तुत किया गया।
- संस्थान की वेबसाइट का द्विभाषीकरण (हिन्दी – अंग्रेजी) किया गया।
- संस्थान के विस्तार विभाग से प्राप्त निम्नलिखित बुलेटिनों का हिन्दी व मराठी में अनुवाद कर प्रस्तुत किया गया।
- हिन्दी–बायोफ्लैक्स प्रौद्योगिकी/मराठी–बायोफ्लैक्स तंत्र
- हिन्दी–बाम्बे डक/मराठी बोंबील (बाम्बे डक) वरील प्रक्रिया
- हिन्दी – वैन्नमई फार्म आहार मार्गदर्शिका/मराठी – वैन्नमईसाठी फार्म मधील आहार मार्गदर्शन
- हिन्दी – खरीद से पहले आहार सामग्रियों का मूल्यांकन कर लें /मराठी – खरेदी पूर्वी आहार घटक द्रव्यांच्या ठीकाणाचे मूल्यांकन
- हिन्दी – ताजी मछलियों की स्वच्छ देखभाल/मराठी – ताज्या माश्यांना आरोग्यदायक दृष्टिने हाताळणे
- हिन्दी – मछलियों की पहचान हेतु डी.एन. ए. बारकोडिंग
- हिन्दी–वैश्विक एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में अलंकारी मछलियाँ
- हिन्दी–प्लास्टिक मलबा–तटीय और समुद्री पारिस्थितिकी के लिए खतरा
- हिन्दी – श्रिम्प संवर्धन के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले बीजों का चयन
- हिन्दी – मूल्यवर्धित मत्स्य उत्पाद
- हिन्दी – लवणीय जल में ई वैन्नयमई का पालन
- संस्थान के एम.एफएस.सी. सत्र 2016–18 के प्रथम वर्ष के छात्र–छात्राओं हेतु हिन्दी जलवाणी क्रेडिट कोर्स की कक्षाएं पाठ्यक्रमानुसार नियमित रूप से संचालित की गई।
- संस्थान में दीक्षांत समारोह एवं राष्ट्रीय छात्र सम्मेलन दिनांक 3–6 मार्च 2017 के दौरान हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

हिन्दी चेतना मास

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डा. आर.आर.बी. सिंह की अध्यक्षता में संस्थान में दिनांक 16.10.2017 को हिन्दी चेतना मास के राजभाषा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इस समारोह में संस्थान के सभी संवर्गों के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। संस्थान के राजभाषा अधिकारी एवं सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री राकेश कुमार कुशवाहा ने मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का पुष्पगुच्छ से अभिनंदन करके कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। उन्होंने संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से यह अपील की कि सभी अपना–अपना सरकारी कामकाज राजभाषा हिन्दी में निपटा करके अपने संवैधानिक कर्तव्यों का निर्वहन करें। उन्होंने संस्थान में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं प्रचार–प्रसार में सहयोग के लिए संस्थान के सभी पदाधिकारियों, प्रभागाध्यक्षों एवं प्रभारी अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा प्रदान किए जा रहे सहयोग के प्रति

हिन्दी चेतना मास समारोह–2017 की एक झलक

धन्यवाद भी ज्ञापित किया। संयुक्त निदेशक प्रशासन व कुलसचिव श्री सुशांत साहा ने अपने संबोधन में राजभाषा नीति एवं नियमों के प्रावधानों से अवगत कराते हुए सभी को राजभाषा हिन्दी में कार्य करने के लिए अभिप्रेरित किया। संयुक्त निदेशक डा. बिमलेश मान ने संस्थान में राजभाषा के प्रयोग की स्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभी अधिकारियों से इसके उत्तरोत्तर प्रचार–प्रसार की अपेक्षा पर बल दिया। नियंत्रक श्री डी.डी.वर्मा ने अपने संबोधन में राजभाषा की महत्ता बताते हुए यह बल दिया कि राजभाषा हिन्दी के चेतना मास को राजभाषा उत्सव के रूप में मनाया जाना चाहिए। अपने अध्यक्षीय संबोधन में संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डा. आर.आर.बी. सिंह ने संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से राजभाषा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार की दिशा में एवं भारत सरकार, राजभाषा विभाग के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सार्थक प्रयास करने की अपील की। उन्होंने अपने संबोधन में सभी को बताया कि विज्ञान, कृषि विज्ञान, शिक्षण एवं प्रशिक्षण को जन–मानस तक पहुंचाने का साधन राजभाषा हिन्दी ही है। उन्होंने सभी का आह्वान करते हुए कहा कि अन्य कार्यों के अतिरिक्त राजभाषा के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन का दायित्व भी हमें मन से स्वीकार करना चाहिए। उन्होंने राजभाषा चेतना मास एवं पूरे वर्ष के दौरान आयोजित विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं (हिन्दी गीतगायन प्रतियोगिता, हिन्दी निबंध प्रतियोगिता एवं हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता) के 139 विजेताओं को बधाई देते हुए प्रमाण–पत्रों से सम्मानित किया। सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री राकेश कुमार कुशवाहा ने संस्थान में 14 सितम्बर से प्रारंभ हुए हिन्दी चेतना मास की कड़ी में संपन्न हिन्दी शोध–पत्र व पोस्टर प्रदर्शन प्रतियोगिता, हिन्दी कार्यशाला, हिन्दी निबंध प्रतियोगिता एवं आशुभाषण प्रतियोगिता के आयोजन के साथ–साथ संस्थान में राजभाषा के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन के संबंध में लागू योजनाओं एवं किए गए प्रयासों की जानकारी भी दी। समारोह में संस्थान के सभी प्रभागों एवं अनुभागों के अध्यक्षों एवं प्रभारी अधिकारियों ने भी बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

प्रमुख उपलब्धियां

- राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन की दिशा में सराहनीय कार्य करने के लिए करनाल स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों में ''प्रथम पुरस्कार'' के रूप में संस्थान को राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।
- संस्थान ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल के अध्यक्षीय कार्यालय के रूप में करनाल नगर में स्थित 68 केन्द्र सरकार के कार्यालयों को राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन के लिए सहयोग प्रदान किया।
- संस्थान द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल के तत्वावधान में वर्ष 2017 में निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित करके विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कार राशि एवं प्रमाण–पत्रों से सम्मानित किया गया।
- संस्थान के द्वारा हिन्दी कार्यशालाओं का समय पर आयोजन किया जा रहा है। वर्ष 2017 में निम्नलिखित विवरणानुसार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया–

क्र.सं.	आयोजन तिथि	कार्यशाला का विषय	शामिल प्रतियोगी
1.	09.03.2017	नगर स्तरीय संगोष्ठी/कार्यशाला	47
2.	16.5.2017	राजभाषा प्रबंधन	22
3.	22.5.2017	राजभाषा प्रबंधन	27
4.	6.6.2017	कंप्यूटर पर यूनिकोड इंस्टालेशन	25
5.	17.6.2017	तकनीकी टूल्स का प्रयोग	10
6.	22.7.2017	नगर स्तरीय हिन्दी नाट्यलेखन व प्रस्तुतीकरण पर कार्यशाला	150
7.	22.9.2017	राजभाषा प्रबंधन	37
8.	01.12.2017	प्रशासनिक शब्दों का अभ्यास	25

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में राजभाषा हिंदी के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन हेतु संस्थान में वर्ष 1979 में राजभाषा एकक की स्थापना की गई। संस्थान में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन एवं कार्यान्वयन के लिए संस्थान के राजभाषा एकक में वर्ष 1988, 1989 एवं 2011 में क्रमशः हिन्दी अनुवादक, सहायक निदेशक एवं उप निदेशक के पद सृजित किए गए। राजभाषा एकक द्वारा संस्थान के अधिकारियों, वैज्ञानिकों, तकनीकी स्टाफ आदि को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए हर संभव सहयोग भी प्रदान किया जा रहा है। संस्थान के राजभाषा एकक द्वारा निम्नलिखित विवरणानुसार विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया।

- संस्थान में गठित संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष में चार बैठकें प्रत्येक तिमाही में एक आयोजित की गई। इन बैठकों में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में संस्थान की प्रगति का आकलन किया जाता है एवं भावी कार्यक्रमों हेतु कार्य योजना तैयार कर उन्हें कार्यान्वित किया जाता है। रिपोर्टाधीन अवधि में 7.4.2017, 6.6.2017, 8.9.2017, 13.12.2017 एवं 19.3.2018 को तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया।
- राजभाषा नियम 1976 के नियम–11 का अनुपालन करते हुये संस्थान द्वारा सभी प्रकार के मानक फार्मों एवं स्टेशनरी सामान आदि को द्विभाषी रूप में प्रयोग करना सुनिश्चित किया जा रहा है।
- वर्ष 2016–17 की वार्षिक मूल हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता में प्राप्त हुई 11 प्रविष्टियों में से नियमानुसार 10 सुपात्र कर्मचारियों को दिनांक 16.10.2017 को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्रों से पुरस्कृत किया गया।
- वर्ष 2016–17 की ''वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों की मूल हिंदी लेखन प्रतियोगिता'' के अंतर्गत 38 वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों आदि को दिनांक 16.10.2017 को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया गया।
- हर वर्ष की भांति संस्थान की वार्षिक गृह पत्रिका ''दुग्ध गंगा'' एवं तिमाही न्यूज लैटर ''डेरी समाचार'' तथा नराकास करनाल के अध्यक्षीय कार्यालय के रूप में समिति की वार्षिक गृह पत्रिका ''कर्णोदय'' को पूर्णतः हिन्दी में प्रकाशित किया जा रहा है।
- संस्थान के वैज्ञानिकों से प्राप्त वैज्ञानिक एवं लोकप्रिय लेख, छात्रों के शोध सारांश, वार्षिक प्रतिवेदन, प्रशासनिक पत्र, परिपत्र, ज्ञापन, विभिन्न समारोहों की प्रेस विज्ञप्ति, गणमान्य अतिथियों, मंत्रियों आदि के संबोधन, व्याख्यान एवं अन्य सामग्री का अनुवाद कार्य संस्थान के राजभाषा एकक द्वारा किया जा रहा है।
- गैर हिन्दी क्षेत्रों से अध्ययन हेतु आए एम.एससी./एम.टैक./पीएच.डी. के छात्र जिन्हें मैट्रिक स्तर तक हिंदी का ज्ञान नहीं है उन्हें हिंदी शिक्षण का कार्य इस एकक के स्टाफ द्वारा दिया जाता है।
- राजभाषा एकक द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित ''बृहत प्रशासनिक शब्दावली'' की प्रतियाँ संस्थान के कर्मचारियों को उपलब्ध कराई गई हैं। संस्थान में अंग्रेजी टाइपिस्टों/आशुलिपिकों को हिन्दी टाइपिंग सीखने हेतु निरन्तर प्रोत्साहित किया जा रहा है तथा डेस्क प्रशिक्षण के द्वारा कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग सिखाई जा रही है।
- संस्थान के निदेशक, नगर स्तरीय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल के पदेन अध्यक्ष भी हैं। अध्यक्ष नराकास एवं निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल की अध्यक्षता में समिति की दो बैठकें, प्रथम बैठक दिनांक 9.6.2017 को एवं दूसरी बैठक दिनांक 9.11.2017 को संपन्न हुई हैं। नराकास की छमाही बैठकों में करनाल में स्थित 68 केन्द्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, निगमों, अनुसंधान संस्थानों,

विश्वविद्यालयों, लिमिटेडों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के प्रशासनिक अध्यक्षों, वरिष्ठ अधिकारियों, राजभाषा अधिकारियों एवं प्रतिनिधि अधिकारियों द्वारा प्रतिभागिता की जाती है। इन बैठकों में भारत सरकार, राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि अधिकारी भी शामिल होते हैं। समिति द्वारा छमाही बैठकों में सदस्य कार्यालयों के प्रधानों एवं प्रतिनिधियों की सहमति से कुल 7 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के 46 विजेताओं को समिति की आगामी छमाही बैठक में नकद पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्रों से सम्मानित किया जाएगा।

हिन्दी प्रकाशन

- संस्थान की वर्ष 2016–17 की वार्षिक गृह पत्रिका ''दुग्ध –गंगा'' पूर्णतः हिन्दी में प्रकाशित की गई है।
- तिमाही न्यूज लैटर ''डेरी समाचार'' पूर्णतः हिन्दी में प्रकाशित किया जा रहा है।
- संस्थान द्वारा अध्यक्षीय कार्यालय के रूप में ''कर्णोदय'' पत्रिका वर्ष 2016–17 प्रकाशित की गई है।

भा.कृ.अनु.प.– भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली

हिन्दी पखवाड़ा

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में 01 से 14 सितम्बर 2017 के दौरान हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया । दिनांक 01 सितम्बर, 2017 को हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन संस्थान के निदेशक, डॉ. अंजनी कुमार चौबे द्वारा किया गया। उद्घाटन के तत्पश्चात काव्य–पाठ का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान 'डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यान' के साथ–साथ वैज्ञानिक प्रभागों में हिन्दी में सर्वाधिक वैज्ञानिक कार्य करने के लिए प्रभागीय चल–शील्ड तथा काव्य–पाठ, वाद–विवाद, प्रश्न–मंच, अन्ताक्षरी, काव्य–गोष्ठी, डिजिटल हिन्दी शोध–पत्र प्रस्तुति, हिन्दीतर कर्मियों के लिए हिन्दी श्रुतलेख एवं शब्दार्थ लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गयी। प्रश्न–मंच एवं अन्ताक्षरी प्रतियोगिता के संचालकों द्वारा इन प्रतियोगिताओं को ऑडियो विजुअल रूप में प्रस्तुत किया गया जिससे ये प्रतियोगिताएँ अत्यन्त ही रोचक रहीं। सभी प्रतियोगिताओं में छात्रों सहित संस्थान के विभिन्न वर्गों के कर्मियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। संस्थान में प्रत्येक वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष इस कड़ी का छब्बीसवाँ व्याख्यान संस्थान के पूर्व प्रोफेसर (कृषि सांख्यिकी), डॉ. रणधीर सिंह द्वारा दिया गया और इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आई.सी.एम.आर. के पूर्व अपर महानिदेशक एवं राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग के सदस्य, डॉ. पदम सिंह द्वारा की गयी । दिनांक 14 सितम्बर, 2017 को हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर इस दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगियों को पुरस्कृत करने के साथ–साथ वर्ष 2016–17 के दौरान ''सरकारी कामकाज मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना'' के अन्तर्गत भी नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त, इस अवसर पर जुलाई 2016 से जून, 2017 तक की अवधि के दौरान संस्थान में आयोजित हिन्दी कार्यशालाओं के वक्ताओं को भी सम्मानित करने के साथ–साथ संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका : सांख्यिकी–विमर्श 2016–17 के सम्पादक मंडल के सदस्यों को भी प्रशस्ति–पत्र प्रदान किए गए।

हिन्दी दिवस के अवसर पर संस्थान में आयोजित डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यान के व्याख्यानदाता का सम्मान करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि

नराकास (उत्तरी दिल्ली) द्वारा आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के प्रथम चरण में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर प्रमाण–पत्र प्राप्त करते हुए निदेशक

हिन्दी कार्यशालाएं

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में वर्ष 2017 के दौरान छः हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। जिनमें से पहली कार्यशाला 09 से 14 फरवरी 2017 के दौरान ''कृषि आँकड़ों की मॉडलिंग एवं पूर्वानुमान के लिए सांख्यिकीय तकनीकें'' विषय पर आयोजित की गयी जिसमें 09 वक्ताओं द्वारा विषय से सम्बन्धित 16 उप–विषयों पर व्याख्यान दिए गए। इस कार्यशला में 10 अधिकारियों ने सहभागिता की। दूसरी कार्यशाला 24 से 26 मई 2017 के दौरान ''जैव–सूचना विज्ञान : एक परिचय'' विषय पर आयोजित की गयी जिसमें 08 वक्ताओं द्वारा 11 उप–विषयों पर व्याख्यान दिए गए। इस कार्यशला में 13 अधिकारियों द्वारा सहभागिता की गयी। तीसरी कार्यशाला 27 से 29 जून, 2017 के दौरान ''कृषि में जैव–सूचना का उपयोग'' विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में 09 वक्ताओं द्वारा विषय से सम्बन्धित 11 उप–विषयों पर व्याख्यान दिये गये तथा इस कार्यशाला में 09 अधिकारियों एवं 01 कर्मचारी ने सहभागिता की। चौथी कार्यशाला 25 से 27 सितम्बर, 2017 के दौरान 'कृषि में प्रतिदर्श सर्वेक्षण तकनीकों का उपयोग' विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में 11 वक्ताओं द्वारा 11 विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिये गये। इस कार्यशाला में 12 अधिकारियों ने सहभागिता की। पाँचवीं कार्यशाला 30 अक्टूबर, 2017 को राजभाषा नियम एवं अनुपालन विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यशला में 08 अधिकारियों एवं 30 कर्मचारियों द्वारा सहभागिता की गयी तथा छठी कार्यशाला 30 नवम्बर से 04 दिसम्बर, 2017 के दौरान ''एस.ए.एस. द्वारा बहुचर सांख्यिकीय विश्लेषण'' विषय पर आयोजित की गयी जिसमें 08 वक्ताओं द्वारा विषय से सम्बन्धित 15 उप–विषयों पर व्याख्यान दिए गए। इस कार्यशाला में 14 अधिकारियों एवं 01 कर्मचारी द्वारा सहभागिता की गयी। प्रतिवेदनाधीन अवधि में संस्थान में वैज्ञानिक विषयों पर आयोजित हिन्दी कार्यशालाओं में अनेक वक्ता हिन्दीत्तर थे जिन्होंने बड़ी निपुणता के साथ हिन्दी में व्याख्यान दिये। कार्यशालाओं के आयोजकों/वक्ताओं द्वारा प्रतिभागियों को व्याख्यानों की सामग्री, मैनुअल के रूप में, हिन्दी भाषा में उपलब्ध करायी गयी।

प्रमुख उपलब्धियाँ

- भारत सरकार, राजभाषा विभाग की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उत्तरी दिल्ली) द्वारा संस्थान में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से सम्बन्धित मार्च 2017 एवं सितम्बर 2017 को समाप्त छमाही रिपोर्टों के आधार पर संस्थान को ''उत्कृष्ट श्रेणी'' में वर्गीकृत किया गया ।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उत्तरी दिल्ली) द्वारा सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के प्रथम चरण में संस्थान के प्रतिभागियों द्वारा दूसरा स्थान प्राप्त किया गया जिसके लिए 30 नवम्बर 2017 को आयोजित नराकास (उ.दि.) की छमाही बैठक में संस्थान के निदेशक को प्रमाण–पत्र दिया गया ।
- संस्थान की वैज्ञानिक, डॉ. अनिंदिता दत्ता को भारतीय कृषि अनुसंधान समिति एवं कृषि अनुसंधान संचार केन्द्र द्वारा उनके शोध–पत्र ''जर्नलाइज्ड रो–कॉलम अभिकल्पनाएँ : एक सिंहावलोकन'' के लिए जून 2017 में ''कृषि विज्ञान गौरव'' सम्मान से पुरस्कृत किया गया।
- संस्थान की वैज्ञानिक, डॉ. अनु शर्मा को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कुरूक्षेत्र में 22 अगस्त 2017 को आयोजित भारतीय भाषाओं में प्रथम विज्ञान संगोष्ठी में उनके द्वारा प्रस्तुत शोध–पत्र ''सिमेंटिक्स और सॉटवेयर एजेंट आधारित बेव पर्सनलाइज्ड सूचना बहाली'' को 'सर्वश्रेष्ठ शोध–पत्र प्रस्तुति' से सम्मानित किया गया ।
- संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा अपनी परियोजना रिपोर्टों के कवर पेज, आमुख, प्राक्कथन एवं सारांश द्विभाषी रूप में प्रस्तुत किए गए तथा कुछ वैज्ञानिकों द्वारा अपनी परियोजना रिपोर्टों में विषय–सूची एवं तालिकाएँ भी द्विभाषी रूप में प्रस्तुत की गयीं । वैज्ञानिक प्रभागों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संदर्भ पुस्तिकाओं में आमुख, प्राक्कथन एवं कवर पेज द्विभाषी रूप सें प्रस्तुत करने के साथ–साथ कुछ हिन्दी के व्याख्यान भी शामिल किये गये । संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा हिन्दी में वैज्ञानिक विषयों पर हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त, संस्थान में एम.एससी. तथा पीएच.डी. के विद्यार्थियों द्वारा अपने शोध–प्रबन्धों में द्विभाषी रूप में सार प्रस्तुत किए गए। वैज्ञानिकों एवं तकनीकी कर्मियों द्वारा शोध–पत्र हिन्दी में प्रकाशित किए गए।
- संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका, 'सांख्यिकी–विमर्श' के बारहवें अंक का प्रकाशन किया गया । इस पत्रिका में संस्थान के कीर्तिस्तम्भ, राजभाषा से सम्बन्धित कार्यों आदि की जानकारी के साथ–साथ कृषि सांख्यिकी, संगणक अनुप्रयोग एवं कृषि जैव–सूचना से सम्बन्धित विभिन्न लेख एवं शोध–पत्र प्रकाशित किए गए हैं। पाठकों के हिन्दी ज्ञानवर्धन के लिए दैनिक स्मरणीय शब्द–शतक हिन्दी व अँग्रेजी में दिया गया है।

हिन्दी प्रकाशन

1. सांख्यिकी–विमर्श: 2016–17 (वार्षिक)
2. वार्षिक रिपोर्ट 2015–16
3. भा.कृ.अनु.प.–भा.कृ.सां.अ.सं. समाचार (त्रैमासिक)

भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि

हिन्दी पखवाड़ा

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने तथा इसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2017 तक हिन्दी पखवाड़ा बड़ी धूमधाम से मनाया गया। लोगों में हिन्दी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाना ही हिन्दी पखवाड़ा समारोह का लक्ष्य है। इस सिलसिले में संस्थान में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन, स्मृति परीक्षा, हिन्दी टंकण, हिन्दी वार्तालाप, हिन्दी भाषण आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

संस्थान के प्लेटिनम जयंती समारोह के संदर्भ में कोच्चि नगर के हायर सेकन्डरी स्कूलों के छात्रों के लिए दिनांक 28.09.2017 को 'समुद्री जैवविविधता–चुनौतियाँ व समाधान' विषय पर हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गयी।

समापन समारोह

प्रभारी निदेशक डॉ. जी. महेश्वरुडु, अध्यक्ष, सी एफ प्रभाग कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। श्री के. के. रामचंद्रन, उप निदेशक (रा.भा.), आयकर विभाग, कोचीन एवं सचिव, नराकास, कोच्चि मुख्य अतिथि रहे। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में सरकारी कामकाज में हिन्दी भाषा के सरलीकृत प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दिया।

इस समारोह में मुख्य अतिथि, प्रभारी निदेशक, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, सहायक निदेशक (रा.भा.) द्वारा हिन्दी पखवाड़ा की प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार दिए। स्कूल के छात्रों के लिए आयोजित हिन्दी निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को भी पुरस्कार प्रदान किए गए। वर्ष 2016–17 के दौरान हिन्दी में मूल काम करने के लिए कर्मचारियों को

मुख्य अतिथि द्वारा सभा का संबोधन

राजभाषा रॉलिंग ट्रॉफी ग्रहण करते हुए

भारत सरकार की योजना के अंतर्गत नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रतियोगिताओं के सभी भागीदारों को सांत्वना पुरस्कार दिए गए।

हिन्दी कार्यशाला

संस्थान के कार्मिकों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने तथा हिन्दी में वार्तालाप करने की झिझक दूर करने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान चार कार्यशालाएं – 08 फरवरी, 2017, 17 जून, 2017, 19 जुलाई, 2017 और 22 दिसंबर 2017 को आयोजित की गयीं।

इसी तरह संस्थान के विभिन्न क्षेत्रीय तथा अनुसंधान केन्द्रों में भी हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गयीं।

प्रमुख उपलब्धियां

- केन्द्र सरकार के कार्यालयों की श्रेणी में भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान केन्द्र, कोच्चि को वर्ष 2016–17 के दौरान राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए राजभाषा रॉलिंग ट्रॉफी (द्वितीय स्थान) प्राप्त हुई।
- सी एम एफ आर आई कारवार अनुसंधान केन्द्र को वर्ष 2016–17 के दौरान राजभाषा हिन्दी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए कारवार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पुरस्कार प्राप्त हुआ।

मुख्यालय में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

- सी एम एफ आर आई मैंगलोर अनुसंधान केन्द्र को वर्ष 2016–17 के दौरान राजभाषा हिन्दी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए कारवार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पुरस्कार प्राप्त हुआ।

प्रकाशन

- कडलमीन – सीएमएफआरआई समाचारः संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों को दर्शाने वाली तिमाही पत्रिका। इसमें हर तिमाही की अनुसंधान प्रगति के साथ–साथ राजभाषा कार्यक्रमों का प्रकाशन किया जाता है।
- सीएमएफआरआई की झलकः केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान मुख्यालय एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों के परिचय संबंधी ब्रोशर।
- करी पत्ते का पालन कैसे करें –सीएमएफआरआई के कृषि विज्ञान केन्द्र में उत्पाादित किए जाने वाले करी पत्ते की पालन रीति पर त्रिभाषा में प्रकाशित ब्रोशर।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

हिन्दी सप्ताह

काजरी में 14–22 सितम्बर, 2017 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। हिन्दी सप्ताह का शुभारंम्भ 14 सितम्बर को हुआ इस अवसर पर मुख्य अतिथि कमला नेहरू महाविद्यालय, जोधपुर की निदेशक डॉ. पूनम बावा ने कहा कि राजभाषा हिन्दी राष्ट्रप्रेम बढ़ाने के साथ पूरे देश को परस्पर जोड़ने वाली भाषा है यह देश की सांस्कृतिक व नैतिक स्तर को ऊँचा उठाती है। डॉ. बावा ने काजरी द्वारा मरू क्षेत्र के विकास के लिए तकनीकों, शोध पुस्तिकाओं के प्रकाशन के लिए सराहना की। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए काजरी निदेशक डॉ. ओ. पी. यादव ने हिन्दी के प्रयोग के प्रति जागरूकता लाने में मीडिया की अहम् भूमिका को बताया। कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि श्री अरविन्द चोटिया, प्रभारी संपादक, दैनिक भास्कर ने हिन्दी को समृद्ध भाषा बताया। कार्यक्रम में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. पद्मजा शर्मा, डॉ. सुषमा चौहान, डॉ. डी. कुमार ने रोचक कविताएँ प्रस्तुत की।

हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों हेतु प्रार्थना पत्र लेखन, राजभाषा संगोष्ठी, सामान्य हिन्दी, वैज्ञानिकों हेतु शोध पत्र प्रदर्शन, हिन्दी टंकण, निबन्ध जिसका विषय था 'स्वच्छ भारत मिशन' तथा समापन के अवसर पर अन्तराक्षरी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई।

सभी विजयी प्रतिभागियों को समापन सहारोह में निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। इस सप्ताह में पिछले वर्ष में हिन्दी में प्रकाशित वैज्ञानिक आलेख में से एक सर्वश्रेष्ठ आलेख का चयन किया गया 'शुष्क क्षेत्रों में चारे हेतु झाड़ियाँ एवं पेड़ लेखक अर्चना वर्मा, राजवंत कौर कालिया को पुरस्कृत किया गया। हिन्दी कार्यो में सर्वाधिक योगदान करने हेतु श्री इन्द्र भूषण प्रशासनिक अधिकारी को सम्मानित किया गया।

समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् मुख्यालय हिन्दी विभाग से पधारे श्री मुरारी लाल गुप्ता, उपनिदेशक (राजभाषा) एवं श्री मनोज कुमार विशिष्ठ अतिथि रहे।

हिन्दी कार्यशाला

शुद्ध हिन्दी लेखन एवं यूनीकोड प्रशिक्षण पर कार्यशाला आयोजितः संस्थान में शुद्ध हिन्दी लेखन एवं यूनिकोड प्रशिक्षण पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 10 अप्रैल, 2017 को किया गया। कार्यशाला में 25 तकनीकी एवं 25 प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि श्री ज्ञानेश उपाध्याय ने सरल हिन्दी भाषा के प्रयोग पर बल दिया।

हिन्दी कार्यशाला द्वितीय

दिनांक 7.10.2017 को प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने की प्रेरणा प्रोत्साहन एवं झिझक दूर करने हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन प्रभारी निदेशक डॉ. प्रवीण कुमार ने किया तथा प्रशासन में अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने का आह्वान किया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् मुख्यालय में उपनिदेशक (राजभाषा) श्री एम. एल. गुप्ता ने हिन्दी की वैज्ञानिकता एवं सरलता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिन्दी एक सरल एवं समृद्ध भाषा है इसमे कार्य करना बहुत ही आसान है। परिषद् से ही आये श्री मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने राजभाषा नियमों एवं अधिनियमों की जानकारी प्रजेन्टेशन

के माध्यम से दी। एन.आई.सी. जोधपुर से आये श्री कृष्णा सिंह ने यूनिकोड से सम्बन्धित जानकारी एवं प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम की आयोजक श्रीमती मधुबाला चारण ने कार्यक्रम का संचालन किया एवं डॉ. आर. के. कौल ने समस्त प्रतिभागियों एवं अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), जोधपुर की दिनांक 29 नवम्बर, 2017 को आयोजित बैठक में काजरी को वर्ष 2016 की राजभाषा प्रगति की उपविजेता शील्ड एवं प्रमाण पत्र दिया गया। नराकास के अध्यक्ष एवं डी.आर.एम. रेलवे श्री गौतम अरोड़ा से यह शील्ड संस्थान की तरफ से डॉ. आर. के. कौल एवं श्रीमती मधुबाला चारण ने प्राप्त की।

राजभाषा प्रगति के लिए काजरी को भा.कृ.अनु.प. का राजर्षि टंडन एवं गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान को राजभाषा हिन्दी में हुई प्रगति के लिए भा.कृ.अनु.प. का राजर्षि टंडन पुरस्कार (द्वितीय) एवं संस्थान द्वारा प्रकाशित की जाने वाली मरू कृषि चयनिका पत्रिका को भा.कृ.अनु.प. का गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार (तृतीय) (2015–16) प्रदान किया गया। ये पुरस्कार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के 89 वें स्थापना दिवस 16 जुलाई, 2017 को आयोजित कार्यक्रम में माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्रीमान् राधामोहन सिंह के कर कमलों द्वारा प्रदान किये गए।

माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह से राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करते हुए काजरी निदेशक डॉ. ओ. पी. यादव

राष्ट्रभाषा स्वतंत्रता सेनानी पुरस्कार

जोधपुर 5 मई, 2017

श्रीमती मधुबाला चारण राष्ट्रभाषा स्वतंत्रता सेनानी पुरस्कार से सम्मानित

भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद्, नवी मुम्बई के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. रामेश्वर दयाल गोयल द्वारा भा.कृ.अनु.प.–काजरी, जोधपुर की सहायक निदेशक (राजभाषा) श्रीमती मधुबाला चारण, को राष्ट्रभाषा स्वतंत्रता सेनानी पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि श्रीमती चारण मानव मूल्यों एवं राष्ट्र सेवा के प्रति समर्पित है। यह सम्मान उन्हें निष्ठापूर्वक राष्ट्रभाषा के प्रचार प्रसार के किए गए प्रयासों के लिए प्रदान किया। यह पुरस्कार अंग्रेजी की गुलामी से देश को मुक्ति दिलाने और भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी के स्थान पर सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठापन करने हेतु दिए गए योगदान के लिए दिया जाता है। श्रीमती चारण परिषद् की संरक्षक सदस्य भी है। काजरी, निदेशक, डा0 ओ.पी. यादव ने कहा कि सभी तक ज्ञान, सूचना पहुंचाने में हिन्दी भाषा ही सर्वश्रेष्ठ एवं सशक्त माध्यम है। राजभाषा प्रकोष्ठ प्रभारी डा0 आर.के. कौल ने बताया कि वे काजरी द्वारा किसानों हेतु प्रकाशित होने वाली मरू कृषि चयनिका का सन् 1997 से संपादन कर रही हैं। पूर्व में भी उन्हें आईसीएआर, नई दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया है। संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उन्हें इस सम्मान के लिए बधाई दी।

भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर

हिंदी पखवाड़ा

भाकृअनुप–केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर में हिंदी पखवाड़ा समारोह 14 –28 सितंबर, 2017 के दौरान आयोजित किया गया। यह समारोह 14 सितंबर, 2017 को डॉ जे.के.सुंदराय, निदेशक (कार्यवाहक) के औपचारिक उद्घाटन के पश्चात प्रारंभ किया गया। 15 दिवसीय समारोह में हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी, राजभाषा कार्यशाला, राजभाषा कार्यान्वयन समीति की बैठक और विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इस अवधि के दौरान संस्थान द्वारा हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों की चार दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी संस्थान के हीरालाल चौधरी पुस्तकालय में 20–23 सितंबर, 2017 के दौरान लगाई गई। तीन दशकों के दौरान संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकें, पुस्तिकाएं, पत्रक, बुलेटिन, प्रशिक्षण पुस्तिकाएं इत्यादि की एक प्रदर्शनी लगाई। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों , विद्वानों, शोधकर्ताओं को राजभाषा एवं इसके महत्व के बारे में जागरुकता पैदा करना था। पखवाड़े के दौरान संस्थान में दैनिक कार्यों में हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए कर्मचारियों में प्रोत्साहन एवं जागरुकता लाने के लिए कई प्रतिस्पर्धी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पखवाड़े के आयोजन के दौरान निंबंध लेखन, वाद – विवाद प्रतियोगिता, श्रुतलेखन, लघु कथाएं और पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक कर्मचारियों एवं शोधकर्ताओं ने भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण समारोह 28 सितंबर, 2017 को आयोजित किया गया। हिंदी प्रभार, डॉ धनंजय कुमार वर्मा ने हिंदी पखवाड़े में किए गए आयोजनों पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस समारोह की अध्यक्षता डॉ पी. दास, प्रधान वैज्ञानिक ने की। उन्होंने कहा कि हिंदी में कुछ आकर्षण है और लोग जितनी अधिक भाषा का इस्तेमाल करते हैं उतनी ज्यादा वे इसके प्रति आकर्षित हो जाते हैं। डॉ डी. के. वर्मा, राजभाषा अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया

हिंदी कार्यशाला

भाकृअनुप– केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर में, "सरकारी कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग में आने वाली कठिनाईयां एवं सामाधान" पर राजभाषा तिमाही कार्यशाला 26 सितंबर, 2017 को आयोजित की गई। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रगतिशील उपयोग को बढ़ावा देना और राजभाषा अधिनियम और नियमों के बारे में जागरुकता पैदा करना था। कार्यशाला का शुभारंभ डॉ डी.के.वर्मा, राजभाषा अधिकारी (प्रभारी), भाकृअनुप–सीफा के स्वागत भाषण के साथ किया गया। उन्होने कहा की राजभाषा में काम करना हर नागरिक का कर्तव्य है। उन्होने आजादी के दौरान हिंदी एक भाषा के रूप में विकसित होने और अब भारत की एक राष्ट्रीय भाषा बनने पर प्रकाश डाला। डॉ आनंद प्रकाश, प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत) एवं निदेशक (कार्यवाहक), पौध संरक्षण, राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने संस्थान की राजभाषा पत्रिका, नीलीतिमा, 2017 का विमोचन किया और अपने भाषण में उन्होंने कार्यालय में हिंदी के इस्तेमाल के संवैधानिक दायित्वों पर बल दिया। उन्होंने हिंदी को राजभाषा के रूप में इस्तेमाल करने के महत्व को भी बताया और कहा कि हिंदी में सरल शब्दों का प्रयोग करने के साथ–साथ आधिकारिक तौर पर भी संचार के दौरान उपयोगी हो सकता है। कार्यशाला में डॉ जे.के. सुंदराय, निदेशक (कार्यवाहक) ने हिंदी के महत्व पर चर्चा की और वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों से हिंदी में अपनी प्रौद्योगिकियों को प्रकाशित करने के लिए आग्रह किया जिससे कि हमारी तकनीकी का लाभ किसानों तक पहुंचाया जा सके। श्री वि. गणेश कुमार, प्रशासनिक अधिकारी ने कार्यशाला के दौरान अपने भाषण में नियम एवं कायदों के साथ राजभाषा अधिनियम एवं संशोधनों के बारे में उल्लेख किया।

हिंदी प्रकाशन

- राजभाषा पत्रिका नीलीतिमा, अंक 2017
- संस्थान का त्रैमासिक सीफा समाचार 2017 (4 अंक) का प्रकाशन
- मीठाजल मछलियों की आम बीमारियां एवं उनका प्रबंधन पर एक पुस्तिका का प्रकाशन
- प्रशिक्षण पुस्तिका "मीठाजल मत्स्य पालन में नए आयाम" का प्रकाशन
- प्रशिक्षण पुस्तिका "मीठाजल जलीय कृषि में उद्यमिता विकास" का प्रकाशन

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मेरठ

हिंदी पखवाड़ा

भाकृअनुप–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देने एवं समस्त कार्यालय कर्मियों में राजभाषा हिंदी के प्रति अभिरूचि पैदा करने के उद्देश्य से 14–28 सितंबर 2017 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं जैसे निबंध लेखन, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, हिंदी सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी, आशुभाषण, श्रुतलेख, शोध पत्र पोस्टर प्रदर्शन एवं स्वरचित काव्य पाठ आदि का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त वर्ष 2016–17 के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य/लेखन करने वाले कर्मियों को भी पुरस्कृत किया गया। उक्त प्रतियोगिताओं में सभी संवर्ग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। इनके अतिरिक्त, इसी दौरान संस्थान में "जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम करने हेतु संरक्षण कृषि" विषय पर आयोजित किए गए 21 दिवसीय ग्रीष्मकालीन स्कूल में देश के नौ विभिन्न राज्यों से आए हुए सभी प्रतिभागियों ने भी निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया। संस्थान के निदेशक डॉ. आजाद सिंह पँवार ने विजयी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए सभी वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों से अपना अधिक से अधिक कार्यालयी कार्यों को हिंदी में करने तथा शोध कार्यों को हिंदी पत्रिकाओं में लोकप्रिय लेखों के माध्यम से किसानों तक पहुँचाकर उनकी समस्याओं का समाधान करने का आग्रह किया।

हिंदी कार्यशालाएं

कार्यक्रम का नाम	दिनांक	प्रतिभागी
हिंदी कार्यशाला	एक दिवसीय 25.03.2017	कार्यालय कर्मी एवं आमंत्रित अथिति
हिंदी कार्यशाला	एक दिवसीय 19.06.2017	कार्यालय कर्मी एवं आमंत्रित अथिति
हिंदी कार्यशाला	एक दिवसीय 27.09.2017	कार्यालय कर्मी एवं आमंत्रित अथिति
हिंदी कार्यशाला	एक दिवसीय 29.12.2017	कार्यालय कर्मी एवं आमंत्रित अथिति

प्रमुख उपलब्धियां

- सरसों प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन: 9 मार्च 2017
- स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन: 16–31 मई 2017 एवं 15 सितम्बर –02 अक्टूबर 2017
- किसान सेवा यात्रा का आयोजन: 29 जून से 7 जुलाई 2017

- बागवानी के समेकित विकास हेतु वैज्ञानिकों, कृषकों एवं अन्य लाभार्थियों की सहभागिता बैठकः 11 जुलाई 2017
- 'कृषि प्रणाली उपागम द्वारा कृषि उद्यमिता का विकास' विषय पर मॉडल प्रशिक्षण कार्यक्रमः 22–29 अगस्त 2017
- "सुरक्षित एवं टिकाऊ खाद्यान्न उत्पादन हेतु जैविक खेती के आधुनिक सिद्धांत व तकनीकी" विषय पर 21 दिवसीय ग्रीष्म कालीन स्कूल (14 जुलाई से 3 अगस्त 2017)
- "जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम करने व अनुकूलन हेतु संरक्षण कृषि के लिए मशीनरी" विषय पर 21 दिवसीय ग्रीष्म कालीन स्कूल (5–25 सितम्बर 2017)
- डा. त्रिलोचन महापात्र, माननीय सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, भारत सरकार एवं महानिदेशक, भाकृअनुप, नई दिल्ली द्वारा संस्थान में बागवानी आधारित कृषि प्रणाली मॉडल तथा नवनिर्मित प्रक्षेत्र कार्यालय का उद्घाटन एवं संस्थान के प्रकाशनों का विमोचन–दिनांक 31 अक्टूबर 2017
- विश्व मृदा दिवस का आयोजन एवं किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण–5 दिसम्बर 2017
- 'जैविक कृषि नेटवर्क परियोजना' के अन्तर्गत वैज्ञानिक समागम का आयोजनः 18–19 दिसम्बर 2017
- राजभाषा हिंदी में लिखा गया "अतिरिक्त आय एवं पोषण सुरक्षा हेतु वर्ष भर मशरूम उत्पादन" विषय पर लेख (संलग्न)।

पुरस्कार/सम्मान

- डा. चन्द्रभानु को पादप रोग विज्ञान में उत्कृष्ट योगदान के लिए गोचर शैक्षिक एवं कल्याण सोसायटी, सहारनपुर द्वारा 'सदाबहार क्रांन्ति के लिए कृषि के पुनर्नवीकरण' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2017' प्रदान किया गया ।
- डा. एन. रविशंकर को जैविक विश्व कांग्रेस–2017 में साइंस ट्रैक पेपर रिव्यू कमेटी का सदस्य बनाया गया।
- डा. अमित नाथ ने न्यूट्रीशन एण्ड फूड टॉक्सिकोलोजी जर्नल (यू.एस.ए.) के सम्पादक पैनल के सदस्य के रूप में कार्य किया।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय पशुपोषण एवं शरीर क्रिया विज्ञान संस्थान, बंगलौर

हिन्दी पखवाड़ा

दिनांक 14 सितंबर 2017 को हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन किया गया तथा "हिन्दी गान प्रतियोगिता" के साथ "हिन्दी पखवाड़े" का शुभारंभ हुआ। इस आयोजन को सफल एवं रोचक बनाने के लिए संस्थान में कुल 10 प्रतियोगिताओं के साथ एक हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 28.09.2017 को सम्पन्न हुए हिन्दी पखवाड़े के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में श्री जसपाल आहूजा, डायरेक्टर, ला विजडम, कोरमंगला, बेंगलूर–560 034 को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। डॉ.के.एस.रॉय, प्रधान वैज्ञानिक ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. आशीष मिश्रा, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने अध्यक्ष तथा मुख्य अतिथि के साथ सभा में उपस्थित सभी का स्वागत किया। डॉ. स्वराज सेनानी, प्रधान वैज्ञानिक तथा प्रभारी, राजभाषा ने प्रतियोगिताओं के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। अध्यक्ष महोदय ने अपने सम्बोधन में हिन्दी भाषा के बारे में तथा हिन्दी कार्यान्वयन के बारे में समझाया तथा हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी अधिकारी/कर्मचारियों को हार्दिक बधाई दी। तदोपरांत मुख्य अतिथि के कर कमलों द्वारा प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। डॉ. पी.के. मालिक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी पखवाड़े का समापन हुआ।

चित्र 1: हिंदी पखवाड़े का उदघाटन

हिन्दी कार्यशाला

- दिनांक 27.03.2017 को हिन्दी कार्यान्वयन में कंप्यूटर एवं इन्टरनेट की भूमिका विषय पर अतिथि वक्ता श्रीमती वी.तिलगम, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु को इस कार्यशाला के संचालन के लिए आमंत्रित किया गया था। इस कार्यशाला में कुल 20 वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिन्दी कार्यशाला

- दिनांक 24.06.2017 को कंप्यूटर में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग कैसे संभव है विषय पर अतिथि वक्ता श्री गोपालकृष्णन जे.आर, सहायक प्रबन्धक (राभा), बीईएमएल, बेंगलूरु को इस कार्यशाला के संचालन के लिए आमंत्रित किया गया था। इस कार्यशाला में कुल 25 वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।
- दिनांक 26.09.2017 को राजभाषा कार्यान्वयन में ई–टूल्स का उपयोग विषय पर श्री श्रीनिवास राव, हिन्दी अधिकारी, बीईएल को इस कार्यशाला के संचालन के लिए आमंत्रित किया गया था। इस कार्यशाला में कुल 27 वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।
- दिनांक 23.12.2017 को राजभाषा कार्यान्वयन के बारे में मौखिक प्रश्नोत्तरी के रूप में एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला का संचालन करने के लिए श्रीमती वीणा.एम., जनगणना कार्य निदेशालय, कोरमंगला, बेंगलूरू को आमंत्रित किया गया था। इस कार्यशाला में कुल 19 वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

प्रमुख उपलब्धियां

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में संयुक्त हिन्दी दिवस के अवसर पर इस संस्थान में दिनांक 16 नवंबर 2017 को 'हिन्दी एकल गीत' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विविध केंद्र सरकार के कुल 16 कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारियों ने भाग लिया। 'हिन्दी एकल गीत' प्रतियोगिता के लिए प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री रोहित भट्ट और आश्रिता बी को निर्णायक के रूप में आमंत्रित किया गया। डॉ. के. एस. रॉय, प्रधान वैज्ञानिक ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. स्वराज सेनानी, प्रधान वैज्ञानिक तथा प्रभारी राजभाषा ने हिन्दी एकल गीत प्रतियोगिता के नियमों के बारे में बताया। संस्थान के निदेशक महोदय ने अपने सम्बोधन में संस्थान में आए प्रतिभागियों और निर्णायकों का स्वागत किया तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के क्रियाकलापों की सराहना की। उन्होंने यह भी बताया कि इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को अधिक से अधिक पुरस्कार प्रदान किए जाएं ताकि प्रतिभागियों को प्रोत्साहन मिले। डॉ. पी.के. मालिक, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में 'हिन्दी एकल गीत' प्रतियोगिता का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र, अजमेर

हिन्दी पखवाड़ा

केन्द्र में राजभाषा हिन्दी पखवाड़े का आयोजन दिनांक 14–30 सितम्बर, 2017 के दौरान किया गया। पखवाड़े का शुभारम्भ 14 सितम्बर 2017 को राजभाषा क्रियान्वयन समिति की बैठक के साथ हुआ जिसमे केन्द्र के निदेशक डा. गोपाल लाल ने अध्यक्षता की। इस राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा में कार्यालय में हिन्दी के और अधिक प्रयोग पर सभी लोगों को ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। राजभाषा हिंदी पखवाड़ा 2017 के उद्घाटन कार्यक्रम में राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र पर राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग हेतु अनेक सुझावों पर चर्चा की गयी। 21 सितम्बर, 2017 को संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिकों, अधिकरियों तथा कर्मचारियों के मध्य अनेक प्रतियोगिताओं का जैसे वाद–विवाद, तत्काल/आशु भाषण एवं टिप्पणी–लेखन का

आयोजन किया गया। दिनांक 23 सितम्बर 2017 को बच्चों की हिन्दी में अभिरुचि हेतु बाल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें हिन्दी काव्य पाठ तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता हुई एवं इसी दिन सफल बाल प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण किया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान दिनांक 23 सितम्बर 2017 को हिंदी ज्ञान प्रश्न मंच तथा काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओ में संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी, एवं अनुसंधान अध्येता वर्ग के लोगों ने अधिक संख्या में हिस्सा लिया। डा. गोपाल लाल, निदेशक रा.बी.म.अनु. केंद्र ने संस्थान के सभी लोगों को हिन्दी में कार्य करने के लिए विशेष तौर पर प्रेरित किया तथा मानक वर्तनी के प्रयोग को वैज्ञानिक लेखों में बढावा देने पर बल दिया। डा. बृजेश कुमार मिश्र, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी राजभाषा अधिकारी ने विभिन्न कार्यक्रमों के सफल आयोजन हेतु केन्द्र के निदेशक डा. गोपाल लाल के मार्गदर्शन को रेखांकित करते हुए निर्णायक मण्डल के सदस्यों डा. युगल किशोर शर्मा, डा. शारदा चौधरी तथा श्री एस. पी. महेरिया का विशेष आभार व्यक्त किया। सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए और समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया गया। दिनांक 3 अक्टूबर 2017 को हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार वितरण डा. गोपाल लाल, निदेशक भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र, अजमेर द्वारा किया गया।

राजभाषा क्रियान्वयन समिति की बैठक: राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर में राजभाषा समिति की तिमाही समीक्षा हेतु बैठकों का आयोजन 1 जून 2017, 26 जुलाई 2017 तथा 15 सितम्बर 2017 को डॉ. गोपाल लाल, निदेशक की अध्यक्षता में किया गया। इन बैठकों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग एवं प्रकाशन पर विशेष बल दिया गया।

हिन्दी प्रकाशन

- भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, तबीजी, अजमेर (राजस्थान) द्वारा अर्ध–वार्षिक राजभाषा पत्रिका–"मसाला सुरभि" का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है। इस पत्रिका के प्रथम अंक का सफल प्रकाशन जुलाई 2017 में किया गया।
- बीजीय मसाला फसलों की वैज्ञानिक खेती–कृषक प्रशिक्षण मैन्युअल –2017/1
- राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र –वार्षिक कैलेन्डर (द्विभाषीय)– 2016
- वार्षिक प्रतिवेदन–2016–17 राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर।

भा.कृ.अनु.प.– राष्ट्रीय अजैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बारामती

हिन्दी पखवाड़ा

भाकृअनुप–राष्ट्रीय अजैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बारामती में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु "हिन्दी पखवाड़ा" (14 से 30 सितम्बर 2017) का आयोजन किया गया। हिन्दी दिवस व हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 14 सितम्बर 2017 को हिन्दी दिवस समारोह कार्यक्रम, डा. एच पी सिंह, संस्थापक एवं अध्यक्ष, भारतीय बागवानी संघ संघटन (कंफेडेरशन ऑफ हॉर्टिकल्चर असोशिएशन ऑफ इंडिया), नई दिल्ली तथा मुख्य अतिथि श्री सुरजीत कुमार साह, मुख्य प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक, बारामती की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। संस्थान के निदेशक एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष, प्रो. नरेंद्र प्रताप सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने सम्बोधन में संस्थान के दैनिक कार्यो में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने का आह्वान किया। इस अवसर पर डा. आर एल चौधरी, वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) एवं प्रभारी हिन्दी अधिकारी ने राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु संस्थान में किए जा रहे प्रयासों व काम–काज का ब्यौरा प्रस्तुत किया।

हिन्दी पखवाड़ा–2017 के दौरान कार्यालय में हिन्दी लेखन, हिन्दी टाइपिंग व हिन्दी में बातचीत को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे–हिन्दी टिप्पण लेखन, हिन्दी निबंध लेखन, अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद, हिन्दी गायन

प्रो. नरेंद्र प्रताप सिंह, (ऊपर) एवं डा. एच पी सिंह (नीचे) द्वारा हिन्दी दिवस समारोह पर सम्बोधन

प्रतियोगिता, कम्प्यूटर पर यूनिकोड में हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, हिन्दी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, हिन्दी कविता पाठ एवं वाद–विवाद इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए 26 सितंबर 2017 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्री संजय भारद्वाज, अध्यक्ष–हिन्दी आंदोलन परिवार, पुणे ने संस्थान के सभी कर्मचारियों को सम्बोधित किया। हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 29 सितम्बर 2017 को मुख्य अतिथि डा. वी. चन्द्रशेखर मुरुमकर, प्राचार्य, टी. सी. कॉलेज, बारामती की उपस्थिति और डा जगदीश राणे, प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय अजैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा प्रभारी निदेशक महोदय ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी कर्मचारियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किए। हिन्दी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत गत वर्ष के दौरान राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान देने वाले कर्मचारियों को भी नकद पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। निदेशक महोदय ने अपने सम्बोधन में संस्थान के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों एवं सभी कर्मचारियों को हिन्दी पखवाड़ा व हिन्दी दिवस के सफल आयोजन एवं उनके सक्रिय भागीदारी के लिए बधाई देते हुए भविष्य में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में और आधिक योगदान देने का आग्रह किया। हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन श्री परितोष कुमार, वैज्ञानिक (पर्यावरण विज्ञान) एवं सदस्य, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्पन्न हुआ।

हिन्दी कार्यशाला

वर्ष 2017 में भाकृअनुप–राष्ट्रीय अजैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बारामती, पुणे द्वारा हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन दिनांक 20 जून, 2017 और 26 सितम्बर, 2017 को किया गया था। पहली कार्यशाला के आयोजन के अवसर पर मुख्य अतिथि व प्रमुख वक्ता के रूप में डा. आर. पी. उनियाल, उप–निदेशक (राजभाषा), केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई उपस्थित थे। उन्होने राजभाषा हिन्दी के उचित कार्यान्वयन की मुख्य बातें, कठिनाइयाँ तथा उनका निवारण और राजभाषा प्रशिक्षण इत्यादि विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर संस्थान के अध्यक्ष एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष प्रो. नरेंद्र प्रताप सिंह, द्वारा "कृषि के विकास में राजभाषा हिन्दी का योगदान एवं महत्व" विषय पर मार्गदर्शन किया। इसके अलावा "कार्यालय के दैनिक काम–काज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग" विषय पर संस्थान के श्री बी के सिन्हा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने सम्बोधन किया। राजभाषा हिन्दी के उचित कार्यान्वयन के लिए वार्षिक कार्यक्रम व लक्ष्य के बारे में डा. डी. पी. पटेल, प्रभारी हिन्दी अधिकारी व सदस्य सचिव, राजभाषा समिति द्वारा महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

वर्ष 2017 की दूसरी कार्यशाला का आयोजन 26 सितम्बर, 2017 किया गया था। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि व प्रमुख वक्ता के रूप में श्री. संजय भारद्वाज, अध्यक्ष, हिन्दी आंदोलन परिवार, पुणे उपस्थित थे। उन्होने "हिन्दीः चिंतन से चेतना तक" और "हिन्दी के प्रसार में कविताओं की भूमिका" इत्यादि विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर संस्थान के अध्यक्ष एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष प्रो. नरेंद्र प्रताप सिंह, द्वारा "हिन्दीः कृषि के विकास की कड़ी" विषय पर मार्गदर्शन किया। हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए वर्ष 2017–18 का वार्षिक कार्यक्रम के बारे में डा. आर. एल. चौधरी, प्रभारी हिन्दी अधिकारी व सदस्य सचिव, राजभाषा समिति द्वारा विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इन कार्यशालाओं

डा. आर. पी. उनियाल द्वारा हिन्दी कार्यशाला समारोह

प्रो. नरेंद्र प्रताप सिंह (ऊपर) एवं श्री. संजय भारद्वाज (नीचे)

में संस्थान के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

हिन्दी प्रकाशन

- संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदनः इस प्रतिवेदन में संस्थान द्वारा वर्ष भर किए गए क्रियाकलापों एवं उपलब्धियों को प्रकाशित किया गया है।
- सोर्फः पेड़ी गन्ने के लिए एक बहुउद्देशीय मशीन (तकनीकी फोल्डर)
- मत्स्य पालन (तकनीकी रिपोर्ट)
- समन्वित मत्स्य पालन (तकनीकी रिपोर्ट)
- नेपियर घासः केन्द्रीय डेक्कन पठार क्षेत्र की कम गहराई वाली पथरीली भूमि के त्वरित विकास के लिए एक आदर्श फसल (तकनीकी फोल्डर)
- ड्रैगन फलः सीमित सिंचाई एवं उथली मृदा क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण फसल (तकनीकी फोल्डर)

भा.कृ.अनु.प.–शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय, भीमताल

हिन्दी सप्ताह

विगत वर्षो की भांति इस वर्ष (2017) भी शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय, भीमताल में हिन्दी सप्ताह समारोह

हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं में भाग लेते अधिकारी एवं कर्मचारीगण

तथा निदेशालय के चम्पावत स्थित मत्स्य प्रक्षेत्र में भी हिन्दी सप्ताह समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस अवधि में दोनों ही स्थानों में हिन्दी से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमों जैसे हिन्दी निबन्ध, हिन्दी नोटिंग–ड्राफ्टिंग, शब्द ज्ञान एवं कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा उक्त प्रतियोगिताओं में सफल हुए प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया। ये प्रतियोगिताएं हिन्दी भाषी एवं गैर हिन्दी भाषी क्षेत्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए अलग–अलग आयोजित की गयीं।

इस वर्ष भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा निदेशालय की वार्षिक पत्रिका 'हिमज्योति' को गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका पुरस्कार योजना के तहत द्वितीय पुरस्कार के लिए चुना गया जो संस्थान की प्रमुख उपलब्धि रही। यह पुरस्कार परिषद के स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री डा. राधा मोहन सिंह जी तथा सचिव; (भा.कृ.अनु.प.) श्री छबलेन्द्र राउल एवं डा. टी. महापात्रा, महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. नई दिल्ली की उपस्थिति में प्रदान किया गया।

हिन्दी कार्यशाला

दिनांक 8 मार्च, 2017 को निदेशालय में अहिन्दी भाषी क्षेत्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की झिझक को दूर करने के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें उनको यूनीकोड में हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण एवं हिन्दी नोटिंग की जानकारी एवं दिन प्रतिदिन के काम में आने वाले शब्दों की जानकारी दी गयी।

दिनांक 20 मार्च, 2017 को वर्धमान विश्वविद्यालय पं बंगाल के भ्रमणकारी छात्र–छात्राओं को संस्थान के वैज्ञानिकों ने हिन्दी में व्याख्यान दिए।

संस्थान में 5 जून, 2017 को निदेशालय में पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक हिन्दी संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के प्रांगण में एक वृक्षारोपण भी किया गया तथा सभी सदस्यों ने निदेशालय परिसर की

यूनिकोड में हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण

वर्धमान विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं को व्याख्यान देते हुए संस्थान के वैज्ञानिक

साफ–सफाई की। इस अवधि में संस्थान के निदेशक द्वारा उपस्थित सभी सदस्यों को स्वच्छता के महत्व पर एक व्याख्यान दिया।

दिनांक 21 जून, 2017 को निदेशालय में अन्तर्राष्ट्रीय योगा दिवस के अवसर पर योगा दिवस का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के सभी कार्मिकों ने भाग लिया। इस अवसर पर सदस्यों को हिन्दी में एक व्याख्यान के द्वारा मानव जीवन में योगा के महत्व को समझाया गया।

दिनांक 5–7 सितम्बर, 2017 को निदेशालय में टी.एस.पी परियोजना के अर्न्तगत जनजातीय मत्स्य पालकों के लिए

योगा के महत्व पर व्याख्यान का आयोजन

योगा करते हुए संस्थान के कार्मिक

एक सजावटी मत्स्य पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को हिन्दी प्रशिक्षण पुस्तिकाएं दी गयी और हिन्दी में व्याख्यान दिए गए।

दिनांक 24 सितम्बर 2017 को निदेशालय में संस्थान का स्थापना दिवस धूम–धाम से मनाया गया जिसमें लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों, वैज्ञानिकों, राज्य मत्स्य अधिकारियों, शोधार्थियों व स्थानीय स्कूली छात्र–छात्राओं को आमन्त्रित किया गया। इस दौरान आमन्त्रित सदस्यों ने अपने व्याख्यान हिन्दी में प्रस्तुत किए।

दिनांक 22–24 सितम्बर 2017 को निदेशालय में राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवधि में केन्द्र के वैज्ञानिकों ने स्थानीय मत्स्य पालकों को मत्स्य पालन से सम्बन्धित समस्त जानकारियों को हिन्दी में दिया तथा हिन्दी में ही प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित किया गया। राष्ट्रीय सेमिनार की अवधि में ही केन्द्र के भीमताल स्थित मुख्यालय में हिन्दी संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्यालय में संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीशियनों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिन्दी को सशक्त बनाने के संबध में अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए।

टी.एस.पी परियोजना के अर्न्तगत जनजातीय मत्स्य पालकों को प्रशिक्षण–परिचर्चा

स्थापना दिवस पर मत्स्य पालन की जानकारी देते हुए वैज्ञानिक

हिन्दी कार्यक्रमों की श्रृंखला को आगे बढाते हुए निदेशालय सहित इसके चम्पावत केन्द्र में मत्स्य कृषक दिवस समारोह, मत्स्य बीज वितरण समारोह एवं आदर्श प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि का आयोजन किया गया।

भा.कृ.अनु.प.– पुष्प विज्ञान अनुसंधान निदेशालय, पुणे

हिंदी पखवाड़ा

14 सितम्बर 2017 को प्रतिवर्ष की भांति भा.कृ.अनु.प.–पुष्प विज्ञान अनुसंधान निदेशालय, पुणे में "हिंदी दिवस" का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य में दिनांक 14.9.2017 से दिनांक 29.9.2017 तक "हिन्दी पखवाड़ा" का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं (निबंध प्रतियोगिता, श्रुतलेख प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, काव्य पाठ प्रतियोगिता, "सबका साथ सब का विकास" रंगोली प्रतियोगिता) आयोजित की गई। निदेशालय के सभी वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक कर्मचारियों ने इसमें पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लिया। रंगोली प्रतियोगिता में कृषि कॉलेज के 8 विद्यार्थियों ने भाग लिया। "सबका साथ सब का विकास" विषय पर सभी प्रतिभागियों ने रंगोली द्वारा अपने विचार व्यक्त किये। हिंदी पखवाड़ा की शुरुआत 14.9.2017 को की गयी। हिंदी पखवाड़ा का समापन निदेशक महोदय की अध्यक्षता में हुआ। एम.पी. के.वी., बागवानी महाविद्यालय, शिवाजीनगर, पुणे के अध्यक्ष, श्रीमान डा. एस.डी. मशालकर, एवं भा.कृ.अनु.प. के सहायक महानिदेशक (EQA&R), डा. जी. वेंकटेश्वरलु समारोह के मुख्य अतिथि थे । श्री राधे श्याम भट्ट जो कि निदेशालय के सहायक विधि एवं लेखा अधिकारी है, ने सभी प्रतिभागियों एवं मुख्य अतिथियों का स्वागत किया। तत्पश्चात सभी को हिंदी पखवाड़ा आयोजित करने के उद्देश्य की संक्षिप्त जानकारी दी गयी। निदेशक महोदय ने डॉ. एस.डी. मशालकर एवं डा. जी वेंकटेश्वरलु का स्वागत किया और सभा को संबोधित किया। इसके साथ ही उन्होंने पुष्प विज्ञान अनुसंधान निदेशालय का संक्षिप्त परिचय दिया। मुख्य अतिथियों ने अपने भाषण में सभा को संबोधित करते हुए हिंदी भाषा के विषय में अपने विचार व्यक्त किए। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा की भारत सरकार द्वारा चलाई गई प्रोत्साहन योजनाओं का ज्यादा से ज्यादा प्रचार किया जाए। उन्होंने कहा कि हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए सभी को सार्थक प्रयास करने की जरूरत है। हिन्दी बेहद सरल एवं मधुर भाषा है, इसका उपयोग हमें बोल चाल की भाषा तथा कार्यालय की भाषा के रूप में करना चाहिए तथा हमें हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।

समारोह के अंत में मुख्य अतिथि ने सभी विजयी प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए। इसके पश्चात श्री रूपेश कुमार पाठक, सहायक ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। इसके साथ ही हिंदी पखवाड़ा का समापन किया गया।

मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार तथा प्रमाणपत्रों का वितरण

हिंदी कार्यशाला

दिनांक 11.07.2017 को भा.कृ.अनु.प.–पुष्प विज्ञान अनुसन्धान निदेशालय में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा संबंधी अधिनियमों, नियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य निदेशालय के दैनिक कार्यकलापों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना तथा इस क्षेत्र में निदेशालय के अधिकारियों एवं अन्य कर्मचारियों के कौशल में सुधार करना था। इस कार्यशाला में आईवीआरआई, पुणे, आईएआरआई – आरएस, बानेर, अटारी, पुणे एवं डीएफआर, पुणे के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। अतिथि वक्ता के रुप में श्रीमती स्वाति चड्ढा को आमंत्रित किया गया था, जो कि सीएसआईआर – राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में हिन्दी अधिकारी हैं। कार्यशाला की शुरुआत सभी प्रतिभागियों एवं मुख्य अतिथि के स्वागत से हुई। राजभाषा कार्यान्व्यन समिति की सदस्य सचिव डॉ. नीतिका गुप्ता एवं श्री राधे श्याम भट्ट, सहायक वित्त एवं लेखा अधिकारी ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत करते हुए कार्यक्रम का संचालन किया। तत्पश्चात सभी को कार्यशाला आयोजित करने के उद्देश्य की संक्षिप्त जानकारी दी गयी। निदेशक महोदय ने श्रीमती स्वाति चड्ढा का पुष्प गुच्छ के साथ स्वागत किया और सभा को संबोधित किया। इसके साथ ही उन्होंने पुष्प विज्ञान अनुसंधान निदेशालय का संक्षिप्त परिचय दिया और श्रीमती स्वाति चड्ढा को "अंतर्राष्ट्रीय भाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग" विषय पर उनके व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया।

श्रीमती स्वाति चड्ढा ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है तथा अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी भाषा के माध्यम से करने पर जोर देते हुए ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता पर बल दिया। उन्होंने सरल, सुबोध एवं आसान शब्दों का प्रयोग करने पर जोर देते हुए कहा कि सभी कार्मिक राजभाषा संबंधी आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करें। उन्होने राजभाषा नीति, पत्राचार के विभिन्न रूपों जैसे कार्यालय टिप्पणी, परिपत्र, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश आदि पर चर्चा की। उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण वैबसाइट का भी वर्णन किया जो समझने एवं कार्य करने में आसान है। उन्होंने एक प्रश्नावली उपयोग कर उपस्थित सभी कर्मचारियों को बाँटकर राजभाषा हिन्दी संबन्धित उनके ज्ञान को आँका तथा पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन की सहायता से उसे सुलझाया।

प्रमुख उपलब्धियां

- वर्ष 2016 – 17 की वार्षिक प्रतिवेदन हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित की गई ।
- मेरा गाँव मेरा गौरव (एम.जी.एम.जी.) कार्यक्रम के अंतर्गत हिन्दी संगोष्ठी (किसान एवं वैज्ञानिक विचार विमर्श) का आयोजन आदरणीय निदेशक महोदय की उपस्थिति में कुसुर गाँव मे किया गया ।
- माह के हर प्रथम सप्ताह में हिन्दी बैठक होती है जिसमें हिन्दी में कार्य करने को लेकर चर्चा होती है ।
- अधिकतर कार्यालय परिपत्रों को हिन्दी में करने का निर्णय लिया गया ।
- भा.कृ.अनु.प.–पुष्प विज्ञान अनुसंधान निदेशालय के मांजरी फार्म, हड़प्सर में दिनांक 25.11.2017 से दिनांक 01.12.2017 तक "शेवंती आठवड़ा" का आयोजन किया गया।

हिन्दी प्रकाशन

- हिन्दी दीवार पत्रिका (वाल मैगज़ीन) हिन्दी में प्रकाशित
- वर्ष 2016–17 की वार्षिक प्रतिवेदन हिन्दी में प्रकाशित

भा.कृ.अनु.प.–खुम्ब अनुसंधान निदेशालय, सोलन

हिन्दी सप्ताह

भाकृअनुप–खुम्ब अनुसंधान निदेशालय, सोलन में हिन्दी सप्ताह का आयोजन दिनांक 14–21 सितम्बर, 2017 तक किया गया। इस दौरान (1) सुलेख प्रतियोगिता निदेशालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में 30 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। (2)श्रुतलेख प्रतियोगिता निदेशालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए थी। इस प्रतियोगिता में निदेशालय के 15 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। (3) निबन्ध प्रतियोगिता निदेशालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए थी। इस प्रतियोगिता में 7 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। (4) प्रार्थना पत्र लेखन प्रतियोगिता निदेशालय के सभी कुशल सहायी कर्मचारियों के लिए थी। इस प्रतियोगिता में 2 कर्मचारियों ने भाग लिया। (5) तकनीकी व सामान्य

ज्ञान के प्रश्न प्रतियोगिता निदेशालय के सभी तकनीकी वर्ग के कर्मचारियों के लिए थी। इस प्रतियोगिता में 5 कर्मचारियों ने भाग लिया। (6) टिप्पणी प्रतियोगिताः निदेशालय के सभी प्रशासनिक वर्ग के कर्मचारियों के लिए थी। इस प्रतियोगिता में 5 प्रतिभागियों ने भाग लिया। (7) वैज्ञानिक उपलब्धियां लिखनाः यह प्रतियोगिता निदेशालय के सभी वैज्ञानिकों के लिए थी। इस प्रतियोगिता में 7 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। (8) अनुवाद हिन्दी से अंग्रेजी में प्रतियोगिता निदेशालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए थी। इस प्रतियोगिता में 10 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। (9) अनुवाद अंग्रेजी से हिन्दी में प्रतियोगिता निदेशालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए थी। इस प्रतियोगिता में 11 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। (10) चित्र देखकर कहानी लेखन प्रतियोगिता निदेशालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए थी। इस प्रतियोगिता में 9 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। (11) वाद–विवाद प्रतियोगिता निदेशालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए थी। इस प्रतियोगिता में 7 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिन्दी कार्यशाला

निदेशालय में राजभाषा कार्यशाला दिनांक 04.03.2017, 21.06.2017, 21.09.2017 तथा 5.12.2017 को आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं के माध्यम से निदेशालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए यूनीकोड में प्रशिक्षण दिया गया। इन कार्यशालाओं के परिणामस्वरूप ही निदेशालय में हिन्दी के सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने दिन प्रति दिन के सरकारी कार्य में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग कर रहे हैं। हिन्दी का कार्य शत–प्रतिशत करने की ओर निदेशालय अग्रसर है। हिन्दी कार्यशाला में बतौर मुख्य वक्ता डा. जोग राज, उप निदेशक, उर्दू शिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सोलन ने हिन्दी के इतिहास से लेकर अब तक की प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने राजभाषा अधिनियमों की विस्तृत जानकारी कार्यशाला में दी। उन्होंने कहा कि कार्यालय में सभी

अधिकारी/कर्मचारी सरल हिन्दी का प्रयोग करें तथा क्लिष्ट शब्दों से जहां तक हो सके बचा जाए। उन्होंने कहा कि हिन्दी लिखने में कठिनाई आए तो वहां अंग्रेजी के शब्दों को भी देवनागरी में लिख सकते हैं। हिन्दी में कार्य करते समय किसी प्रकार की गलती हो जाए तो उससे घबराए नहीं। उन्होंने बताया कि हिन्दी के कार्यों को साम, दाम, भेद तथा दंड की नीति से आगे बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि आज समय के साथ लोगों की मानसिकता में भी बदलाव आया है। अब हिन्दी का पहले की तरह विरोध नहीं होता तथा हिन्दी जानने वाला व्यक्ति देश के किसी भी कोने में जाकर अपनी बात हिन्दी में समझा सकता है।

प्रमुख उपलब्धियां

- हिन्दी सप्ताह 14 से 21 सितम्बर, 2017 तक आयोजित किया गया।
- वार्षिक प्रकाशन 'छत्रक' का प्रकाशन हो रहा है।
- फाईलों में 80 प्रतिशत से अधिक टिप्पणियां हिन्दी में लिखी गई।
- खुम्ब उत्पादकों के लिए होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में वक्तव्य हिन्दी में दिए गए।
- वार्षिक प्रतिवेदन 2016–17 को द्विभाषी तैयार किया गया।
- निदेशालय में आयोजित होने वाले विभिन्न दिवसों जैसे 'विज्ञान दिवस' 28 फरवरी, 2017, संस्थान स्थापना दिवस – 21.06.2017, राष्ट्रीय खुम्ब मेला – 10 सितम्बर, 2017, कृषि दिवस–3 दिसम्बर, 2017, 'विश्व मृदा दिवस' 5 दिसम्बर, 2017, 'खुम्ब दिवस' 23 दिसम्बर, 2017 'जय किसान जय विज्ञान' सप्ताह दिनांक 23–29 दिसम्बर, 2017 का आयोजन किया गया। इन दिवसों में सारी कार्रवाई हिन्दी में ही की गई तथा प्रेस विज्ञप्तियां भी हिन्दी में जारी की गई।
- दिनांक 03.02.2017, 17.05.2017, 23.09.2017 व 05.12.2017 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें संपन्न हुई।

सभी बैठकों की कार्यसूची वार्षिक कार्यक्रम की अपेक्षाओं के अनुसार एवं अध्यक्ष महोदय, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अनुमोदन के बाद ही तय की गई।

- दिनांक 04.03.2017, 21.06.2017, 21.09.2017 व 05.12.2017 को राजभाषा कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें निदेशालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लेकर कार्यशालाओं के लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया।
- अधिकारियों तथा कर्मचारियों के हिन्दी शब्द ज्ञान को बढ़ाने के उद्देश्य से श्याम पट्ट (ब्लैक बोर्ड) पर 'आज का विचार' शीर्षक के अन्तर्गत प्रतिदिन हिन्दी के वाक्य लिखे जाते हैं ताकि अधिकारियों व कर्मचारियों के शब्द ज्ञान में वृद्धि हो सके।
- प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी मशरूम मेले का आयोजन 10 सितम्बर, 2017 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य पंडाल के सभी चित्रों के शीर्षक, ग्राफ, हिस्टोग्राफ आदि हिन्दी में प्रदर्शित किए गए। मल्टीमीडिया के माध्यम से मशरूम संबंधी जानकारी आकर्षक ढंग से हिन्दी में प्रस्तुत की गई तथा किसानों, छात्रों व अन्य अंगतुकों को मशरूम साहित्य हिन्दी में उपलब्ध कराया गया।
- दूरदर्शन पर भी निदेशालय के वैज्ञानिकों की मशरूम विषय पर हिन्दी में वार्ताएं प्रसारित होती रहती हैं जिनसे मशरूम उत्पादकों की समस्याओं का समाधान उनकी अपनी भाषा में होता है।

भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर

हिंदी पखवाडा

भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर द्वारा 14.09.2017 को प्रातः 10.30 बजे संस्थान के निदेशक डॉ. आनंदमय कुंडू एवं अतिथिगणों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर 'हिंदी पखवाड़ा' के उद्घाटन समारोह का शुभारंभ किया गया। समारोह के प्रारंभ में ही परिषद् से प्राप्त महानिदेशक महोदय की अपील को पढ़ा गया।

संस्थान के निदेशक डॉ. आनंदमय कुंडू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारत सरकार के नियम के अनुसार हिंदी दिवस 14 सितम्बर को ही मनाना जरूरी है और साथ ही कार्यालय में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने को कहा। उन्होंने सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई देते हुए कृषि तकनीकों और अपनी शोध उपलब्धियों को आम जनता तक हिंदी या उनकी मातृभाषाओं में पहुंचाने का अनुरोध किया। उन्होंने संस्थान में हिंदी के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों के लिए बधाई देते हुए शुभकामना दी।

संगोष्ठी

"डिजिटल इंडिया" शीर्षक पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लेकर डिजिटल इंडिया शीर्षक पर अपने विचार व्यक्त किए। निदेशक डॉ. आनंदमय कुंडू ने सभी प्रतियोगिओं को स्मृति–चिन्ह देकर सम्मानित किया।

प्रति वर्ष की भांति हिंदी पखवाड़े के दौरान कार्यालय द्वारा 14.09.2017 से विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। श्रीमती सुलोचना, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभा में उपस्थित लोगों का स्वागत किया, जबकि श्री अमित श्रीवास्तव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संस्थान के निदेशक डॉ. आनंदमय कुंडू के मार्गदर्शन में दिनांक 26.09.2017 को पूर्वाह्न 10.30 बजे सेमिनार हाल में हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर तत्काल भाषण का आयोजन किया गया। अपने संबोधन में बोलते हुए निदेशक महोदय ने कहा कि अपने संस्थान के सभी कर्मचारियों के प्रयास से ही इस संस्थान को कई बार राजभाषा के क्षेत्र में सम्मानित किया गया है। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. (श्रीमती) मंजू नायर ने राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी लोगों की उत्साहपूर्वक भागीदारी पर अपनी खुशी जाहिर की। अंत में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया ।

विशेष

- भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर में राजभाषा उपलब्धियों पर पावर पॉइंट प्रस्तुति/Power Point Presentation के लिए 59 स्लाइड तैयार की गई तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति पोर्ट ब्लेयर के क्रियाकलापों की 40 स्लाइड तैयार की गई। बैठकों, समारोह में इनका प्रदर्शन किया जाता है।

हिंदी प्रकाशन

- "द्वीपीय कृषि संदेश" पुस्तिका (पृष्ठ–207)
- तकनीकी प्रसार प्रपत्र

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के पत्र सं. 12024/09/2010/रा.भा., दिनांक 15 अक्टूबर, 2010 के अनुसार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर का कार्यभार भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर को सौंपा गया है। संस्थान द्वारा कार्यभार लेने के पश्चात निदेशक, कें.द्वी.कृ.अनु.सं., पोर्ट ब्लेयर द्वारा नराकास के अध्यक्ष के रूप में अब तक 15 अर्धवार्षिक बैठकों की

CIARI

HALF YEARLY MEETING

अध्यक्षता की गई। बैठक में पोर्ट ब्लेयर के सभी केंद्रीय सरकारी कार्यालयों के प्रमुख व अधिकारीगण उपस्थित होते हैं। बैठक में नगर में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हो रही प्रगति की समीक्षा की जाती है तथा भविष्य के कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई जाती है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर से संबंधित सभी कार्य संस्थान की सहायक निदेशक (रा.भा.)/सचिव, नराकास द्वारा किया जा रहा है । वर्ष 2017 में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्धवार्षिक बैठकें 28 जुलाई, 2017 और 22 दिसंबर, 2017 को आयोजित की गई।

वार्षिक पत्रिका

द्वीप तरंग नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर की वार्षिक गृह–पत्रिका है। सभी कार्यालयों से समस्त गतिविधियाँ/लेख प्राप्त करके पत्रिका में शामिल किया। सदस्य कार्यालयों द्वारा वार्षिक अंशदान प्रदान किए जाते हैं जिससे पत्रिका के प्रकाशन एवं अन्य क्रियाकलापों के आयोजन का खर्च प्राप्त हो जाता है। सभी कार्यालयों की कोशिश रहती है कि ऐसा नवीन कार्यक्रम समय–समय पर कर सके ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर द्वारा वार्षिक पत्रिका द्वीप तरंग प्रथम एवं द्वितीय अंक का प्रकाशन किया गया।

संयुक्त हिंदी कार्यशाला

भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान के सभागार में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर द्वारा आयोजित एक दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन समारोह में अंडमान–निकोबार प्रशासन के सचिव (राजभाषा) माननीय श्री रमेश वर्मा, भा.प्र.से. मुख्य अतिथि एवं टैगोर राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जयदेव सिंह विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। माननीय श्री रमेश वर्मा एवं डॉ. जयदेव सिंह ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं निदेशक डॉ. एस. दाम रॉय के साथ पारंपरिक दीप प्रज्ज्वलित कर एक–दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन किया।

श्री रमेश वर्मा एवं डॉ. जयदेव सिंह ने संयुक्त हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन के बाद उपस्थित को संबोधित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष नराकास डॉ. एस. दाम रॉय ने अतिथियों को स्मृति–चिन्ह भेंट किए। उन्होंने उपस्थित को संबोधित करते हुए डॉ दाम रॉय ने नराकास के क्रियाकलापों की जानकारी दी ।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय खारा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान, चेन्नई

हिन्दी सप्ताह

संस्थान में आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी की महत्ता के विषय में कर्मचारीगण एवं कार्यरत छात्रों को अवगत एवं जागरूक बनाने की दिशा में, 14–20 सितंबर, 2017 के दौरान हिन्दी सप्ताह समारोह आयोजित किया गया। डॉ. के.के. विजयन, निदेशक, सीबा, चेन्नई ने हिन्दी सप्ताह समारोह के उद्घाटन के अवसर पर हिन्दी के प्रयोग पर बल देते हुए संस्थान के कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने हिंदी में और प्रतियोगिताएं के आयोजन और भागेदारी की आवश्यकता पर विशेष सन्देश दिया। उन्होंने हिंदी का प्रयोग संस्थान के रोज के कार्यों से जोड़ने की सलाह दी और हिंदी को अपनाने पर बल दिया। डॉ. एम.एस. शेखर, प्रभारी अधिकारी, हिन्दी विभाग ने सभी उपस्थित व्यक्तियों का स्वागत करते हुए, संस्थान में हिंदी में चल रहे कार्यों से अवगत कराया। उन्होंने संस्थान के सभी कर्मचारियों हिंदी संबधित परीक्षणों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने हिन्दी सप्ताह समारोह की प्रमुख गतिविधियों से सभी को अवगत कराया। हिन्दी सप्ताह समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे हिन्दी आलेखन एवं टिप्पण, हिन्दी कविता

एवं संगीत, हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समापन समारोह के दौरान श्री आर. सुदर्शन, ऑल इंडिया रेडियो, चेन्नई मुख्य अतिथि थे और उन्होंने राजभाषा के प्रयोग और योगदान पर भाषण दिया। उन्होंने प्रतिदिन संस्थान के कार्यों में हिन्दी भाषा के प्रयोग पर जोर दिया। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सीबा संस्थान के हिंदी प्रकाशन ''जल तरंग'' का तृतीय अंक का विमोचन किया गया।

प्रमुख उपलब्धियां

आईसीएआर–सीबा ने 16 जुलाई 2017 को आईसीएआर के 89 वें फाउंडेशन दिवस समारोह में अपनी हिंदी पत्रिका 'जल तरंग' के लिए पुरस्कार प्राप्त किया।

हिन्दी प्रकाशन

- जल–तरंग: इस वर्ष संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं छात्रों के विचारों से युक्त गृह पत्रिका ''जल तरंग'' का तीसरा अंक प्रकाशित किया गया। जिसका अनावरण हिन्दी सप्ताह समारोह के प्रमुख अतिथि श्री आर. सुदर्शन, ऑल इंडिया रेडियो, चेन्नई एवं डॉ. के.के. विजयन, निदेशक सीबा द्वारा किया गया। पत्रिका में खारा जलजीव पालन से संबंधित गतिविधियों पर लघु लेख है। यह लेख खारा जलजीव पालन के क्षेत्र में संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं छात्रों का इस क्षेत्र में योगदान एवं शोधकार्यों को प्रस्तुत करता है।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर

हिंदी सप्ताह

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी भाकृअनुप–केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में दिनांक 14 सितम्बर, 2017 को भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता के साथ संयुक्त रूप से हिंदी सप्ताह का उद्घाटन समारोह आयोजित किया।

इस कार्यक्रम की शुरूआत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के स्वागत गीत से की गई। तत्पश्चात् श्री राजीव लाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वाागत किया। अपने स्वाागत भाषण में उन्हों ने कहा कि देश में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं लेकिन हिंदी भाषा का विशेष महत्व है। इसके साथ ही सभी अतिथियों ने द्वीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

डा. अशोक कुमार सक्सेना, पूर्व महाध्यक्ष, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता ने अपने व्याख्यान में हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने पर अपने विचार प्रस्तुत किए। डा. मनोज कुमार चक्रवर्ती, महाध्यक्ष, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता तथा डा. (श्रीमती) विजयलक्ष्मी, पूर्व महासचिव, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता ने भी हिंदी के महत्व और उसकी उपयोगिता के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने इस संस्थान में हो रहे हिंदी के कार्यों की सराहना करते हुए साथ मिलकर कार्य करने की इच्छा भी जताई।

डा. बंकिम चन्द्र झा, पूर्व प्रभागाध्यक्ष, केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर अपने व्याख्यान में राजभाषा हिंदी के ऐतिहासिक और वर्तमान महत्व पर प्रकाश डालते हुए अपना व्याख्यान दिया और हिंदी के माध्यम से वैज्ञानिकों और कृषकों के बीच की दूरी को समाप्त करने का आह्वान किया।

संस्थान के निदेशक डा. बसंत कुमार दास ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे अपना ज्यादा से ज्यादा काम हिंदी में जारी रखें। इस उपलक्ष्य में निदेशक महोदय ने संस्थान में हो रहे अनुसंधान कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

हिंदी सप्ताह समापन समारोह

अंत में डा. अमित कृष्ण दे, कार्यकारी सचिव, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था, कोलकाता तथा डा. श्रीकान्त सामन्ता, प्रधान वैज्ञानिक एवं सर्वकार्यभारी हिंदी कक्ष ने सभी गणमान्य अतिथियों एवं सभागार में उपस्थित सदस्यों को धन्यवाद दिया। डा. श्रीकान्ती सामन्ता ने हिंदी सप्ताह के अवसर पर आयोजित होने वाली वैज्ञानिक कार्यशाला में उत्साहपूर्वक भाग लेने के लिए आग्रह भी किया।

भाकृअनुप–केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में दिनांक 26 सितम्बर, 2017 को हिंदी सप्ताह का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आरंभ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के स्वागत गीत से किया गया। अपने स्वाागत भाषण में श्री राजीव लाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने सभी अतिथियों एवं सभागार में उपस्थित कर्मचारियों का स्वागत किया और हिंदी सप्ताह के दौरान कार्यक्रमों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

इस अवसर पर निदेशक महोदय ने एक दिवसीय वैज्ञानिक कार्यशाला के अवसर पर तैयार की गई स्मारिका एवं शोध सारांश पुस्तिका का ऑनलाइन विमोचन भी किया। इस अवसर पर क्विज प्रतियोगिता में भाग लेने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों, शोध छात्र–छात्राएं एवं हिंदी में अधिक कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया।

संस्थान के निदेशक डा. बसंत कुमार दास ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अनुरोध किया की वे हर महीने चार पृष्ठों का एक न्यूज़ लेटर हिंदी में प्रकाशित करें। इस न्यूज लेटर को संस्थान की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाए। आगे उन्होंने कहा कि हिंदी में नदियों के ऊपर भी एक पुस्तक प्रकाशित होनी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि संस्थान में हिंदी में बेहतर कार्य हो इसके लिए प्रत्येक महीने एक बैठक का आयोजन किया जाए।

अंत में डा. श्रीकान्त सामन्ता, प्रधान वैज्ञानिक एवं सर्वकार्यभारी हिंदी कक्ष ने सभी गणमान्य अतिथियों एवं सभागार में उपस्थित सदस्यों को धन्यवाद दिया।

हिन्दी कार्यशाला

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में राजभाषा हिंदी में हो रहे कार्यकलापों को बढावा देने और हिन्दी काम काज में आने वाली कठिनाइयों के समुचित समाधान हेतु संस्थान के निदेशक डा. बी.के. दास की अध्यक्षता में दिनांक 03 जून, 2017 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में हिंदी वर्णमाला का मानकीकरण तथा हिंदी व्याकरण पर प्रकाश डाला गया। राजभाषा नीति, नियम, अधिनियम तथा हिंदी कामकाज में आने वाली समस्याओं का समाधान, भाषा के प्रयोग में शब्दों का चयन एवं प्रयोग विधि पर प्रकाश डालते हुए कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया गया।

दिनांक 15 सितम्बर, 2017 को भी 'अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की वर्तमान अवस्था एवं सम्भावनाएं' विषय पर संस्थान में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के उद्‌घाटन समारोह में मुख्य अतिथि डा. गोपाल कृष्ण, निदेशक एवं कुलपति, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई थे। उद्‌घाटन समारोह में संस्थान के वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों तथा अन्य संस्थानों/विश्वविद्यालयों से संबंधित मात्स्यिकी क्षेत्र में कार्यरत शोधकर्ताओं और शिक्षकों ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि ने कार्यशाला का उद्‌घाटन करते हुए कहा कि अनुसंधान संस्थानों में हिंदी का प्रयोग सकारात्मक गति से आगे बढ़ रहा है। अतिथि वक्ता ने आदरणीय निदेशक महोदय का धन्यवाद देते हुए अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की वर्तमान परिस्थिति पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान एवं केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान को मिलकर और कार्य करना चाहिए।

संस्थान में स्वच्छता पखवाड़े का भी इसी दिन आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के समस्त कर्मचारियों ने मिलकर सभागार में 'स्वच्छता ही सेवा' की शपथ ली।

तत्पश्चात् कार्यशाला का तकनीकी सत्र आरम्भ हुआ। इस तकनीकी सत्र में डा. बी. सी. झा, पूर्व प्रभागाध्याक्ष एवं डा. वी. आर. सुरेश, प्रभागाध्यक्ष को अध्यक्ष बनाया गया। निर्णायक मंडल में डा. यू. के. सरकार, प्रभागाध्यक्ष, डा. रमण त्रिवेदी तथा रैपोर्टियर श्री प्रवीण मौर्य, श्रीमती सुमन कुमारी, श्री राजू बैठा एवं सुश्री गुंजन कर्नाटक को बनाया गया। इस कार्यशाला का मूल उद्देश्य हिन्दी को मात्स्यिकी विज्ञान व अनुसंधान में बढ़ावा देने के साथ–साथ इसके प्रचार–प्रसार को सुदृढ़ करना भी था। संस्थान अनुसंधान के साथ–साथ राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी लगातार कार्य कर रहा है। इस वर्ष संस्थान अपनी 70वीं वर्षगांठ भी मना रहा है। इसी कड़ी में हिंदी सप्ताह के अवसर पर उक्त कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के माध्यम से अनुसंधानकर्ताओं को अपने शोध कार्य विचारों को हिंदी में प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया। जिसमें अनेक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें उत्कृष्टों प्रस्तुतकर्ताओं को सम्मानित भी किया गया।

कार्यशाला के अंत में श्री एस. के. साहू, सह–संयोजक ने इस आयोजन के लिए संस्थान के निदेशक महोदय के मार्गदर्शन तथा कार्यशाला के आयोजन के लिए प्रत्येक

पहलू पर विशेष रूचि दिखाने के लिए आभार व्यक्त किया। अतिथि वक्ता का सहयोग तथा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग करने के लिए सभी कर्मचारियों को धन्यवाद दिया। कार्यशाला में सभी वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया गया।

प्रमुख उपलब्धियां

- निदेशक की अध्यक्षता में संस्थान के मुख्यालय में नियमित रूप से हिन्दी कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।
- संस्थान द्वारा नियमित रूप से तिमाही प्रगति रिपोर्ट परिषद मुख्यालय एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को प्रेषित की गईं।
- हिन्दी में किए गए अधिक कार्यों के लिए कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।
- हिन्दी कार्य बढ़ाने के लिए संस्थान मुख्यालय में तीन कार्यशालाएं आयोजित की गईं।
- संस्थान मुख्यालय एवं इसके क्षेत्रीय केन्द्रों में धारा 3 (3) का अनुपालन किया जा रहा है।
- संस्थान में किसानों एवं छात्र–छात्राओं के लिए हिन्दी में प्रशिक्षण सामग्री तैयारी की जाती है।
- संस्थान की महत्वपूर्ण उपलब्धियों पर हिन्दी में एक फिल्म डाक्यूमेंटरी का निर्माण किया गया जिसे संस्थान में आयोजित प्रशिक्षणों में दिखाया जाता है।
- संस्थान में अधिकतर बैठकों में वार्तालाप हिन्दी माध्यम से सम्पन्न हुआ।
- संस्थान के सभी केन्द्रों में राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित है।
- संस्थान के प्रवेश द्वार पर प्रतिदिन हिन्दी का एक शब्द उसके अंग्रेजी समानार्थ के साथ लिखा जाता है।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में भाग लिया गया।
- उक्त कार्यों के अतिरिक्त राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों पर कार्य किया गया।

प्रकाशन

- वार्षिक रिपोर्ट 2016–17
- सिफरी न्यूज़ लेटर (तिमाही)
- सिफरी मासिक पत्रिका – अंक 1, 2 तथा 3
- प्रशिक्षण मैनुअल

भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचीन

हिन्दी चेतना मास

दिनांक 10.08.17 से 14.09.2017 तक संस्थान में हिन्दी चेतना मास का आयोजन किया गया। इस अवधि में वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए सार लेखन, सामान्य ज्ञान, आशुभाषण, पोस्टर प्रस्तुति, समाचार वाचन, स्मृति प्रतियोगिता, राजभाषा अधिनियम धारा 3(3), गायन, अंताक्षरी और नाटक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

संस्थान के निदेशक, डॉ. रविशंकर सी.एन. की अध्यक्षता में चेतना मास समारोह 2017 का समापन 14.09.17 को संपन्न हुआ। श्री सुधांशु शेखर झा, आई आर एस, आयकर आयुक्त (अपील), कोचिन मुख्य अतिथि थे उन्होंने हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, वर्तमान रूप और महत्व पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि ने "कार्यालयीन द्विभाषिक टिप्पणियां" नामक पुस्तिका का विमोचन किया और प्रतियोगताओं के विजेताओं को

श्री. सुधांशु शेखर झा, आयकर आयुक्त (अपील) आई आर एस, समारोह में भाषण देते हुए

श्री. सुधांशु शेखर झा, आयकर आयुक्त (अपील) आई आर एस, समारोह में "कार्यालयीन द्विभाषिक टिप्पणियॉं" शीर्षक पुस्तिका का विमोचन करते हुए

पुरस्कार दिए। श्री पारसनाथ झा, वैज्ञानिक, मत्स्य प्रौद्योगिकी प्रभाग ने राजभाषा प्रतिभा पुरस्कार प्राप्त किया और मत्स्य प्रौद्योगिकी विभाग को सर्वोत्कृष्ट प्रभाग के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सर्वप्रथम डॉ.सुशीला मैथ्यू, प्रभागाध्ययक्ष, जीव रसायन एवं पोषण प्रभाग ने स्वागत भाषण दिया। डॉ. पी. शंकर, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. के अपील को प्रस्तुत किया। डॉ. जे. रेणुका, उपनिदेशक (राजभाषा) ने धन्यवाद ज्ञापित किया। समापन समारोह के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

हिन्दी कार्यशाला

दिनांक 19.01.2017 को संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों के लिए कार्यशाला आयोजित की गई। श्री विजयकुमार, सेवानिवृत्त उपनिदेशक (कार्यान्वयन) कार्यशाला में संकाय सदस्य रहे। कार्यशाला के दौरान राजभाषा का महत्व, राजभाषा नियम आदि से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया। कार्यशाला में कुल 15 वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

विजयकुमार, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय (सेवानिवृत्त) कार्यशाला में प्रस्तुति देते हुए

दिनांक 30.05.2017 को संस्थान के युवा वैज्ञानिकों के लिए हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। डॉ. जे. रेणुका, उपनिदेशक (राजभाषा) कार्यशाला में संकाय सदस्य रही। कार्यशाला के दौरान वैज्ञानिक क्रियाकलापों में हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डाला कार्यशाला में कुल 15 वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भाकृअनप–केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान में तकनीकी कर्मचारियों के लिए राजभाषा हिन्दी का प्रयोग और हिन्दी व्याकरण पर 'एक दिवसीय कार्यशाला 25 सितंबर 2017 को आयोजित की गई, जिसमें संस्थान के लगभग 16 तकनीकी कर्मचारियों ने भाग लिए।

संस्थान के निदेशक डॉ. सी. एन. रविशंकर ने तकनीकी सहभागियों को भाषा के अनुपालन की आवश्यकता और इसमें उनके योगदान को अभिप्रेरित किया। आपने सभी से

डॉ. जे रेणुका, उपनिदेशक (राजभाषा) कार्यशाला चलाते हुए

आग्रह किया कि हिन्दी में कार्य करना सभी का दायित्व है। निदेशक महोदय, श्रीमती क्रिस्टीना जोसफ, प्रशासनिक अधिकारी एवं प्रभारी अधिकारी राजभाषा ने कार्यशाला की सफलता की कामना की।

कार्यशाला का संयोजन, डॉ. पी. शंकर, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने किया। अपने दैनिक कार्यों में तकनीकी कर्मचारियों द्वारा राजभाषा हिन्दी का प्रयोग और हिन्दी व्याकरण के साथ राजभाषा नियमों पर प्रकाश डाला। इस कार्यशाला के माध्यम से संस्थान के तकनीकी कर्मचारियों की हिन्दी में लिखने की झिझक को दूर करना था।

दिनांक 19.12.17 को संस्थाान के प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए कार्यशाला आयोजित की गई। डॉ. संतोष अलेक्स, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी कार्यशाला में संकाय सदस्य रहे। कार्यशाला के दौरान आलेखन एवं टिप्पणी पर कक्षाएं चलाई गई। कार्यशाला में कुल 18 प्रशासनिक कर्मचारियों ने भाग लिया।

डॉ. पी. शंकर द्वारा कार्यशाला का संयोजन

डॉ. संतोष अलेक्स, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी कार्यशाला का आयोजन करते हुए

प्रमुख उपलब्धियां

- 2016–17 के दौरान संस्थान को नरकास प्रतियोगिताओं में हिन्दी कार्यान्वयन के लिए द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।
- 2016–17 के दौरान संस्थान को नरकास प्रतियोगिताओं में उत्तम पत्रिका के लिए चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ।

सम्मान / पुरस्कार

वर्ष 2016–17 के लिए भारत सरकार की राजभाषा नीति के सर्वोत्तम कार्यान्वयन के लिए कोच्चि नराकास की राजभाषा रोलिंग ट्राफी मिली। डॉ. सुशीला मैथ्यू, प्रभारी निदेशक और प्रभागाध्यक्ष जै एवं पो, डॉ. संतोष अलेक्स और डॉ. पी. शंकर, तकनीकी अधिकारियों ने 08.11.2017 को आयोजित कोच्चि नराकास की 64वीं बैठक के दौरान मुख्य आयुक्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्कों और सेवा कर, कोच्चि के द्वारा आयकर विभाग, कोच्चि के तनिमा हॉल में यह ट्राफी प्रदान की।

वर्ष 2015–16 और 2016–17 के दौरान "झलक 2015" और 'झलक 2016' के लिए कोच्चि नराकास की उत्तम गृह पत्रिका की रोलिंग ट्रोफियां भी मिलीं। डॉ. सुशीला मैथ्यू, प्रभारी निदेशक और प्रभागाध्यक्ष जै एवं पो, डॉ. संतोष अलेक्स और डॉ. पी. शंकर, तकनीकी अधिकारियों ने 08.11.2017 को आयोजित कोच्चि नराकास की 64वीं बैठक के दौरान श्रीमती सुष्मिता भट्टाचार्य, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), कोच्चि द्वारा आयकर विभाग, कोच्चि के तनिमा हॉल में यह ट्रोफियां प्रदान की।

हिंदी प्रकाशन

- के.मा.प्रौ.सं. समाचार पत्र – चार अंक
- अनुसंधान विशेषताएं 2016–2017 – वार्षिक अंक
- आलेख और टिप्पण की पुस्तिका

भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ

हिन्दी सप्ताह

संस्थान में दिनांक 14.09.2017 से 20.09.2017 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया तथा हिन्दी टंकण, हिन्दी निबंध लेखन, हिन्दी तकनीकी लेख प्रस्तुतीकरण, हिन्दी सुलेख, हिन्दी श्रुतलेखन, हिन्दी पत्र लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के सभी वर्ग के अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया तथा पुरस्कार प्राप्त किए। हिन्दी प्रोत्साहन योजना पुरस्कार (2016–17) के दौरान संस्थान के 4 कार्मिकों को पुरस्कृत किया तथा पूरे वर्ष के दौरान अपना सर्वाधिक कार्य हिन्दी में करने वाले कार्मिकों तथा प्रतिदिन हिन्दी में 'आज का शब्द' लेखन हेतु भी कार्मिकों को इस दौरान पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी कार्यशाला

संस्थान में राजभाषा हिन्दी के उचित प्रयोग एवं हिन्दी में कार्य करने एवं बोलने की झिझक को दूर करके बढ़ावा देने हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लाभ के लिए दिनांक 17.06.2017 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली के 02 स्थानीय कार्यालयों एवं निदेशक, सैन्य फार्म एवं फ्रीजवाल परियोजना, मेरठ कैण्ट के राजभाषा अनुभाग के कर्मचारियों सहित संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिन्दी प्रकाशन

- सुरभि–2

भा.कृ.अ.प.– केंद्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मुम्बई

हिंदी दिवस/सप्ताह

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी संस्थान में दिनांक 14 सितंबर से 23 सितंबर, 2017 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। हिंदी सप्ताह का उद्घाटन समारोह दिनांक 14 सितंबर, 2017 को किया गया। उद्घाटन समारोह में हिंदी दिवस की निर्धारित प्रतिज्ञा श्रीमती तृप्ति मोकल, सहायक प्रशासनिक अधिकारी एवं प्रभारी, राजभाषा कक्ष द्वारा सभी उपस्थित कर्मचारियों को दी गई। उद्घाटन समारोह के दिन शुद्ध लेखन की प्रतियोगिता रखी गई थी। दिनांक 14 से 23 सितंबर, 2017 तक विभिन्न प्रतियोगिताएं रखी गई थी, जिसमें 133 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। निर्देशानुसार हिंदी सप्ताह के दौरान ऐसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनका संबंध सरकारी कामकाज से और साथ ही साथ यह राजभाषा का प्रयोग बढाने में सहायक है। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिसमें–

- शुद्ध लेखन
- वर्ग पहेली
- तकनीकी वाक्यांश
- सामान्य ज्ञान
- कविता पठन

हिंदी दिवस/सप्ताह का समापन समारोह दिनांक 23 सितंबर, 2017 को हुआ कार्यक्रम की शुरुआत परिषद के गीत द्वारा की गई। विशेष अतिथि के रुप में डा. राजेश्वर उनियाल, उपनिदेशक (राजभाषा), केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान एवं मुख्य अतिथि के रूप में डा. मृगेंद्र राय, सहयोगी प्राध्यापक, गुरू नानक खालसा कॉलेज उपस्थित थे। डा. पी.जी. पाटील, निदेशक ने संस्थान में हुई वर्षभर की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए संस्थान में हो रहे हिंदी कार्यान्वयन की प्रगति की सराहना की एवं संस्थान को नराकास, मुंबई एवं भा.कृ.अनु.

डा. पी.जी. पाटील, निदेशक एवं अतिथिगण

प., मुख्यालय द्वारा गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार योजना के तहत प्राप्त पुरस्कार के लिए सभी कर्मचारियों को बधाई देते हुए भविष्य में इसी तरह कार्य करके राजभाषा कार्यान्वयन प्रगति के लिए और अधिक उत्साह से कार्य करने हेतु कहा। डा.(श्रीमती) सुजाता सक्सेना, प्रभारी, रा. एवं जै.रा. प्र. विभाग एवं अध्यक्ष, हिंदी दिवस/सप्ताह आयोजन समिति ने सप्ताह का वृतांत एवं सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के बारे में बताया। हिंदी दिवस/सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर गृह पत्रिका अंबर (अंक–3) और वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2016–17 का निदेशक महोदय एवं प्रमुख अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया। साथ ही हिंदी दिवस/सप्ताह की प्रतियोगिता में विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए गए। इसी अवसर पर हिंदी पारंगत परीक्षा में उत्तीर्ण अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रमाण पत्र वितरण किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री भारत पवार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं श्रीमती प्राची म्हात्रे, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने किया।

हिन्दी कार्यशाला

- वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन विषय पर सभी तकनीकी कर्मचारियों के लिए दिनांक 18 मार्च, 2017 को व्याख्याता श्री. वी.वि. कुलकर्णी, उप निदेशक (राजभाषा) ने मार्गदर्शन किया जिसका लाभ कुल 40 कर्मचारियों ने लिया ।
- सभी वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दिनांक 17 जून, 2017 को कार्यालय कामकाज एवं पत्राचार विषय पर श्री. महेंद्र जैन, प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना ने मार्गदर्शन किया जिसका लाभ कुल 77 अधिकारियों/कर्मचारियों ने लिया।
- यूनिकोड टंकण विषय पर प्रशासनिक अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दिनांक 28 सितंबर, 2017 को व्याख्यता श्री महेंद्र जैन, प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना ने मार्गदर्शन किया जिसका लाभ कुल 18 अधिकारियों/कर्मचारियों ने लिया ।
- दिनांक 17 जून, 2017 को कार्यालय कामकाज एवं पत्राचार विषय पर सभी वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए व्याख्याता श्री प्रिंस ग्रोवर, हिंदी अनुवादक ने मार्गदर्शन किया जिसका लाभ कुल 78 अधिकारियों/कर्मचारियों ने लिया।

पुरस्कार

- भा.कृ.अनु.प.– केंद्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान माटुंगा, मुंबई को गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका पुरस्कार योजना (2015–16) के अंतर्गत 'क' एवं 'ख' क्षेत्र के संस्थानों/केंद्रों के वर्ग में 'अंबर' पत्रिका को

तृतीय पुरस्कार (संयुक्त पुरस्कार) प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के स्थापना दिवस 16 जुलाई, 2017 को माननीय श्री राधा मोहन सिंह, केंद्रीय कृषि और किसान मंत्रालय मंत्री एवं श्री सुदर्शन भगत, कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री द्वारा प्रदान किया गया। संस्थान के निदेशक डा. पी.जी. पाटील द्वारा यह पुरस्कार ग्रहण किया गया। इस अवसर पर संस्थान की श्रीमती तृप्ति मोकल, प्रभारी, राजभाषा कक्ष एवं सहायक प्रशासनिक अधिकारी और श्रीमती प्राची म्हात्रे, पुस्तकालयाध्यक्षा एवं प्रभारी, सहायक राजभाषा कक्ष उपस्थित थे ।

डा. पी.जी. पाटील, निदेशक पुरस्कार ग्रहण करते हुए

डा. पी.जी. पाटील, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–कें.क.प्रौ.अनु.सं. पुरस्कार ग्रहण करते हुए

- भारत सरकार, गृह मंत्रालय के दिशा–निर्देशों में पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक की अध्यक्षता में गठित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुंबई की दिनांक 31.05.2017 को आयोजित प्रथम छमाही बैठक में समिति के अधीन 91 सदस्य कार्यालयों में केंद्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान को वर्ष 2016–17 के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्य करने के लिए राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया गया। संस्थान के निदेशक डा. पी.जी. पाटील ने राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति–पत्र श्री अनिल कुमार गुप्ता, अध्यक्ष, नराकास एवं महाप्रबंधक (प.रे.) से प्राप्त किया। इस अवसर पर संस्थान के श्री सुनील कुमार, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, श्रीमती तृप्ति मोकल, प्रभारी, राजभाषा कक्ष एवं सहायक प्रशासनिक अधिकारी और श्रीमती प्राची म्हात्रे, प्रभारी, पुस्तकालय एवं सहायक राजभाषा कक्ष उपस्थित थे ।
- भा.कृ.अनु.प. के तत्वावधान में कार्यरत सभी कार्यालयों के बीच संस्थान को सरकारी निर्देशानुसार नकदी रहित लेनदेन सुचारु ढंग से कार्यान्वित करने हेतु प्रशस्ति प्रमाण पत्र और 5 लाख रुपए की राशि पुरस्कार देकर गौरवान्वित किया गया। दिनांक 14 फरवरी 2017 को परिषद द्वारा आयोजित निदेशकों के सम्मेलन में डा. पी. जी. पाटील, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–कें.क.प्रौ.अनु.सं. ने इस पुरस्कार को प्राप्त किया ।

श्री राधा मोहन सिंह, कृषि और किसान कल्याण मंत्री से कैशलेस संस्थान पुरस्कार प्राप्त करते हुए संस्थान के निदेशक डा. पी.जी. पाटील

श्रीमती तृप्ति मोकल, सहायक प्रशासनिक अधिकारी एवं प्रभारी, रा.भा. कक्ष पुरस्कार प्राप्त करते हुए

- श्रीमती तृप्ति मोकल, सहायक प्रशासनिक अधिकारी एवं प्रभारी, राजभाषा कक्ष को आशीर्वाद, सांस्कृतिक, साहित्यिक संस्था से वर्ष 2017 में राजभाषा के कार्यान्वयन की दिशा में बहुमूल्य योगदान के लिए आशीर्वाद राजभाषा पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया ।

प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन 2016–17
- गृह पत्रिका अंबर (अंक–3) 2016

भा.कृ.अनु.प–केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर

हिन्दी सप्ताह

सरकारी काम–काज में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा उसके प्रभावों में गति लाने के उद्देश्य से संस्थान में दिनांक 14 से 20 सितम्बर, 2017 के दौरान 'हिन्दी सप्ताह' का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन संस्थान के निदेशक, डा. जीबन मित्र ने किया। मुख्य अतिथि/वक्ता के रूप में श्री चन्द्रशेखर सिंह, पूर्व सहायक निदेशक (रा.भा.), गुणवत्ता आश्वासन निदेशालय, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, निजाम पैलेस, कोलकाता को आमंत्रित किया गया था। डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिन्दी कक्ष ने इस अवसर पर उपस्थित संस्थान के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित किए जानेवाली विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं की जानकारी देते हुए उनसे यह आग्रह किया कि वे अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर इस आयोजन को सफल बनायें।

निदेशक, डा. जीबन मित्र ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में इस संस्थान ने अच्छी प्रगति की है जिसके कारण हिन्दी के प्रयोग में सकारात्मक प्रगति हुई है। उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा हिन्दी साधारण जनमानस विशेषकर, किसान भाइयों के साथ संपर्क बनाने का बेहतर माध्यम है क्योंकि इसे लगभग हर भारतीय समझता अथवा बोलता है। डा. एस. सत्पथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा, डा. दिलीप कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन एवं डा. सब्यसाची मित्रा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, ए.आई. एन.पी. ने अपने संबोधन में कार्यालयी कार्यों में हिंदी का प्रयोग अधिकाधिक करने पर बल दिया। मुख्य अतिथि श्री चन्द्रशेखर सिंह ने अपने व्याख्यान में राजभाषा के महत्व

संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी हिन्दी सप्ताह में भाग लेते हुए

एवं उसके कार्यान्वयन हेतु दायित्व तथा राजभाषा नियम अधिनियम के बारे में अधिकारियों/कर्मचारियों को विस्तार पूर्वक अवगत कराया। 'हिन्दी सप्ताह' के दौरान संस्थान के हिन्दीत्तर भाषी तथा हिन्दी भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिसमें संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उत्साहपूर्वक भाग लिया।

'हिन्दी सप्ताह' समापन समारोह दिनांक 20 सितम्बर, 2017 को डा. एस. सत्पथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता, श्री राकेश कुमार पाठक, सहायक निदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, 78वीं–बालीगंज, सर्कुलर रोड, कोलकाता सादर आमंत्रित थे। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि संस्कृत और हिन्दी देश की दो स्तंभ रूपी ऐसी भाषाएं हैं जो देश की संस्कृति, परंपरा और सभ्यता को विश्व के मंच पर बखूबी प्रस्तुत करते हैं। आज विश्व भर से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिए हमारे देश का रूख कर रहे हैं। हिन्दी बहुत ही सरल, सहज और आसान भाषा है जिसका हमें कार्यालय कार्यों में सर्वाधिक प्रयोग करना चाहिए। श्री राजीव लाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने अपने संबोधन में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों को कहा कि 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। अतः हम सभी का कर्तव्य बनता है कि राजभाषा हिन्दी का प्रयोग कार्यालय कार्यों में अधिकाधिक करें। श्री गौरांग घोष, वित्त एवं लेखा अधिकारी ने प्रशासनिक कार्यों को हिन्दी में करने पर बल दिया। डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिन्दी ने अपने समापन भाषण में संस्थान में किए जा रहे हिन्दी कार्य की प्रगति का उल्लेख किया। समापन समारोह में मंचासीन डा. सुनीति कुमार झा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, कृषि प्रसार अनुभाग, मुख्य वक्ता श्री राकेश कुमार पाठक तथा श्री गौरांग घोष, वित्त एवं लेखा अधिकारी के द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन तथा समापन समारोह का संचालन डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिन्दी कक्ष ने श्री मनोज कुमार राय, सहायक के सहयोग से किया। कार्यक्रम का समापन डा. सुनीति कुमार झा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, कृषि प्रसार अनुभाग के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्पन्न हुआ।

रेमी अनुसंधान केन्द्र, सरभोग, बरपेट्टा, असम में भी "हिन्दी सप्ताह" समारोह दिनांक 14.09.2017 से 20.09.2017 तक

संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, श्री राजीव लाल द्वारा पुरस्कार वितरण

आयोजित किया गया तथा सीसल अनुसंधान केन्द्र, बामरा, ओडिशा, सनई अनुसंधान केन्द्र, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा बीज अनुसंधान केन्द्र, बुद बुद, बर्द्धवान एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, बुद बुद, बर्द्धवान, पश्चिम बंगाल में क्रमशः हिंदी दिवस का आयोजन दिनांक 14 सितम्बर, 2017 को किया गया।

हिंदी कार्यशाला

केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले संस्थान के प्रशासनिक एवं तकनीकी अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी में काम करने की झिझक को दूर करने के उद्देश्य से दिनांक 20 जून, 2017 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक, डा. जीबन मित्र ने की। निदेशक महोदय ने उद्घाटन भाषण में कहा कि कार्यालयी कार्यों में हिंदी का प्रयोग करना हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है। उन्होंने संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यालय कार्यों में सरल हिंदी शब्दों का प्रयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि इस कार्यशाला का लाभ उठाते हुए वे अपने दैनंदिन कार्यों में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करें।

डा. एस. सत्पथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा ने कहा कि हमारा संस्थान "ग" क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद इस संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों के द्वारा राजभाषा हिंदी का यथा संभव प्रयोग किया जा रहा है। हमारा यही प्रयास रहा है कि इस प्रकार के आयोजनों के माध्यम से उन्हें हिंदी में और अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए। डा. दिलीप कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन ने कहा कि हिंदी इस देश में सर्वाधिक बोली तथा समझी जाने वाली भाषा है इसलिए इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। उन्होंने सभी कर्मचारियों से टिप्पण/आलेखन में हिंदी का प्रयोग करने का आग्रह किया। डा. सुनीति कुमार झा, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। उन्होंने अपना वक्तव्य रखते हुए कहा कि हिंदी को कार्यालय कार्यों में अपनाना ही इसके प्रति सच्चा सम्मान होगा तथा हम सभी अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का संकल्प लें और मिलकर ऐसे वातावरण का निर्माण करें जिससे शत–प्रतिशत कार्य राजभाषा हिन्दी में ही हो। श्री राजीव लाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने भी हिन्दी कार्यशाला में भाग लेते हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यालय कार्य हिन्दी में करने का आह्वान किया साथ ही फाइल कवर में प्रशासनिक शब्दावली तथा वाक्यांशों की प्रिंटिग कराने का भी सुझाव दिया जिससे इसका कार्यालय कार्यों में प्रयोग किया जा सके। श्री गौरांग घोष, वित्त एवं लेखा अधिकारी ने भी हिन्दी कार्याशाला में भाग लिया।

डा. रमेश मोहन झा, हिन्दी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, निजाम पैलेस, कोलकाता को मुख्य वक्ता के तौर पर आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अपने व्याख्यान के दौरान राजभाषा नीति, नियम, अधिनियम, हिन्दी व्याकरणिक तथा हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन, वर्तनी की अशुद्धियां, लिंग इत्यादि विषयों पर ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए जो कि प्रतिभागियों के जेहन में अक्षरशः समा गए। उन्होंने प्रतिभागियों को राजभाषा संबंधी अड़चनों से अवगत कराते हुए उनकी व्याकरणिक कमियों को दूर करने के गुर भी सिखाए। सभी प्रतिभागियों ने पूरे सत्र के दौरान बड़े ही उत्साहपूर्वक ज्ञानार्जन किया। उन्होंने हिन्दी टिप्पण तथा मसौदा लेखन का अभ्यास भी कराया तथा उसके बाद खुली चर्चा का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों द्वारा पुछे गए प्रश्नों का सोदाहरण उत्तर दिया। संस्थान के निदेशक, डा. जीबन मित्र तथा सभी प्रभागों के प्रभागाध्यक्ष भी पूरे कार्यशाला सत्र के दौरान मौजूद रहे। इस कार्यशाला का संचालन डा. सुनीति कुमार झा, प्रधान वैज्ञानिक, डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिंदी ने श्री मनोज कुमार राय, सहायक के सहयोग से किया।

भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर

हिन्दी सप्ताह एवं कार्यशाला

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर में दिनांक 14.09.2017 से 21.09.2017 तक हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया। जिसका शुभारम्भ दिनांक 14.09.2017 को दीप

प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर यौगिक खेती एवं पशुपालन द्वारा किसान सशक्तिकरण विषय पर एक हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के तौर पर श्री बी.के. मनीषा, राजयोग शिक्षा एवं फाउण्डेशन कोल्हापुर (महाराष्ट्र) ने शाश्वत यौगिक खेती एवं पशुपालन पर विस्तार से हर पहलू पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. अरूण कुमार तोमर ने अपने सम्बोधन में उपस्थित जन समूह एवं अधिकारियों/कर्मचारियों से आग्रह किया कि वो अपने रोजमर्रा के कार्यों में हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करे और वैज्ञानिकों को आह्वान किया कि वो अपने अनुसंधानों को जन समुदाय के हित में हिन्दी में लेख लिखें। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री का संदेश डॉ. आर. सी. शर्मा, कार्यालय अध्यक्ष ने पढ़कर सुनाया।

हिन्दी सप्ताह के दौरान प्रश्न मंच, वाद–विवाद, कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण, निबंध, तात्कालिक भाषण, श्रुतिलेख, हिन्दी शोध पत्र एवं पोस्टर प्रदर्शन व स्वरचित कविता सहित कुल 9 प्रतियोगिताएं हिन्दी में आयोजित की गयी। धन्यवाद प्रस्ताव व हिन्दी सप्ताह के दौरान होने वाले कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी श्री जगदीश प्रसाद मीना, वरिष्ठ तकनीकी

यौगिक खेती पर संस्थान में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

मरू क्षेत्रीय परिसर बीकानेर में हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन

अधिकारी (राजभाषा) ने प्रदान की। हिन्दी सप्ताह का पुरस्कार वितरण दिनांक 21.09.2017 को निदेशक महोदय एवं मुख्य अतिथियों के द्वारा किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री के.के. सोमानी परियोजना निदेशक (आत्मा) टोंक ने हिन्दी को सभी भाषाओं में एक विशेष स्थान रखने वाली भाषा की संज्ञा दी और उन्होंने कहा कि उनका विभाग सौ प्रतिशत हिन्दी में कार्य करता है। साथ में वैज्ञानिकों/अधिकारियों एवं कर्मचारियों व जनसमूह से आग्रह किया कि वो ज्यादा से ज्यादा हिन्दी में कार्य करने का प्रयास करें।

संस्थान के निदेशक डॉ. अरूण कुमार तोमर ने हिन्दी सप्ताह आयोजकों को बधाई देते हुए कहा कि हिन्दी हमारी राजभाषा है और संस्थान में प्रशासन एवं अन्य विभागों के द्वारा किए जा रहे हिन्दी में कार्य की सराहना की। उन्होंने संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों, और कर्मचारियों को आह्वान किया कि वो संस्थान में हिन्दी कार्य को सौ प्रतिशत के लक्ष्य तक पहुँचाने का प्रयास करें। समारोह में विशेषकर शुष्क अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर से पधारे डॉ. आशुतोष कुमार पटेल ने धन्यवाद पेश करते हुए कहा कि हिन्दी में कार्य करते हुए अपने आप में गौरवान्वित महसूस करना चाहिए। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को अतिथियों द्वारा प्रशंसा पत्र एवं पुरस्कार राशि भेंट की गई। मंच का संचालन डॉ. गौरी जैरथ ने किया। विजयी प्रतिभागियों को उपरोक्त प्रतियोगिताओं में प्रथम 800, द्वितीय 500, एवं तृतीय 300 रू. की राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई।

केन्दीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान के बीकानेर में स्थित मरू क्षेत्रीय परिसर में दिनांक 14 से 20 सितंबर, 2017 तक हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। उद्‌घाटन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. त्रिभुवन शर्मा अधिष्ठाता पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर ने बताया कि देश की उत्तरोत्तर प्रगति मौलिक भाषा द्वारा ही संभव है। श्री अनिल शर्मा, सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर पश्चिम रेलवे, बीकानेर ने कम्प्यूटर पर यूनिक

कोड़ में हिन्दी वाईस टंकण के बारे में प्रशिक्षण दिया। उद्घाटन समारोह में डॉ. ए.के. पटेल प्रभागाध्यक्ष ने बताया कि कार्यालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी स्वतः ही हिन्दी में काम करते हैं। हिन्दी को बढ़ावा देने में मनोरंजन व विज्ञापन का बहुत योगदान है। अधिक से अधिक भाषा ज्ञान द्वारा मनुष्य प्रगति कर सकता है। उन्होंने हिन्दी सप्ताह में आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं के बारे में बताया एवं आग्रह कर अधिक से अधिक भाग लेने का आह्वान किया।

संस्थान के उत्तरी शीतोष्ण क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र गड़सा द्वारा भी दिनांक 14.09.2017 से 21.09.2017 तक आयोजित किए गए हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन दिनांक 14.09.2017 को माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय जल ऊर्जा निगम लिमिटेड के अन्तर्गत पार्बती जल विद्युत परियोजना चरण–तृतीय बिहाली (कुल्लू) के सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव नराकास, श्री देश राज, ने मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए कहा कि हमें राजभाषा हिन्दी में काम काज करने को बोझ एवं बाध्यता नहीं समझते हुए अपनी राजभाषा को बढ़ावा देना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केन्द्र के अध्यक्ष एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ओमहरी चतुर्वेदी ने कहा कि हमारे देश के संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। हिन्दी हमारी संस्कृति एवं जीवन शैली है तथा देश के लगभग 45 प्रतिशत मातृ भाषा हिन्दी है। इस अवसर पर उन्होंने "हरित भारत स्वच्छ भारत" नामक कविता का पाठ भी किया। केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. इन्द्र सैन चौहान ने हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित की जाने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे प्रश्न मंच, श्रुतलेखन, निबन्ध लेखन, इत्यादि के बारे में जानकारी दी। आयोजित हिन्दी सप्ताह के समापन अवसर पर डॉ. एस.एस. सामन्त, प्रभारी वैज्ञानिक गोबिन्द बल्लभ पन्त राष्ट्रीय पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान, हिमाचल इकाई, कुल्लू ने बतौर मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुये कहा कि राजभाषा हिन्दी देश का गौरव है।

पुरस्कार/सम्मान

संस्थान के निदेशक डॉ. अरूण कुमार तोमर तथा उनकी टीम को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 89वें स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 16 जुलाई, 2017 को उनकी हिन्दी तकनीकी पुस्तक "उन्नत भेड़ पालन" के लिए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पुरस्कार माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह के द्वारा प्रदान किया गया। यह पुरस्कार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.

आर.), नई दिल्ली द्वारा पशु एवं मत्स्य विज्ञान श्रेणी के अन्तर्गत प्रदान किया गया था। जिसके अन्तर्गत उनको पुरस्कार स्वरूप एक लाख रुपये नकद और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

प्रमुख उपलब्धियाँ

- संस्थान के सभी प्रभागों/अनुभागों एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों को परिषद से प्राप्त राजभाषा का वार्षिक कार्यक्रम 2017–18 जारी किया गया।
- वार्षिक कार्यक्रम के दिशा निर्देशानुसार संस्थान के सभी प्रभागों/अनुभागों एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र गड़सा, मन्नावनूर एवं बीकानेर को राजभाषा संबंधी निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु परिपत्र जारी किए गए।
- संस्थान की हिन्दी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट निर्धारित समय पर परिषद को भिजवाई गई।
- संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की निर्धारित तिमाही बैठकें आयोजित की गई।
- नराकास को समय पर छमाही हिन्दी की प्रगति रिपोर्ट भेजी गई।
- नराकास के द्वारा आयोजित हिन्दी बैठकों में निदेशक एवं हिन्दी अधिकारी द्वारा सहभागिता की गई।
- परिषद के निर्देशानुसार संस्थान में हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया।
- संस्थान के कर्मचारियों के लिए हिन्दी प्रोत्साहन योजना को परिषद द्वारा निर्धारित राशि के अनुसार कार्यान्वित किया गया।
- संस्थान में हिन्दी पुस्तिका/फोल्डर एवं वार्षिक प्रतिवेदन हिन्दी/द्विभाषी में प्रकाशित किए गए।
- संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिकों के द्वारा हिन्दी शोध पत्र विभिन्न हिन्दी जर्नलों में भेजे गए।

हिन्दी प्रकाशन

- उन्नत भेड़ पालन
- व्यावसायिक भेड़, बकरी व खरगोश पालन
- दुम्बा भेड़ (शीघ्र वृद्धि एवं अधिक शारीरिक भार वाली भेड़)
- मालपुरा भेड़ (मेगा शीप सीड परियोजना)
- वार्षिक भेड़ पालन कार्यक्रम

द्विभाषी प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन 2016–17
- मालपुरा शीप ब्रीडर्स सूचना बुलेटिन

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधान संस्थान, राजमुन्द्री

पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी संस्थान में दिनांक 14 सितंबर से 20 सितम्बर 2017 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस समारोह का उद्घाटन दिनांक 14 सितंबर, 2017 को डॉ. डी. दामोदर रेड्डी, निदेशक के कर कमलों द्वारा ज्योति प्रज्जवलित कर किया गया। इस सप्ताह के दौरान अंग्रेजी या तेलूगु में एक क्रमिक विषय को हिन्दी में अनुवाद, अंग्रेजी शब्दावली से हिन्दी में अनुवाद, प्रश्न मंच और शब्द ज्ञान प्रतियोगिता, निबंध लेखन, आशु–भाषण, कविताओं, गीतों व गजलों में प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों और कुशल सहायी कर्मचारियों ने काफी संख्या में भाग लिया। इस संस्थान के निदेशक ड़ॉ. डी. दामोदर रेड्डी ने उद्घाटन एवं समापन समारोह की अध्यक्षता की और मुख्य अतिथि के रूप में ड़ॉ. एस. रविचन्द्र राव, हिन्दी प्राध्यापक उपस्थित थे। इस सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

हिन्दी सप्ताह उद्घाटन समारोह

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, त्रिवेन्द्रम

हिन्दी पखवाड़ा

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सिफारिश के अनुसार दिनांक 14 से 28 सितम्बर 2017 तक इस संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा समारोह मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने निबंध लेखन, अनुवाद, भाषण, कविता – पाठ, खुला मंच, सुलेख, अन्ताक्षरी एवं सिर्फ एक मिनट प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त किए।

डॉ.अर्चना मुखर्जी, निदेशक और अध्यक्ष (राजभाषा), भा.कृ.अनु.प–केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, तिरुवनन्तपुरम ने अध्यक्षीय भाषण दिया। उन्होंने हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए समारोह का उद्घाटन किया। डॉ. आशा देवी, प्रधान वैज्ञानिक और संपर्क अधिकारी (राजभाषा) ने सभी का स्वागत किया। 40 प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग ले कर विविध पुरस्कार प्राप्त किए।

हिंदी पखवाड़ा समारोह का समापन समारोह 15 नवंबर 2017 को आयोजित किया गया। डॉ. जेम्स जोर्ज, निदेशक, प्रभारी ने समारोह की अध्यक्षता की। समापन समारोह के अवसर पर आमंत्रित विशेष अतिथि, श्री मोहन चौधरी, सहायक निदेशक(राजभाषा) एवं सदस्य–सचिव (नराकास), मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल के कार्यालय, तिरुवनंतपुरम द्वारा सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया। इसके अलावा विशेष पुरस्कार योजना के अंतर्गत अधिकतम काम हिंदी में किए गए प्रतिभागी को भी रुपये 5000/– के नकद पुरस्कार वितरित किए गए। अंत में श्रीमती टी. के. सुधालता, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (हिंदी) के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

हिंदी कार्यशाला

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में इस संस्थान के सभी कर्मचारियों के लिए 15.11.2017 को "टिप्पण, आलेखन और राजभाषा कार्यान्वयन" पर एक दिन की हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। डॉ. जेम्स जॉर्ज निदेशक–प्रभारी, भा.कृ.अनु.प– केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, तिरुवनन्तपुरम ने अध्यक्षीय भाषण दिया। उन्होंने हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कार्यशाला का उद्घाटन किया। डॉ. आशा देवी, प्रधान वैज्ञानिक और संपर्क अधिकारी (राजभाषा) ने सभी का विशेष रूप से श्री मोहन चौधरी, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सदस्य–सचिव (नराकास), मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल के कार्यालय, तिरुवनंतपुरम का स्वागत किया। श्री मोहन चौधरी ने "टिप्पण, आलेखन और राजभाषा कार्यान्वयन" पर वक्तव्य दिया। कुल 34 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतिभागियों की राय थी कि इस तरह की कार्यशालाओं की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए क्योंकि उन्हें यह बहुत फायदेमंद लगीं। श्रीमती टी. के सुधालता, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (हिंदी) ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया और श्री मोहन चौधरी के वक्तव्य की सराहना की और सभी प्रतिभागियों से हिंदी कार्यशाला में प्राप्त किए गए ज्ञान का उपयोग नियमित रूप से कार्यालय में हिन्दी में सरकारी कामकाज करने के लिए अनुरोध किया।

इस संस्थान के वैज्ञानिकों ने, डॉ. पी. अरुण कुमार और डॉ. ए.वी.वी. कौंडिन्या, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनंतपुरम द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लिया और उन्होंने क्रमशः निबंध लेखन प्रतियोगिता में तीसरा पुरस्कार और तस्वीर क्या बोलती है में प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। इसके अलावा, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से भी विशेष पुरस्कार योजना के अंतर्गत अधिकतम काम हिंदी में करने के लिए प्रतिभागी श्री टी. विजयकुमार कुरुप, सहायक ने भी पुरस्कार प्राप्त किया।

डॉ. शरवणन राजू, वरिष्ठ वैज्ञानिक और डॉ. एस कार्तिकेयन, तकनीकी सहायक, भा.कृ.अनु.प–केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान ने केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, हिंदी पत्राचार पाठ्यक्रम विंग, नई दिल्ली की हिंदी प्रबोध पत्राचार पाठ्यक्रम में भाग लिया और 18 मई 2017 को परीक्षा पास की। हर एक प्रतिभागी को रुपये 1600/– का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया तथा प्रमाण पत्र भी दिए गए।

13 वैज्ञानिकों/कर्मचारियों ने (जिनको हिंदी में ज्ञान नहीं है) पत्राचार पाठ्यक्रम के तहत हिंदी प्रबोध प्रशिक्षण के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, हिंदी पत्राचार पाठ्यक्रम विंग, नई दिल्ली में नामांकन किए। पहला संपर्क कार्यक्रम 18.12.2017 और 19.12.2017 को ऑल इंडिया रेडियो, तिरुवनंतपुरम में आयोजित किया गया और प्रशिक्षण के लिए भेजा गया ।

भा.कृ.अनु.प.–औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आनन्द

हिन्दी सप्ताह

निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में 08–14 सितंबर, 2017 के दौरान हिन्दी सप्ताह हर्षोल्लास से मनाया गया, जिसके अन्तर्गत हिन्दी के प्रयोग को बढावा देने हेतु अनेक रुचिकर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस दौरान हिन्दी निबंध, हिन्दी पत्र लेखन, सामान्य हिन्दी ज्ञान, हिन्दी ज्ञान प्रश्नोत्तरी, व्याख्यान व काव्यपाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

हिन्दी सप्ताह का प्रारंभ 08 सितंबर, 2017 को हिन्दी पत्रलेखन प्रतियोगिता के साथ प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर डॉ. शिव प्रसाद शुक्ल, उप प्राचार्य, हिन्दी विभाग, नलिनी आर्टस कॉलेज, वल्लभ विघानगर, आणंद को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। निदेशालय के निदेशक डॉ. पी. मणीवेल ने हिन्दी दिवस समारोह की अध्यक्षता की। समारोह के दौरान व्याख्यान व काव्यपाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में निदेशक डॉ. पी. मणीवेल ने मुख्य अतिथि को गुलदस्ता भेंट कर स्वागत किया। तत्पश्चात डॉ. राम प्रसन्न मीना ने अपने स्वागत भाषण में मुख्य अतिथि महोदय का स्वागत करते हुए उनका लघु जीवन परिचय सभा के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने निदेशालय में हिन्दी से संबंधित चल रही गतिविधियों के बारे में भी प्रकाश डाला। स्वागत भाषण के पश्चात व्याख्यान व काव्यपाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनका संचालन व मूल्यांकन मुख्य अतिथि महोदय ने किया। सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रोत्साहन पुरस्कार मुख्य अतिथि महोदय के कर कमलों द्वारा प्रदान किए गए। पुरस्कार वितरण समारोह के उपरान्त मुख्य अतिथि महोदय ने विश्व स्तर पर हिन्दी के बढ़ते कदम

की सराहना करते हुए इतिहास के माध्यम से बताया की हिन्दी भाषा एक समन्वित भाषा है, जिसमें कई भाषाओं के शब्द समाहित है।

समारोह के अंत में डॉ. राम प्रसन्न मीना, हिन्दी अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन मुख्य अतिथि, निदेशालय के निदेशक, राजभाषा समिति सदस्यों, विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रतिभागी, कार्यक्रम में सहयोगीजनों, सभी कर्मचारीगण जिन्होंने परोक्ष व अपरोक्ष रूप से अपना सहयोग दे कर इस कार्यक्रम को सफल बनाया, उन सबका आभार व्यक्त किया।

हिंदी कार्यशाला

इस वर्ष के दौरान निदेशालय के राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा दो कार्यशालाएं आयोजित की गई। दिनांक 25 मार्च, 2017 को 'मानक वर्तनी और व्याकरण' विषय पर प्रथम कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में निदेशालय के सभी श्रेणी के कार्मिकों ने भाग लिया। कार्यशाला में तीन सत्रों का आयोजन किया गया था।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में 'मानक वर्तनी और व्याकरण' विषय पर मुख्य वक्ता डॉ. दिलीप मेहरा ने गुजराती और हिन्दी के वर्तनी और व्याकरण में अंतर तथा होने वाली त्रुटियों पर प्रकाश डालते हुए सरल हिन्दी के प्रयोग करने पर बल दिया। पत्रलेखन में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ व उनका निवारण भी बताया।

कार्यशाला के दूसरे सत्र में मुख्य वक्ता श्री राम प्रसन्न मीना ने 'विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में हिन्दी का महत्व' विषय पर विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए बताया की मातृभाषा हिन्दी कैसे वैश्वीकरण के दौर में भारत को अग्रिम पंक्ति में रखने में सहायक हो सकती है तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में कैसे अपना योगदान दे सकती है।

भोजन के पश्चात तृतीय सत्र में 'हिन्दी निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया, जिसमें निदेशालय के सभी श्रेणी के कार्मिकों ने उत्साह के साथ भाग लिया। मूल्यांकन के पश्चात पूर्व निदेशक डॉ. जितेन्द्र कुमार, कार्यकारी निदेशक डॉ. पी. मणिवेल एवं मुख्य वक्ता द्वारा विजेताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार तथा अन्य को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. वी. थोंडइमान, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–औसपाअनुनि, बोरीआवी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यशाला का विधिवत समापन हुआ।

द्वितीय कार्यशाला दिनांक 14 सितंबर, 2017 को 'हिन्दी का राष्ट्र उत्थान में महत्व' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में तीन सत्रों का आयोजन किया गया था। कार्यशाला के प्रथम सत्र में 'हिन्दी का राष्ट्र उत्थान में महत्व' विषय पर वक्ता सुश्री सिद्धी पी. पटेल ने प्राचीनकाल में हिन्दी से जुड़े महाराजाओं का विवरण देते हुए वर्तमान में हिन्दी के विस्तार पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। कार्यशाला के दूसरे सत्र में 'हिन्दी का प्रयोग एवं उपयोगिता' विषय पर मुख्य वक्ता डॉ. सत्यांशु कुमार, प्रधान वैज्ञानिक ने आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक कवियों का हवाला देते हुए सरल हिन्दी का प्रयोग करने पर बल दिया। तृतीय सत्र में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें निदेशालय के सभी श्रेणी के कार्मिकों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

पुरस्कार

हिन्दी कार्यो (20 हजार शब्द) के लिए निदेशालय द्वारा श्री बी. के. मिश्र एवं श्री रघुबीर प्रजापति को प्रथम पुरस्कार; प्रति पुरस्कार रु. 5000/– एवं श्री सुरेश एस. पटेलिया को द्वितीय पुरस्कार; रु. 3000/– दिया गया।

प्रमुख उपलब्धियां

- 'लाभदायक औषधीय एवं सगंधीय पादपों की खेती' पर 22 जुलाई, 2017 को वलासण, गुजरात में किसान प्रशिक्षण आयोजित किया गया।
- 'बहुवर्षीय औषधीय एवं सगंधीय पादपों की खेती' पर 11 अगस्त, 2017 को खणशोल, गुजरात में किसान प्रशिक्षण आयोजित किया गया।
- 'औषधीय एवं सगंधीय पादपों की खेती और प्राथमिक प्रसंस्करण' पर 28 अगस्त, 2017 महेसाणा, गुजरात में किसान प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

- औषधीय एवं सगंधीय पादपों पर दो दिवसीय (14–15 सितंबर, 2017) जिला स्तरीय संगोष्ठी एवं हितधारक मिलन आयोजित किया गया।
- किसानों के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम के तहत 'औषधीय एवं सगंधीय पादपों की समुद्र प्रभावित अनुपयोगी भूमि में खेती' विषय पर 21 दिसबंर, 2017 को एक दिवसीय आदिवासी किसान प्रशिक्षण टैंकरारी, जंबुसर, भरूच, गुजरात में दिया गया।

भा.कृ.अनु.प.–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय, पुणे

भा.कृ.अनु.प.–प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय, राजगुरूनगर, पुणे में दिनांक 14.09.2017 से 28.09.2017 तक हिन्दी पखवाडा मनाया गया। दिनांक 14.09.17 को हिन्दी दिवस के दिन से हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ, हिन्दी कार्यशाला के साथ किया गया। हिन्दी कार्यशाला में श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, हिन्दी शिक्षण योजना पुणे ने कार्यक्रम में कंप्यूटर एवं मोबाईल पर हिन्दी में वाणी लेखन द्वारा टंकण की जानकारी दी। जिसके माध्यम से अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहित भी किये, जिसकी अध्यक्षता प्रभारी निदेशक डॉ. वी. महाजन ने की एवं मंच संचालन श्री पी. एस. तंवर, सहायक प्रशासनिक अधिकारी/प्रभारी हिन्दी अधिकारी ने किया एवं श्री शीतांशु कुमार, प्रशासनिक अधिकारी ने आभार प्रदर्शित किया ।

हिन्दी पखवाडे के दौरान आयोजित हिन्दी कार्यशाला में प्रशिक्षण लेते हुए कार्मिक

हिन्दी पखवाडे के दौरान निदेशालय में निबंध, हिन्दी वर्तनी/श्रुतिलेख, प्रश्नक मंजुषा, हिन्दी अनुवाद एवं वाद–विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था जिसमें निदेशालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया ।

हिन्दी पखवाडे का समापन समारोह दिनांक 28.09.2017 को अपरान्ह में निदेशक महोदय डॉ. मेजर सिंह द्वारा सर्वप्रथम मुख्य अतिथि डॉ. ज्ञानचंद मिश्र, निदेशक (सेवानिवृत्त), राष्ट्रीय कोशिका विज्ञान केंद्र, पुणे का पुष्प गुच्छ, श्रीफल एवं शाल देकर स्वागत किया गया। स्वागत के पश्चात् निदेशक महोदय एवं मुख्य अतिथि महोदय के भाषणों के संबोधन के पश्चात् विजेता प्रतियोगियों को मुख्य अतिथि महोदय से पुरस्कार वितरित किए गए एवं मंच संचालन श्री पी. एस. तंवर, सहायक प्रशासनिक अधिकारी/प्रभारी हिन्दी अधिकारी ने किया एवं श्री शीतांशु कुमार, प्रशासनिक अधिकारी ने आभार प्रदर्शित किया। हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन मुख्य अतिथि एवं निदेशक महोदय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

हिन्दी पखवाडा कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. ज्ञानचंद मिश्र, निदेशक (सेवानिवृत्त), राष्ट्रीय कोशिका विज्ञान केंद्र, पुणे का पुष्प गुच्छ, श्रीफल एवं शाल दे कर स्वागत करते हुए डॉ. मेजर सिंह, निदेशक, प्याज एवं लहसुन अनुसंधान निदेशालय, पुणे

हिन्दी पखवाडा कार्यक्रम के विजेताओं को पुरस्कार देते हुए मुख्य अतिथि

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर

हिन्दी पखवाड़ा

सोयाबीन उत्पादन तकनीकी के विकास एवं प्रचार प्रसार हेतु सतत् प्रयासरत इंदौर स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के शीर्षस्थ संस्थान भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान में दिनांक 01–14 सितम्बर 2017 के दौरान "हिन्दी पखवाड़ा" आयोजित किया गया।

दिनांक 01 सितम्बर को "हिन्दी पखवाड़े" के शुभारम्भ के अवसर पर भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. वी. सिंह भाटिया ने अपने संबोधन में विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में हिन्दी की बढ़ती हुई आवश्यकता पर जोर दिया तथा संस्थान द्वारा राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयासों की सराहना की । संस्थान के प्रभारी अधिकारी – राजभाषा एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अमर नाथ शर्मा ने पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं

हिन्दी पखवाड़ा 2017 के दौरान दीप प्रज्जवलित करते हुए निदेशक, डॉ. वी.सिंह भाटिया सहित डॉ. अमर नाथ शर्मा, प्र.वै. तथा प्रभारी अधिकारी राजभाषा एवं डॉ. एस.डी.बिल्लौरे, प्र.वै.

से संबंधित जानकारियों का साझा किया । "हिन्दी– पखवाड़ा 2017" के दौरान संस्थान में आयोजित होने वाली "श्रुति लेखन, हिन्दी कार्यशाला, त्वरित आशु भाषण, कविता पाठ, टिप्पण लेखन, निबंध लेखन, प्रस्तुतीकरण कुशलता एवं प्रश्नमंच प्रतियोगिताओं" का आयोजन समयानुसार किया गया।

दिनांक 14 सितम्बर 2017 को आयोजित "हिन्दी पखवाड़ा– पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह" के अवसर पर विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। साथ ही केंद्र सरकार की प्रति वर्ष आयोजित होने वाली "हिन्दी प्रोत्साहन योजना 2016–17" के अंतर्गत नियमित रूप से राजभाषा का प्रयोग करने वाले कर्मियों को भी पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया गया ।

संस्थान के तिमाही हिन्दी कार्यशाला में सम्मिलित संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारीगण तथा अतिथि प्रवक्ता डॉ. पद्मा सिंह

प्रमुख उपलब्धियाँ

- संस्थान में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले कागजातों को द्विभाषी रूप में जारी किया गया ।

हिन्दी कार्यशाला

क्र.सं.	दिनांक	विषय	अतिथि वक्ता
1.	06 मार्च 2017	हिन्दी का सरलतापूर्वक उपयोग	श्री मोहन लाल शर्मा, सेवानिवृत्त प्राध्यापक (हिन्दी), इंदौर
2.	07 जून 2017	हिन्दी भाषा: स्तरीय स्वरूप एवं आवश्यकता	डॉ. शोभा चतुर्वेदी, सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शासकीय निर्भय सिंह पटेल विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर
3.	04 सितम्बर 2017	राजभाषा के प्रति समर्पण और विकास के आयाम	डॉ. जयश्री बंसल, प्राध्यापक हिन्दी, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर
4.	07 दिसम्बर 2017	कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग– समस्या और समाधान	डॉ. पद्मा सिंह, पूर्व प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष – तुलनात्मक भाषा अध्ययन शाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

- राजभाषा नियम 1976 के अंतर्गत नियम–5 का पालन किया गया ।
- 'क' और 'ख' क्षेत्रों से प्राप्त अंग्रेजी के पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया गया ।
- 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों को हिन्दी में भेजे गए कुल पत्रों का प्रतिशत 97–100 था ।
- फाइलों / दस्तावेजों पर लिखी गई टिप्पणियाँ हिन्दी में 98–100 प्रतिशत थी ।
- शीर्षस्थ (मंत्रालय/विभाग में संयुक्त सचिव स्तर तथा अन्य कार्यालयों आदि में प्रशासनिक प्रमुख/कार्यालय प्रमुख स्तर की अध्यक्षता में आयोजित बैठकें) प्रशासनिक बैठकें शत–प्रतिशत हिन्दी में की गई ।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक प्रत्येक तिमाही में समयानुसार आयोजित की गई।
- तिमाही एवं छमाही रिपोर्ट को निर्धारित समय में ऑनलाइन एवं संबंधित कार्यालय को प्रेषित किया गया ।
- संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए तिमाही हिन्दी कार्याशाला का सुचारू रूप से आयोजन किया गया।
- राजभाषा की प्रेरणा और प्रगति के उद्देश्य को पूरा करते हुए संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने हेतु निरंतर प्रोत्साहित किया गया जिससे राजभाषा संबंधित वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति सरलता से की जा सके ।
- क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य), भोपाल के द्वारा निरीक्षण संबंधी समस्त व्यवस्था को व्यवस्थित किया गया।
- भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए मध्य क्षेत्रीय स्थित कार्यालय में से संस्थान को वर्ष 2016–17 के लिए प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया ।
- संस्थान के नवनियुक्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा नियमवाली 1976 के अंतर्गत नियम 8(4) के तहत सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के लिए निर्देशित किया गया ।
- संस्थान की वेबसाइट को शत् प्रतिशत द्विभाषी एवं अद्यतित बनाए रखने का निरंतर प्रयास किया गया।
- संस्थान में हिन्दी माध्यम से ही किसान भाईयों को तकनीकी जानकारी प्रदान की गई तथा इसके प्रचार–प्रसार के लिए विस्तार बुलेटिन, फोल्डर्स, कैलेण्डर, पम्प्लेट्स आदि का प्रकाशन हिन्दी में किया गया ।
- संस्थान में ''सोयाबीन उत्पादन की प्रेरणादायक सफलता की गाथा'' का भी प्रकाशन हिन्दी में किया गया ।
- संस्थान की फिल्म का हिन्दी वीडियो तैयार किया गया।

पुरस्कार/सम्मान

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 12 जनवरी 2018 को राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह (मध्य एवं पश्चिम क्षेत्र) का आयोजन राष्ट्रीय केमिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड, गंगाधर देशमुख सभागार में आयोजित की गई। जिसमें मध्य (मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ) एवं पश्चिम (महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा, दमण दीव, दादर एवं नागर हवेली) के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों सहित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को राजभाषा में किए गए उत्कृष्ट कार्यों हेतु उन्हें राजभाषा पुरस्कार वर्ष 2016–17 प्रदान किया गया । इस गरिमामयी समारोह में भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इन्दौर को वर्ष 2016–17 के लिए प्रथम राजभाषा पुरस्कार प्रदान किया गया । पुरस्कार वितरण समारोह में माननीय राज्यपाल, महाराष्ट्र श्री चेन्नमनेनी विद्यासागर राव जी, श्री रजनीश कुमार, अध्यक्ष, भारतीय स्टेट बैंक, श्रीमती आशा अग्रवाल, मुख्य आयकर आयुक्त, गुजरात–अहमदाबाद एवं श्री प्रभास कुमार झा, सचिव, राजभाषा विभाग गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में संस्थान को शील्ड तथा संस्थान के श्री विकास कुमार केशरी, हिन्दी अनुवादक को प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया गया ।

मध्य क्षेत्रीय राजभाषा प्रथम पुरस्कार वर्ष 2016–17 प्राप्ति के उपरांत संस्थान के निदेशक, डॉ. वी.सिंह भाटिया, डॉ. अमरनाथ शर्मा, प्रभारी हिन्दी अधिकारी, श्री श्यामकिशोर वर्मा, स.स.रा.भा. का.स. (बाएँ) एवं श्री विकास कुमार केशरी, हिन्दी अनुवाद (दाएँ)

हिन्दी प्रकाशन

- विस्तार बुलेटिन
- फोल्डर्स
- कैलेण्डर
- पम्प्लेट्स
- सफलता गाथा
- वीडियो फिल्म

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, मेघालय

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान के तत्वावधान में दिनांक 04.09.17 से 18.09.17 तक हिन्दी पखवाड़ा का भव्य आयोजन किया गया। संस्थान के डॉ. एस. के दास, प्रभारी निदेशक, डॉ. ए. के. मिश्रा प्रभागाध्यक्ष एवं प्रभारी राष्ट्रीय पादप संसाधन ब्यूरो, उमियम डॉ. के. के दत्ता (संकाय अध्यक्ष) केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे। प्रभारी उपनिदेशक (राभा) श्री एस. आर. बरूआ तथा हिन्दी पखवाड़ा समारोह कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. अर्नब सेन, प्रभागाध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ किया गया। इस कार्यक्रम में सभी वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थिति थे ।

मुख्य अतिथि डॉ. ए. के मिश्रा (राष्ट्रीय पादप संसाधन ब्यूरो), ने इस अवसर पर संबोधित किया। उसके पश्चात श्री एस. आर. बरूआ, प्रभारी उपनिदेशक (रा.भा) द्वारा राजभाषा प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। प्रभारी निदेशक डॉ. एस. के दास ने भी हिन्दी सप्ताह पर अपने विचार प्रकट किए, डॉ. के. के दत्ता (संकाय अध्यक्ष) केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, उमियम द्वारा हिन्दी भाषा पर अपने विचार प्रस्तुत किए। तत्पश्चात हिन्दी पखवाड़ा की रूपरेखा व कार्यक्रमों की घोषणा की गई। अन्त में डॉ अर्नब सेन, हिन्दी पखवाड़ा समारोह के सदस्य द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। इस वर्ष आयोजित किए गए हिन्दी पखवाड़े के कार्यक्रमों की रूपरेखा निम्न प्रकार थी: –

दिनांक 04 सितम्बर, 2017 को हिन्दी कविता पाठन प्रतियोगिता तीन वर्गों जैसे हिन्दी भाषी, अहिन्दी भाषी और पूर्वोत्तर वासियों के लिए अलग–अलग रखा गया था एवं सभी प्रतिभागियों ने इस पर अपनी स्वरचित कविता एवं अन्य कविता प्रस्तुत की। इसमें भी कुल 9 लोगों को पुरस्कार के लिए चयनित किया गया।

दिनांक 05 सितम्बर, 2017 को पूर्वोत्तर में पर्यटन हिन्दी निंबध लेखन प्रतियोगिता तीन वर्गों जैसे हिन्दी भाषी, अहिन्दी भाषी और पूर्वोत्तर वासियों के लिए अलग–अलग रखा गया था एवं सभी प्रतिभागियों ने इस पर अपना लेख प्रस्तुत किये। इसमें भी कुल 9 लोगों को पुरस्कार के लिए चयनित किया गया।

दिनांक 06 सितम्बर, 2017 का तात्कालिक वाक् प्रतियोगिता तीन वर्गों जैसे हिन्दी भाषी, अहिन्दी भाषी और पूर्वोत्तर वासियों के लिए अलग–अलग रखा गया था एवं सभी प्रतिभागियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। कुल 9 लोगों को पुरस्कार के लिए चयनित किया गया।

वाद–विवाद प्रतियोगिता तीन वर्गों जैसे हिन्दी भाषी, अहिन्दी भाषी और पूर्वोत्तर वासियों के लिए अलग–अलग रखा गया था एवं सभी प्रतिभागियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। इसमें भी कुल 9 लोगों को पुरस्कार के लिए चयनित किया गया।

दिनांक 07 सितम्बर, 2017 को मूक अभिनय प्रतियोगिता सभी तीनों वर्गों जैसे हिन्दी भाषी, अहिन्दी भाषी और पूर्वोत्तर वासियों को मिलाकर एक समूह बनाया गया। इसमें सभी समूह सम्मिलित हुए तथा मौखिक रूप से सामान्य प्रश्न पूछे गए। इसमें भी कुल 09 लोगों को पुरस्कार के लिए चयनित किया गया।

दिनांक 08 सितम्बर, 2017 को अंताक्षरी प्रतियोगिता सभी तीनों वर्गों जैसे हिन्दी भाषी, अहिन्दी भाषी और पूर्वोत्तर वासियों को मिलाकर एक समूह बनाया गया। इस में सभी समूह सम्मिलित हुए तथा मौखिक रूप से सामान्य प्रश्न पूछे गए। इसमें भी कुल 09 लोगों को पुरस्कार के लिए चयनित किया गया।

दिनांक 18 सितम्बर, 2017 को हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ. आर. लाहा भी मौजूद थे। इस सभा के मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. ए. के मिश्रा (राष्ट्रीय पादप संसाधन ब्यूरो), डॉ अंजनी

हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह

हिन्दी सप्ताह के विजयी प्रतिभागियों को निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कृत किया गया

कुमार झा (उद्यान–विज्ञान प्रभाग) एवं श्री एस. आर. बरूआ प्रभारी उपनिदेशक (रा.भा.) उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरूआत राष्ट्रीय गान के साथ की गई। तत्पश्चात मुख्य अतिथि डॉ. ए. के मिश्रा (राष्ट्रीय पादप संसाधन ब्यूरो) द्वारा हिन्दी पखवाड़ा पर विचार प्रकट किए। डॉ अंजनी कुमार झा (उद्यान–विज्ञान प्रभाग) द्वारा हिन्दी भाषा के महत्व पर जोर दिया गया। विभिन्न प्रवक्ताओं द्वारा हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर अपने विचार प्रकट किए गए। श्री अमरेश ठाकुर एवं श्री विकास झा द्वारा कविता प्रस्तुत की गई। डॉ. आर. लाहा ने हिन्दी राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। अपने सम्बोधन में प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि आप सभी ने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से इन कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर हिन्दी राजभाषा के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित किया है। सभी प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए गए। तदुपरान्त प्रभारी उप निदेशक (रा.भा.) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव दिया गया।

निर्णायक मडंल को प्रतीक चिन्ह द्वारा पुरस्कृत किया गया

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी

हिन्दी सप्ताह

संस्थान में 14 सितम्बर, 2017 से हिन्दी सप्ताह का आयोजन संस्थान के कार्यवाहक निदेशक डा. खेमचन्द की अध्यक्षता में द्वीप प्रज्जवलन के साथ शुभारम्भ किया गया। कार्यवाहक निदेशक ने समस्त कार्मिकों को अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने की शपथ दिलाई।

माननीय गृहमंत्री भारत सरकार एवं माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री भारत सरकार के संदेश का वाचन प्रभारी राजभाषा, डा. सुनील कुमार ने किया। सप्ताह के अंतर्गत आयोजित हिन्दी में मौलिक लेखन, मसौदा एवं टिप्पणी लेखन, कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण, शोध–पत्र, पोस्टर प्रदर्शन, निबन्ध, भाषण, स्वरचित कविता पाठ एवं वाद–विवाद अहिन्दी भाषी प्रतियोगिताओं के संबंध में नीरज कुमार दुबे ने जानकारी प्रदान की।

समापन कार्यक्रम राजीव सिंह ''पारीछा'' माननीय विधायक–बबीना मुख्य अतिथि एवं संस्थान के निदेशक डा. आर.वी. कुमार की अध्यक्षता में किया गया। मुख्य अतिथि राजीव सिंह ने अपने उद्बबोधन में हिन्दी को गौरव, वैभव बढ़ाने वाली व्यवहरिक, प्रभावशाली एवं विस्तृत भाषा बताते हुए मन के भावों को व्यक्त करने वाली एवं दिलों को जोड़ने वाली भाषा बताया। उन्होंने कहा व्यवहारिक भाषा होने पर सभी को अधिक अवसर उपलब्ध होगे। डा. आर.वी. कुमार ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में हिन्दी के विकास के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति से दिशा निर्देशों के अनुरूप हिन्दी में शतप्रतिशत कार्य करने की आवश्यकता बतायी।

मुख्य अतिथि ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर पुरस्कृत किया एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए तथा वार्षिक पुरस्कार योजना के विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत किया। कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र को वर्ष पर्यन्त कार्य के लिए चल वैजन्ती एवं फार्म मशीनरी एवं कटनोत्तरी तकनीकी विभाग को हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने पर विशिष्ट सम्मान पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। उद्घाटन एवं समापन कार्यक्रम का संचालन डा. सुनील कुमार एवं आभार नीरज कुमार दुबे ने किया।

मुख्य अतिथि माननीय विधायक–बबीना राजीव सिंह पुरस्कार देते हुए

हिन्दी कार्यशाला

प्रथम कार्यशालाः भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी में 7 मार्च, 2017 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन श्री एम.एम. भटनागर, राजभाषा अधिकारी, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, झाँसी, मुख्य अतिथि एवं डा. के. एन. सचान, पूर्व वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी भारत हैवी इलैक्टिकल लिमिटेड, विशिष्ट अतिथि तथा कार्यवाहक निदेशक डा. ए.के. राय, की अध्यक्षता में किया गया। डा. ए.के. राय ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में राजभाषा के निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शासकीय कार्यो में अधिकतम हिन्दी का प्रयोग करने की

आवश्यकता को इंगित करते हुए कार्य करने का आह्वान किया। डा. सचान ने अपने उद्‌बोधन में शासकीय कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग, नोटिंग–ड्राफटिंग एवं व्यावहारिक कार्य के संबंध में बताया। कार्यशाला में प्रशासनिक–तकनीकी श्रेणी के 15 कार्मिकों ने भाग लिया।

द्वितीय कार्यशालाः संस्थान में 21 जून, 2017 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन डा. एन.डी. समाधिया, पूर्व प्राचार्य डी.बी.कालेज उरई के मुख्य अतिथि तथा संस्थान निदेशक डा. पी.के. घोष की अध्यक्षता में किया गया। डा. पी. के. घोष ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में क क्षेत्र के लक्ष्यों के अनुरूप पूर्ण मनोयोग से कार्य करने का आह्वान किया। कार्यशाला में डा. एन.डी. समाधिया ने अपने उद्‌बोधन में हिन्दी कार्य के प्रति उदासीनता दूर करने एवं हिन्दी में कार्य करते हुए उसकी वृद्धि के प्रयास को रेखाकिंत किया। डा. नवेन्द्र सिंह, प्रवक्ता, बुन्देलखण्ड महाविद्यालय ने अपने व्याख्यान में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग एवं उसके महत्व को बताया। कार्यक्रम में विभाग के अधिकारी–कर्मचारी श्रेणी के 12 कार्मिकों ने भाग लिया।

तृतीय कार्यशालाः संस्थान में 23 अगस्त, 2017 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन श्री एम.एम. भटनागर, राजभाषा अधिकारी मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, झॉसी के मुख्य अतिथि तथा कार्यवाहक निदेशक डा. आर.वी. कुमार, की अध्यक्षता में किया गया। डा. आर.वी. कुमार ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में राजभाषा के निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शासकीय कार्यो में अधिकतम हिन्दी का प्रयोग करने की आवश्यकता को इंगित करते हुए कार्य करने का आह्वान किया। राजभाषा अनुभाग द्वारा राजभाषा के नियमों, संवैधानिक प्रावधान एवं प्रोत्साहन योजना के संबंध में जानकारी प्रदान की। कार्यशाला में संस्थान के अधिकारी–कर्मचारी श्रेणी के 14 कार्मिकों ने भाग लिया।

चतुर्थ कार्यशालाः संस्थान में 18 नवम्बर, 2017 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन डा. आर.के. तिवारी,

(दायें से) श्री एम.एम. भटनागर, डॉ आर.वी. कुमार, डॉ सुनील कुमार एवं श्री नीरज कुमार दुबे

प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी के मुख्य अतिथि तथा निदेशक डा. आर.वी. कुमार की अध्यक्षता में किया गया। डा. आर.वी. कुमार ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कार्यालय के कार्यो में अधिकतम हिन्दी का प्रयोग करने की आवश्यकता को इंगित करते हुए ज्ञान, अनुभव से व्यवाहरिक रूप से कार्य करने का आह्वान किया, जिससे लक्ष्यों की प्राप्ति हो सके। कार्यशाला में डा. आर.के. तिवारी ने अपने व्याख्यान एवं प्रस्तुतिकरण द्वारा राजभाषा के नियमों, संवैधानिक प्रावधान एवं कार्यो में प्रयोग के संबंध में जानकारी प्रदान की। कार्यशाला में विभाग के अधिकारी–कर्मचारी श्रेणी के 17 कार्मिकों ने भाग लिया।

(दायें से) डॉ आर.के. तिवारी, डॉ आर.वी. कुमार, डॉ सुनील कुमार एवं श्री नीरज कुमार दुबे

प्रकाशन

- कृषक मार्गदर्शन पुस्तिका
- बहुपयोगी वृक्षों से चारा उत्पादन
- संस्थान के प्रमुख उत्पाद
- संकर हाथी घास
- गिनी घास
- ज्वार
- वर्ष पर्यन्त चारा उत्पादन पद्धतियाँ प्रणालियां
- पशुपोषण के लिये संघनित आहार ब्लॉक
- दुधारू पशुओं के लिए पौष्टिक एवं सस्ता पशु आहार
- चारा संरक्षण विधियां एवं उपयोगिता
- जई
- बरसीम
- मक्का
- बाजरा
- लोबिया
- ग्वार

भा.कृ.अनु.प.– भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर

हिन्दी दिवस

संस्थान में दिनांक 26 सितम्बर, 2017 को हिन्दी दिवस समारोह सफलता पूर्वक मनाया गया। डा. कमल मुसद्दी कवि, साहित्यकार एवं प्रवक्ता आयुध निर्माणी कालेज, अर्मापुर, कानपुर इस समारोह के मुख्य अतिथि थी। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डा. नरेन्द्र प्रताप सिंह ने की। स्वागत भाषण डा. जी.पी. दीक्षित, परियोजना समन्वयक (चना) ने प्रस्तुत किया। संस्थान में राजभाषा की प्रगति रिपोर्ट श्री दिवाकर उपाध्याय, मुख्य संपादक ने प्रंस्तुत किया। समारोह में संस्थान के सभी वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक एवं सहायक वर्ग के कर्मचारियों ने भाग लिया। अपने उद्‌बोधन में श्रीमती मुसद्दी ने कहा कि हिन्दी अपनी सरलता और सहज बोधगम्यता के कारण पूरे देश में समझी और बोली जाती है और राष्ट्रीय सम्पर्क सूत्र की महती भूमिका निभा रही है। हमारे बहुभाषी देश में, सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी एक समृद्ध भाषा है। सभी क्षेत्रों में हिन्दी की सफलता का परचम लहरा रहा है। प्रतिभाओं के मुखर होने में भाषा का प्रबल योगदान होता है।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में निदेशक डा. सिंह ने कहा कि हमारे बहुभाषी देश में, सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज विकास की गति में हमारी राजभाषा हिन्दी एक मजबूत सूत्रधार का कार्य कर रही है। हम अपनी भाषा में अधिक स्पष्ट एवं प्रभावी ढंग से अपने विचार एवं विषय को प्रकट कर सकते हैं। यही हमारी उन्नति का संवाहक होता है। अतः हमें निजी कार्यों में और सरकारी कामकाज में भी अपनी राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करना होगा। उन्होंने कहा कि हिन्दी जीवन के हर क्षेत्र में व्यापक स्तर पर प्रयोग की जा रही है। सरकारी कामकाज में भी हिन्दी का प्रयोग निरंतर बढ रहा है। उन्होंने वैज्ञानिकों से आहवान किया कि नई तकनीकी जानकारी किसानों तक उन्ही की भाषा में पहुंचाने के लिए सतत प्रयास करें और हिन्दी के नए प्रकाशनों पर बल दिया जाए। यदि हमें भारत वर्ष को उन्नत राष्ट्रों की श्रेणी में लाना है तो इसकी एक राष्ट्रव्यापी भाषा का होना उतना ही आवश्यक है जितना की नवीन प्रौद्योगिकियों का। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने संस्थान की राजभाषा पत्रिका दलहन आलोक 2017 का विमोचन किया।

हिन्दी पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. आई.पी. सिंह, परियोजना (अरहर) ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राजेश कुमार श्रीवास्तव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने किया।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

हिंदी पखवाड़ा

भा.कृ.अनु.प – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में दिनांक 14–29 सितंबर 2017 को हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान संस्थान में विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों के आयोजन किए गए जैसे पूरे वर्ष के दौरान हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए 'मिठास' ट्राफी हेतु चयन, हिंदी कार्य की समीक्षा, यूनिकोड में हिंदी टंकण, अंताक्षरी प्रतियोगिता, हिंदी अनुवाद, टिप्पणी परिपत्र लेखन, आदेश/कार्यालय ज्ञापन/समझौता ज्ञापन लेखन, गन्ना या राजभाषा हिंदी पर आधारित विषय पर आशुभाषण, हिंदी के सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्नोत्तरी, हिंदी कार्यशाला, संस्थान की गतिविधियों का 20 स्लाइडों में शोध कार्यों का प्रस्तुतिकरण, कवि सम्मेलन इत्यादि का आयोजन किया गया। दिनांक 19 सितम्बर 2017 को हिंदी व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के श्री मनीष शुक्ल ने अपना व्याख्यान "राजभाषा हिंदी–वर्तमान परिदृश्य, चुनौतियाँ एवं संभावनाएं" विषय पर दिया तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक

डॉ. अश्विनी दत्त पाठक ने की। दिनांक 27 सितम्बर 2017 को संस्थान के प्रेक्षागृह में "आह से वाह" तक विषय पर एक कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें प्रदेश के प्रतिष्ठित कविगण श्री राम किशोर तिवारी, बाराबंकी – हास्य व्यंग्य श्री बलराम श्रीवास्तव, मैनपुरी–गीत श्री के.डी. शर्मा "हाहाकारी", उन्नाव – हास्य, श्री गजेन्द्र प्रियांशु, बाराबंकी – गीत, श्री अनिल सिंह बौझड़, रामनगर – बाराबंकी– अवधी हास्य, श्री श्यामल मजूमदार, लखनऊ – हास्य, सुश्री मनसी द्विवेदी, लखनऊ–श्रंगार/ओज एवं डॉ. सुधीर कुमार शुक्ल–लखनऊ ने एक के बाद एक अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया। संस्थान के निदेशक डॉ. अश्विनी दत्त पाठक ने माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्जवलित कर कवि सम्मेलन का शुभारंभ किया था। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक एवं राजभाषा प्रभारी डॉ. अजय कुमार साह ने मंच पर सभी कवियों का स्वागत करते हुए सभागार में उपस्थित सभी श्रोताओं से कवि सम्मेलन के सकारात्मक पहलुओं पर चिंतन करते हुए विचार करने का आह्वान किया।

पखवाड़ा के समापन समारोह का आयोजन 29 सितम्बर, 2017 को किया गया जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. अखिलेश मिश्रा, विशेष सचिव, सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रानिक्स, उत्तर प्रदेश सरकार थे। उन्होंने इस पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में मूल्यांकन के उपरांत चयनित 75 कार्मिकों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया। समारोह के अंत में हिंदी अधिकारी श्री अभिषेक कुमार सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

संस्थान में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

- 31 मार्च 2017 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में 22 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में डॉ ए. पी. द्विवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने अपना व्याख्यान दिया।
- 30 जून 2017 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में 26 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में डॉ वी. एन. तिवारी, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, केंद्रीय औषधीय अनुसंधान संस्थान ने अपना व्याख्यान दिया।
- 22 सितम्बर 2017 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया इस कार्यशाला में 45 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें भारतीय स्टेट बैंक के तीन अधिकारियों के द्वारा कैश लेस बैंकिंग, कार्यालय में ई–कार्य संस्कृति तथा राजभाषा के प्रयोग में जागरूकता पर व्याख्यान तथा प्रतिभागियों के साथ विचार–विमर्श किया गया।
- 29 दिसम्बर 2017 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में 40 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में श्रीमती उषा सिन्हा, पूर्व विभागाध्यक्ष, भाषा–विज्ञान, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ एवं श्रीमती हिमांशु सेन, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ने अपना व्याख्यान दिया।

प्रमुख उपलब्धियाँ

- संस्थान में सभी चार त्रैमासिक कार्यशालाएँ समय से आयोजित की गईं।
- संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सभी चार बैठकें समय पर हुई।
- संस्थान के कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा विभिन्न विषयों पर 82 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जो पूर्ण रुपेण हिंदी में था।
- संस्थान में दिनांक 06 फरवरी 2017 को "अधिकतम गन्ना व चीनी उत्पादन तथा गन्ना कृषकों की आय में बढ़ोत्तरी" विषय पर गन्ना शोध/विकास तथा चीनी मिलों की इंटरफेस मीटिंग व विचार मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- दिनांक 26 मार्च 2017 को बिसवां चीनी मिल के प्रक्षेत्र मानपुर, बिसवां (सीतापुर) में किसान मेला और किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ. जे. एस. संधु, सहायक महानिदेशक डॉ. आर. के. सिंह, संस्थान के निदेशक डॉ. ए. डी. पाठक एवं संस्थान के प्रसार व प्रशिक्षण प्रभारी एवं आंयोजन सचिव डॉ. ए. के. साह ने भाग लिया। इस मेले में 650 किसानों ने भाग लिया।
- 09 जून 2017 को बिहार के पिपरकोठी (मोतीहारी) में गुड़ प्रसंस्करण यूनिट का उद्घाटन केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार श्री राधा मोहन सिंह जी एवं योग गुरु बाबा रामदेव जी द्वारा किया गया इसमें किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 5,000 किसानों ने भाग लिया। उक्त किसान गोष्ठी में संस्थान के निदेशक डॉ. ए. डी. पाठक भी मौजूद थे।
- भाकृअनुप– भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र, मोतीपुर (बिहार) में न्यू इंडिया मूवमेंट (2017–2022) के अंतर्गत भाकृअनुप– कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, पटना द्वारा आयोजित "संकल्प से सिद्धि" कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार श्री राधा मोहन सिंह जी द्वारा 10 सितम्बर, 2017 को किया गया। इस अवसर पर गन्ना में सहफसली खेती विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन माननीय मंत्री महोदय द्वारा किया गया। इस अवसर पर बिहार सरकार के माननीय मंत्री नगर विकास एवं आवास विभाग, पशुपालन एवं मात्स्यिकी संसाधन, माननीय सांसद, वैशाली, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), भाकृअनुप, नई दिल्ली, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के निदेशक तथा कृषकगण उपस्थित थे।

कृषि विज्ञान केंद्र, पिपरा कोठी (मोतीहारी) में गुड़ इकाई का उदघाटन

किसान मेला एवं वैज्ञानिक–कृषक परिचर्चा पर अतिथियों द्वारा पुस्तक का विमोचन करते हुए

- संस्थान के पास लखनऊ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय–3) लखनऊ की भी जिम्मेदारी दी गई है उसी के अंतर्गत वर्ष 2017 की प्रथम बैठक 23 जून 2017 एवं द्वितीय बैठक 22 नवम्बर 2017 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय–3) की बैठकों का आयोजन किया गया। जिसमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय–3) के सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उक्त बैठक में नराकास (कार्यालय–3) के सचिव डा. ए. के. साह ने सभी सदस्य कार्यालयों से आए कार्यालय प्रमुखों एवं अन्य सदस्यों के साथ नराकास (कार्यालय–3) के अंतर्गत 61 कार्यालयों में किए जा रहे हिंदी के कार्यों की विस्तृत समीक्षा की साथ ही हिंदी में उत्कृष्ट कार्य तथा उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन करने वाले 10 सदस्य कार्यालयों को पुरस्कृत भी किया गया । बैठक का संचालन श्री अभिषेक कुमार सिंह, राजभाषा अधिकारी ने किया।

पुरस्कार/सम्मान

- संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'इक्षु' को वर्ष 2016–17 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार का गृह पत्रिका पुरस्कार

योजना के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार के लिए चयनित किया गया। उक्त पुरस्कार 14 सितम्बर, 2017 को 11.00 बजे विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में माननीय राष्ट्रपति महोदय के कर–कमलों द्वारा माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार की अध्यक्षता में संस्थान के निदेशक डॉ ए. डी. पाठक ने प्राप्त किया।

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के 89 वें स्थापना दिवस के अवसर पर 16 जुलाई, 2017 को आयोजित पुरस्कार समारोह में संस्थान की पत्रिका 'इक्षु' को प्रतिष्ठित गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी पत्रिका के प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह जी एवं कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री सुदर्शन भगत जी के द्वारा नई दिल्ली में प्रदान किया गया। राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर, नई दिल्ली के सभागार में आयोजित भव्य कार्यक्रम में यह पुरस्कार माननीय मंत्री महोदय से संस्थान के निदेशक डॉ ए. डी. पाठक, राजभाषा प्रभारी डॉ ए.के. साह एवं तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) श्री अभिषेक कुमार सिंह ने प्राप्त किया।

माननीय राष्ट्रपति महोदय से निदेशक महोदय द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कार का गृह पत्रिका पुरस्कार योजना के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह जी एवं कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री सुदर्शन भगत जी के द्वारा निदेशक डॉ ए. डी. पाठक, राजभाषा प्रभारी डॉ ए.के. साह एवं तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) श्री अभिषेक कुमार सिंह पुरस्कार प्राप्त करते हुए

हिंदी प्रकाशन

- इक्षु राजभाषा पत्रिका अंक– वर्षः 5, अंकः 2
- इक्षु राजभाषा पत्रिका अंक– वर्षः 6, अंकः 1
- "गन्ने में सहफसली खेतीः गन्ना किसानों की आय बढ़ाने का प्रमुख आयाम" (किताब)
- प्राथमिक पशु चिकित्सा एवं प्रशिक्षण पुस्तिका
- टिकाऊ गन्ना उत्पादन एवं मृदा का प्रसार साहित्य
- उर्वरता बढ़ाने में जैविक खाद का योगदान
- किसान भाई खेती की मिट्टी की जांच क्यों, कब और कैसे कराएं

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून

संस्थान में दिनांक 14–20 सितम्बर, 2017 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं माँ सरस्वती को पुष्पांजलि देने के बाद ईश वंदना से हुआ। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार का एवं राजभाषा विभाग द्वारा जारी गृह मंत्री का संदेश पढ़ कर सुनाया गया। गत वर्ष हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए संस्थान के विभिन्न विभागों (प्रशासन व वित्त एवं लेखा विभाग सहित) द्वारा किए गए कार्यों का संक्षेप में ब्यौरा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. पी.के. मिश्रा ने संस्थान में हिन्दी की प्रगति के लिए किए जा रहे प्रयासों को सराहा और साथ ही यह भी कहा कि संस्थान चूँकि हिन्दी भाषी क्षेत्र में स्थित है अतः संस्थान से हिन्दी में और अधिक कार्य करने की अपेक्षा की जाती है। सप्ताह के दौरान संस्थान के हिन्दी भाषी प्रतिभागियों के अतिरिक्त हिन्दीत्तर भाषी प्रतिभागियों के लिए भी हिन्दी के प्रयोग से संबंधित प्रतियोगिताएं (शब्दावली, अनुवाद, निबंध,

श्रुतलेख एवं लघु लेखन) आयोजित की गयी। सप्ताह के समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. असीम शुक्ला, सेवानिवृत्त सम्पादक नवभारत टाइम्स थे। इस अवसर पर उन्होनें कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के संबंध में अपने सुझाव दिए। उन्होनें संस्थान द्वारा हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कटाई–उपरान्त अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, लुधियाना

हिन्दी पखवाड़ा

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन 14–28 सितम्बर, 2017 तक किया गया तथा कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा संस्थांन के सभी कार्मिकों से हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने की अपील की गई। हिन्दी पखवाडे का समापन समारोह दिनांक 29.09.2017 को इस संस्थान के सभाकक्ष में हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री राज देव, महाप्रबंधक, भारत संचार निगम लिमिटेड थे। इस वर्ष संस्थान में हिन्दी पखवाड़े के दौरान अलग–अलग 11 प्रतियोगताओं का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान करवाई गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को डा. आर.के. गुप्ता, निदेशक, भा.कृ.अनु.प–सीफेट, लुधियाना द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र वितरित किए जबकि डा. मृदुला देवी, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष हिन्दी पखवाड़ा समिति ने हिन्दी पखवाड़े के अंर्तगत हुई प्रतियोगिताओं का विवरण दिया।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि ने संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजभाषा के प्रति अति उत्साह दिखाने के लिए प्रसन्नता व्यक्त की एवं सभी को हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के लिए कहा। संस्थान के निदेशक ने कहा कि इस संस्थान के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों को भी हिन्दी में कार्य करना चाहिए ताकि वे भी नकद पुरस्कार प्राप्त कर सकें।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि से पुरस्कार प्राप्त करते हुए कर्मचारी

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ

हिंदी पखवाड़ा

ब्यूरो में 14.09.2017 को हिंदी दिवस कार्यक्रम के साथ ही हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ किया गया और जिसका समापन 05.10.2017 को हुआ। हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम की शुरूआत 14.09.2017 को निदेशक महोदय द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने सभी को संबोधित करते हुए राजभाषा के महत्व को समझाया और कहा कि हम अपनी भाषा का अधिकतम प्रयोग करते हुए देश की प्रगति में अपना बहुमूल्य योगदान दे सकते हैं। निदेशक महोदय ने संस्थान के समस्त कर्मचारियों को अपने समस्त कार्यो में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने पर जोर दिया और समस्त अधिकारियों को संस्थान में प्रचलित सभी प्रपत्रों में हिंदी में ही प्रविष्टियाँ सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

संस्थान में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग और हिंदी को बढ़ावा देने के लिए एवं कर्मचारियों में उत्साह उत्पन्न करने के लिए संस्थान के निदेशक महोदय की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन भी किया गया जिसका समापन 05.10.2017 को किया गया जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. सी. सुवर्णा, आयुक्त, मत्स्य पालन, तेलंगाना ने सभी को सम्बोधित किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कुल नौ हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें सभी वर्ग के कर्मचारियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया एवं 42 प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

हिन्दी कार्यशाला

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ राजभाषा की प्रगति में अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य के मद्देनज़र निरन्तर भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु प्रयासरत है। इस दिशा में

संस्थान वैज्ञानिक–कृषक कार्यशाला का आयोजन दिनांक 12.12.2017 को अपने वार्षिक स्थापना दिवस पर किया गया, जिसमें अनेक विषयों पर परिचर्चा हुई। प्रमुख विषय इस प्रकार थे –

- जलकृषि सहित समग्र कृषि के द्वारा कृषकों एवं मत्स्य जीवियों की आमदनी में बढ़ोत्तरी के अवसर।
- विदेशी मछलियों के देश के अन्तर्गत पालन मे नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रभाव।
- मत्स्य संरक्षण की दिशा में किए गए प्रयास से भावी पीढ़ी को लाभ।
- मत्स्य स्वास्थ्य की निगरानी एवं किए गए प्रयास।

इस कार्यशाला में राजभाषा हिन्दी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से समस्त चर्चाएं हिन्दी में ही करायी गईं। इसमें संस्थान के समस्त कर्मियों सहित लखनऊ स्थित अन्य भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों के कर्मियों ने भी भाग लिया।

ब्यूरो के जल कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण इकाई, चिनहट, लखनऊ, उ0प्र0 में वर्ष 2017 के दौरान विभिन्न प्रकार के कृषक लाभार्थियों हेतु प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका विवरण विषयानुसार एवं क्रमानुसार दिया गया है।

प्रशिक्षण सह कार्यशाला

मत्स्य पालन एवं संरक्षणः आदिवासियो की आजीविका का साधन

11–14 दिसम्बर, 2017

जलकृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण इकाई

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ के जलकृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण इकाई, चिनहट, लखनऊ, उ.प्र. पर अशोक नगर, मध्य प्रदेश के जनजातियों के आजीविका के अवसर हेतु मत्स्य पालन एवं संरक्षण विषय पर प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन दिनांक 11–14 दिसम्बर, 2017 को किया गया। कुल 33 जनजातीय कृषको को कक्षा, प्रयोगशाला एवं प्रक्षेत्र आधारित प्रशिक्षण एवं पाठ्यक्रमों से अवगत कराया गया। प्रशिक्षण सह कार्यशाला के समापन समारोह को डॉ एस.डी. सिंह पूर्व सहायक महानिदेशक (अन्तःस्थलीय मात्स्यिकी), भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित किया।

11–14 दिसम्बर, 2017 के दौरान विभिन्न क्रियाकलाप

मत्स्य पालन सह बागवानी

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना – वाटरशेड विकास घटक के अन्तर्गत कृषक लाभार्थियों के कौशल विकास हेतु प्रायोजित प्रशिक्षण सह कार्यशाला

महोवा, उत्तर प्रदेश, 18–22 दिसम्बर, 2017

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ के जलकृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण इकाई, चिनहट, लखनऊ, उ.प्र. पर महोवा, उत्तर प्रदेश के किसानों के कौशल विकास हेतु प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना–वाटरशेड विकास घटक के अर्न्तगत प्रायोजित प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन दिनांक 18–22 दिसम्बर, 2017 को किया गया। बुन्देलखण्ड के कुल 35 कृषकों को कक्षा, प्रयोगशाला एवं प्रक्षेत्र आधारित प्रशिक्षण एवं पाठ्यक्रमों से अवगत कराया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. के.के. लाल ने मत्स्य पालन सह बागवानी पर आयोजित प्रशिक्षण सह कार्यशाला का उद्घाटन दिनांक 18. 12.2017 को संस्थान के जलकृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण इकाई, चिनहट, लखनऊ पर किया।

प्रशिक्षण सह कार्यशाला (दिनांक 18–22 दिसम्बर, 2017) के दौरान विभिन्न क्रियाकलाप

प्रमुख उपलब्धियां

- वर्ष 2017 में संस्थान द्वारा 7 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये तथा सभी हिन्दी माध्यम में सम्पन्न हुए।

हिंदी प्रकाशन

- संस्थान की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'मत्स्य लोक' के षष्ठ्म अंक का प्रकाशन।
- वार्षिक प्रतिवेदन 2016–17 का प्रकाशन।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान, बंगलुरू

हिन्दी सप्ताह

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर संस्थान में दिनांक 14 से 20 सितंबर तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। समारोह की शुरुआत 14 सितंबर को संस्थान के निदेशक, डॉ. परिमल राय द्वारा दीप प्रज्वलन से हुई । इस अवसर पर संस्थान के सभी वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोध छात्र उपस्थित थे। निदेशक महोदय ने हिन्दी के प्रोत्साहन के लिए संस्थान के वैज्ञानिकों, कर्मचारियों और शोध छात्रों से ज्यादा से ज्यादा राजभाषा के प्रयोग करने की अपील की।

हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत सात विभिन्न प्रतियोगिताओं (आशुभाषण, निबंध लेखन, अनुवाद, आवेदन पत्र लेखन, प्रश्नोत्तरी, वाद विवाद और गायकी) का आयोजन किया गया। जिसमें संस्थान के सभी कार्मिकों ने बढ़–चढ़ कर सहभागिता की।

हिंदी सप्ताह के अंतिम दिन समापन समारोह का आयोजन किया गया। राजभाषा प्रभारी, डॉ मंजुनाथ रेड्डी ने हिन्दी सप्ताह में किए गए आयोजनों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की। तत्पश्चात विभिन्न प्रतियोगितायों में विजयी रहे प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रमुख उपलब्धियां

श्री राधा मोहन सिंह, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री द्वारा 27 दिसंबर, 2017 को पशु रोग पूर्व–सूचना (एलडीएफ) – मोबाइल ऐप जारी किया गया। इस कार्यक्रम में श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भी उपस्थित थे।

हिंदी प्रकाशन

- एस.एस. पाटील, ए. प्रजापति, जी.बी.मंजुनाथा रेड्डी, डी. हेमाद्री और के.पी. सुरेश. 2017. शूकर ज्वर एक घातक रोग. राजभाषा आलोक. पृष्ठ संख्या 10–13.

भा.कृ.अनु.प.– राष्ट्रीय जैविक कृषि अनुसंधान संस्थान, गंगटोक

हिंदी चेतना मास

भा.कृ.अनुप.– राष्ट्रीय जैविक कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा 01 सितंबर 2017 से 30 सितंबर 2017 तक हिंदी चेतना मास मनाया गया। दिनांक 1 सितंबर 2017 को उद्घाटन सत्र का आयोजन किया गया। इस सुअवसर पर कृषि अभियांत्रिकी एवं कटाई उपरांत महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. आर.पी. मिश्रा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होने राजभाषा हिंदी एवं संस्कृत के इतिहास के बारे में प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी के प्रसार एवं विकास में सभी का योगदान अपेक्षित है। उन्होने इस बात पर हर्ष व्यक्त किया कि राष्ट्रीय जैविक कृषि अनुसंधान संस्थान राजभाषा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इसके लिए उन्होने संस्थान के सयुंक्त निदेशक के नेतृत्व की सराहना की तथा हिंदी चेतना मास की सफलता की कामना करते हुए शुभकामनायें दी। संस्थान के संयुक्त निदेशक डॉ. रविकांत अवस्थी ने संस्थान स्तर पर चल रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में तथा इसमें अधिक प्रगति लाने पर बल दिया। हालांकि इस संस्थान में हम निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति को और सकारात्मक गति से बढ़ रहें हैं, इसमें संस्थान में राजभाषा कार्यान्वियन समिति के सदस्य सचिव की अहम

भूमिका रहती है। इस संस्थान के एवं कृषि विज्ञान केंद्र पूर्व सिक्किम के वैज्ञानिकों एवं विषय वस्तु विशेषज्ञ (एस.एम.एस.) द्वारा समय समय पर लोकप्रिय लेख लिखने हेतु प्रयास किया जाना चाहिए, साथ ही यदि प्रसार सामग्री को हिंदी एवं नेपाली भाषा में तैयार किया जाये तो इससे किसानों को भी लाभ होगा। उन्होंने सभी कर्मचारियों से अनुरोध किया कि हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में पूर्ण रुचि के साथ भाग लें।

संस्थान में हिन्दी चेतना मास का आयोजन

इस अवसर पर बोलते हुए कृषि विज्ञान केंद्र पूर्व सिक्किम के प्रभारी डॉ. राघवेंद्र सिंह ने सदन को सूचित किया कि कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग किया जा रहा है ताकि किसानों को भी इसका लाभ मिले और हिंदी के प्रति उनकी भी रुचि बढ़ सके। कृषि विज्ञान केंद्र के पत्राचार में भी हिंदी को समाहित करने का प्रयास किया जा रहा है। श्री सुरेन्द्र मोहन कंडवाल, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, सदस्य सचिव, संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने वर्ष भर किए गए राजभाषा से संबंधित गतिविधियों का विस्तारपूर्वक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होने सदन को बताया कि संस्थान राजभाषा के निर्णय अनुसार प्रत्येक माह की 14 तारीख को हिंदी के दिन के नाम से पालन किया जाता है। इस दिन सभी कर्मचारी पूर्णरूप से या आंशिक रूप से हिंदी में कार्य करते हैं।

दिनांक 14 सितंबर 2017 को विधिवत रूप से हिंदी दिवस का पालन किया गया। इस अवसर पर एक हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया जिसमे राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) के सहायक महाप्रबंधक, श्री देशराज मौर्य को स्रोत वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। श्री मौर्य ने "गूगल वॉइस टाईपिंग" पर व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं व्याख्यान दिया तथा राष्ट्रीय जैविक कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा राजभाषा के प्रति विशेष लगाव को भी रेखांकित किया तथा सभी कर्मचारियों की सहभागिता एवं रुचि की सराहना की।

दिनांक 7 अक्टूबर, 2017 को भव्य रूप से समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गंगटोक नगर निगम के माननीय महापौर श्री शक्ति सिंह चौधरी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री शक्ति सिंह ने अपने संबोधन में इस बात पर अति हर्ष व्यक्त किया कि संस्थान अनुसंधान एवं विकास के अलावा हिंदी के प्रति भी पूर्ण समर्पण भाव से वृहद रूप से इस प्रकार का आयोजन कर रहा है जो कि बहुत ही सराहनीय कदम है। उन्होने बताया कि उनके नगर निगम एवं सिक्किम सरकार भी हिंदी के प्रति बहुत आदर के भाव से इसे अपना रही है। राज्य के माननीय मुख्य मंत्री श्री पवन चामलिंग स्वयं भी हिंदी के प्रति रुचि रखते हैं और धारा प्रवाह रूप में हिंदी बोलते हैं। हमारे प्रदेश में हिंदी बहुत लोकप्रिय है एवं कारोबार में संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग की जाती है, हिंदी बोलने और समझने में किसी भी प्रकार की अड़चन नहीं आती है। उन्होने संस्थान के सयुंक्त निदेशक डॉ. रविकांत अवस्थी को इस प्रकार के आयोजन करने के लिए बधाई दी और संस्थान के सभी कर्मचारियों को शुभकामनायें दीं। संस्थान के संयुक्त निदेशक, डॉ. रविकांत अवस्थी ने महापौर महोदय को इस कार्यक्रम में सहभागिता हेतु आभार प्रकट करते हुए संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों का संक्षिप्त रूप से विवेचन किया एवं इस संस्थान द्वारा लगातार राजभाषा हिंदी में किए जा रहे कार्यों के प्रति कर्मचारियों के सकारात्मक रुख को रेखांकित किया। अन्य गतिविधियों के अलावा राजभाषा के दैनिक जीवन में प्रयोग के प्रति यह संस्थान पूर्ण रूप से सक्रिय है।

संस्थान में हिंदी चेतना मास का समापन समारोह

राजभाषा कार्यान्वयन समिति के उपाध्यक्ष डॉ. राघवेंद्र सिंह ने इस अवसर बोलते हुए समिति के सदस्य सचिव की प्रशंसा करते हुए बताया कि हमारे संस्थान में भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा दिये गए लक्ष्यों पर समयबद्ध रूप से कार्रवाई की जा रही है। इसमें सदस्य सचिव का अहम योगदान होता है। अपने संबोधन में सदस्य सचिव श्री सुरेन्द्र मोहन कंडवाल ने हिंदी चेतना मास के बारे में सदन को बताया कि पूरे सितंबर माह हमारा संस्थान राजभाषा हिंदी के रंग में रंगा रहा, इस दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जैसे कि प्रशासनिक कर्मचारियों

हेतु टिप्पण, मसौदा एवं पत्र लेखन प्रतियोगिता, प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता, आशुभाषण एवं प्रश्न मंच (फनप्र) आदि तथा एक कार्यशाला का भी इस दौरान आयोजन किया गया।

सभी विजेताओं को मुख्य अतिथि एवं स. निदेशक महोदय के कर कमलों से पुरस्कार प्रदान किए गए। समापन सत्र डॉ. आशीष यादव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्पन्न हुआ।

हिन्दी कार्यशाला

दिनांक 25 जुलाई, 2017 को संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र, पूर्व सिक्किम के वैज्ञानिकों/तकनीकी एवं प्रशासकीय कर्मचारियों/आर.ए/एस.आर.एफ/जे.आर.एफ. आदि के लिए "राजभाषा हिंदी में वैज्ञानिक एवं लोकप्रिय लेखों/व्याख्यानों की तैयारी एवं प्रस्तुतिकरण" विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में इस संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रफीकुल इस्लाम द्वारा स्रोत वक्ता के रूप में भाग लिया गया।

दिनांक 14 सितंबर, 2017 को हिंदी दिवस के अवसर पर "गूगल वॉइस टाइपिंग" विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई, इसमे राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के सहायक महाप्रबंधक श्री देशराज मौर्य द्वारा स्रोत वक्ता के रूप में भाग लिया। इस कार्यशाला में संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र के सभी कर्मचारियों की सहभागिता थी।

दिनांक 21 दिसंबर, 2017 को संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र, पूर्व सिक्किम के वैज्ञानिकों/तकनीकी एवं प्रशासकीय कर्मचारियों/आर.ए/एस.आर.एफ/जे.आर.एफ. आदि के लिए "गूगल अनुवाद सॉफ्टवेयर" एवं "कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण" विषय पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. राघवेंद्र सिंह द्वारा व्याख्यान एवं व्यावहारिक प्रक्षिक्षण दिया गया।

प्रमुख उपलब्धियां

- दिनांक 28 जून 2017 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम बैठक में संस्थान के संयुक्त निदेशक डॉ. रविकांत अवस्थी एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राघवेंद्र सिंह ने भाग लिया एवं संस्थान के हिंदी प्रतिवेदन को प्रस्तुत किया।
- दिनांक 13 दिसंबर 2017 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की द्वितीय बैठक में संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव एवं वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री सुरेन्द्र मोहन कंडवाल ने भाग लिया एवं संस्थान स्तर पर राजभाषा संबंधित प्रगति का ब्यौरा प्रस्तुत किया।
- दिनांक 6 नवंबर, 2017 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव श्री सुरेन्द्र मोहन कंडवाल ने भाग लिया।
- दिनांक 10 नवंबर, 2017 को, भारत सरकार राजभाषा विभाग द्वारा गुवाहाटी में आयोजित एक तकनीकी संगोष्ठी में संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राघवेंद्र सिंह ने भाग लिया।
- दिनांक 16 मई, 2017 को जनवरी–मार्च, 2017 अवधि की संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया।
- दिनांक 10 अगस्त, 2017 को अप्रैल–जून 2017 अवधि की संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया।
- दिनांक 26 अक्टूबर, 2016 को जुलाई–सितंबर, 2017 अवधि की संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया।
- राजभाषा के अधिनियम 1976 के नियम 8 (4) के अंतर्गत हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को उनके प्रशासकीय कार्य को राजभाषा हिंदी में करने हेतु संस्थान के सयुंक्त निदेशक द्वारा व्यक्तिशय आदेश जारी किए गए एवं कर्मचारियों का एक रोस्टर भी बनाया गया।
- हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत कर्मचारियों का नामांकनः भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा सिक्किम विश्वविद्यालय में संचालित कक्षाओं में प्रवीण पाठ्यक्रम में संस्थान के 02 वैज्ञानिकों एवं कृषि विज्ञान केंद्र के 2 विषय वस्तु विशेषज्ञ (SMS) को नामित किया गया।

पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति–2, हैदराबाद ने वर्ष 2017 के दौरान संघ की राजभाषाा नीति के कार्यान्वयन में सर्वोत्तम निष्पादन हेतु राष्ट्रीय मांस अनुसंधान केंद्र, हैदराबाद को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम में कार्यालय प्रमुख श्री बी.पी.आर. विट्ठल, संविदात्मक कर्मचारी (राजभाषा विभाग) श्रीमती स्वरूपा रानी, रिटायर्ड प्रशासनिक अधिकारी, श्री चंद्रशेखर, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति–2 के अध्यक्ष डॉ. रा. रेड्डी से शील्ड प्राप्त करते हुए

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

हिन्दी पखवाड़ा

केन्द्र द्वारा दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 17 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। केन्द्र में 14 सितम्बर, 2017 को हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर श्री राधा मोहन सिंह, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार तथा डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. की ओर से हिन्दी दिवस पर जारी संदेशों का वाचन किया गया। केन्द्र में इस पूरे पखवाड़े में हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जैसे कि, निबंध लेखन प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और शोध पत्र वाचन प्रतियोगिता।

- निबन्ध लेखन प्रतियोगिताः हिन्दी पखवाड़ा 2017 के अंतर्गत 16.09.2017 को हिन्दी में निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों/कर्मचारियों की उत्साहवर्धक भागीदारी रही।
- वाद–विवाद प्रतियोगिताः इसके तहत दिनांक 22.09.2017 को 'वैश्विकरण के इस दौर में हिन्दी की स्थिति में सुधार आया है' विषयक वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें निर्णायक के रूप में बीकानेर से डॉ.शालिनी मूलचन्दानी, विभागाध्यक्ष (हि.सा.), राजकीय डूंगर महाविद्यालय तथा डॉ. गौरव बिस्सा, एसोसिएट प्रोफेसर, राजकीय अभियान्त्रिकी महाविद्यालय को आमन्त्रित किया गया।
- सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताः हिन्दी पखवाड़े के दौरान दिनांक 23.09.17 को हिन्दी में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई।
- शोध पत्र वाचन प्रतियोगिताः राजभाषा के बेहतर कार्यान्वयन तथा समय–समय पर परिषद से प्राप्त निर्देशों को ध्यान में रखते हुए दिनांक 23.09.2017 को शोध पत्र वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डॉ.एच.के. नरूला, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, बीकानेर तथा डॉ.मीरा श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष, जन्तु विज्ञान, राजकीय डूंगर महाविद्यालय,बीकानेर को निर्णायक के तौर पर आमन्त्रित किया गया जिन्होंने हिन्दी में शोधपत्र प्रस्तुतीकरण संबंधी विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार साझा किए।
- राजभाषा कार्यशालाः हिन्दी पखवाड़े (14–28 सितम्बर) के अंतर्गत ही दिनांक 26.09.2017 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. अमित व्यास, वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक, बीकानेर ने 'रेगिस्तानी पादपों से निर्मित होम्योपैथिक दवाएं और उनका स्वास्थ्य पर प्रभाव' विषय पर तथा श्री जगमाल जी राईका, प्रगतिशील ऊँट पालक, गाढवाला, बीकानेर ने 'बदलते परिवेश में ऊँटों की उपयोगिता' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। कार्यक्रम अध्यक्ष एवं निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल ने कहा कि भाषा के प्रयोग हेतु व्यावहारिक पक्षों की ओर प्रतिभागियों का ध्यान खींचते हुए आवश्कता व परिस्थिति के अनुरूप शब्दों को प्रयुक्त किया जाना चाहिए।

हिन्दी पखवाड़ा 2017 का पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोहः केन्द्र में हिन्दी दिवस, 2017 के उपलक्ष्य पर आयोजित हिन्दी पखवाड़े का पुरस्कार वितरण/समापन समारोह रखा गया। इस समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. उमाकांत गुप्त, प्राचार्य, एम.एस.कॉलेज, बीकानेर तथा विशिष्ट अतिथि श्री जसवंत खत्री, अधीक्षण अभियंता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, बीकानेर थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता केन्द्र निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल ने की।

हिन्दी कार्यशाला

- **राजभाषा कार्यशाला : 17 मार्च, 2017**

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर में राजभाषा नीति कार्यान्वयन के निर्धारित लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए आयोजित कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में डॉ. एच.पी. व्यास ने 'वर्तमान परिदृश्य में श्री भगवद्गीता का महत्व' विषयक व्याख्यान में कहा कि गीता को केवल किसी धर्म विशेष तक सीमित रखते हुए नहीं देखा जाना चाहिए अपितु इसमें कुशल एवं व्यवस्थित जीवन प्रबंधन के गुण बहुतायत में विद्यमान हैं, इस कारण से हर एक जागरूक व्यक्ति यहां तक कि वैज्ञानिक वर्ग भी इसे अपनाता है। डॉ. व्यास ने अपने व्याख्यान के अंत में भारतीय ग्रन्थों की महत्ता प्रदर्शित की। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं केन्द्र निदेशक डॉ.एन.वी. पाटिल ने कहा कि एकात्मक सत्ता को मानने की विचारधारा में हमारी बुद्धि बाधक बनती है जबकि इसे अनुभव किया जाना चाहिए।

- **राजभाषा कार्यशाला : 25 मार्च, 2017**

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर में आयोजित कार्यशाला में अतिथि वक्ता डॉ.सौरभ भार्गव, उच्च नेत्र विशेषज्ञ, कोठारी मेडिकल एवं रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर ने 'आंखों की उचित देखभाल तथा मोतियाबिंद, काला पानी एवं अन्य सामान्य बीमारियों का उपचार/निदान' विषयक व्याख्यान में राजभाषा हिन्दी के माध्यम से व्याख्यान के अंतर्गत आंखों से जुड़ी विभिन्न बीमारियों, समस्याओं, आमजन द्वारा बरती जाने वाली असावधानियों संबंधी अपनी जानकारी सदन में सरल व सहज रूप से दी। केन्द्र निदेशक एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. एन.वी. पाटिल ने कहा कि राजभाषा

कार्यशालाओं के माध्यम से ऐसे विषयों को सम्मिलित करना जो कि हमारी रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़े हैं, निहायत आवश्यक हैं ताकि प्रतिभागियों के साथ–साथ अन्य लोगों को भी इनसे फायदा पहुंचे।

- **राजभाषा कार्यशाला: दिनांक 22 जून, 2017**

केन्द्र में आयोजित कार्यशाला में अतिथि वक्ता डॉ. देवाराम काकड़, निदेशक, श्रीमती फूसीदेवी योगा एण्ड नेचुरोपैथी संस्थान, बीकानेर को आमन्त्रित किया गया। कार्यशाला कार्यक्रम की अध्यक्षता केन्द्र निदेशक डॉ.एन.वी. पाटिल ने की। इसमें डॉ. देवाराम काकड़ ने 'कार्यक्षमता अभिवृद्धि में योग का महत्व' तथा डॉ. ब्रजरतन जोशी ने 'भाषा एवं क्षमता संवर्धन' विषयक व्याख्यान प्रस्तुत किए।

राजभाषा कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए केन्द्र निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल ने कहा कि कार्यशाला व्याख्यानों में योग से भाषा के द्वारा जोड़ने का यह अवसर अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, भाषा में सहजता व संप्रेषणीयता का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, अतः बोलने से पहले इस बात पर मनन हो कि इसका परिवार, समाज, संस्थान, राष्ट्र आदि पर कैसा प्रभाव हो सकता है? लोग हमसे कैसी अपेक्षा रखते हैं! इस हेतु अपने स्तर/व्यक्तित्व/कार्यक्षमता को बेहतर बनाने के प्रयास सजगता, सहजता से किए जाने चाहिए।

- **राजभाषा कार्यशाला: दिनांक 01.10.2016**

'जल संरक्षण' पर राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। केन्द्र में दिनांक 01.10.2016 से चल रहे ''स्वच्छ भारत अभियान'' के तहत आयोजित इस कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में श्री हेम शर्मा, डिप्टी न्यूज एडिटर, राजस्थान पत्रिका, बीकानेर को आमंत्रित किया गया जिसमें केन्द्र के वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों के अलावा आईसीएआर के बीकानेर स्थित केन्द्रों के कार्मिकों ने भी शिरकत की। केन्द्र निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल ने राजभाषा कार्यशाला कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

प्रमुख उपलब्धियां

- उष्ट्र को दुधारू पशु के रूप में स्थापित करने हेतु दूध उत्पादन के लिए उत्तम नस्लों का प्रजनन किया गया तथा ऊँटनी की दुधारू नस्ल विकसित करने के लिए सभी नस्लों से दूध उत्पादन के आंकड़े इकट्ठे किए गए।
- कृत्रिम गर्भाधान हेतु ऊँट के वीर्य को प्रभावी ढंग से पतला करने वाले एन्जाइम का अध्ययन किया गया तथा ऊँटनी की यौवनावस्था की उम्र कम करने का अध्ययन प्रगति पर है।
- टी. इवान्सी से ट्रांसपोर्टर जीन (TeAT1) की पहचान कर इसकी लाइब्रेरी बनाई गई।
- वायरस जनित रोगों की पहचान, चेचक के संक्रमित ऊँटों के नमूनों की जांच पीसीआर से की गई।
- मूल्य संवर्धित उष्ट्र दुग्ध उत्पाद बनाने के क्रम में ऊँटनी के दूध में फ्रीज ड्राइड चीकू का पाउडर तथा योगहर्ट डालकर उससे सुगन्धित दूध बनाया गया। ऑटिज्म व मंदबुद्धि बच्चों के उपचार में ऊँटनी के दूध की महत्ता को एटीक स्कोर द्वारा जांचा गया।
- भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बार्क) के साथ टीबी व थायराइड कैंसर के विरूद्ध सिंगल डॉमेन एन्टीबॉडी के उत्पादन की प्रक्रिया प्रगति पर है।
- ऊँटों की एन्टीबॉडी से विषरोधी दवा के निर्माण का कार्य प्रगति पर है। ऊँट से बनी विषरोधी IpG वर्तमान में सर्पदंश को उपचारित करने में काम में ली जा रही घोड़े से बनी विषरोधी दवा के समान ही नहीं अपितु इससे बेहतर विकल्प साबित हो सकती है।
- केन्द्र द्वारा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत ऊँट पालकों हेतु 9 व 01 पशु चिकित्सा अधिकारियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

पुरस्कार

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर को वर्ष 2016–17 के दौरान बीकानेर नगर में राजभाषा के उत्कृष्ट प्रयोग के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह प्रशस्ति पत्र श्रीमान अनिल कुमार दूबे, अध्यक्ष नराकास एवं मंडल रेल प्रबंधक, बीकानेर के कर कमलों से केन्द्र निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल को भेंट किया गया।

हिन्दी प्रकाशन

- राजभाषा पत्रिका करभ अंकः 14
- वार्षिक प्रतिवेदन (2015–16) हिन्दी व अंग्रेजी में अलग–अलग
- जनजातीय क्षेत्रों में पशुपालन–कम्पेंडियम
- उष्ट्र दुग्ध उत्पादन, मूल्यांकन एवं प्रसंस्करण हेतु कौशल उद्यमिता नवाचार प्रशिक्षण–ट्रेनिंग मैन्युअल

- ऊँट संबंधित उपयोगी जानकारी प्राप्त करने के माध्यम–विस्तार पत्रक
- ऊँटों में तिबरसा/सर्रा रोग : लाव और नियन्त्रण–विस्तार पत्रक
- गर्भवती ऊँटनी व उसके नवजात बच्चों की समुचित देखभाल–विस्तार पत्रक
- नर ऊँट में प्रजनन व्यवहार (झूट/रट) एवं उसका प्रबंधन–विस्तार पत्रक
- ऊँट को नियंत्रित करने के तरीके–विस्तार पत्रक
- ऊँटों को दवा देने के तरीके और सावधानियां–विस्तार पत्रक
- ब्रूसेल्लोसिस–ऊँटों व मनुष्यों में होने वाली एक महत्वपूर्ण बीमारी–विस्तार पत्रक

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली

हिन्दी चेतना मास

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति नवीन चेतना और जागृति उत्पन्न करने तथा अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संस्थान मुख्यालय में प्रतिवर्ष की भांति रिपोर्टाधीन वर्ष में सितम्बर मास को हिन्दी चेतना मास के रूप में मनाया गया। हिन्दी चेतना मास के दौरान अनेक विविधरंगी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जैसे काव्य–पाठ, श्रुतलेख, वाद–विवाद, टिप्पण व मसौदा लेखन, निबंध लेखन, आशु भाषण, कम्प्यूटर पर शब्द प्रसंस्करण, प्रश्न–मंच। इस वर्ष आयोजित की गई वाद–विवाद प्रतियोगिता का विषय था – 'हिन्दी माध्यम में कृषि शिक्षा एवं शोध कहाँ तक उपयोगी है'। श्रुतलेख प्रतियोगिता के अन्तर्गत प्रतियोगियों की शुद्ध एवं मानक वर्तनी की परीक्षा ली गई वहीं एक अन्य लोकप्रिय प्रतियोगिता प्रश्न–मंच में विविधरंगी प्रश्न पूछे गए जिनमें भारतीय संस्कृति, सामान्य ज्ञान, अद्यतन संचेतना, खेलकूद, विज्ञापन एवं मनोरंजन से संबंधित प्रश्न शामिल थे। उक्त सभी प्रतियोगिताओं में संस्थान के सभी वर्गों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

हिन्दी चेतना मास के उद्घाटन अवसर पर परियोजना निदेशक, डॉ. एन.के. सिंह दीप प्रज्ज्वलित करते हुए

हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 12 अक्तूबर 2017 को आयोजित हिन्दी पुरस्कार वितरण समारोह में हिन्दी चेतना मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता संस्थान के परियोजना निदेशक, डॉ. एन.के. सिंह ने की तथा श्रीमती संगीता जैन, सहायक ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

परियोजना निदेशक महोदय ने संस्थान द्वारा राजभाषा के संदर्भ में की जा रही प्रगति की सराहना की। समारोह का समापन इस संकल्प के साथ किया गया कि संस्थान के दैनिक सरकारी कार्य में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग बढ़ाए जाने के सार्थक प्रयास किए जाएंगे।

हिन्दी कार्यशाला

संस्थान के विभिन्न वर्गों के अधिकारियों व कर्मचारियों को अपने कार्यों में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने के प्रति प्रेरित करने के लिए वर्ष 2017–18 के दौरान संस्थान मुख्यालय में चार कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

- संस्थान के सभी वैज्ञानिकगण/अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण के लिए दिनांक 25 मई 2017 को संस्थान में हिन्दी कार्यशाला विषय 'कृषि बायोटेक्नोलॉजी' हिन्दी में लेखन एवं प्रसार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को हिन्दी के प्रति प्रेरित करना था ताकि कर्मचारी अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में कर सकें। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 अधिकारियों एवं 10 कर्मचारियों सहित कुल 40 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।
- संस्थान के सभी वैज्ञानिकगण/अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण के लिए दिनांक 29 अगस्त 2017 को संस्थान में हिन्दी कार्यशाला विषय "कम्प्यूटर में हिन्दी आई.टी. टूल्स एवं यूनीकोड" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को कृषि में प्रयोग में आने वाली हिन्दी के प्रति प्रेरित करना था ताकि कृषि वैज्ञानिक अपना शोध हिन्दी में कर सकें। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 26 अधिकारी एवं 09 कर्मचारियों सहित कुल 35 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

- संस्थान के सभी वैज्ञानिकगण/अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण के लिए दिनांक 14 सितम्बर, 2017 को संस्थान में हिन्दी कार्यशाला विषय–''हिन्दी चेतना सप्ताह'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को कृषि में प्रयोग में आने वाली हिन्दी के प्रति प्रेरित करना था
- संस्थान के सभी वैज्ञानिकगण/अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण के लिए दिनांक 04 मार्च 2017 को संस्थान में हिन्दी कार्यशाला विषय–''हिन्दी का भविष्य और भविष्य की हिन्दी'' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को कृषि में प्रयोग में आने वाली हिन्दी के प्रति प्रेरित करना था ताकि कृषि वैज्ञानिक अपना शोध हिन्दी में कर सकें तथा अधिक से अधिक प्रयोग में लाएं।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र, सोलापुर

हिन्दी पखवाड़ा

केन्द्र में दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2017 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया तथा इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं और हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया था।

हिन्दी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 09 अक्तूबर, 2017 को राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर के सभागार मे आयोजित किया गया, जिसके अध्यक्ष डॉ. आर. के. पाल, निदेशक, राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र, सोलापुर थे। समारोह में विभिन्न अधिकारियों द्वारा विचार व्यक्त किए गए। अध्यक्ष ने अपने भाषण मे हिन्दी भाषा के असीम महत्त्व को उजागर किया तथा हिन्दी को सीधी, आसान एव दिलों को जोड़ने वाली भाषा बताया फिर भी अपने ही देश मे हिन्दी के प्रसार के लिए प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है, यह खेद भी जताया। अनुसंधान केंद्र को हिन्दी से संबंधित कोई असुविधा हो तो हिन्दी मंच के तरफ से सहयोग करने का उन्होंने आश्वासन दिया। उसके उपरांन्त अध्यक्ष द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस समारोह का संचालन डॉ. डी. टी. मेश्राम, हिन्दी अधिकारी ने किया एव डॉ. ज्योशना शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करने हेतु केंद्र के डॉ. आर. के. पाल, डॉ.ज्योशना शर्मा, डॉ. दिनेश बाबू, डॉ. आशीस माइटी. श्री मल्लिकार्जुन, डॉ. शिल्पा पी. श्री. वी. ए. शिंदे और श्री आर. बी. राय की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही, इस समारोह मे केंद्र के सभी वैज्ञानिक तथा कर्मचारी उपस्थित थे।

प्रमुख उपलब्धियां

- संस्थान के ग्रंथालय मे 70 पुस्तिकाएं तथा एक वार्तापत्र हिन्दी उपलब्ध है।
- इस साल भी ग्रंथालय द्वारा 10 पुस्तकों की खरीद की प्रक्रिया जारी है।
- कार्यालय प्रयोग प्रक्षेत्र के सारे बोर्ड द्विभाषी कर दिए गए हैं।
- कार्यालय के सारे प्रशासनिक प्रोफार्मा द्विभाषी कर दिए गए हैं।
- कार्यालय के विभिन्न प्रभागों के नामपट्ट द्विभाषी कर दिए गए हैं।

प्रकाशन

- गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्री की तैयारी
- अनार के नए बगीचे की स्थापना
- जल प्रबंधन
- अनार में मर रोग का प्रबंधन
- अनार फल का रस चूसने वाला पतंगा एव उसका प्रबंधन
- पोषण तत्वों का प्रबंधन
- मोबाइल एप्प–सोलापुर अनार

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

हिंदी पखवाड़ा

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में 14 से 30 सितंबर 2017 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े का शुभारंभ 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह के आयोजन के साथ हुआ। हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता प्रभारी निदेशक डॉ. अमरेश कुमार नायक ने की। हिंदी दिवस समारोह में मंचासीन डॉ. अमरेश कुमार नायक, डॉ. एस.जी. शर्मा, प्रभागाध्यक्ष, फसल शरीर क्रिया विज्ञान एवं जैवरसायन प्रभाग तथा मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री कैलाश चंद्र जोशी ने हिंदी के महत्व और उसकी बढ़ती लोकप्रियता के संदर्भ में अपने–अपने विचार सभा के सम्मुख रखे।

दिनांक 14 सितंबर, 2017 से ही संस्थान में हिंदी प्रतियोगिताएं शुरू की गईं जो 22 सितंबर, 2017 तक जारी रहीं। इस अवधि में संस्थान के हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए अलग–अलग हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। श्रुत लेखन, शुद्ध एवं शीघ्र हिंदी लेखन, हिंदी पाठ–पठन, हिंदी निबंध लेखन, हिंदी लिप्यंतरण लेखन, हिंदी शब्द अंताक्षरी, हिंदी प्रारूप एवं टिप्पण लेखन तथा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। प्रतियोगिताओं की कुल संख्या 12 थी जिनमें 4 हिंदी भाषियों के लिए और 7 हिंदीतर भाषियों के लिए तथा 1 प्रतियोगिता संयुक्त रूप से थी। इन प्रतियोगिताओं में कुल 173 प्रतियोगियों ने भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त पखवाड़े का विशेष आकर्षण था– "प्रभागाध्यक्षों के बीच हिंदी में परिचर्चा।" परिचर्चा का विषय था– वर्ष 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करने का माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का आह्वानः चुनौतियाँ तथा रणनीति। परिचर्चा में सभी पाँच प्रभागाध्यक्षों–डॉ. अमरेश कुमार नायक, डॉ. एस.जी. शर्मा, डॉ. ओ.एन. सिंह, डॉ. मायाबिनी जेना, डॉ. पी. सामल ने भारतीय किसानों की वर्तमान आय तथा इसकी वृद्धि की राह में आने वाली चुनौतियों की चर्चा की तथा 2022 तक किसानों की आय में वृद्धि को दुगुना करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रस्तुत 7 रणनीतिक बिंदुओं पर विस्तार से अपनी बात रखी।

हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह संस्थान के सभागार में दिनांक 6 अक्टूबर 2017 को संपन्न हुआ। डॉ. अंजुमन आरा, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रेवेनशॉ विश्वविद्यालय, कटक इस समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। मुख्य अतिथि ने विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाण पत्र के साथ सम्मानित किया। प्रत्येक प्रतियोगिता के विजेताओं को क्रमशः प्रथम द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार दिए गए। इसके साथ ही उन 16 प्रतियोगियों को भी प्रोत्साहन स्वरूप उपहार देकर सम्मानित किया गया जिन्होंने प्रतियोगिताओं में भाग तो लिया लेकिन कोई भी पुरस्कार नहीं जीत पाए। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी अत्यंत सहज एवं सरल भाषा है। इसको बोलना भी सहज है और लिखना भी। अतः दैनिक व्यवहार तथा कार्यालयी कार्य दोनों में ही हिंदी का प्रयोग किया जाना चाहिए। आयोजन समिति के उपाध्यक्ष डॉ. एस. जी. शर्मा ने स्वागत भाषण दिया और हिंदी पखवाड़ा 2017 का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में निदेशक महोदय डॉ. हिमांशु पाठक ने हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी एवं हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति के सदस्यों को पखवाड़े के सुचारु ढंग से संचालन के लिए धन्यवाद दिया। डॉ. पाठक ने हिंदी पखवाड़े के सफल आयोजन पर प्रसन्नता जाहिर की तथा आयोजक समिति के सदस्यों की इस सफलता के लिए सराहना की। उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े नियमों के अनुपालन पर जोर दिया तथा कर्मचारियों से कार्यालय में अपने सरकारी कार्य को हिंदी में करने के लिए आग्रह किया। श्री आशुतोष कुमार तिवारी (राजभाषा) ने हिंदी पखवाड़ा समारोह से संबंधित सभी कार्यकलापों का संचालन एवं समन्वयन किया। श्री विभु कल्याण महांती, हिंदी अनुवादक ने सभा के अंत में सभाकक्ष में उपस्थित सभी सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

हिंदी कार्यशाला

राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में प्रशासनिक अनुभागों में केंद्रीय अधिनियम–राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) के अनुपालन तथा उसकी विषयवस्तु की समग्र जानकारी के लक्ष्य को केंद्रित करके दिनांक 29.8. 2017 को संस्थान के समिति कक्ष में एक राजभाषा कार्यशाला–सह–व्याख्यान का आयोजन किया गया। डॉ. बन बिहारी साहु, प्रबंधक, (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक, भुवनेश्वर इस कार्यशाला के अतिथि व्याख्याता थे। कार्यशाला

का आरंभ करते हुए सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री आशुतोष कुमार तिवारी ने सभी सदस्यों का स्वागत किया तथा विधेयक, अधिनियम तथा धारा में अंतर स्पष्ट करते हुए भारत के संविधान के अनुच्छेदों 343 तथा 344 के प्रावधानों को लागू करने के क्रम में संसद द्वारा पारित राजभाषा अधिनियम 1963 की प्रमुख धाराओं पर प्रकाश डाला। कार्यशाला के मुख्य व्याख्याता डॉ. बन बिहारी साहु ने राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अंतर्गत आने वाले 14 प्रमुख सरकारी दस्तावेजों पर क्रमवार विस्तृत चर्चा की। उन्होंने दस्तावेजों के प्रारूप लेखन तथा प्रशासनिक कार्यों में उनके अनुपालन हेतु उठाए जाने योग्य उपायों की ओर उपस्थित प्रशासनिक अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट किया। इस कार्यशाला में संस्थान के वित्त एवं लेखा अधिकारी एवं सभी सहायक प्रशासनिक अधिकारियों ने प्रतिभागिता की।

अंत में सभी उपस्थित सदस्यों द्वारा राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अनुपालन के प्रति प्रतिबद्धता के साथ बैठक का समापन हुआ।

पुरस्कार

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा स्थापित सम्मानजनक गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी पत्रिका पुरस्कार के अंतर्गत वर्ष 2015–16 के लिए राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक की वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'धान' को 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत

द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। डॉ. हिमांशु पाठक, निदेशक, एनआरआरआई तथा श्री आशुतोष कुमार तिवारी, सहायक निदेशक (राजभाषा), एनआरआरआई ने नई दिल्ली में 16 जुलाई 2017 को आयोजित परिषद की स्थापना दिवस के समारोह में माननीय केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह से प्रमाणपत्र एवं फलक प्राप्त किया। इस समारोह में भारत सरकार के माननीय केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री सुदर्शन भगत तथा कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. टी. महापात्र भी उपस्थित थे।

प्रमुख उपलब्धियां

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), कटक के अध्यक्ष कार्यालय राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के तत्वाधान में दिनांक 27.6.2017 को नराकास का एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम एनआरआरआई के सभागार में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दो सत्र थे जिनके विषय इस प्रकार हैं– प्रथम सत्र का विषय– "त्रैमासिक प्रगति विवरण का ऑनलाइन प्रेषण" एवं द्वितीय सत्र का विषय– "हिंदी कंप्यूटर टंकण में यूनिकोड का अनुप्रयोग" था।
- राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में 27 अक्टूबर 2017 को एक हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गए।
- 'हिंदी और उड़िया भाषा–साहित्यः एक तुलनात्मक विश्लेषण' व्याख्याताः डॉ. शंकरलाल पुरोहित, प्रख्यात साहित्यकार
- 'अनुवाद का महत्व एवं उपयोगिता' व्याख्याताः डॉ. अंजुमन आरा, एसोशिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रेवेनशॉ विश्वविद्यालय, कटक
- 'संसदीय राजभाषा निरीक्षण से संबंधित प्रश्नावली' व्याख्याताः श्री निर्मल कुमार दुबे, कार्यालय अध्यक्ष, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, (पूर्व) गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, कोलकाता
- सम्मेलन का आरंभ करते हुए सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री आशुतोष कुमार तिवारी ने भारतीय संविधान के अनुच्छेदों 343 तथा 351 जिनमें क्रमशः संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी तथा भारतीय सामासिक संस्कृति की सूत्रधार के रूप में हिंदी का उल्लेख है, का समन्वित भाव ग्रहण करने पर बल देते हुए कहा कि ये दोनों अनुच्छेद एक ही संविधान के परस्पर पूरक अनुच्छेद हैं इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम हिंदी भाषा और

हिंदी साहित्य दोनों का समेकित संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार करें। संस्थान में हिंदी सम्मेलन का आयोजन इसी दिशा में पहला प्रयास है।

- सम्मेलन को संबोधित करते हुए निदेशक महोदय डॉ. हिमांशु पाठक ने कहा कि साहित्य ही वह संजीवनी है जो भाषा को दीर्घायु बनाती है। कोई भाषा चाहे जितनी भी सशक्त क्यों न हो यदि उसका समृद्ध साहित्य नहीं है तो वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकती। उन्होंने संस्थान में हिंदी भाषा और साहित्य पर सम्मेलन की प्रशंसा करते हुए ऐसे आयोजनों को बार–बार किए जाने पर बल दिया। सम्मेलन में संस्थान के प्रभागाध्यक्षों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों सहित नराकास, कटक के लगभग 42 लोगों ने भाग लिया।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मथुरा

हिन्दी पखवाड़ा

सरकार के राजभाषा विभाग एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिसद के राजभाषा अनुभाग के निर्देशों के अनुपालन में संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन दिनांक 14.09.2017 से 28.09.2017 तक विचार संगोष्ठी, हिन्दी श्रुतलेख, हिन्दी हस्ताक्षर, हिन्दी निबंध, हिन्दी अनुवाद, हिन्दी अनुप्रयोग, हिन्दी शोध पत्र, ईनाम पाओ, सुलेख एवं दिनांक 26.9.2017 को एक पूर्ण कालिक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दिनांक 28.09.2017 को हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन निदेशक की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारी व कर्मचारी, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारियों ने सहभागिता की। दिनांक 14 सितम्बर, 2017 से प्रारम्भ हुए इस हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए गए समस्त कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागियों को डा. मनमोहन सिंह चौहान, निदेशक एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा धनराशि

द्वितीय पूर्ण कालिक त्रैमासिक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन

हिन्दी दिवस को संस्थान की राजभाषा हिन्दी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'अजामुख' का विमोचन करते हुए संस्थान के निदेशक डा. मनमोहन सिंह चौहान

हिन्दी पखवाड़ा–2017 के अन्तर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण करते हुए संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डा. मनमोहन सिंह चौहान

रू. 1,000/– (प्रथम पुरस्कार), 800/– (द्वितीय पुरस्कार), 600/– (तृतीय पुरस्कार) एवं 500/– (सांत्वना पुरस्कार) एवं प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि किसी भी देश की एकता एवं विकास के लिए उस देश की राष्ट्रभाषा का समृद्ध होना अति आवश्यक है। अतः हम सभी का कर्तव्य है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करने के लिए हर सम्भव प्रयास करें तथा संस्थान में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप हिन्दी में कार्य करते हुए हिन्दी के कार्यान्वयन को आगे बढ़ाना सुनिश्चित करें। हमेशा याद रखें कि दैनिक व्यवहार में हिन्दी भाषा का प्रयोग हीनता नहीं बल्कि गौरव का प्रतीक है।

हिन्दी कार्यशाला

प्रत्येक तिमाही के दौरान हिन्दी कार्यशालाओं (कुल 4) का आयोजन किया गया तथा इस कार्यशाला में संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा सहभागिता की गई इन कार्यशालाओं में डा. रघुवीर शरण तिवारी, प्राध्यापक एवं सह सचिव नराकास आगरा, डा. शीलेन्द्र वशिष्ठ, पूर्व वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा) पंजाब नेशनल बैंक क्षेत्रीय कार्यालय आगरा एवं डा. सुनीता रानी एवं डा. निबीर कान्ति घोष इमरिटस प्रोफेसर, आगरा कॉलेज, आगरा द्वारा क्रमशः राजभाषा नीति नियम एवं प्रावधान, प्रशासनिक शब्दावली एवं अनुवाद तथा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

केन्द्रीय गृह मंत्रालय भारत सरकार के अधीन कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), मथुरा द्वारा वर्ष 2016–17 के दौरान राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य हेतु मथुरा जनपद के अन्तर्गत कार्यरत समस्त केन्द्रीय कार्यालयों में संस्थान को प्रथम पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल

हिन्दी पखवाड़ा

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल में 14 से 28 सितम्बर 2017 के मध्य हिन्दी पखवाडे का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितम्बर 2017 को हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डा. आर. आर. बी. सिंह, निदेशक, राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। हिन्दी पखवाड़ा समिति के अध्यक्ष डा. अनिल कुमार ने हिन्दी के महत्व को बताते हुए राजभाषा के नियमों व अधिनियमों की विस्तृत जानकारी दी तथा हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों व प्रतियोगिताओं के बारे में अवगत कराया गया। उन्होंने कृषि मंत्री, भारत सरकार का हिन्दी चेतना मास, संदेश पढ़कर सुनाया एवं स्टॉफ के सभी सदस्यों से अपने दैनिक कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने की अपील की व पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली सभी प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़कर भाग लेने को कहा।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने अपने अभिभाषण में कहा कि यह दिवस हमें अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व के प्रति सचेत करता है। उन्होंने कहा कि राजभाषा के प्रति प्रेम और समर्पण से ही स्वदेश के प्रति प्रेम की भावना जागृत होती है जिसके लिए केन्द्र सरकार का राजभाषा विभाग व सभी राजकीय संस्थाएं हर संभव कोशिश कर रहे हैं ताकि कार्यालयों में हिन्दी का अधिकाधिक उपयोग हो। उन्होंने कहा कि हिन्दी दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। अब डिजिटल क्रांति का युग शुरू हो चुका है। गूगल, याहु और यू–ट्यूब जैसी वैबसाइटों से हिन्दी को निश्चित रूप से बढ़ावा मिल रहा है। उन्होंने आह्‌वान किया कि सभी कर्मचारी सरकारी कामकाज हिन्दी में ही करें।

हिन्दी पखवाड़े के शुभारम्भ के अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा

प्रमुख उपलब्धियां

- संस्थान में पांच दिवसीय विशेष तकनीकी अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजनः केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली के सौजन्य से संस्थान में दिनांक 4 दिसम्बर से 8 दिसम्बर 2017 के बीच पांच दिवसीय विशेष तकनीकी अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में संस्थान के 25 वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न

वक्ताओं द्वारा ब्यूरो की ओर से अनुवाद प्रशिक्षण संबंधी कार्यकलापों की जानकारी, अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्व पर चर्चा, सरकारी कामकाज में अनुवाद की समस्याएं व समाधान, कृषि से संबंधित शब्दावली एवं तत्संबंधी नवीनतम संकल्पनाओं पर चर्चा, संस्थान के मृदा लवणता संबंधी अनुसंधान कार्यों का हिन्दी भाषा में लेखन एवं प्रस्तुतीकरण में आने वाली कठिनाइयों पर चर्चा एवं उनका समाधान, कृषि वैज्ञानिकों और किसानों के मध्य संवाद कायम करने में हिन्दी की भूमिका, वैज्ञानिकों और तकनीकी अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएं एवं उनका समाधान, विज्ञान, वैज्ञानिक और हिंदी संस्थान में आयोजित की जाने वाली संगोष्ठियों व कार्यशालाओं आदि के आयोजन में हिन्दी के प्रयोग की संभावनाएं तथा अनुवाद संबंधी विमर्श विषयों पर व्याख्यान दिए गए। केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा भारतवर्ष में किसी सरकारी संस्थान में आयोजित किया गया। इस प्रकार का यह दूसरा प्रशिक्षण है। इससे पहले यह प्रशिक्षण केवल भाभा एटोमिक अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई में आयोजित किया गया व भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के हमारे संस्थान में इसे पहली बार आयोजित किया गया है। इस प्रशिक्षण का शुभारम्भ संस्थान के निदेशक द्वारा किया गया व समापन के अवसर पर परिषद से पधारी राजभाषा निदेशक श्रीमती सीमा चोपड़ा ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई व प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए।

प्रशिक्षण के शुभारम्भ के अवसर पर उपस्थित अधिकारीगण व प्रशिक्षणार्थी

- संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रत्येक तिमाही में (वर्ष में चार) बैठकें आयोजित की जाती हैं जिसमें संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हुई प्रगति का अवलोकन किया जाता है और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रमानुसार व समीक्षा के रूप में उनसे प्राप्त सुझावों पर संस्थान में राजभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए आवश्यक कदम उठाए जाते हैं।
- संस्थान में सभी रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, बोर्ड, बैनर आदि द्विभाषी बनाए गए।
- संस्थान में सभी प्रशासनिक बैठकें हिन्दी में आयोजित की गईं।
- संस्थान की तिमाही रिपोर्ट आनलाईन भेजी जा रही है।
- नराकास की बैठकों में संस्थान के कार्यालय प्रधान, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी व प्रभारी अधिकारी राजभाषा द्वारा भाग लिया गया और इन बैठकों में लिए गए निर्णयों की संस्थान में अनुपालना की गयी।
- इस अवधि में संस्थान की पत्रिका 'कृषि किरण' प्रकाशित की गईं।
- इस अवधि में संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16 द्विभाषी प्रकाशित किया गया।
- इस अवधि में संस्थान का जुलाई से दिसम्बर 2016 लवणता समाचार पत्र द्विभाषी प्रकाशित किया गया।
- इस अवधि के अन्तर्गत विभिन्न हिन्दी समाचार पत्रों में संस्थान में सम्पन्न गतिविधियों सम्बन्धी 170 प्रेस विज्ञप्तियाँ प्रकाशित हुईं।
- विगत कुछ वर्षों से संस्थान के प्रशासनिक कार्मिकों को राजभाषा (हिन्दी) में टिप्पणी व मसौदा लेखन के लिए प्रोत्साहित करने हेतु पुरस्कार वितरित किए जाते हैं उसी कड़ी में इस वर्ष भी 5 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया।
- कार्यालय में डाक प्रेषण का सारा काम हिन्दी में किया गया।
- अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियाँ हिन्दी में की गईं।
- कार्यालय के सभी अनुभागों में फाइलों में अधिकतर टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखी गईं।
- सभी मजदूरों के ठेके तथा नीलामी की सूचनाएं, विज्ञापन, प्रेस नोट निमंत्रण कार्ड आदि हिन्दी में प्रकाशित किए गए।
- लेखा परीक्षा अनुभाग के सभी बिलों पर भुगतान आदेश हिन्दी में लगाये गये व रोकड बही भी हिन्दी में लिखी गई।
- संस्थान की निदेशक इकाई को अपना सर्वाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए चल वैजयंती पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत संस्थान के 6 कर्मचारियों को वर्षभर अपना काम हिन्दी में करने के लिए पुरस्कृत किया गया।
- एम.एस.एम.ई., विकास संस्थान, करनाल में हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में संस्थान के अधिकारी व कर्मचारी श्री नरेन्द्र कुमार वैद व श्रीमती सुनीता मल्होत्रा ने भाग लिया।

- भा.कृ.अनु.प.–गन्ना प्रजनन संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल में हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में संस्थान के अधिकारी व कर्मचारी श्री नरेन्द्र कुमार वैद, श्री अनिल शर्मा, श्रीमती सुनीता मल्होत्रा एवं सुश्री शिवांगी राउत ने भाग लिया व श्री नरेन्द्र कुमार वैद ने प्रथम व श्री अनिल शर्मा ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।
- भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में हिन्दी पखवाड़े में आयोजित देश भक्ति गीत गायन प्रतियोगिता में संस्थान के दो कर्मचारियों श्री मयंक पांडे व श्रीमती मधु बाला ने भाग लिया व श्री मयंक पांडेय ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

पुरस्कार / सम्मान

संस्थान को भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में दिनांक 9 जून 2017 को सम्पन्न हुई नराकास करनाल की छमाही समीक्षा बैठक में वर्ष 2016–17 में संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु अपने वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 65वीं छमाही समीक्षा बैठक में हिन्दी में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु प्रथम पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते संस्थान के व.प्र. अधिकारी व राजभाषा अधिकारी

हिन्दी प्रकाशन

- इस अवधि में संस्थान का लवणता समाचार पत्र जून से दिसम्बर 2015 व जनवरी से जून, 2016 हिन्दी में प्रकाशित किया गया।
- इस अवधि में संस्थान की पत्रिका 'कृषि किरण' प्रकाशित की गई।
- इस अवधि में संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16 द्विभाषी प्रकाशित किया गया।
- इस अवधि में संस्थान का जुलाई से दिसम्बर 2016 लवणता समाचार पत्र द्विभाषी प्रकाशित किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलूरू

हिंदी पखवाड़ा

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान में 14–28 सितंबर 2017 के दौरान हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ समारोह संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ. ए.के. चक्रवर्ती की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें रक्षा अनुसंधान व विकास संगठन के सलाहकार डॉ. अशोक कुमार भाटिया मुख्य अतिथि थे। हिंदी पखवाड़े के दौरान 'हिंदी कविता पाठ', 'हिंदी शब्दावली एवं टिप्पण', 'पूर्व लिखित हिंदी निबंध', 'हिंदी गीत', 'आशु भाषण' और 'हिंदी संवाद' प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

उद्घाटन समारोह के दौरान ''भारत का खाद्य परिदृश्य'' विषय पर मुख्य अतिथि का व्याख्यान भी आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि ने कहा कि आजकल खाद्य प्रसंस्करण का महत्व कई गुना बढ़ा है। हमारे देश में भण्डारण की सुविधा बहुत कम नहीं है। भारत दुनिया का पहला देश है, जहाँ खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय है।

हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि का उद्बोधन

हिंदी शब्दावली एवं टिप्पण प्रतियोगिता का दृश्य

समापन समारोह के मुख्य अतिथि का उद्बोधन

निदेशक का उद्बोधन

पुरस्कार वितरण

हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह 03 अक्तूबर 2017 को निदेशक डॉ. एम.आर. दिनेश की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. मंगल प्रसाद, पूर्व उपनिदेशक, कुद्रमुख मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि ने कहा कि कोई भी भाषा एक दिन या पखवाड़े में न विकसित होती है और न खत्म होती है। भाषा का पूरा परिवेश देखें तो पता चलेगा कि हिंदी का प्रचार बढ़ा है लेकिन कार्यालयों में जितनी बढ़नी थी, उतनी नहीं बढ़ी। कोई भी भाषा प्रयोग से बनती है। हमारी भ्रांति है कि ज्ञान–विज्ञान की भाषा अंग्रेज़ी है। इस भ्रांति को तोड़ें। रूस, चीन, जापान, इस्राइल अपनी भाषा के सहारे ही आज विश्व में आगे बढ़े हैं, उन्हें अंग्रेज़ी की बैसाखी की ज़रूरत नहीं पड़ी। कोई भाषा न तो आसान है, न कठिन है, न छोटी है और न बड़ी। ज्ञान–विज्ञान जहाँ पर विकसित होते हैं, वहाँ की भाषा में होते हैं और बाद में दूसरी भाषा में अनूदित होते हैं। अपनी मानसिकता को बदलें, तब होनेवाले बदलाव को महसूस करें।

निदेशक डॉ. एम.आर. दिनेश ने कहा कि भाषा लोगों को जोड़ती है। भारत में हिंदी एक संपर्क भाषा है। कन्नड़ भाषियों को हिंदी समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी, क्योंकि हिंदी और कन्नड़ में बहुत–से शब्द संस्कृत से आए हैं। अगर हम सब हिंदी में बात करेंगे और हिंदी में काम करेंगे तो हिंदी अवश्य ही राष्ट्रभाषा बनेगी।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं निदेशक ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं और हिंदी में मूल रूप से काम करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र वितरित किए।

हिन्दी कार्यशाला

संस्थान में वर्ष 2017 के दौरान निम्नलिखित हिन्दी कार्यशालाएँ आयोजित की गईः

- दिनांक 20 जनवरी 2017, 28 जून 2017, 23 अगस्त 2017 और 28 नवंबर 2017 को संस्थान के स्थापना अनुभाग, वित्त एवं लेखा अनुभाग, नगद व बिल अनुभाग और क्रय अनुभाग के कर्मचारियों के लिए ''कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य'' तथा ''हिन्दी में टिप्पण एवं आलेखन'' विषयों पर टेबुल कार्यशालाएँ आयोजित की गईं।

प्रमुख उपलब्धियां

- संस्थान के तकनीकी वर्ग के कर्मचारियों के लिए हिंदी में बातचीत करने की झिझक को दूर करने हेतु 18.09.2017

से 25.09.2017 तक ''आइए हिंदी बोलिए'' नामक पाँच दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

- संस्थान में दिनांक 11 अगस्त 2017 को संस्थान के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में ''भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों में प्रशासन/प्रबंधन की दक्षता एवं प्रभाव बढाने तथा राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन'' पर स्वर्ण जयंती राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के अपर सचिव एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वित्तीय सलाहकार श्री सुनिल कुमार सिंह थे।
- इस एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन को दो सत्रों में बाँटा गया था। पहले सत्र का विषय था–''भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों में प्रशासन/प्रबंधन की दक्षता एवं प्रभाव बढ़ाना''। इस सत्र में कुल तीन प्रस्तुतियाँ थीं, जिनमें ''वित्तीय शक्ति का प्रत्यायोजन'', ''वित्तीय लेखा प्रबंधन'' तथा ''सामान्य प्रशासनिक मुद्दे'' विषयों पर क्रमशः श्री पुष्पनायक, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी क्षेत्रीय परिसर, पटना, बिहार; श्री जी.पी. शर्मा, मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जोधपुर तथा श्री जी.जी. हरकंगी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु ने प्रस्तुतियाँ दीं।
- दूसरे सत्र का विषय था–''भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों में भारत सरकार की राजभाषा नीति का प्रभावी कार्यान्वयन''। इस सत्र में भी तीन व्याख्यान थे, जिनमें श्री अनिल कुमार दुबे, पूर्व निदेशक (राजभाषा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने ''राजभाषा नीति का कार्यान्वयनः समस्याएँ एवं समाधान'' विषय पर; डॉ. पी.एस.आर. मूर्ति, संयुक्त निदेशक (चयन श्रेणी), सीएसआईआर–राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रयोगशालाएँ, बेंगलूरु ने ''राजभाषा के कार्यान्वयन में उच्च अधिकारियों की भूमिका'' विषय पर तथा डॉ. एस.एन. महेश, सी.ए.आई. आर. (रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन), बेंगलूरु ने ''हिंदी कम्प्यूटिंग'' विषय पर व्याख्यान दिया। इस एक दिवसीय सम्मेलन में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों से कुल 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया था।
- संस्थान में मूल रूप से हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहन योजना लागू की गई तथा इस वर्ष के दौरान

मुख्य अतिथि श्री सुनिल कुमार सिंह सभा को संबोधित करते हुए

मुख्य अतिथि श्री सुनिल कुमार सिंह सभा को संबोधित करते हुए

डॉ. राघवेन्द्र भट्ट, निदेशक, राष्ट्रीय पशु पोषण एवं शरीर क्रिया विज्ञान संस्थान, बेंगलूरु सभा को संबोधित करते हुए

सम्मेलन के प्रतिभागी मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों के साथ

इस योजना में भाग लेने वाले कुल 10 प्रतिभागियों में से 02 कर्मचारियों को प्रथम पुरस्कार, 03 कर्मचारियों को द्वितीय पुरस्कार और 05 कर्मचारियों को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। इन कर्मचारियों को हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के दौरान नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

- श्री ए.के. जगदीशन, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने केन्द्रीय अंतःस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, बेंगलूरु में 28 अक्तूबर 2017 को ''हिंदी कम्प्यूटिंग'' विषय पर आयोजित कार्यशाला में व्याख्यान दिया और प्रतिभागियों से व्यावहारिक अभ्यास कराया।
- श्री जगदीशन, ए.के., सहायक निदेशक (राजभाषा) ने 08.12.2017 को विशाखापट्टनम इस्पात संयंत्र, विशाखापट्टणम में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लिया।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बेंगलूरु के तत्वावधान में संस्थान में 16 अक्तूबर 2017 को विभिन्न कार्यालयों के लिए हिंदी में लिखित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई।

हिन्दी प्रकाशन

- वार्षिक रिपोर्ट 2016–17
- वार्षिक राजभाषा पत्रिका ''बागवानी''

भा.कृ.अनु.प.–संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, चेट्टल्ली

हिन्दी सप्ताह

केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, चेट्टल्ली, कोडगु, कर्नाटक में 16–12 सितंबर 2017 के दौरान हिंदी सप्ताह आयोजित किया गया। हिंदी सप्ताह का उद्घाटन 16 सितंबर 2007 को आयोजित किया गया, जिसमें श्री अर्जन सिंह, प्रिंसिपल, केन्द्रीय विद्यालय, मडिक्केरी मुख्य अतिथि थे। प्रधान वैज्ञानिक एवं केन्द्र के प्रभारी डॉ. आई.एन. दोरेयप्पा गौडा ने अतिथियों का स्वागत किया और उन्होंने दैनिक जीवन में हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रधान वैज्ञानिक एवं हिंदी सप्ताह कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. वी. शंकर ने हिंदी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित होने वाली गतिविधियों की जानकारी दी। हिंदी सप्ताह के दौरान केन्द्र के सभी कर्मचारियों और वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं के लिए श्रुतलेख, काव्य पाठ, शब्दार्थ, सुलेख और हिंदी वर्णमाला प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। हिंदी सप्ताह का समापन समारोह 21 सितंबर 2017 को आयोजित किया गया, जिसमें श्री सुब्रमण्या, कार्यक्रम पालक, आकाशवाणी, मडिक्केरी तथा डॉ. श्रीधर रमाकान्त हेगडे, एसोसिएट प्रोफेसर एवं हिंदी विभाग प्रमुख, फील्ड मार्शल करियप्पा महाविद्यालय, मडिक्केरी मुख्य अतिथि थे।

हिंदी सप्ताह का उद्घाटन

मुख्य अतिथि का उद्बोधन

समापन समारोह के मुख्य अतिथि का उद्बोधन

केन्द्र के प्रभारी का उद्बोधन

समापन समारोह के मुख्य अतिथि का उद्बोधन

पुरस्कार वितरण

डॉ. प्रीति सोनवाने, वैज्ञानिक एवं सदस्य सचिव, हिंदी सप्ताह आयोजन समिति ने हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित गतिविधियों की जानकारी दी। समापन समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र वितरित किए गए। डॉ. वेंकटरावणप्पा, वैज्ञानिक ने आभार प्रकट किया।

भा.कृ.अनु.प.–संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, भुवनेश्वर, ओडिशा

हिन्दी सप्ताह

केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, भुवनेश्वर, ओडिशा में कार्यालयीन कार्य में हिंदी को बढ़ावा देने हेतु 14–20 सितंबर 2017 के दौरान हिंदी सप्ताह आयोजित किया गया। श्री शुभ्रांश मिश्रा, क्षेत्रीय उप आयुक्त, बी.एम.सी., भुवनेश्वर ने हिंदी सप्ताह का उद्घाटन किया। उन्होंने राष्ट्रीय एकता और सामाजिक विकास में हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ. जी.सी. आचार्य, प्रभारी अध्यक्ष ने केन्द्र में हिंदी को बढ़ावा देने हेतु आयोजित की जाने वाली गतिविधियों की जानकारी दी। हिंदी सप्ताह के दौरान आशुभाषण, हिंदी निबंध, हिंदी शब्दावली, प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन सूचना प्रौद्योगिकी साधनों के माध्यम से किया गया और अधिकांश कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया। हिंदी सप्ताह का समापन समारोह 20 सितंबर 2017 को आयोजित किया गया, जिसमें श्री प्रदीप रथ, पूर्व उप मुख्य श्रम आयुक्त, ओडिशा सरकार मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर डॉ. लक्ष्मीनारायण, केन्द्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर, डॉ. मनीश कुमार, आई.एम.एम.टी., भुवनेश्वर और केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर के वैज्ञानिक भी उपस्थित थे। श्री प्रदीप रथ ने समाज और देश की जनता के बीच संपर्क स्थापित करने के लिए भाषा के महत्व पर ज़ोर दिया। डॉ. कुमार ने हिंदी को विज्ञान से जोड़ने और विज्ञान को हिंदी से जोड़ने की बात कही। डॉ. जी.सी. आचार्य ने अतिथियों का स्वागत किया और सभी कर्मचारियों को प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लिने के लिए बधाई दी। डॉ. कुन्दन किशोर ने हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अतिथियों और केन्द्र प्रभारी ने पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र वितरित किए। डॉ. पी. श्रीनिवास ने आभार प्रकट किया। पूरे कार्यक्रम का आयोजन डॉ. कुन्दन किशोर, डॉ. पी. श्रीनिवास, डॉ. एस. मण्डल, डॉ. पी. नरेश और श्री बी.सी. पात्रा के सहयोग से हुआ।

हिंदी सप्ताह का उद्घाटन समारोह

हिंदी सप्ताह का समापन समारोह

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

हिंदी चेतना मास

संस्थान में 16 अगस्त से 14 सितंबर, 2017 के दौरान हिंदी चेतना मास समारोह का आयोजन किया गया । उक्त चेतना मास के अंतर्गत हिंदी में 11 विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक तथा अनुसंधान सहायक, शोध छात्रों आदि ने बड़े–ही उत्साह एवं उमंग के साथ भाग लिया । इसके अलावा उक्त चेतना मास के दौरान हिंदी में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हिंदी में हस्ताक्षर करके कार्यक्रम को सफल बनाया ।

संस्थान में 18 सितंबर 2017 को हिंदी चेतना मास के समापन समारोह का आयोजन किया गया । समारोह का शुभारंभ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् गान से हुआ । सर्वप्रथम संस्थान के निदेशक, डॉ. विलास ए टोणपि ने मुख्य अतिथि के रूप में पधारे प्रो. आर एस सर्राजु, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय का पुष्पगुच्छ तथा शाल से सम्मान किया । डॉ. महेश कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया तथा समारोह में उपस्थित लोगों का स्वागत किया । तत्पश्चात उन्होंने संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी वार्षिक प्रतिवेदन एवं हिंदी चेतना मास समारोह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा उक्त समारोह को सफल बनाने के लिए संस्थान में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया ।

इस अवसर पर प्रो. सर्राजु ने संस्थान में हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण–पत्र एवं प्रतियोगिता के अन्य सहभागियों को कलम तथा प्रमाण–पत्र प्रदान किए। डॉ. टोणपि ने संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन को प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु संचालित नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत श्री डी रामबाबू – सहायक, श्रीमती वी एस जी पार्वती – सहायक प्रशासनिक अधिकारी एवं श्री रघुनाथ कुलकर्णि – वरिष्ठ तकनीकी सहायक को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र तथा प्रतियोगिताओं के निर्णायकों को स्मृति चिह्न प्रदान किए ।

प्रो. सर्राजु ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा कार्यान्वयन को हमें केवल संवैधानिक दायित्व न समझकर नैतिक दायित्व भी समझना चाहिए और तभी हम राजभाषा कार्यान्वयन को उसके लक्ष्य तक पहुंचा सकते हैं । इसके अलावा उन्होंने बताया कि मातृ दिवस, पितृ दिवस, हिंदी दिवस आदि तो पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण मात्र है और उन्होंने इस संदर्भ में संस्थान में संचालित हिंदी चेतना मास की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन भाषा सीखने का उत्तम उत्सव है। डॉ. टोणपि ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हमारा संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में सही मार्ग पर है और हमें इसे और आगे बढ़ाने हेतु प्रयास करने चाहिए।

हम हमारे प्रौद्योगिकी एवं विस्तार संबंधी कार्यों के लिए हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं का उपयोग कर रहे हैं और आगे भी इसे जारी रखेंगे, हमारे कार्यों की सार्थकता भी इसी में है। इसके अलावा डॉ. टोणपि ने कहा कि आगे से हम संस्थान के हर कार्मिक के लिए अन्य कार्यों की तरह राजभाषा कार्यान्वयन के लिए भी एक निश्चित लक्ष्य रखेंगे और अंत में उससे कार्य निष्पादन का विवरण भी लेंगे । इस तरह हम राजभाषा कार्यान्वयन को ऊंचाइयों पर ले जा सकते हैं। डॉ. वी आर भागवत, डॉ. अविनाश सिंगोडे, डॉ. के वी राघवेन्द्र राव, श्री चार्ल्स एक्का आदि ने राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति संबंधी चर्चा में भाग लिया और भिन्न–भिन्न सुझाव दिए । अंत में डॉ. महेश कुमार द्वारा धन्यवाद ज्ञापन तथा सामूहिक रूप से राष्ट्रगान के पश्चात समारोह का समापन हुआ । संस्थान में संपन्न हिंदी चेतना मास समारोह के कार्यक्रमों का संचालन एवं समन्वय डॉ. विलास ए टोणपि के दिशा–निर्देश में डॉ. बी दयाकर राव तथा डॉ. महेश कुमार द्वारा किया गया।

हिंदी कार्यशाला

संस्थान में 04 मई तथा 13 सितंबर, 2017 के दौरान दो हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया । उक्त कार्यशालाओं में श्री मनोज कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

(राजभाषा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली तथा श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी, सहायक निदेशक, केंद्रीय प्रशिक्षण उप संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार विषय विशेषज्ञ व अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित थे ।

श्री मनोज कुमार ने राजभाषा नीति एवं उसका कार्यान्वयन विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विभिन्न पहलुओं तथा संसदीय राजभाषा समिति के द्वारा निरीक्षण आदि पर प्रकाश डाला। इसके अलावा उन्होंने बताया कि केंद्रीय सरकार के कर्मचारी होने के नाते राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा नैतिक दायित्व है । श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी ने राजभाषा हिंदी का महत्व एवं उसके प्रति हमारे कर्तव्य विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए बताया कि आज हम कहते हैं अंग्रेजी के बिना कार्य संभव नहीं है, परंतु इतिहास देखने पर पता चलता है कि अंग्रेजी के बिना भारतीय भाषाओं में भी कार्य करते हुए हमारा देश पूर्णरूप से विकसित था और ज्ञानार्जन हेतु लोग विदेशों से हमारे देश में आते थे । अतः आज हिंदी हमारी मजबूरी नहीं, बल्कि आवश्यकता है ।

प्रमुख उपलब्धियां

- भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के द्वारा प्रकाशित "कदन्न सौरभ" नामक वार्षिक पत्रिका के अंक – 6 को भारतीय कृषि अनसंधान परिषद, नई दिल्ली के द्वारा गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी पत्रिका पुरस्कार (2015–16) के अंतर्गत "ग" क्षेत्र के भा.कृ.अनु.प. संस्थानों के द्वारा प्रकाशित पत्रिका की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में आयोजित 89वें भाकृअनुप स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर उक्त पुरस्कार के रूप में श्री राधा मोहन सिंह जी, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार के कर–कमलों से डॉ. विलास ए टोणपि, निदेशक ने शील्ड एवं श्री सुदर्शन भगत जी, माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार के कर–कमलों से डॉ. महेश कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) ने प्रमाण–पत्र ग्रहण किया ।

इस अवसर पर डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) व महानिदेशक, भाकृअनुप, डॉ. ए के सिंह, उपमहानिदेशक (कृषि विस्तार), भा.कृ.अनु.प., श्री छबिलेन्द्र राउल, अतिरिक्त सचिव, डेयर एवं सचिव, भाकृअनुप तथा श्री एस के सिंह, अतिरिक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, भाकृअनुप मंच पर उपस्थित थे। इसके अलावा परिषद के अन्य गणमान्य वरिष्ठ अधिकारीगण तथा भाकृअनुप संस्थानों के निदेशक, कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपति, कृषक आदि भी समारोह में उपस्थित थे। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु परिषद के द्वारा संस्थान के निदेशक एवं पत्रिका के संपादक–मंडल की सराहना की गई। उक्त पत्रिका पिछले छः वर्षों से निरंतर प्रकाशित की जा रही है ।

हिंदी प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन 2016–17 का हिंदी में प्रकाशन
- आई.आई.एम.आर. हैपनिंग्स (मासिक) के हिंदी में सार अनुवाद का प्रकाशन
- कदन्न फसलों के महत्व एवं उनके व्यंजन बनाने की विधियों को दर्शाता हुआ कदन्न कैलेंडर 2017 प्रकाशित ।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय प्राकृतिक रॉल एवं गोंद अनुसंधान संस्थान, रांची

हिन्दी दिवस

संस्थान में राजभाषा अधिनियम के अनुपालन एवं कार्यालय कार्य में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए दिनांक–01.09.2017 से 30.09.2017 तक हिन्दी चेतना मास का पालन किया गया। इसके अन्तर्गत दिनांक–25.09.2017 को अपराह्न 02.15 बजे हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ श्रीराम दूबे, वरिष्ठ साहित्यकार एवं भा.प्र.से. (सेवानिवृत) ने झारखंड के हिन्दी साहित्य परिदृश्य विषय पर बोलते हुए कहा कि

हिन्दी भाषा के प्रयोग को मजबूरी नहीं समझना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य में हिन्दी के क्षेत्र में कई ऐसे साहित्यकार हुए हैं, जिनका राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान हुआ है। आज भी झारखंड में स्तरीय साहित्य का सृजन हो रहा है। डॉ दूबे ने द्वारिका प्रसाद, राधाकृष्ण, बालेन्दु शेखर तिवारी, श्रवण कुमार गोस्वामी, रीता शुक्ल इत्यादि राज्य के प्रसिद्ध साहित्यकारों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, इसके माध्यम से कई भाषाएं आपस में जुड़ी हुई हैं। भाषाई एकता को संभाले रखना हम सभी का दायित्व है। जहां देश में हर बीस किलोमीटर पर पानी और वातावरण बदल जाता है, वहां हिन्दी भाषा पूरे देश को एकता की डोर में जोड़े रखती है। जब–जब राजनीति लड़खड़ाएगी, हिन्दी साहित्य सहारा का काम करेगा। हिन्दी भाषा में संकट नहीं सरलता है।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रुप में श्री पंकज मित्र, वरिष्ठ साहित्यकार एवं वरिष्ठ कार्यक्रम अधिशासी, आकाशवाणी, राँची ने हिन्दी का बढ़ता बाजार एवं बाजारवाद विषय पर बोलते हुए कहा कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, लेकिन बढ़ता हुआ बाजारवाद आदमी, समूह, संस्कृति और भाषा को बांटने का काम कर रहा है। सामूहिक पहचान हमें हिन्दी भाषा ही दे सकती है। बाजारवाद सामूहिक संस्कृति पर प्रहार कर रहा है। जीवन, संस्कृति, सभ्यता, समाज के संरक्षण के लिए हिन्दी का संरक्षण जरूरी है।

संस्थान के निदेशक, डॉ केवल कृष्ण शर्मा ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हिन्दी चेतना मास के अन्तर्गत हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया है। संस्थान में लम्बे समय से राजभाषा हिन्दी का प्रयोग होता रहा है। हमारे यहाँ कार्यालय कार्य के साथ–साथ वैज्ञानिक साहित्य में भी हिन्दी का अच्छा प्रयोग हो रहा है। संस्थान द्वारा नियमित अंतराल पर हिन्दी/द्विभाषी पुस्तिकाएं, पत्रक इत्यादि प्रकाशित होते रहते हैं। इस अवसर पर संस्थान की वार्षिक राजभाषा पत्रिका लाक्षा–2017 का अतिथियों द्वारा लोकार्पण किया गया। हिन्दी चेतना मास की अवधि में दिनांक 07–08 सितम्बर 2017 को हिन्दी टिप्पण, प्रारूप लेखन, निबंध, अंताक्षरी, पर्याय, व्याख्यान एवं विपरीतार्थक शब्द प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। डॉ एम जेड सिद्दीकी, श्री प्रहलाद सिंह, श्री बिनोद कुमार, श्री अनिल कुमार सिन्हा, श्री कृष्ण मुरारी कुमार, श्री शरत चन्द्र लाल, श्री मान्देश्वर सिंह, श्री बैजनाथ महतो, श्री जलेश्वर महतो, श्री चैतु कच्छप इत्यादि को पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके साथ ही समारोह में लाक्षा–2016 में उत्कृष्ट आलेख का पुरस्कार भी प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ अंजेश कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ निर्मल कुमार, विभागाध्यक्ष एवं अध्यक्ष हिन्दी दिवस समारोह आयोजन समिति ने किया। इस अवसर पर अन्य संस्थानों के अतिथियों के अतिरिक्त संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिन्दी कार्यशाला

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान में 01 मार्च 2017 को पूर्वाहन 10.00 बजे राज्य में भूगर्भ जल की स्थिति एवं जल छाजन विषय पर एक दिवसीय नगर स्तरीय हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में संगोष्ठी का शुभारम्भ करते हुए मुख्य डाक महाध्यक्ष झारखण्ड परिमण्डल श्री अनिल कुमार ने कहा कि जल छाजन वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गयी है। औद्योगिक इकाइयों के पास अगर पर्याप्त जमीन हो तो उन्हें आवश्यक रूप से जल छाजन को अपनाना चाहिए।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान में दिनांक 01–15 सितम्बर, 2017 तक हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान 01 सितम्बर, 2017 को प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, 04 सितम्बर, 2017 को आशुभाषण प्रतियोगिता, 05 सितम्बर, 2017 को हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता, 06 सितम्बर, 2017 को काव्य पाठ प्रतियोगिता एवं 08 सितंबर, 2017 को हिन्दी में सर्वाधिक कार्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रशासनिक एवं तकनीकी वर्ग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. अलोक नाथ राय ने एक परिपत्र जारी कर संस्थान के राजभाषा हिन्दी के सक्रिय कार्यान्वयन हेतु अपने संकल्प को दोहराते हुए समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना कार्यालय कार्य हिन्दी में करने का अनुरोध किया।

कोलकाता स्थित भाकृअनुप–राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह दिनांक 15 सितम्बर, 2017 को बड़े ही हर्ष के साथ में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भाकृअनुप–एटीएआरआई के निदेशक डॉ. एस. एस. सिंह मुख्य अतिथि के रूप में सादर आमंत्रित थे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभार संस्थान के निदेशक डॉ. अलोक नाथ राय ने संभाला। सर्वप्रथम श्री आर. डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने इस अवसर पर उपस्थित संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों, कर्मचारियों एवं समापन समारोह के माननीय मुख्य अतिथि डॉ. एस. एस. सिंह का संस्थान की ओर से हार्दिक स्वागत किया। तदुपरान्त भाकृअनुप गीत से कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। इसके बाद हमारी परंपरानुसार कार्यक्रम का शुभारंभ द्वीप प्रज्जवलित कर किया गया। डॉ. रीणा नैय्या ने इस अवसर पर संस्थान की ओर से

माननीय मुख्य् अतिथि डॉ. एस. एस. सिंह एवं संस्थान के निदेशक डॉ. अलोक नाथ राय का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया। डॉ. वी. बी. शंभू ने आदरणीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह द्वारा भेजे गए संदेश को पढ़कर सुनाया। हिन्दी पखवाड़ा समारोह के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं एवं हिन्दी में सर्वाधिक कार्य प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले विजयी प्रतिभागी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को क्रमशः मुख्य् अतिथि महोदय एवं निदेशक महोदय के कर कमलों द्वारा यथोचित पुरस्कार और अन्य प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए।

भा.कृ.अनु.प.–एटीएआरआई के निदेशक डॉ. एस. एस. सिंह ने अपने मुख्य व्याख्यान में संस्थान के मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित करने हेतु निरजैफ्ट के निदेशक के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए सभी से अधिक से अधिक काम हिन्दी में करने का अनुरोध किया तथा हिन्दीं पखवाड़ा के दौरान प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए सभी प्रतिभागियों को सराहा तथा बताया कि सरकारी कार्यालयों में हिन्दी में काम काफी बढ़ा है लेकिन शत प्रतिशत हिन्दी में काम नहीं हो पा रहा है। अब समय आ गया है कि हम दृढ़ संकल्प करें कि अब हम हिन्दीं में ही काम करेंगे। ऐसा करने से वैज्ञानिकों एवं किसानों के बीच की दूरी बहुत हद तक खत्म हो जाएगी।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में संस्थान के निदेशक महोदय ने मुख्य अतिथि भाकृअनुप–एटीएआरआई के निदेशक डॉ. एस. एस. सिंह, श्री आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं हिन्दी पखवाड़ा समारोह समिति के सदस्यों और उपस्थित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस समारोह को सुव्यवस्थित ढ़ंग से सम्पन्न कराने के लिए धन्यवाद दिया। इसके साथ ही साथ उन्होनें बताया कि संस्थान के कार्यों को हिन्दी एवं द्विभाषी रूप में करना केवल हिन्दी अनुभाग का ही काम नहीं है बल्कि संस्थान के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी का दायित्व है कि वे अपने सरकारी कार्य को अधिक से अधिक मूलरूप में हिन्दी में करें। उन्होंने यह भी बताया कि राजनीति की भाषा होनी चाहिए लेकिन भाषा की राजनीति नहीं होनी चाहिए।

इस कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री आर. डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने किया और मुख्य अतिथि, कार्यक्रम अध्यक्ष तथा संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का पुनः आभार प्रकट करते हुए डॉ. एल.के. नायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने उपस्थित सभी को धन्यवाद ज्ञापन किया।

हिन्दी कार्यशाला

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता में दिनांक 25.02.2017 को पूर्वाह्न 11.00 बजे से 01.00 बजे तक एवं अपराह्न 02.00 बजे से 04.00 तक क्रमशः "हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन" एवं "राजभाषा कार्यान्वयन" विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 23 प्रतिभागियों (04 अधिकारी और 19 कर्मचारी) ने भाग लिया।

द्वितीय कार्यशाला दिनांक 24.06.2017 को पूर्वाह्न 11.00 बजे से 01.00 बजे तक एवं अपराह्न 02.00 बजे से 04.00 तक क्रमशः "हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन" एवं "राजभाषा के रूप में हिन्दी" विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 27 प्रतिभागियों (06 अधिकारी और 21 कर्मचारी) ने भाग लिया।

तृतीय कार्यशाला दिनांक 13.07.2017 को पूर्वाह्न 11.00 बजे से 01.00 बजे तक संस्थान में केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली द्वारा वीडियों कान्फ्रेसिंग के जरिए हिन्दी प्रशिक्षण दिए जाने का परीक्षण एवं "हिन्दी व्याकरण" विषय पर एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस पशिक्षण एवं कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 26 प्रतिभागियों (16 अधिकारी और 10 कर्मचारी) ने भाग लिया।

चतुर्थ कार्यशाला 31.07.2017 को पूर्वाह्न 11.00 बजे से 01.00 बजे तक संस्थान में "भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन" विषय पर हिन्दी में गृह संगोष्ठी सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी सह कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 48 अधिकारियों/ कर्मचारियों (28 अधिकारी और 20 कर्मचारी) ने भाग लिया।

पंचम कार्यशाला दिनांक 19.08.2017 को पूर्वाह्न 11.00 बजे से 01.00 बजे तक एवं अपराह्न 02.00 बजे से 04.00 तक क्रमशः "हिन्दी में काम करते समय आने वाली समस्या और उसका समाधान" एवं "यूनीकोड" विषय पर एक दिवसीय हिन्दी् कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला

में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 31 प्रतिभागियों (06 अधिकारी और 25 कर्मचारी) ने भाग लिया।

षष्टम कार्यशाला दिनांक 18.09.2017 को अपराह्न 03.00 बजे से 04.00 बजे तक संस्थान में "पंडित दीनदयाल उपाध्याय" विषय पर हिन्दी में गृह संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 36 अधिकारियों/कर्मचारियों (22 अधिकारी और 14 कर्मचारी) ने भाग लिया।

सप्तम कार्यशाला दिनांक 23.12.2017 को पूर्वाह्न 11.00 बजे से 01.00 बजे तक एवं अपराह्न 02.00 बजे से 04.00 तक क्रमशः "हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन" एवं "यूनीकोड" विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 24 प्रतिभागियों (04 अधिकारी और 20 कर्मचारी) ने भाग लिया।

प्रमुख उपलब्धियां

- हिन्दी प्रशिक्षण – राजभाषा विभाग के केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा चलाए गए पारंगत पाठ्यक्रम में संस्थान के 53 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया तथा राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित "कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रम" में भी अधिकारियों/कर्मचारियों को नामांकित किया गया।
- हिन्दी कार्यशाला – संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया ताकि अधिकारियों अथवा कर्मचारियों को हिन्दी में काम करते समय आने वाली दिक्कतों को दूर किया जा सके। इसके अलावा 03 अतिरिक्त कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया ।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक – संस्थान में प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की गई।
- तिमाही प्रगति रिपोर्ट – संस्थान में हिन्दी के प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट निर्धारित समय से परिषद मुख्यालय को भेजी गई तथा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय को ऑन लाइन एवं ऑफ लाइन द्वारा भेजी गई।
- हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही दिए गए।
- संस्थान के पुस्तकालय में राजभाषा नियमानुसार अन्य पुस्तकों के साथ हिन्दी पुस्तकों की खरीद की गई।
- संस्थान में लगे सभी साइन बोर्ड, नाम पट्ट, रबड़ की मोहरें इत्यादि द्विभाषी तैयार करवाए गए ।
- धारा 3(3) का शत–प्रतिशत अनुपालन किया गया।
- संस्थान में उपयोग किए जाने वाले सभी प्रोफार्मा को द्विभाषी रूप में तैयार करवा गया ।
- संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट एवं न्यूज़ लेटर स्वतंत्र रूप से हिन्दी में प्रकाशित की गई।
- माननीय संसदीय राजभाषा समिति की द्वितीय उप समिति ने संस्थान का निरीक्षण दिनांक 24–25 मई, 2017 को किया था।

हिन्दी प्रकाशन

- राजभाषा पत्रिका "देवांजलि" अंक – 2, वर्ष 2016 (03 जनवरी, 2017)
- निरजैफ्ट समाचार
- वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16

भा.कृ.अनु.प.–विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा

हिन्दी चेतना मास

संस्थान में 14 सितम्बर से 13 अक्टूबर 2017 तक 'हिन्दी चेतना मास' का आयोजन किया गया। चेतना मास के अवसर पर सर्वप्रथम संस्थान के निदेशक की ओर से हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने की अपील तथा माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार एवं माननीय महानिदेशक भाकृअनुप– द्वारा प्रेषित शुभ कामना सन्देशों को समस्त कार्मिकों के मध्य परिचालित किया गया तथा शुभकामना सन्देश के पोस्टरों को विभिन्न अनुभागों एवं कक्षों में लगाया गया। हिन्दी चेतना मास के दौरान अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें नोटिंग ड्राफ्टिंग, कम्प्यूटर में हिन्दी टंकण प्रतियोगिता प्रमुख थी। नोटिंग ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता एवं हिन्दी टंकण प्रतियोगिता प्रशासनिक वर्ग के कर्मचारियों के लिए आयोजित की गयी। चेतना मास के दौरान दिनांक 25 सितम्बर, 2017 को राजभाषा संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त तात्क्षणिक (Extempore) भाषण प्रतियोगिता एवं स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इन प्रतियोगिताओं हेतु सभी कार्मिकों हेतु तीन वर्ग बनाए गए। वर्ग– 1 में 'क' क्षेत्र के वैज्ञानिक एवं समस्त अधिकारी, वर्ग– 2 में 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र में समस्त वैज्ञानिक एवं अधिकारी, तथा वर्ग– 3 में सहायक वर्ग अस्थाई स्तर से सहायक एवं टी– 4 तक के कार्मिक रखे गए। इन वर्गों को बनाने का उददेश्य संस्थान में कार्यरत सबसे नीचे स्तर के कार्मिक से लेकर वैज्ञानिक तक सभी इन कार्यक्रमों में प्रतिभागिता कर सकें। फलस्वरूप, प्रत्येक वर्ग के कार्मिकों ने इन प्रतियोगिताओं में सहभागिता की। तात्क्षणिक भाषण प्रतियोगिता में अनेक विषयों पर कार्मिकों ने अपने विचार प्रकट किए। इस प्रतियोगिता की विशेषता यह थी कि इसमें अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के वैज्ञानिकों ने काफी उत्साह के साथ भाग लिया। तात्क्षणिक भाषण प्रतियोगिता के बाद स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इसमें संस्थान के कार्मिकों ने सारगर्भित कविताओं का वाचन किया।

चेतना मास के दौरान दिनांक 10.10.2017 को भी संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें उपरोक्त प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, प्रशासनिक अधिकारी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने अपने विचार व्यक्त किए। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने कार्यालय में राजभाषा की स्थिति एवं दैनिक सरकारी काम–काज में राजभाषा के प्रयोग के महत्व पर प्रकाश डाला। संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त् करने वाले कार्मिकों प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए।

हिन्दी चेतना मास के दौरान पुरस्कार वितरण समारोह का एक दृश्य

अपने सम्बोधन में संस्थान के निदेशक डा. अरूण पट्टनायक ने कहा कि हिन्दी को आगे बढ़ाने के लिए संस्थान के कार्मिकों को अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि यहां के कार्मिकों में हिन्दी के प्रति काफी प्रतिभा है। उन्होंने चेतना मास के दौरान किए जाने वाले कार्यक्रमों को अधिक रोचक बनाए जाने पर बल दिया तथा तात्क्षणिक भाषण प्रतियोगिता के विषय और अधिक रूचिकर रखने को कहा। उन्होंने चेतना मास के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं अन्ताक्षरी जैसे कार्यक्रमों को भी सम्मिलित करने पर बल दिया।

हिन्दी प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन हिन्दी 2016–17
- संस्थान समाचार पत्रिका–पर्वतीय कृषि दर्पण वाल्यूम 21 सं0–01, द्विभाषी
- संस्थान द्वारा प्रकाशित प्रसार प्रपत्र
- एकल क्रास संकर मक्का का बीज उत्पादन
- मक्का उत्पादन की उन्नत तकनीकी
- स्वीटकार्न की वैज्ञानिक खेती
- बेबीकॉर्न की वैज्ञानिक खेती
- भगरतोला विकास के पथ पर–संस्थान द्वारा एक सफल प्रयास

भा.कृ.अनु.प.– केंद्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी

हिंदी सप्ताह

दिनांक 14.09.2017 को संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संस्थान के निदेशक डॉ. ओ.पी. चतुर्वेदी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि संस्थान में 14–20 सितंबर, 2017 के मध्य हिंदी सप्तााह का आयोजन सुनिश्चित किया जाए। इसके साथ ही हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किए जाने के संबंध में विस्तााार से चर्चा की गयी। हिंदी सप्ताह के दौरान सप्ताह भर चलने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं की रूप–रेखा तैयार की गयी। प्रोत्साहन राशि तथा पुरस्कारों की राशि में वृद्धि किए जाने संबंधी विषय पर चर्चा की गयी किंतु बजट सीमित होने के कारण संस्थान के लेखानुभाग द्वारा इसकी अनुमति नहीं दी गयी।

दिनांक 14.09.2017: कार्यक्रम की शुरूआत आई.सी.ए.आर. गीत से हुई। प्रभारी अधिकारी राजभाषा डॉ. आर.पी. द्विवेदी ने सभी का स्वागत करते हुए ''हिंदी सप्ताह'' के अंतर्गत सप्ताह भर होने वाले कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। हिंदी सप्ताह उदघाटन अवसर पर हिंदी को बढ़ावा देने के लिए माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री, भारत सरकार का संदेश डॉ. आर.के. तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र जी की अपील डॉ. अनिल कुमार, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा उपस्थित सभी लोगों को अवगत कराया गया। इस अवसर पर डॉ. राजेंद्र प्रसाद, डॉ. मधुलिका श्रीवास्तव, श्री एस.बी. शर्मा, एवं डॉ. के.बी. श्रीधर ने हिंदी को बढ़ावा

देने के लिए अपने विचार व्यक्त किए। उद्घाटन सत्र के उपरांत दूसरे सत्र में हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया।

हिंदी सप्ताहः राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार पूरे सप्ताह भर विभिन्न प्रतियोगिताओं को सफल बनाने हेतु निदेशक महोदय द्वारा प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए अलग–अलग निर्णायक मंडल का गठन किया गया। प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कारों का भी प्रावधान रखा गया। इसके साथ ही साथ यह भी निर्णय लिया गया कि सरकारी कामकाज में राजभाषा को बढ़ावा देने हेतु प्रशासनिक, तकनीकी एवं वैज्ञानिक वर्ग से जिन अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पिछले एक साल के कार्यकाल में 20,000 या उससे अधिक शब्द हिंदी में लिखा गया हो उनको प्रथम पुरस्कार रू. 1,000/–, द्वितीय पुरस्कार रू. 600/– तथा तृतीय पुरस्कार रू. 300/– दिया जाये। इसके मूल्यांकन के लिए निदेशक महोदय द्वारा एक समिति का गठन किया गया।

दिनांक 20.09.2017: हिंदी सप्ताह के समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. आर.वी. कुमार, प्रभारी निदेशक, ग्रासलैंड ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि शोध कार्यों में विशेषकर प्रकाशन, संदर्भ–संग्रह, कृषि उपयोगी जानकारी इत्यादि में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि फ्रांस, जर्मनी, रूस, जापान तथा चीन ऐसे उदाहरण है जो कि अपने अनुसंधान कार्य के लिए राष्ट्रभाषा का प्रयोग करते हैं, इसी कारण दूसरे देशों में विज्ञान एवं अनुसंधान जन–जन तक राष्ट्रभाषा के माध्यम से पहुंचा है। हमारे देश में हिंदी को राजभाषा से राष्ट्र भाषा करने हेतु प्रयास की जरूरत है तभी आम आदमी को विज्ञान एवं अनुसंधान कार्य हिंदी में समझने में आसानी होगी।

कार्यक्रम की अध्यंक्षता करते हुए संस्थान के कार्यवाहक निदेशक डॉ. अनिल कुमार ने राजभाषा के व्यवहारिक प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की हिंदी में पत्राचार को बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करें जिससे राजभाषा विभाग द्वारा दिये गये लक्ष्यों को पूरा किया जा सके। अंत में हिंदी सप्ताह को सफल बनाने के लिए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी

हिन्दीा पखवाड़ा

भा.कृ.अनु.न.–राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी में 14 सितम्बर 2017 से 28 सितम्बर 2017 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ डा. दिलीप कुमार शर्मा, निदेशक, राष्ट्रीय शूकर अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. अचूत शर्मा, सह–प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। निदेशक महोदय ने सरकारी दफ्तरों में हिन्दी भाषा का उपयोगिता के बारे में बताया तथा कार्यालय के सभी कर्मचारियों से अपील की कि वे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने का प्रयास कर देश की तरक्की में भागीदार बने। साथ ही उन्होंने हिन्दी के प्रकाशन की उपयोगिता के बारे में सभी कर्मचारियों को अवगत कराया और अपील की कि वे संस्थान में चल रहे शोध आलेखों का प्रकाशन हिन्दी में भी करें ताकि इसका लाभ अधिक से अधिक किसानो तथा आम जनता तक सीधा पहुंच सके। तत्पश्चात् श्री उत्तम प्रकाश, सहायक प्रशासनिक अधिकारी एवं प्रभारी राजभाषा अधिकारी ने माननीय श्री राधा मोहन सिंह, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार द्वारा भेजा गया संदेश पढ़ कर सुनाया और हिन्दी राजभाषा अधिनियम से सम्बंधित विशेष जानकारी कर्मचारियों से साझा की तथा सरकार एवं संविधान द्वारा इसकी उपयोगिता को बढ़ाने के प्रयास के बारे में अवगत कराया।

हिन्दी पखवाड़े के मध्य दिनांक 23.09.2017 का स्थानीय स्कूलों के छात्रों (कक्षा 8 से 10) के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता एवं कर्मचारियों के लिए दिनांक 22.09.2017 को योग शिविर का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के समापन में श्री उत्तम प्रकाश, सहायक प्रशासनिक अधिकारी एवं प्रभारी राजभाषा अधिकारी ने सभी कर्मचारियों को सरकारी कार्यालय में सरलतापूर्वक हिन्दी के उपयोग के बारे में बताया। प्रभारी निदेशक महोदय द्वारा हिंदी पखवाड़े के समापन से पूर्व कार्यक्रम में विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कृत कर सभी कर्मचारियों से अपील की कि वे कार्यालय में हिंदी राजभाषा अधिनियम के तहत हिंदी का प्रयोग अनिवार्य रूप से करें।

कार्यक्रम का समापन श्री उत्तम प्रकाश, सहायक प्रशासनिक अधिकारी एवं प्रभारी राजभाषा अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर

दिनांक 14 सितम्बर, 2017 को निदेशालय के सभागार में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यालय के समस्त वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्‌घाटन कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रभारी निदेशक डॉ. सुशील कुमार, भा.कृ.अनु.प.–ख.अनु. निदेशालय, जबलपुर,

प्रशासनिक अधिकारी श्री सुजीत वर्मा, वैज्ञानिक श्री चेतन सी.आर. एवं प्रभारी, रा.का. समिति श्री जी.आर. डोंगरे द्वारा सरस्वती पूजन एवं दीप प्रज्जवलित कर किया गया। तत्पश्चात् प्रभारी निदेशक का स्वागत प्रशासनिक अधिकारी द्वारा पुष्प गुच्छ भेंट कर किया गया। इस अवसर पर श्री जी.आर. डोंगरे, प्रभारी रा.का.स. ने निदेशालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत किया, साथ ही अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि हमारी राजकीय भाषा हिन्दी को 14 सितंबर सन् 1949 को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। तभी से 14 सितंबर को प्रत्येक वर्ष हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

आज हिन्दुस्तान में हिन्दी गरीबों की भाषा मानी जाती है। इस समय धनी, उच्च मध्यम, सामान्य मध्यम वर्ग तथा निम्न मध्यम वर्ग के लोगों के लिये अंग्रेजी भाषा एक ऐसी सुविधा है जिसका वह प्रयोग कर रहे हैं और इनमें अधिकतर की नयी पीढ़ी अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित है। कहने का तात्पर्य यह है कि हिंदी की कितनी भी सुविधा इंटरनेट पर आ जाए उसका कोई लाभ नहीं है जब तक उसे सामान्य समाज की आदत नहीं बनाया जाएगा। हमारे देश के बारे में जानने वाले इंसान को इतना तो मालूम होना चाहिए कि हिंदी हमारी राजभाषा है। इसे राष्ट्रभाषा बनाया जाना हमारा लक्ष्य है, किसी भाषा को राष्ट्र भाषा तब माना जाता है जब यह पूरे देश में बोली जाने वाली भाषा हो। अब सवाल यह है कि क्या यह पूरे देश में बोली जा रही है या सिर्फ इसे राजभाषा का पद दिया गया है।

इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. सुशील कुमार, प्रभारी निदेशक ने सर्वप्रथम हिंदी दिवस की सभी को बधाई देते हुए हिन्दी दिवस पर संकल्प पत्र द्वारा निदेशालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने हेतु शपथ दिलाई। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि वास्तव में हिन्दी को हिन्दी भाषी क्षेत्र का वह सहयोग नहीं मिल रहा है जो उसका हक है। वह बड़े क्षेत्र की मातृभाषा होकर भी राष्ट्रभाषा के लिये संघर्ष करते नजर आ रही है। शायद इसलिए ही आज हमें पखवाड़ा मनाने की जरूरत पड़ गई है। उन्होंने बताया कि हिन्दी का विकास 1050 से 1350 के काल को पूर्वादिकाल माना जाता है, साथ ही इसका आगमन काल 1050 से 1375 तक अपभ्रंश में सारंगधर के अमीर रासो की रचना के रूप में प्रारंभ हुआ। उसके बाद अमीर खुसरो, तुलसीदास जैसे कवियों की रचनाओं ने इसे घर–घर तक पहुंचाया है। अंत में उन्होंने कहा कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है और हमें ही उसे उसका हक दिलाना है। इसी क्रम में प्रभारी निदेशक महोदय द्वारा माननीय श्री राधामोहन सिंह, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रेषित संदेश तथा भा.कृ.अनु.प. के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र द्वारा प्रेषित अपील का वाचन किया गया।

तत्पश्चात् कार्यक्रम में उपस्थित श्री आर.एस. उपाध्याय, डॉ. चेतन सी.आर., श्री लवकुश त्रिपाठी, श्री बसंत मिश्रा, डॉ. भूमेश कुमार एवं श्री सुजीत कुमार वर्मा इत्यादि वक्ताओं द्वारा वक्तव्य दिया गया। अंत में श्री बसंत मिश्रा, सदस्य राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का आभार प्रदर्शन किया।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कालीकट

हिन्दी सप्ताह

संस्थान में दिनांक 14 सितम्बर, 2017 को हिन्दी दिवस मनाया गया। डा. पी. राजीव, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, हिन्दी सप्ताह समारोह समिति ने उद्घाटन समारोह में संस्थान के निदेशक डा. के. निर्मल बाबू ने दिनांक 14 सितम्बर 2017 को हिन्दी दिवस एवं हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने राजभाषा हिन्दी के विकास के बारे में अवगत कराया। समारोह में सभी सदस्यों द्वारा हिन्दी में अधिकाधिक काम करने का शपथ लिया गया। सुश्री एन. प्रसन्नलकुमारी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं सदस्य सचिव, हिन्दी सप्ताह समारोह 2017 ने हिन्दी सप्ताह के अवसर पर आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में अवगत कराया। इसके अलावा हिन्दी की दो प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। पहली प्रतियोगिता एक ही अक्षर से हिन्दी में अधिकारिक शब्द लेखन तथा दूसरी राजभाषा प्रश्नोत्तरी थी। उसी दिन तीन चित्र प्रदर्शित करके उनके लिए अनशीर्षक लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की। श्री. के. जी. जगदीशन, सहायक वित्त व लेखा अधिकारी एवं सदस्य, हिन्दी सप्ताह समारोह समिति 2017 ने समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियो/कर्मचारियों के प्रति कृतज्ञता प्रस्तुत की।

हिन्दी सप्ताह के अवसर पर दिनांक 15 सितम्बर, 2017 को हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गईं। इसमें संस्थान के स्टॉफ सदस्यों के लिए सुश्री एन. प्रसन्नतकुमारी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी द्वारा हिन्दी टंकण कक्षा चलायी गयी। प्रस्तुति कार्यशाला में संस्थान के 13 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 16 सितम्बंर, 2017 को हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन, हिन्दी श्रुत लेखन, हिन्दी अनुच्छेद लेखन, हिन्दी गीत तथा हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

दिनांक 18 सितम्बर, 2017 को हिन्दी निंबंध लेखन एवं हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 19 सितम्बर, 2017 को हिन्दी मोक प्रेस प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन सभी प्रतियोगिताओं में संस्थान के स्टॉफ सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

दिनांक 20 सितम्बर, 2017 को हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह आयोजित किया। डा. बी. शशिकुमार, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुधार एवं जैवप्रौद्योगिकी प्रभाग एवं प्रभारी निदेशक समापन समारोह के अध्यक्ष थे। डा. पी. राजीव, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, हिन्दी सप्ताह समारोह समिति 2017 ने समापन समारोह में सभी सदस्यों का स्वागत किया। अध्यक्ष महोदय ने सभी स्टॉफ सदस्यों से राजभाषा हिन्दी को प्रोत्साहित करने एवं हिन्दी में काम करने के लिए आह्वान दिया। सुश्री एन. प्रसन्नकुमारी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने हिन्दी सप्ताह के अवसर पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों का विवरण प्रदर्शित किया।

डॉ. आर. सुरेन्द्रन (आरसु), पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय, समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने भाषण में विश्व भर में हिन्दी के विकास के बारे में विस्तृत विवरण दिया। साथ ही संस्थान में हिन्दीं कार्य की उपलब्धियों की प्रशंसा की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'मसालों की महक' के छठवें अंक का विमोचन किया गया। इसके अलावा आरसु महोदय द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार भी दिया गया। इस अवसर पर संस्थान में पिछले एक वर्ष में सबसे अधिक हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा लिखने वाले अधिकारियों को हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन पुरस्कार तथा राजभाषा का प्रोत्साहन करने हेतु अधिकारियों को राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

समापन समारोह में डॉ. जिलो तेमस, वैज्ञानिक एवं सदस्य् हिन्दी सप्ताह समारोह समिति 2017 ने मुख्य अतिथि डा. आरसु महोदय को उनके महत्वपूर्ण भाषण के लिए अपनी कृतज्ञता प्रस्तुति की। साथ ही हिन्दी सप्ताह समारोह को सफल बनाने के उद्यम में अपना योगदान करने वाले सभी सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

भा.कृ.अनु.प.–गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

हिन्दीन पखवाड़ा

संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन दिनांक 11.09.2017 से 24.09.2017 तक किया गया। पखवाड़े के दौरान संस्थान के कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इस उपलक्ष्य में दिनांक 25.09.2017 को पूर्वाहन 10:30 से 12:00 बजे तक हिन्दी दिवस कार्यक्रम डॉ. बक्शी राम, निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि, श्री समीर कुमार, केन्द्रीय सहायक भविष्य निधि आयुक्त, कोयम्बतूर थे।

इस समारोह की शुरूआत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के गीत के साथ की गई। डॉ. अर्जुन एव. तायडे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं नोडल अधिकारी (हिन्दी) ने मंच का संचालन करते हुए मंच पर आसीन महानुभावों, समस्त वैज्ञानिकगणों व कर्मचारीगणों का स्वागत किया।

श्रीमती एस. महेश्वरी, तकनीकी अधिकारी (हिन्दी) ने सन् 2016–17 के दौरान इस संस्थान में कार्यान्वयन राजभाषा नीति पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

डा. बक्शी राम, निदेशक, ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी कर्मचारियों से बेझिझक होकर अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने का आह्वान किया। उन्होंने संस्थान में हो रहे हिन्दी कार्यों का उल्लेख करते हुए और अधिक प्रयास करने पर बल दिया। श्री समिर कुमार, केन्द्रीय सहायक भविष्य निधि आयुक्त कोयम्बत्तूर ने अपने भाषण में हिन्दी भाषा के महत्व के बारे में प्रकाश डाला।

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में कर्मचारियों के लिए हस्तलेखन प्रतियोगिता, हिन्दी श्रुत लेख, हिन्दी में अनुवाद, हिन्दी टंकण और गीत गायन की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में 98 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इसके अलावा अस्थायी श्रमिकों एवं कर्मचारियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इन सभी विजेताओं को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार बाँटे। हिन्दी में अधिकतम कार्य करने वाले अनुभागों को हर छह महीने में दो पुरस्कार हिन्दी दिवस के अवसर पर दिए गए और प्रशासनिक जिन्होंने कार्यालय कार्य में अधिकतम हिंदी शब्दों का प्रयोग किया है, उन कर्मचारियों के लिए तीन पुरस्कार दिए गए।

हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहन योजना गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत दस हजार शब्दों के ऊपर शब्द हिंदी में लिखने वाले पाँच कर्मचारियों को (प्रथम–2 एवं द्वितीय –3) पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी अनुभाग से 'गन्ना' प्रकाशन नामक हिन्दी पत्रिका को मुख्य अतिथि के कर कमलों द्वारा विमोचित किया।

हिन्दी दिवस समारोह में लगभग दो सौ से अधिक कार्मिकों ने भाग लेकर इसे सफल बनाया। श्रीमती एस.रमा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी में हिन्दी चेतना मास 14 सितम्बर, 2017 से 13 अक्टूबर 2017 तक उत्साहपूर्वक मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. रामसुधार सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी ने अपने सम्बोधन में भाषाओं की विविधता एवं हिन्दी में कृषि शोध परिणामों के उपयोगी साहित्य लेखन द्वारा कृषकों की समस्याओं का सीधे समाधान करने के पहलुओं पर जोर दिया, जिससे कृषकों की 2022 तक कृषि आय दोगुना करने में सक्षम हो सकें।

वर्तमान में जहां भाषाओं का विलुप्तीकरण बड़ी तेजी के साथ हो रहा है व संचार क्रांति में उत्तरोत्तर प्रगति के साथ–साथ युवाओं में चिंतन क्षमता का ह्रास होता जा रहा है, जैसे पहलुओं पर भी चिन्तन मनन किया गया। डॉ. सिंह ने प्रयोगशाला से किसान तक व प्रायोगिक प्रक्षेत्र से खेत खलिहान तक हिन्दी में संचार को एक सशक्त माध्यम बताया व सहर्ष विश्वक मानवता की भाषा हिन्दी में लेखन को बढ़ावा देने पर अपनी सहमति व्यक्त की। समापन समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. बिजेन्द्र सिंह ने की। उन्होंने कृषि उपयोगी साहित्य लेखन द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों को किसानों तक पहुंचाने पर जोर दिया तथा किसानों की समस्याओं के निवारण हेतु हिन्दी में पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से तथा किसानों को हिन्दी भाषा में प्रशिक्षण के लिए अहिन्दी भाषी प्रदेशों से आए वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित किया। इसके साथ ही संस्थान में हिन्दी में हो रहे कार्यों की समीक्षा की एवं भविष्य में इसमें और प्रगति लाने पर जोर दिया। राष्ट्रीय स्तर पर इस संस्थान द्वारा प्रकाशित सब्जी किरण का प्रकाशन हिन्दी भाषा में प्रयोगशाला से कृषि प्रक्षेत्र तक विभिन्न सब्जी उत्पादन के पहलुओं को पहुंचाने व प्रचार–प्रसार में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। हम सतत् सब्जी किरण को और आगे बढ़ाने में प्रयासरत है।

प्रशासनिक कार्यों में सूचना–प्रौद्योगिकी की सहायता से राजभाषा में संवैधानिक दायित्वों का संवहन करने के लिए प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में संस्थान के विभागाध्यक्षों डॉ. अवधेश बहादुर राय, डॉ. जगदीश सिंह, डॉ. प्रभाकर मोहन सिंह ने अपने उद्बोधन में इस वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी भाषा में साहित्य जगत, ज्ञान विज्ञान की दुनिया में हो रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। इस हिन्दी चेतना मास में पांच प्रतियोगिताएं आयोजित की गई व संस्थान के वैज्ञानिक, प्रशासनिक, तकनीकी, प्रशिक्षणार्थी, शोध अध्येताओं एवं स्थानीय स्कूल के बच्चों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। हिन्दी राजभाषा समिति के सदस्यों डॉ. एस.के. वर्मा, डॉ. डी.आर. भारद्वाज, डॉ. ए.एन. त्रिपाठी, डॉ. राजशेखर रेड्डी, डॉ. रामेश्वर सिंह व श्री सुमित जिन्दमल ने अपने उद्बोधन में हिन्दी भाषा की कृषि विज्ञान की दुनिया में महत्ता, की विस्तृत जानकारी दी।

प्रकाशन

- भारद्वाज डी आर, सिंह पीएम, सिंह नीरज, प्रसाद आर एन. राय शुभदीप एवं सिंह बी (2017). सब्जी आधारित फसल पद्धति, भा.कृ.अनु.सं., वाराणसी (पेज नं. 1–202) आइएसबीएन, 978–93–5268–854–8.
- सिंह एसपी, उमा, सिंह बीके, विष्ठ के, राउत ए, सिंह एव, साहू आरपी, सिंह पी बी, योगेन्द्र रघुवंशी एस, शर्मा ए एवं कुमारी पी (सम्पादित) 2017. स्मारिका कृषि एवं प्रौद्योगिकी में वैश्विक शोध विकास पर राष्ट्रीय सम्मेलन (ए.जी.आर.ए.टी–2017 मार्च, 19–20,2017)
- चतुर्वेदी एके, पाण्डेय आर, सिंह आर, चौधरी आर पी, चौधरी के एवं प्रसाद आर (2017). सब्जियों की पौधशाला प्रबंधन, भा.कृ.अनु.प.–कृषि विज्ञान केन्द्र, भा.स.अनु.सं., भदोही, पृष्ठ सं. 1–33.
- चौधरी आर पी, पाण्डेय आर, चौधरी जी के, चतुर्वेदी एके, सिंह आर, सिंह पी सी एवं प्रसाद आर (2017). बीज उत्पादन तकनीक, भा.कृ.अनु.प.–कृषि विज्ञान केन्द्र, भा.स.अनु.सं., भदोही, पृष्ठ सं. 1–52.
- चौधरी जी के, चौधरी आर पी, सिंह आर, प्रसाद आर, चतुर्वेदी ए के एवं पाण्डेय आर पी 20178. मुर्गी पालन प्रशिक्षण पुस्तिका, भा.कृ.अनु.प.– कृषि विज्ञान केन्द्र, भा.स.अनु.सं., भदोही, पृष्ठ सं. 1–81.
- पाण्डेय के के, त्रिपाठी ए एन, हालदार जे, कोडेन्डाठराम एम एच, सिंह एन, गुप्ता एव, राय ए बी एवं सिंह बी. (2017). सब्जियों में सुरक्षित नाशीजीव प्रबंधन, भा.कृ.अनु.प.– भा.स.अनु.सं., वाराणसी 72 पृष्ठ सं. 1–85.

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़

हिंदी चेतना मास

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के मार्ग निर्देशानुसार इस संस्थान में दिनांक 20 सितंबर, 2017 को डॉ. पी. चौड़प्पा, निदेशक महोदय की अध्यक्षता में भारत माता की वंदना करते हुए हिंदी चेतनामास समारोह का शुभारंभ किया गया।

डॉ. रवी भट्ट, प्रधान वैज्ञानिक, फसल उत्पादन अनुभाग ने सभा में उपस्थित सभी स्टॉफ सदस्यों का स्वागत किया और हिंदी समारोह के सफल आयोजन की कामना की। डॉ पी. चौड़प्पा, निदेशक, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी का

प्रयोग बढ़ाने का प्रेरणादायक संदेश दिया और सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों से इसकी सफलता हेतु पूर्ण सहयोग देकर हिंदी को बढ़ावा देने का आह्वान किया। श्रीमती श्रीलता के, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) ने माननीय महानिदेशक महोदय डॉ त्रिलोचन महापात्र के संदेश पढ़ा और सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संदेश से प्रेरित होकर अपना अधिकाधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने की आशा प्रकट की। डॉ (श्रीमती) पी. सुप्रिया, सहायक प्राध्यापक (हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य), केरल केंद्रीय विश्व विद्यालय ने उद्घाटन समारोह की मुख्य अतिथि रही और उन्होंने राजभाषा हिंदी – दशा और दिशा पर प्रेरणादायक भाषण दिया ।

हिंदी चेतना मास समारोह की अवधि पर संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने हेतु विभिन्न हिंदी प्रतियोगिता जैसी हिंदी अनुवाद एवं टिप्पण लेखन प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी सुलेख प्रतियोगिता, स्मरण परीक्षा प्रतियोगिता आयोजित की गईं। कुशल सहायक कर्मचारियों के लिए प्रत्येक रूप से हिंदी सुलेख प्रतियोगिता और स्मरण परीक्षा आयोजित की गई।

दिनांक 25 अक्तूबर, 2017 को डॉ. पी. चौड़प्पा, निदेशक महोदय की अध्यक्षता में समापन दिवस मनाया गया। डॉ. रवी भट्ट, प्रधान वैज्ञानिक, फसल उत्पादन अनुभाग ने मंच पर आसीन विशिष्ट व्यक्तियों श्रीमती के. श्रीलता, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) ने पिछले एक वर्ष की राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की और हिंदी चेतना मास समारोह की गतिविधियों पर संक्षिप्त विवरण दिया।

इस समारोह की मुख्य अतिथि प्रोफसर सुधा बालकृष्णन, प्रमुख (हिंदी विभाग) केरल केंद्रीय विश्वाविद्यालय, कासरगोड़ पिछले 29 उन्तीस वर्षों से विश्वविद्यालयों में साहित्य के क्षेत्र में कार्यरत हैं। महोदया ने कमलादास की 21 इक्कीस मलयालम कहानियों का हिंदी में अनुवाद किया है। उन्होंने हिंदी भाषा के महत्व पर भाषण दिया। समारोह की अवधि पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण मुख्य अतिथि द्वारा किया गया और निदेशक महोदय ने सरकारी काम काज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने वाले नौ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस अवसर पर नकद पुरस्कार वितरण कर प्रोत्साहित किया और अभिनंदन किया। श्रीमती के. श्रीलता, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने सबके प्रति धन्यवाद प्रकट किया।

हिंदी प्रकाशन

- उद्यमकर्ता और कृषक हितकारी प्रौद्योगिकियां (तकनीकी बुलेटिन)
- नारियल में आक्रमणकारी रूक्षपृष्ठी सर्पिल सफेद मक्खी
- नारियल अवशिष्ट पर खाद्य मशरूम कृषि
- नारियल पत्ता वर्मीकंपोस्ट का तरीका एवं विशेषताएं
- यूरिया रहित कॉयर पिथ कंपोस्टिंग प्रौद्योगिकी

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, हिसार

हिन्दी पखवाड़ा

भारत सरकार की राजभाषा की विकासनीति के अंतर्गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी राजभाषा कार्यन्वयन समिति के तत्वावधान में राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं सरकारी काम–काज में हिन्दी के प्रयोग को अधिकाधिक प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन डॉ. भूपेन्द्र नाथ त्रिपाठी, निदेशक की अध्यक्षता में 14 से 28 सितम्बर, 2017 तक किया गया। कार्यक्रम के प्रथम दिन व हिन्दी दिवस के अवसर पर एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. यशपाल ने हिन्दी कार्याशाला के उदघाटन समारोह में उपस्थित हुए सभी अतिथिगणों और केन्द्र के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। इस कार्यक्रम में स्थानीय दयानन्द महाविद्यालय, हिसार के डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई, सहायक प्रोफेसर (हिन्दी विभाग) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अपने वक्तव्य में केन्द्र के सभी वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता डॉ. बिश्नोई ने हिन्दी को एक बृहद भाषा के रूप में परिभाषित करते हुए इसे एक सहज, सरल व आमजन की भाषा बताया जिसमें सभी भाषाओं के शब्दों के समावेश की अनुपम क्षमता है। उन्होंने हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न शब्दों व उनके समुचित अर्थों के बारे में भी विस्तृत जानकारी प्रदान की।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह में केन्द्रीय कार्यालयों के कर्मचारियों के बच्चों की कविता पाठ प्रतियोगिता

कार्यक्रम के अध्यक्ष व केन्द्र के निदेशक डॉ. भूपेन्द्र नाथ त्रिपाठी ने अपने संबोधन में सभी हिन्दी प्रेमियों से कहा कि अनेकता में एकता का स्वर हिन्दी के माध्यम से गूंजता है। जीवन में भाषा का सबसे अधिक महत्व होता है। विभिन्नताओं के बीच एक भाषा ही है, जो एकता का आधार बनती है और हम सभी को इस एकता के साधन का सम्मान करना चाहिए। मंच संचालन केन्द्र की वैज्ञानिक एवं हिन्दी अधिकारी डॉ. अनुराधा भारद्वाज द्वारा किया गया। डॉ. अनुराधा ने हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी व साथ ही सभागार में उपस्थित सभी अतिथियों व केन्द्र के वैज्ञानिकों व कर्मचारियों का इस कार्यक्रम में शिरकत करने हेतु आभार भी व्यक्त किया। इस दौरान विभिन्न ज्ञानवर्धक एवं रूचिपूर्ण हिन्दी प्रतियोगिताओं क्रमशः निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी परिच्छेद अनुवाद प्रतियोगिता, हिन्दी श्रुतलेख प्रतियोगिता (अहिन्दी भाषियों के लिए), हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता, हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिन्दी कविता पाठ एवं सुलेख प्रतियोगिता (संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बच्चों के लिए), हिन्दी टंकण प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। निदेशक महोदय ने हिन्दी पखवाड़ा में बच्चों की प्रतिभागिता की सराहना की और उन्हें पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया।

समापन समारोह के दिन केन्द्रीय कर्मचारियों के लिए कविता पाठ प्रतियोगिता करवाई गई एवं विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। मुख्य अतिथि डॉ प्रमोद बत्रा, कमांडेंट ईबीएस ने हिन्दी के उत्थान एवं हिन्दी की महत्ता पर संबोधन दिया। श्री महेन्द्र पाल कुलश्रेष्ठा, निदेशक, राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, हिसार विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद थे जिन्होंने अपनी मधुर आवाज में गज़ल प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। केन्द्र के निदेशक महोदय डॉ भूपेन्द्र नाथ त्रिपाठी ने संस्थान के कर्मिकों को अधिकाधिक हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। डॉ अनुराधा भारद्वाज, हिन्दी अधिकारी द्वारा हिन्दी पखवाड़े के सफल आयोजन में योगदान के लिए धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

समापन समारोह में केन्द्र के निदेशक महोदय डॉ भूपेन्द्र नाथ त्रिपाठी ने संस्थान के कार्मिकों को अधिकाधिक हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया

हिन्दी कार्यशाला

राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा हिन्दी कार्यशाला का हिन्दी दिवस (14 सितम्बर, 2017) के अवसर पर आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में स्थानीय दयानन्द महाविद्यालय, हिसार के डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग) मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने हिन्दी के उत्थान तथा विकास का आह्वान किया तथा वैज्ञानिकों व अधिकारियों को अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रेरित किया।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग) मुख्य वक्ता, दयानन्द महाविद्यालय, हिसार द्वारा हिन्दी कार्यशाला

हिन्दी की दूसरी कार्यशाला 17 मई 2017 को करवाई गई जिसमें डॉ सज्जन सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान द्वारा किसानों की आय दोगुनी करने के विषय पर व्याख्यान दिया। हिन्दी की तीसरी एवं चौथी कार्यशाला 29 दिसम्बर, 2017 एवं 17 मार्च 2018 को करवाई गई जिसमें प्रशासनिक विभाग एवं अनुबंधित कर्मचारियों के लिए हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण दिया गया। हिन्दी अधिकारी डॉ अनुराधा भारद्वाज के निरीक्षण में प्रशासनिक अधिकारी द्वारा 11 कर्मचारियों को हिन्दी टंकण का अभ्यास करवाया गया। इस कार्यशाला से प्रतिभागियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया गया तथा हिन्दी के प्रयोग में आने वाली कठिनाईयों को दूर करने के प्रयास किए गए।

विविधा खण्ड

सलोनी और गौरी

राजेश सहाय*

सुबह–सवेरे दरवाजे पर हुई दस्तक ने ब्रजराज बाबू के पूजा में व्यवधान डाल दिया। जब तक नौकरी में थे तब तक तो हर सुबह ये दस्तक सामान्य थी। पर सेवा निवृत्ति के बाद अयोध्या में आकर बस जाने पर इन दस्तकों से उनका पीछा छूट गया था। वो निश्चिंत रहा करते थे और अपना सारा समय पूजा और अध्यात्म–अध्ययन में बिताते थे जो उन्हें बहुत प्रिय थे। अतः दरवाजे पर हुई दस्तक से उनका ध्यान बँट गया। उन्होनें अपनी अर्धांगिनी आशा देवी को इशारा किया। दो कमरों के इस मकान के उपरी हिस्से में ही इन दोनों का ज्यादा समय बीतता था। आशा देवी को इस समय नीचे जाकर दरवाजा खोलना नागवार लगा। इस उम्र में घुटने के दर्द ने उन्हें परेशान कर रखा था और सीढ़ियाँ उतरना अथवा चढ़ना उनके लिये काफी कष्टमय था। किन्तु ब्रजराज बाबू पूजा पर बैठे थे अतः आशा देवी को ही उठकर नीचे जाना पड़ा। इतनी सुबह–सुबह कौन हो सकता है, वो भी यह अनुमान नहीं लगा पा रही थी।

दरवाजा खोलने पर एक नये शादी–शुदा जोड़े को अपने सामने खड़ा देख आशा देवी आश्चर्य चकित रह गयी। तभी यह जोड़ा उनके पैरों पर आशीर्वाद के लिये झुक गया। आशादेवी ने जोड़े को आशीर्वाद दे जब दुल्हन पर नजर डाली तो पुनः चकित रह गयी–यह सलोनी थी। पांच वर्ष पहले जब ब्रजराज बाबू सेवानिवृत्त हुए और बिहार शरीफ छोड़ अयोध्या आ बसने का निर्णय लिया था, उस वक्त सलोनी अपने जीवन–संग्राम के मझधार में थी। अतः आज उसे यहाँ दुल्हन के जोड़े में देख आश्चर्यचकित रह गयी थी। आशा देवी इन्हें घर के भीतर बैठा, पानी–मिठाई सामने रख सलोनी की ओर देखने लगी। सलोनी काफी निखर गयी थी और उसके चेहरे पर आत्मविश्वास की चमक थी। लगता ही नहीं था यह वही शर्मीली सी छुई–मुई सी सहमी लड़की थी जिस पर अपने परिवार की समस्त जिम्मेवारी एकाएक आन पड़ी थी। यूँ तो आशा देवी को पूछने के लिये सौ सवाल थे किन्तु वो झिझक रही थी। फिर भी वो सलोनी से सामान्य सवाल–जवाब करने लगी और सलोनी विस्तार से पिछले पांच वर्ष की गतिविधियाँ बताने लगी। अपनी पत्नी को किसी महिला से बात करते सुन ब्रजराज बाबू का ध्यान पूजा में एकाग्रचित्त नहीं रह पाया और वो भी नीचे उतर आए। सलोनी को देख उन्हें भी सुखद आश्चर्य हुआ। उनका ध्यान अतीत की गहराइयों में उतर गया जब वे नौकरी में थे और उनकी पोस्टिंग बिहार शरीफ में हुई थी जहाँ इस कहानी के पात्रों से वे पहली बार रु–ब–रु हुए थे।

उन दो बहनों के नाम सलोनी और गौरी थे। यह महज इत्तेफाक नहीं था। एक ही माँ–बाप की दो बेटियों की सूरत और रंगत में इतनी भिन्नता थी। इसे ईश्वर की नेमत ही कह सकते थे। देखने वालों को सहसा विश्वास ही नहीं होता कि दोनो लड़कियां बहनें हैं– जहां बड़ी की रंगत सांवली थी वहीं छोटी गोरी रंगत की थी। जिला परिषद के ऑफिस में अर्दली का काम करने वाले इनके पिता लालचंद ने सूरत और रंगत के अनुसार ही अपनी बेटियों के नाम रखे, बड़ी को सलोनी और छोटी बेटी को गौरी नाम दिया। सलोनी के जन्म के समय बच्ची की दादी ने बच्ची को देख अपना माथा ठोक लिया था– एक तो लड़की और उपर से सांवली सूरत। सगुनी देवी ने नन्ही सलोनी की रंगत को निखारने के तमाम उपाय किए पर नतीजा ज्यों का त्यों रहा। दरअसल सलोनी की दादी स्वयं सांवले रंगत की थी। किन्तु पोती भी उन्ही की रंगत की होगी यह उन्हें गवारा नहीं था। नानी कभी–कभी ठिठोली करते नहीं चूकती थी– बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होए– मेरी बेटी तो गोरी थी पर लगता है विवाह के समय सास का अक्षत इस पर पड़ गया। इसी का नतीजा है सलोनी।''– अक्सर वो चुटकी लेती। सलोनी के बाद आई गोरी–चिट्टी गौरी जो अपनी नानी और माँ पर गयी थी। सास को थोड़ी राहत हुई पर पोते के लिए वो अब भी तरस रही थी। लालचंद और सगुनी देवी को ना चाहते हुए भी तीसरी सन्तान करनी पड़ी। यह तो इन दोनों का सौभाग्य था कि इसके बाद बिरेन आया अन्यथा ना जाने और कितनी संतानें करनी पड़ती लालचंद और सगुनी देवी को। जमाना चाहे कितना भी बदल जाए पर पुत्र की चाहत में आज भी कोई कमी नहीं आई है। महिलाओं की इसी मानसकिता की वजह से बेटी के जन्म को अभिशाप माना जाने लगा है। पुरुषों की बनिस्बत महिलाएं खुद ही अपनी सबसे बड़ी दुश्मन साबित हुई हैं।

*उप निदेशक (वित्त), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

लालचंद और सगुनी देवी ने अपनी तीनों संतानों की समान परवरिश की और एक अदना सा अर्दली होने के बावजूद लड़के–लड़की का फर्क ना करते हुए अपनी तीनों संतानों की शिक्षा–दीक्षा और खान–पान पर समान ध्यान दिया। पर सब कुछ समान होते हुए भी तीनों संतानें समान नहीं थीं। गौरी को अपने रूप–रंग पर बड़ा गर्व था और उसका ज्यादा समय अपने बनाव श्रृंगार में ही बीतता था। वहीं दूसरी ओर सलोनी गंभीर प्रकृति की थी जिसका ज्यादातर समय पढ़ाई–लिखाई में ही बीतता था। कदाचित वो अपने रूप–रंग की कमी पढ़ाई में अव्वल आ कर पूरा करना चाहती थी। इन सब से अलग था बिरेन जिसे ना तो पढ़ाई–लिखाई से मतलब था और ना ही वो किसी भी प्रकार से लालचंद के किसी काम आता। दादी का दुलारा तो वो था ही, जाने कहाँ से उसके मन में यह बात बैठ गयी थी कि पिताजी के बाद उनके ऑफिस में उसकी नौकरी लग जायेगी। फलतः वो पढ़ाई पर कोई खास ध्यान नहीं देता। लालचंद उसे समझा–समझा कर हार गया कि अब वो जमाना नहीं रहा जब हाकिम के हाथ किसी को भी नौकरी देने का अधिकार था। पर संभवतः दादी ने ही बिरेन के मन में यह बात डाल रखी थी और उसे ना मानने का बिरेन के पास कोई आधार नहीं था। यों भी निठल्लों को वही बातें सही लगती हैं जो उनके मन माफिक हों। जहाँ मेहनत करनी पड़े ऐसे रास्ते के राही वे नहीं होते। बिरेन जिसे लोग बुटन के नाम से पुकारने लग गये थे, का कभी पढ़ाई–लिखाई में मन नहीं लगा।

लालचंद अपनी बात–व्यवहार से जिला अभियंता ब्रजराज बाबू का प्रिय था। इसका लाभ उसे यह मिला कि उन्होनें उसे अपने ही सरकारी बंगले के आउट–हाउस में रख लिया। अभियंता साहब के घर–बाहर के छोटे–मोटे काम वो कर दिया करता था और उसकी पत्नी अभियंता बाबू की पत्नी के चौके–चूल्हे के काम में मदद कर दिया करती थी। इस मदद की वजह से ही लालचंद अपने परिवार को शहर में रख पाया और अपने बच्चों को स्कूल भेज पाया।

सलोनी पढ़ाई में कुशाग्र थी। किन्तु जैसे–जैसे वो उपर की कक्षाओं मे उत्तीर्ण होती गयी उसकी पढ़ाई के खर्चे बढ़ते गए। लालचंद अजीब दुविधा में था। यों तो उसने बेटे–बेटी में कोई भेद नहीं किया था किन्तु जब बेटियों की पढ़ाई के खर्चे बढ़ने लग गए तो उसके सामने विचित्र दुविधा उत्पन्न हो गयी। चाहते हुए भी उसे यह निर्णय लेने पर मजबूर होना पड़ा कि बेटे और बेटी में से किसकी पढ़ाई आगे जारी रखे। जिस वर्ष सलोनी ने दसवीं की परीक्षा पास की, उसी वर्ष गौरी ने नवमी और बिरेन ने आठवीं कक्षा में कदम रखा। तमाम कठिनाइयों के बावजूद दसवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर सलोनी ने ना केवल अपने अभिभावक, वरन ब्रजराज बाबू को भी चकित कर दिया था। इसलिये जब ब्रजराज बाबू को लालचंद की दुविधा का पता चला तो वे बेहिचक सलोनी की आगे की पढ़ाई के खर्चे उठाने को तैयार हो गए। उन्होनें स्थानीय महिला महाविद्यालय की प्रधानाचार्या से मिल कर सलोनी का नामांकन करवाया और किताब कॉपी के भी पैसे दिए। सलोनी में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की कमी नहीं थी और विश्वविद्यालय द्वारा वजीफा के लिये आयोजित प्रतियोगी परीक्षा पास कर उसने इसे सिद्ध भी कर दिया। वो ब्रजराज बाबू के विश्वास पर खरी उतरी थी। इसे देख लालचंद की आँखें खुल गयी थी और उसे यह मानना पड़ा उसकी दुविधा निर्मूल थी। इस वजीफे से कुछ हद तक पढ़ाई–लिखाई के मामले में आर्थिक रूप से सलोनी स्वावलम्बी हो पायी और आगे भी अपनी राह बनाने की हिम्मत जुटा पायी।

दो वर्ष बाद ही गौरी जब दसवीं की परीक्षा में फेल हो गयी तब भी लालचंद को कोई चिंता नहीं हुई। ''बेटी का क्या है। शादी ब्याहकर अपने घर ही तो उसे जाना है।''– ब्रजराज बाबू द्वारा पूछे जाने पर उसके जवाब ने बाबू–साहब को भी चकित कर दिया।

''यदि ऐसा है तो फिर सलोनी को पढ़ाने पर क्यों लगे हो?''– ब्रज राज बाबू ने प्रतिवाद किया।

''अब आपसे क्या छुपाना साहब। सलोनी के रूप–रंग तो आपने देखा ही है। उसके लिए लड़का खोजना कितना मुश्किल होगा यह मैं कल्पना ही कर सकता हूँ। उसे कौन पसंद करेगा? इसलिए वो यदि पढ़ना चाहती है तो पढ़ने दे रहे हैं। घर पर बैठा दिया तो उसकी दादी और माँ मुझे लड़का खोजकर उसे ब्याह करने के लिए परेशान कर देगी। यह तो और भी अच्छा हुआ कि उसे अब वज़ीफा भी मिल रहा है और आर्थिक तौर पर वो काफी हद तक स्वावलंबी हो गयी है। वो पढ़ रही है तो छोटी बेटी की शादी में भी कोई व्यवधान नहीं आएगा।''– लालचंद ने स्पष्ट किया।

''बड़ी के रहते तुम छोटी बेटी को ब्याह दोगे? और फिर इतनी हड़बड़ी क्या है। अभी इनकी उम्र ही कितनी है?''– ब्रज राज बाबू को बड़ा आश्चर्य हुआ।

''सर, गौरी के लिए तो कई लड़के वाले हाथ बांधे खड़े हैं। सलोनी बड़ी है और उसकी शादी पहले करना मेरा फर्ज है किन्तु उसे तो कोई भी ब्याह कर ले जाने को तैयार ही नहीं है। यदि उसकी शादी के लिए लड़का खोजने निकलूं तो गाँठ की सारी जमा–पूँजी दहेज में निकल जायेगी। इसलिये पहले गौरी की शादी कर दूंगा क्योंकि उसकी शादी बिना दहेज के हो जाएगी और जब सलोनी अपनी कमाई से कुछ बचा लेगी तो उसके लिए लड़का खोजूंगा।''– लालचंद ने सफाई देते हुए स्पष्ट किया।

ब्रजराज बाबू यह सुन हैरान रह गए। एक बाप भी अपनी बेटियों की शादी के लिए इतना गुना–भाग करेगा, यह उनके लिए आश्चर्य से कम नहीं था। समाज चाहे कितना भी बदल जाए पर देश में आज भी सूरत को सीरत पर तरजीह दी जाती है– इस हकीकत ने उन्हें झकझोर कर रख दिया था।

पर लालचंद अपने मंसूबों में सफल होता इससे पहले ही एक सुबह अचानक उसे हृदयघात हुआ जिससे उसके प्राण पखेरू उड़ गये। सगुनी के लिए यह वज्राघात से कम नहीं था। उसके तीनों ही बच्चे जीवन में स्थापित नहीं हुए थे। ऊपर से एक बूढ़ी सास भी थी जो अपने बेटे की मौत के लिए उसे ही कोसते रहती। ब्रजराज बाबू की वजह से उसे कार्यालय से पति की ग्रेच्यूटी और अन्य राशि एक मुश्त मिल तो गयी पर ब्रज राज बाबू के तमाम प्रयासों के बावजूद वे सगुनी को कार्यालय में अनुकंपा के आधार पर नौकरी नहीं दिलवा पाए। बिरेन को तो यों भी नौकरी नहीं मिल सकती थी क्योंकि वो अभी भी अव्यस्क था।

पति के निधन के बाद कार्यालय से मिले पैसे की बदौलत सगुनी देवी ने गौरी को ब्याह दिया। हालाकि ब्रजराज बाबू ने उसे तब भी ऐसा ना करने को कहा था। वो चाहते थे सलोनी की तरह ही गौरी भी अपनी पढ़ाई आगे जारी रखे। "साहब उसका पढ़ाई में मन तो लगता नहीं है। आगे पढ़ाने से वो और पैसे का नुकसान ही करेगी।" सगुनी देवी ने स्पष्ट करते हुए उसकी शादी के लिए साहब से आर्थिक मदद की पेशकश भी कर दी। ब्रजराज बाबू ने ना केवल पैसे से वरन शहर में अपनी पहचान के बदौलत शादी की व्यवस्था संपन्न करवाने में भी सगुनी देवी की काफी मदद की।

गौरी खुशी–खुशी अपने ससुराल चली गयी। शादी में आने वाले अतिथि जहां गौरी के भाग्य की प्रशंसा कर रहे थे वही सलोनी की शादी ना हो पाने के लिए उसके भाग्य को कोस भी रहे थे। एक केवल ब्रजराज बाबू ही थे जो सलोनी के हृदय में चल रहे तूफान को समझते थे। पर समाज के उलटे–पुलटे मानदंडों को कोसने के अलावा वे और कुछ कर पाने में स्वयं को असमर्थ पा रहे थे। फिर भी उन्होंने सलोनी को बुला कर उसे शांत और संयत रहने को कह यह आश्वासन भी दिया कि वे उसके पीछे हैं और वो अपनी किसी भी समस्या के लिए उनसे उसी प्रकार कह सकती है जैसा वो अपने पिता अथवा माता से कहती है। सलोनी के आँखों में आंसू थे–अपनी बहन के विदा होने पर, अपने भाग्य पर अथवा समाज की कुरीतियों पर– यह कहना संभव नहीं था।

पिता की मृत्यु के बाद बिरेन अब अपने मन का मालिक बन बैठा था। दादी का तो वो दुलारा था ही पर लालचंद के सामने उसकी जबान नहीं खुलती थी। ना चाहते हुए भी वो पढ़ाई कर रहा था। किन्तु लालचंद की मृत्यु के बाद वो इन सब बंधनों से मुक्त हो गया था। सगुनी देवी की तो वो यों भी नहीं सुनता था। अब उसकी संगत कुछ गलत लड़कों से हो गयी थी जिनके साथ वो सारा–सारा दिन पास केकुमार सिनेमा हाल में सिनेमा के टिकटों की ब्लॅकमेलिंग करता और सिनेमा और मस्ती में ही समय बिताता। उसने बीड़ी फूकना भी जल्द ही सीख लिया क्योंकि ऐसा करने से वो अपने उम्र से बड़ा दिखता था।

मित्रों की सलाह पर बिरेन ने एक ऑटो रिक्शा खरीदने का निर्णय लिया। पर इसके लिए पैसे की जरूरत थी। उसे मालूम था कि मां के पास पिता के ग्रेज्युएटी के पैसे अब भी बचे हैं। अतः वो सगुनी देवी को परेशान करने लगा कि वो उसे ऑटोरिक्शा खरीदने के लिए पैसे दे। सगुनी देवी ने जब ब्रजराज बाबू से सलाह किया तो उन्होनें उसे इस उम्र में ऑटो–रिक्शा खरीद कर देने से स्पष्ट मना कर दिया। उन्होनें बिरेन को बुला कर बहुत समझाया–बुझाया। यहाँ तक आश्वश्त किया कि दसवीं की परीक्षा पास कर ले तो पैरवी कर किसी भी कार्यालय में नौकरी दिलवा देंगें। किन्तु बिरेन को ना मानना था अतः वह नहीं माना। ऑटो–रिक्शा भी आ गया और उसे चलाने के लिये रिक्शाचालक भी। क्योंकि बिरेन को रिक्शा चलाना नहीं आता था।

इधर सलोनी ने स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण कर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लग गयी। साथ ही उसने एम.ए. में एडमिशन ले लिया। इधर उसने एम.ए. किया और उधर उसकी नौकरी बैंक में अधिकारी के पद पर लग गयी। ब्रजराज बाबू के लिए यह बड़े संतोष का दिन था। इन चार वर्षों में उन्होनें सलोनी को दिए गए अपने वचन का अक्षरशः पालन किया था और कदम–कदम पर वो सलोनी की मदद को खड़े थे। चाहे अवसर एम.ए. में एडमिशन का रहा हो अथवा करियर से सम्बंधित किसी भी विषय पर सलाह देने का रहा हो। आर्थिक मदद के लिए तो कहना ही नहीं था क्योंकि ऑटोरिक्शा खरीदे जाने के बाद सगुनी देवी के पास यों भी पैसे नहीं बचे थे। अतः सलोनी की पढ़ाई से सम्बंधित सारे खर्चे ब्रजराज बाबू के ही जिम्मे था। आज जब सलोनी की नौकरी बैंक में लग गयी तो आशा देवी ने सगुनी से उसका ब्याह कर देने को कहा। किन्तु अब दूसरे किस्म की समस्याएं सगुनी देवी के सामने मुंह बाये खड़ी थी।

गौरी, जो धूम–धाम से ब्याही गयी थी, का पति कुछ विशेष नहीं करता था। खेती–क्यारी के सारे काम उसके श्वसुर के जिम्मे था। किन्तु गौरी के श्वसुर के निधन के बाद उसके घर की व्यवस्था अस्त–व्यस्त हो गयी थी। चूँकि वो किसी नौकरी में नहीं था उसके घर में खाने–पीने का संकट उत्पन्न हो गया। एक दिन उसका पति उसे वापस सगुनी देवी के पास छोड़ गया और स्वयं दिल्ली छोटी–मोटी

नौकरी की तलाश में निकल गया। गौरी जो सदा बन–ठनकर रहा करती थी अब पहचान में नहीं आती थी। अब वो तीन बच्चों की मां थी और गरीबी ने उसके चेहरे की सारी कान्ति और शरीर की सारी गठन को मानो लील लिया था। वो अब वो गौरी नहीं रही थी जिससे विवाह को कभी लड़के वाले लालायित रहा करते थे। बिरेन, जो ब्रजराज बाबू की सलाह की अनदेखी कर और अपनी मां से लड़–झगड़ कर पिता के सारे पैसे को दांव पर लगा ऑटो–रिक्शा लिया था, को उसके मित्रों, खास कर ऑटो–रिक्शा चालक ने ही बहुत बेवकूफ बनाया। अंत में उसे इतना नुकसान हुआ कि हारकर उसे ऑटो–रिक्शा औने–पौने दाम में बेचकर बैंक का कर्ज चुकाना पड़ा। अब वो भी बेरोजगार था और सगुनी देवी के जिम्मे था जो अब घर–घर चौका चूल्हा कर किसी प्रकार घर के खर्चे चला पा रही थी। ऐसे ही समय ब्रजराज बाबू सेवानिवृत्त हुए और लगभग इसी समय सलोनी की नौकरी बैंक में लग गयी। अतः जब आशा देवी ने सगुनी से सलोनी को ब्याह देने को कहा तो उससे कुछ कहते नहीं बना। यदि सलोनी का ब्याह कर दे तो परिवार का क्या होगा। गौरी, बिरेन और अपने स्वार्थ में वो इतनी अंधी हो सकती थी कभी–कभी उसे खुद पर आश्चर्य होता। सलोनी सरकारी नौकरी में आ गयी थी पर परिवार की समस्याएं ऐसी थी कि वो अपने ब्याह की सोच भी नहीं सकती थी। पर ब्रजराज बाबू के लिए अब बिहार शरीफ में और रहना संभव नहीं था। उन्हें सरकारी बंगला खाली करना था। अगले दो माह में वे सरकारी बंगला खाली कर अयोध्या आ गए वहीं सलोनी अपनी मां सगुनी और भाई और बहन के साथ किराये के मकान में चली गयी। वो दिन था और आज का यह दिन। सलोनी शादी–शुदा थी और अपने पति के साथ खुश– ब्रजराज बाबू को आज यह देख अपार संतोष का अनुभव हुआ। उन्हें बहुदा सलोनी को जीवन मझधार में अकेले छोड़ देने का मलाल होता था। पर जीवन में संघर्ष करने की जो शक्ति सलोनी को ब्रजराज बाबू से हमेशा मिलती रही थी उसने सलोनी को कभी हिम्मत हारने नहीं दिया। सलोनी ने ही बताया कि ब्रजराज बाबू के चले जाने के बाद बैंक में ही कार्यरत नन्दकिशोर ने उसका साथ दिया और हिम्मत नहीं हारने दिया। दोनों ने मिलकर गौरी के पति को बैंक से ही ऋण दिलवाकर फल और सब्जी की दुकान करवाया। आज गौरी और उसका पति इतना कमा लेते हैं कि वे अपनी तीनों संतानों को स्कूल भी भेज रहे हैं। गौरी को साक्षरता का महत्व अब समझ में आ गया है। बिरेन को बैंक के ठेकेदार से कह कांट्रेक्ट पर अर्दली के काम पर लगवा दिया है। जीवन के कटु अनुभवों ने उसे समझदार बना दिया है और अब वो मन लगाकर काम करने में विश्वास करने लग गया है। उसकी संगत भी अब सही हो गयी है। अपने परिवार को स्थापित करने के बाद ही सलोनी ने नन्दकिशोर के प्रस्ताव को स्वीकार किया। अपनी मां के आशीर्वाद से दोनों ने विवाह किया और नन्दकिशोर जैसे समझदार पति पाकर सलोनी ना केवल खुश वरन बहुत खुश है। ब्रजराज बाबू और आशा देवी, सलोनी के चेहरे पर इसी खुशी और आत्मविश्वास की कान्ति को देखकर खुश थे। ब्रजराज बाबू को लगा सेवानिवृत्ति के बाद एक काम जो अधूरा पड़ा था उसे सलोनी ने एक सफल शिष्या की तरह पूरा कर दिखा दिया था। उन्होनें और आशा देवी ने पुनः इस जोड़े को आशीर्वाद दे उन्हें कनक–भवन चलने का न्योता दिया ताकि राम–सीता के इस मंदिर में इस जोड़े के सफल वैवाहिक जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर ईश्वर को धन्यवाद दे सकें।

क्रोध एक प्रचंड अग्नि है, जो मनुष्य इस अग्नि को वश में कर सकता है, वह उसको बुझा देगा। जो मनुष्य अग्नि को वश में नहीं कर सकता, वह स्वयं अपने को जला लेगा।

– महात्मा गांधी

आज का सॉशल मीडिया

विकास कुमार*

हम हैं सोशल मीडिया, हमारा अपना अंदाज है।
खबर पक्की हो न हो, बस! घटना घटी आज है।।
बॉलीवुड की खबर हो, या टोलीवुड–हॉलीवुड की,
मुद्दा चाहे मैच–फिक्सिंग का, या तस्करी सेंडलवुड की,
हर खबर पर रहती नजर, हमारे रहते अब कुछ नहीं राज है.... हम हैं सोशल मीडिया...
पति की मेल हम रखते, पत्नी की हर एक सेल्फी,
अपनी लोकेशन हो या रिलेशन, कर सकते अपडेट सभी,
चैटिंग हो गयी पुरानी, अब विडियो कॉलिंग का रिवाज है.... हम हैं सोशल मीडिया...
प्रोफाइल को आप कर सकते चेक, और फोटो को अपलोड,
पोस्ट को पढ़ सकते तत्क्षण, विडियो कर सकते डाउनलोड,
करें प्राइवेट विडियो को वायरल, गिराना अगर किसी पर गाज है.... हम हैं सोशलमीडिया...
करते रहें लाइक, करते रहें फॉलो, करें शेयर और ट्वीट,
मेरे हमसफर, हर क्षण की खबर, चाहे रिप हो या स्वीट,
कभी पोर्नस्टार की तस्वीरें, कभी नारी सशक्तिकरण का आगाज है.... हम हैं सोशल मीडिया...
मिलते राम, रहीम, इंसान, हनी और प्रीत भी यहाँ,
व्हाट्सेप, फेसबुक, ट्विटर या इन्स्टाग्राम है जहाँ,
राजनीति, खेलकूद या हो व्यापार, अपडेट करना हमारा काज है..... हम हैं सोशलमीडिया...
एडवांस में करते हम विश, चाहे बर्थडे हो या कोई पूजा,
जो खबर दे न सके मीडिया, प्रशासन और कोई दूजा,
देते वो खबर हमारे एडमिन और यूजर्स, समझता नहीं समाज है..... हम हैं सोशल मीडिया...
हर शख्स हमारा है संवाददाता, है हर शख्स हमारा पत्रकार,
हमें संपादक की जरूरत नहीं, हम हैं तैयार हर वक्त मेरे यार,
लाइक, शेयर, कॉमेंट व फॉरवर्ड से,'विकास' को मिलती परवाज है..... हम हैं सोशलमीडिया...

*वैज्ञानिक

भारतीय नारी की जिम्मेदारी

के.के. शर्मा*

प्रकृति की हूं मैं उत्तराधिकारी,
कन्या, बेटी और कभी माँ बनकर।
जीवन की हर दिशा में प्रेम और ज्ञान बिखेरकर,
निभानी है मुझको जगत जननी की भूमिका सारी।

सीता को न समझे कोई चरणों की दासी,
द्रौपदी को न समझे कोई अबला नारी।
मीरा की कुरबानी न समझे कोई लाचारी,
कल्पना की उड़ान को न समझे कोई बेकारी,
निभानी है मुझको जगत जननी की भूमिका सारी।

विश्व के सबसे प्रजातंत्र की हूँ मैं नारी,
इस तंत्र की दिशाहीन मानसिकता से न हारी।
आंतक, भ्रष्टाचार, गरीबी, मंहगाई में भी हिम्मत जारी,
निभानी है मुझको जगत जननी की भूमिका सारी

राह कठिन है, पर बनेगी काबिल भारतीय नारी,
हर पुत्र में ज्ञान ज्योति जलाने वाली।
निर्भीकता, विमलता, निर्णायक और कल्याणी,
जीवन प्रेरणा की सूत्र बनेगी भारतीय नारी।
देखो, न सहनी है अब दरिंदों की कोई अत्याचारी,
निभानी है मुझको जगत जननी की भूमिका सारी।

*व. वि. एवं लेखा अधिकारी, एन.बी.पी.जी.आर., नई दिल्ली

जिन्दगी का सफर

सोहन लाल*

सफर में धूप है कांटे हैं चल सको तो चलो
हर तरफ भीड़ ही भीड़ है निकल सको तो चलो।।

हर तरफ नफरत ही नफरत है इन्सानों में
अब तो रौनक है छाईं इन कब्रिस्तानों में
तुममें हिम्मत है ताकत है तुम कुछ अच्छा तो करो
सफर में धूप है कांटे है चल सको तो चलो
हर तरफ भीड़ हीं भीड़ है निकल सको तो चलो।।

किसी के वास्ते राहें अच्छी नहीं बनती
साहसी तो वे हैं जिनसे हार भी है डरती
जीना है तो उन कायरों से लड़ो
तुम अपने को बदल सको तो चलो
हर तरफ भीड़ ही भीड़ है निकल सको तो चलो।।

सफर में कोई किसी को रास्ता नहीं देता
कर्म करोगे तभी भाग्य भी तेरा साथ देगा
यह जिन्दगी दौड़ है तुम कोशिश तो करो
गिर कर भी अगर तुम सफल हो सको तो चलो
हर तरफ भीड़ ही भीड़ है निकल सको तो चलो।।

कहीं नहीं है उजाला हर जगह अंधेरा है
धुआं ही धुआं है काला सा इसका चेहरा है
मेहनत बहुत है करनी फिर आगे सवेरा है
खुद अकेले बाहर निकल सको तो चलो
हर तरफ भीड़ ही भीड़ है निकल सको तो चलो।।

यही जिन्दगी है कुछ ख्वाब चन्द उम्मीदें
गरीबी का आलम है क्या कुछ खरीदें
इन्हीं सुख–दुख के खिलौनों से तुम बहल सको तो चलो
हर तरफ भीड़ ही भीड़ है निकल सको तो चलो।।

जिसने साहस किया है वही सफल रहा है
इतिहास उठाकर तुम देखो बिना मेहनत के
कहां कुछ मिला है
कोशिश तो करो जीत तुमको मिलेगी
एक बार में नहीं सौ बार में मिलेगी
तुमसे विनती यही है चल सको तो चलो
हर तरफ भीड़ ही भीड़ है निकल सको तो चलो।।

*सहायक, संस्थान प्रशासन–1 अनुभाग, भा.कृ.अनु.प. मुख्यालय

lQyrk dslk$iku

^^x.kr= fnol 2018 d volj ij Hkkjrh; —f"k vuqla/kku ifj"kn dh >kdh jkt iFk ij igyh ckj^^

भाकृअनुप

ICAR